SRI BRAHMA-SANKIRTAN
(DOGRI-VEDANTA)
BY
SWAMI BRAHMANANDA

ॐ

श्री ब्रह्म-संकीर्तन

(डोगरी वेदान्त)

रचयिता

श्री १०८ स्वामी ब्रह्मानन्द जी तीर्थ

आयुर्वेदाचार्य

अमरेश्व (जम्मू)

सम्पादक

प्रो० रामनाथ शास्त्री

(जम्मू)

प्रकाशक
दि रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन डिपार्टमेण्ट
जम्मू व कश्मीर राज्य
श्रीनगर

1958

मुद्रक
क्रान्ति प्रेस
जम्मू



श्री १०८ स्वामी ब्रह्मानन्द जी तीर्थ, आयुर्वेदाचार्य

(जब वे पुरमण्डल तीर्थ के अधिष्ठाता थे)

ग्रन्थ-कार का परिचय

स्वामी ब्रह्मानन्द जी तीर्थ से वैसे तो मेरा परिचय काफी पुराना है। मैं कोई तेरह-चौदह बरस का था जब स्वामी जी सन्यासी के रूप में भीख मांगने दूसरे चौथे दिन हमारे घर भी आते थे। एक या आधी रोटी लेकर वे ड्योढ़ी में खड़े-खड़े ही खाते और 'हरि ॐ' कह कर चले जाते।

पिता जी के साथ मैं भी कभी-कभी उनकी कुटिया (अमरेश्वर जम्मू) में जाता। वे भी प्रायः हमारे हां आते। लेकिन 28-29 बरस पहले के उस परिचय में और आज से दो-तीन बरस पहले होने वाले उनके इस दूसरे परिचय में बड़ा अन्तर है। पहले परिचय में वे मेरे लिए केवल एक साधु थे जिनका हमारे परिवार से परिचय था और जो मुझे स्नेह से बुलाते, तथा आशीर्वाद देते थे। दूसरे परिचय में हम एक साझे आन्दोलन में सहयोगी बन कर मिले।

दो-तीन बरस पहले की बात है। स्वामी जी मुझे मिले और कहने लगे, "मेरी कुटिया पर आना, मैंने भी कुछ लिखा है, तुम्हें सुनाना चाहता हूँ।" मैं वहां गया और 'गुंगें दा गुढ़' नामक पुस्तिका में छपी हुई उनकी कविताएं सुनकर मैं चकित-मुग्ध हो उठा। "स्वामी जी, आपने यह कविता लिखना कब से शुरू किया है?" मैंने आश्चर्य्य से पूछा। उन्होंने कहा, "भई, आप लोग पास ही ब्राह्मण-सभा के इस आङ्गण में प्रायः अपने डोगरी भाषा के कवि-सम्मेलन करते रहते हैं। मैं यहीं कुटिया में बैठा वे कविताएं सुनता। आहिस्ता-आहिस्ता मेरे मन में भी यह विचार पैदा हुआ कि इन्ही युवकों की तरह मैं भी डोगरी में लिखने की कोशिश क्यों न करूं? आखिर डोगरी मेरी भी मातृभाषा है और मेरे पास कहने के लिए भी बहुत कुछ है। मैंने वेदान्त दर्शन के विषय में संस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी तथा पंजाबी के तत्सम्बन्धी कितने ही ग्रन्थों का अध्ययन किया था। मैंने सोचा डोगरी भाषा में भी यदि वेदान्त पर कोई रचना हो सके तो मैं मातृ-भाषा के ऋण की एकाध किस्त चुका सकूंगा। यही मूल-प्रेरणा थी जिसने मुझ से ये सब लिखवाया है। ये कविताएं मेरी उसी रचना का अंग हैं।"

मैंने कहा स्वामी जी आपकी यह रचना न जाने कब पूरी होगी लेकिन डोगरी के पाठक आपकी इन कविताओं को पढ़ कर अवश्य ही प्रसन्न होंगे। आप अनुमति दें तो हम इन्हें छाप दें। "ये सब कुछ आप लोगों से मिली हुई प्रेरणा का फल है। यह सब आपका ही है, जैसा चाहो करो, लेकिन मैं कवि नहीं हूँ। इनमें छन्द की गल्तियां होंगी, देख लेना।"

इस तरह से नए डोगरी साहित्य में वेदान्त पर पहली काव्य-पुस्तिका 'गुंगे दा गुड़' छपी। अगले वर्ष हमने उनकी कविताओं का दूसरा लघु-संग्रह 'मानसरोवर' प्रकाशित किया।

इन दो पुस्तिकाओं के प्रकाशन से स्वामी जी की कवि रूप में ख्याति फैली और वे डोगरी-संस्था जम्मू के इस साहित्यिक आन्दोलन के और भी करीब आ गए। करीब 63-64 वर्ष की आयु में उन्होंने लिखना शुरू किया और इन 3-4 वर्षों में ही उन्होंने डोगरी भाषा को 'श्री ब्रह्म संकीर्तन' जैसी अनमोल भेंट देकर अपनी साधना को कृतार्थ किया है।

'श्री ब्रह्म संकीर्तन' उन्होंने लगभग 1957 के मध्य तक समाप्त कर लिया था। इसके अनन्तर उन्होंने वेदान्त सम्बन्धी कुछ और कविताएं लिखीं जिन्हें 'गुप्त-गंगा' नाम से डोगरी संस्था जम्मू की ओर से प्रकाशित किया गया है।

स्वाभाविक है कि डोगरी भाषा में लिखे इस ग्रन्थ के वर्तमान और भावी पाठक स्वामी जी के व्यक्तिगत जीवन के विषय में विशेष जानना चाहेंगे। डोगरी के साहित्यिकों के साथ गोष्ठियों में बैठे हुये प्रायः स्वामी जी से, हमने भी अपनी इन्हीं जिज्ञासाओं के कारण उनके जीवन के विषय में कई बार पूछ-ताछ की। जो बातें उनसे सुनने का अवसर मिला उसी के आधार पर मैं यहां उनके जीवन का संक्षिप्त सा परिचय दे रहा हूं।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी का जन्म रियासत में सूबा जम्मू के कस्बा अखनूर में ठाकुर मियाँ सिंह जी के हां 9 फाल्गुण 1948 (विक्रमी) (अर्थात् सन् 1891) को हुआ। इनका जन्म नाम संसार सिंह था। इस समय 66-67 वर्ष की आयु में भी उनकी स्मरण-शक्ति काफी तीव्र और संग्रह-शील है, विद्यार्थी जीवन में भी अवश्य ही ये तीव्र और समझदार रहे होंगे। इन्होंने अपनी स्कूली पढ़ाई अखनूर में ही समाप्त की।

पिता का देहान्त हो जाने पर घर की जिम्मेदारी कन्धों पर आन पड़ी तो पढ़ाई का क्रम आगे न चल सका। डोगरा घरानों में आज भी धार्मिक-रुचि बाहुल्य से पाई जाती है, 50-60 बरस पहले तो यह भावना और भी गहरी थी।

संसार सिंह अखनूर से जम्मू चले आए। यहीं उनमें स्वतन्त्र स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बल मिला। मन में जिज्ञासा थी, धार्मिक भावनाओं की दार्शनिक पृष्ठ भूमि जानने का कौतूहल था, और इस भूख को शान्त करने के लिए सभी तरह का साहित्य भी उपलब्ध था। फारसी और अंग्रेज़ी का ज्ञान बढ़ाने के लिए उन्होंने दोनों भाषाओं की काफी पुस्तकें बड़ी लग्न और परिश्रम से पढ़ीं। फिर बाइबल, कुरानशरीफ, फारसी के कुछ सूफी काव्य तथा हिन्दू-दर्शन पर जो पुस्तकें मिलीं वे सब पढ़ीं।

शुरू में आप गवर्नमैंट प्रेस जम्मू में कलर्क भरती हुए और दो-तीन साल के बाद महकमा खातर तवाज़ो में तब्दील हो गए। स्व० महाराजा प्रताप सिंह जी के शासन काल का वह समय था जब कपूरथला के राजा दलजीत सिंह रियासत के मुख्य मन्त्री (चीफ मिनिस्टर) नियुक्त हुए थे।

इसी नौकरी में संसार सिंह जी की दयानतदारी और निडरता की सूचक एक घटना घटी। एक अंग्रेजी फर्म से खरीदे गए महकमा के सामान के सौदे में चालीस हज़ार रुपए का कुछ गोलमाल हो रहा था। संसार सिंह जी को जब इस बात का सुराग मिला तो महकमे में मुतल्लका अधिकारी होने के नाते इन्होंने इस बात की परवाह किए बिना कि इस सौदे में जिन एक दो बड़े ऐहलकारों का हाथ है वे इन्हें हर तरह का नुक्सान पहुंचा सकते हैं, अपनी दृढ़ता से रियासती खज़ाने के इस नामुनासिब नुक्सान को न होने दिया। इस बात के कारण रियासत भर में इनकी बड़ी चर्चा और प्रशंसा हुई और महाराजा की तरफ से पाञ्च सौ रुपये बतौर खिल्लत ईनाम दिया गया।

इसी एक घटना के कारण शासक इन पर प्रसन्न हुए, इनकी तरक्की की सम्भावनाएं स्पष्ट थीं, तभी एकाएक न जाने कैसे इनका मन नौकरी और सेवा वृत्ति से उचट गया।

सम्भवतः इसका कारण इनका अल्पकालिक पारिवारिक जीवन हो। इस घटना को उन्होंने जितने निर्लेप भाव से हमें सुनाया था वह काफी आश्चर्य्यकर था।

ज़िला कांगड़ा के नूरपुर कस्बे में इनका विवाह हुआ था। उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी धर्मपत्नी बड़ी सुशील, सुन्दर और गुणवंती थी। वैवाहिक जीवन का प्रारम्भ बड़ा ही स्नेह पूर्ण था। परन्तु इस जीवन के प्रभात में ही उनके मन में विरक्ति के भाव उभरने लगे। वे नौकरी से त्याग पत्र देने के लिए एक-दो बार प्रयत्न भी कर चुके थे। स्वामी जी ने सुनाया कि उन दिनों उनकी मानसिक दशा बड़ी उलझन में थी। ममतामयी माता जीवित थीं, अन्य चार भाई भी थे। धर्मपत्नी गर्भवती थी, और मन संसार से अलग होने को व्याकुल होने लगा था। वे ईश्वर से प्रार्थना करते कि प्रभु इस बन्धन से छूटने का कोई रास्ता दिखाओ।

शिशु जन्म से आठ-दस दिन पहले, उन्होंने बताया कि उनके मन में एक अजीब प्रसन्नता भर उठी। ऐसे जैसे किसी बन्दी के बन्दी जीवन की अवधि समाप्त हो रही थी। शिशु को जन्म देने के पांच दिन बाद उनकी पत्नी देह त्याग गई। मातृहीन शिशु केवल एक मास तक जीवित रह सका। जैसे एक ओर की ऊंची दीवार उठ गई। उधर नौकरी से त्यागपत्र भी स्वीकार हो गया। माता का आशीर्वाद लेकर संसार सिंह जी स्वामी रामतीर्थ जी के दीक्षित शिष्य स्वामी गोविन्दानन्द जी तीर्थ, जो उस समय पंजाब भर में वेदान्त दर्शन के महान ज्ञाता के रूप में विख्यात थे, की सेवा में जा पहुंचे। उनका शिष्यत्व प्राप्त करके सन्यास में दीक्षा ले ली। उस समय वह 33-34 बरस के थे।

दीक्षा लेने से पहले नौकरी में ही उन्होंने जम्मू के प्रकाण्ड पण्डितवर्य्य श्री निक्का राम

जी शास्त्री के चरणों में बैठ कर छै बरस तक संस्कृत भाषा और वेदान्त के प्रामाणिक ग्रन्थों (ब्रह्म सूत्र शंकर भाष्य, अद्वैत सिद्धि तथा उपनिषद् आदि) का मन-चित्त लगा कर अध्ययन-मनन किया था। तथा पं० श्रीचन्द्र जी (श्री रघुनाथ विद्यालय के मुख्याध्यापक) से शंकर दिग्विजय पढ़ा। इसके बाद सन्यास लिया और ऋषिकेष में जाकर वहां कई वेदान्ती महात्माओं से वेदान्त-दर्शन के मर्म-रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया। इसके अनन्तर पैदल चल कर उन्होंने चार-धाम की यात्रा की। वहां से लौटने पर धर्मार्थ विभाग ने इन्हें पुरमण्डल तीर्थ की गद्दी सौंप दी। लेकिन दो बरस ही वे वहां रह सके। महन्ती ऐश्वर्य्य इनकी स्वतन्त्र प्रकृति को रास न आया। सच्चा सन्यासी जन-सेवा में ही सभी प्रवृत्तियों को लीन करके निवृत्ति-सुख लाभ करता है। इसीलिए इन्होंने वैद्यक का अध्ययन किया और आगरा विद्यापीठ से आयुर्वेदाचार्य्य की परीक्षा ससम्मान पास की।

सन्यास लेने से पहले ही आपने जम्मू में अमरेश्वर (तालाब रानी) में तथा गुजरांवाला (पश्चिमी पंजाब) में एक-एक कुटिया बनवा ली थी। पाकिस्तान बनने के बाद इन्होंने डाकखाना बारूकी जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में एक कुटिया बनवा ली। गर्मियों में तथा वर्षा-ऋतु में ये प्रायः उत्तर प्रदेश की कुटिया में चले जाते हैं तथा सर्दियों में जम्मू में रहते हैं। श्री ब्रह्मसंकीर्तन की रचना का काम इन्हीं दो कुटियाओं में पूरा हुआ।

एक सच्चे सन्यासी के रूप में उन्होंने अपनी 36 बरस की साधना का यह सार अपनी मातृ-भाषा के कलेवर में बान्ध कर अपनी धरती को उपहार किया है। डुग्गर की धरती अपने इस सन्यासी सुत की इस अर्चना से हर्षित होगी। डुग्गर की जनता उनकी साधना के प्रति साभार रहेगी।

इतने निष्काम साधक की यह साधना अवश्य ही डोगरी-भाषा और साहित्य के इस नव-जागरण की मंगल-यात्रा में एक ऐतिहासिक पथ-चिह्न बनी रहेगी।

मुझे इस ग्रन्थ के सम्पादन का सौभाग्य मिला। स्वामी जी की ही इच्छा और आदेश था। वेदान्त-दर्शन, क्या किसी भी दर्शन के प्रति मेरी जिज्ञासा-रुचि सामान्य पाठक से अधिक नहीं। मुझे इस कार्य्यभार को अपने ऊपर लेने में सबसे बड़ा हर्ष और उत्साह इस तथ्य से था कि यह नई प्रशस्त रचना डोगरी भाषा के गौरव में वृद्धि करने वाली होगी।

इसीलिए मेरे सम्पादन कार्य्य का घेरा भी बड़ा सीमित था। केवल भाषा, छन्द तथा फुट-नोटों में से चुनाव तक।

डोगरी अपना साहित्यिक रूप संवार रही है, परन्तु अभी तक यह कार्य्य पूरा नहीं हुआ। भाषा की इसी अनिश्चयात्मकता को दूर करने का मैंने यहां प्रयत्न किया है। फिर भी त्रुटियों का रह जाना सम्भव है। सहृदय पाठक ही इस असाधारण कृति का मूल्य आंकेंगे।

—रामनाथ शास्त्री

हवेली बेगम, जम्मू।

ग्रंथ का पठन-पाठन शुरू करने से पहले ये त्रुटियाँ

ठीक कर लें ।

सफा नं०	छन्द नं०	अशुद्ध	शुद्ध	सफा नं०	छन्द नं०	अशुद्ध	शुद्ध
29	छ-1	छपी	छेई	171	फु.नो.	ख्यालो	खावो
39	फु नो.	पापा	पूतपापा	174	,,	बनरिये	बोरिये
40		राजा भरथरी	राजा भरथ	179	,,	दिल	गुल
,,		भरथरी राजै	भरथै राजै	184	छ. 3	गाला	इसगी
53	छ-1	अन्दरै पासै	बाहरै पासै	190	फु.नो. 2	करा हिम्मत	कराहीयत
53	छ-9	हरा	नराहता	191	फु.नो. 1	नेह	बेह
64	छ-5	सोची लैन्दा	लैन्दा ठानी	197	छ. 6	ममता	हंगता
71	छ-1	तेत्री गिनी	तैत्री उपनिषद्	198	छ. 4	घर-घर	थर-थर
83	छ-3	सुनाए न बीती जन्दे	गाये न बीती पान्दे	198	छ 5	जल	जग
86	छ-8	नखेड़ा	नबेड़ा	211	छ. 6	साथेंगी	साधेंगी
96	छ-8	खै	रुख	215	छ. 3	किज नईं लब्बै	किज नेन्दा लब्बै
101	छ-2	हुन्दा	बनदा	217	छ. 3	मौरा	भौरा
156	फु.नो. 3	जाते	जाने पाये	217	छ. 6	जीवेंगी	जीवें दी
161	फु.नो. 1	जुर्मे खाक	जर्मे खाक	238	छ. 6	बरखा	परखा
162	फु.नो.	बा करे	अदा करे	270	फु. 4	पीसे मुरीद	पीरो मुरीद
167	,,	जो	जिसे				

विषय-सूची

१–श्रवण प्रकरण

२—मनन प्रकरण

३—निदिध्यासन प्रकरण

७–ध्येय प्रकरण

८–सिद्धान्त-प्रकरण

—इति शुभम्—

* श्री ब्रह्म सङ्कीर्तन माहात्म्य *

श्रवण प्रकरण

आद कदीमी डुग्गर साड़ा पहाड़ी देस खुश्रान्दा ।
इस्सै लेई बेदान्त पहाड़ी बोली दे बिच श्रान्दा ॥

गुरुमुख द्वारा जेड़ा इसगी समझग मन-चित लाई ।
देवतें थों बी उसने जानो उच्ची पदवी पाई ॥

जिस अपनाया परम पवित्तर ज्ञानै दा ए मारग ।
जीवन-मुक्त बनी करी आपूं पित्तरेंगी बी तारग ॥

लक्ख चुरासी कैदें बिच्चा भलेयां होग खलासी ।
नित्तगै मौजां मारग बनियै परम धाम दा बासी ॥

बड़े जतन ने इसगी पढ़ियै भेद इसदा जो पान्दे ।
गाई सुनाई इसदी मैहमा लोकें बिच फलान्दे ॥

धन्न धन्न उन्दियां मावां, कुक्खां अत्त पवित्तर होइयां ।
धन्न धन्न ओ जीह्वां जो इस लाली दै बिच रङ्गोइयां ॥

लोहा पारसै कन्ने छोइयै सुन्ना रूप बनान्दा ।
जतन हजार करि कोई हुट्टै पारस नईं खोआन्दा ॥

पार ब्रह्म गी जानने वाले ब्रह्म रूपता पान्दे ।
इयै तत्त ए अनुभव दसदा, बेद बी इयै सुनान्दे ॥

ब्रह्मा विष्णु शिव बी जिसदी मैहमां गाई नि हुटदे ।
बेद पुराण बी नेति नेति आखी थकदे रुकदे ॥

शेष बी जिसदे गुणें दा गायन करदा जा सकुचाई ।
बीना लेइयै शारदा गान्दी गान्दी गै शरमाई ॥

उयै आत्म तेरा ब्रह्म ऐ घट घट बिच समाया ।
उस्सै दा उपनिषदें अन्दर रूप अनूप सभाया ॥

सृष्टि दे आदी बिच इसगी विष्णु जी ने गाया ।*
भलेयां करियै जग परकाशक सूरज गी समझाया ॥

ब्रह्मा[१] ने बी उसदी मैहमा इन्दर अग्गें गाई ।
बत्ती बरे ओ रेआ पढ़ान्दा तां समझा बिच आई ॥

शिव जी बी इस्सैगी आपूं हिरदै दे बिच रखदे ।
त्रैलोकी थों करी कनारा नित्त निरन्तर बसदे ॥

याज्ञवल्क[२] ने ऋषी बी इसगी बेदें दे बिच गान्दे ।
मैत्री कात्यायनी गी आपूं बार बार समझांदे ॥

उयै भेद भृगु[३] दे अग्गें बरुण पिता ने गाया ।
उद्दालक[४] ने श्वेतकेतु गी नौ बारी समझाया ॥

जिनें बी गाया उनें गै पाया रग रग गे रङ्गोई ।
परम्परा थों चलदा आया भेद नमां नई कोई ॥

---

*इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् । विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ।
(भ० गी० ४–१)

१–इन्द्रो ह वै देवानामभिप्रवब्राज विरोचनोऽसुराणाम् । (छां० उ०–८–७–२)

२–अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे बभूवतुर्मैत्रेयी च कात्यायनी च । (बृ० ३–४–५–१)

३–भृगुर्वै वारुणिः । वरुणं पितरमुपससार । अधीहि भगवोब्रह्म । (तै० ३।१)

४–यथा सौम्य केन मृत् पिण्डेन सर्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारोनामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् ॥ (छां० उ०–६–१–१) एतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि । (छां० ६–८–७)

वेदव्यास ते ऋषियें मुनियें ध्यान उस्सै दे कीते।
मस्ती बिच मतवाले होइयै प्रेम प्याले पीते।
[5]प्रतर्दन असुरें दा राजा ब्रह्मा जी दे कच्छ गेआ।
चौठ बरे ओ उन्दे कोला सुनदा इयै तत्त रेआ ॥
रामचन्द्र गी इयै मैहमाँ गुरु वशिष्ट सुनाई।
अष्टावकरै जनकपुरी बिच जनकै अग्गें गाई ॥
जिनें बी लाईयां तोड़ नबाईयां पिछड़े नईं परतोये।
कुल बी कन्ने सुच्चे कीते आपूं पारस होये॥
रोनां धोनां गला तोआरी सुखें दी मालां पाई।
अमर लोक दे होये ओ बासी इस मैहमा गी गाई ॥
धन्न पबित्तर चरण ओ उन्दे जिस २ थाहरै पौंदे।
रूड़ी दा बी तीर्थ बनदा छूइयै पाप कटोंदे ॥
बारम्बार इयै किज गीता दे बिच पढ़ने आया।
सिरी कृष्ण ने अपने मुआं अरजुन गी समझाया ॥
भीष्म पितामां बान छेजा पर इसगी रे हे गान्दे।
अर्थ करी करी आपूंगै युधिष्टर गी समझान्दे ॥
शुकदेबै बी इस्सै गी हा परीखत अग्गें गाया।
सत्तें दिनें दे अन्दर उसगी जीवन्मुक्त कराया ॥

५–प्रतर्दनह वै. देवोदासीरिन्द्रियस्य प्रियं धामोपजगाम् ॥ (बृ० ४–५–१) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः । एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।
॥ ईश २ ॥

जगद गुरु सिरी शंकराचारज इसदी मैहमां गाई।
बुद्ध हराये नाम कमाये दिग-विजया ही पाई ॥
रामतीर्थ ने अमरीका बिच धुम्मां जाइयै पाइयां।
उथ्थों मेमां दुरियै इन्दे कोठे दिखखन आइयां ॥
इयै तत्त मलाह मुक्ति दा आवागौन गी मारै।
चौरासी दा चक्कर मेटै भवसागर थों तारै ॥
देह पाइऐ बी जिसने मैहमां ए गाई नईं दिख्खी।
बेदें उस मूढ़ै गी ताइयैं पशु दी पदबी दित्ती ॥
सिरें पराड़ें काल कूकदा सा दा पता नईं थौह।
स्वामी ब्रह्मानन्दा तूं बी इसगी गान्दा रौह ॥

मंगलाचरण–१

बन्दना सद्गुरें दी करियै आद गणेश मनान्नां।
बिघ्न हरण बी ऐ नां जिसदा, उसगी सीस नोआन्ना ॥
सिमरां दुर्गा जिसगी अपना इष्ट कदीमी जानां।
खिन खिन रक्षा करदी, दिन्दी भोग मोक्ष बरदाना ॥
शैहर खनूरै दा बसनीको ऐ जमवाल घराणा।
मता इलम नईं पढ़या कोई, कोई अख्खर जानां ॥
राज कटुम्बै दा औं साधु तीर्थ समपरदाना।
रघुवंशे दा हां सन्यासी ब्रह्मानन्द खोआन्नां ॥
श्री स्वामी गोविन्दा नन्द तीर्थ सतगुरु मेरे।
दीक्षित चेले रामतीर्थ स्वामी दे होए जेड़े ॥

उनें चफेरै चानन चाहड़ी ज्ञान बरासत दित्ती ।
बेड़ा पार हुन्दा जां लब्बा माया सिर २ पिट्टी ॥

मंगलाचरण–२

देवतें गी श्रौख बनी गौरी गी ध्यान लगे ।
आद शक्ति-रूप जेड़ी, जगत रचान्दी ऐ ॥
न्हौन जन्दी पार्वती दिक्खिऐ खड़ोई गेई ।
घाबरे दे देवतें गी पुच्छना करान्दी ऐ ॥
श्रोसदी गै कुक्षि बिच्चा निकली इक जोत पई ।
श्याम होई पार्वती हिमालय आसन लान्दी ऐ ॥
गौरी कामाक्षी होई कामरूप देसैं'च ।
जोनी रूप भगतें दियां कामनां पुरान्दी ऐ ॥
मुण्डियें दा हार बिकराल अक्खीं लाल करी ।
उए गौरी कालका कलकत्तै खोआन्दी ऐ ॥
उऐ कशमीर बिच शारदा भवानी बनी ।
दाती बनी भगतें थों भोग लगवान्दी ऐ ॥
जम्मुवां ते भड्डुआ, बलौर, सुकराल उऐ ।
बर देई तली पर सरेयां जमांदी ऐ ॥
उऐ गौरी कटड़े दी धारें जाई बस्सी ऐ ।
पहाड़ें वाली रूपै बिच्च वैष्णों खोआन्दी ऐ ॥
उस्सै दिआं शरणी ते उस्सै दी ऐ आस जड़ी ।
"ब्रह्म संकीर्त्तनै" दी रचना करान्दी ऐ ॥

मंगलाचरण–३

ओंकार[1] पर ब्रह्म सनातन घट २ बिच समाया।
निराकार साकार बी उऐ बेदें दे बिच गाया॥
दूऐ स्कन्धै भागवतै'च साकार ब्रह्म दरसाया।
ध्यान बिधि बी दस्सी उस बिच, पक्का नियम सुनाया॥
इन्द्रियें गी काबू करिऐ भोग लालसा जित्ती।
योगी उसदा ध्यान करैंदे, तत्त ज्ञान परतीती॥
ऐ पाताल पैरें दियां तलियां,१ रसातल दौंऐं पासे।
विश्वरूप साकार ब्रह्म दे महांतल गिट्टे आखे॥
तल ते अतल न उस दियां पिन्नियां, गोडे सुतल खोआए।
पट्ट दमैं उस विश्वमूर्त्ति दे बितल ते अतल सुनाए॥
पुट्ठे महातल, नभतल नाभि, छाती स्थल करी मिथेया।
क्याड़ी महर, मुँह जन, तप मत्था, सिर सतलोक ऐ लिखेया॥
पैरें थों लेई सिरै पराड़ी बख बख गिनी सुनाए।
उस साकार ब्रह्म दे अन्दर चौदां लोक समाये॥
इन्दर उस व्यापक दियां बांमां, कन्न दिशां समझाइयां।
अश्विनी कुमार न उस दियां नासां, लिखियै साफ टकाइयां॥
गन्ध उसदे सिंघने दी शक्ति, करी प्रमाण सुनाई।
सूरज चन्न दमैं दो अक्खियां मुँह अग्नि दरसाई॥
दिन ते रात न पलकां दौऐं, पानी तालू भाए।

१–एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म यदोङ्कार (प्रश्ण ५।२)

रस सारे ए जीभ न उसदी, सिर ए बेद दखाये ॥
प्रेम दन्द, जमराज न दाहड़ां, हासा उसदी माया ।
भरमें दी सैनत गै सृष्टि, ब्रह्मा लिंग सुनाया ॥
ओठ न लज्जा, लोभ गै ए स्तन, ऐसे धर्म लखाये ।
पाप पिट्ठ ते कुक्ख समुँदर, हड्डियां पहाड़ दखाये ॥
रुख बाल ते नदियां नाड़ीं वायु श्वास गलान्दे ।
ब्रह्म हिरदा मन चन्द्रमां ऐ, मैहमां बेद सुनान्दे ॥
कन्न गुफां ते ऊँट ते घोड़े हाथी नैं दिखलाये ।
ब्राह्मण मुख ते भुजां ए छत्री ब्रह्मानन्द सुनाये ॥

सृष्टि

शुद्ध ब्रह्म[1] गी इच्छया होई, कर्म जीवें दे लेइयै ।
नेकां रूप धरां मैं, माया दे बिच हलचल पेईयै ॥
ब्रह्मसूत्रें[2] बी ऐ दस्सेआ, बेद प्रमाण कराया ।
शब्दमात्र कन्ने प्रजापति ने देव समूह रचाया ॥
उस्सै आद पिता थों सारी जीव सृष्टि ए होई ।
सोम पात्र फी रची टकाये स्तोत्र माल परोई ॥

१–"तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेयेति. तत्तेजोऽसृजत" (छां० ६ । २ । ३ ॥)
२–अनादि निधना नित्यावागुत्सृष्टा स्वयं भुवा ।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ॥ (ब्र० सू० शं० भा० १-३-२८)
नामरूपं च भूतानां कर्मणां च प्रवर्तनम् । वेद शब्देभ्य एवादौ निर्ममे स महेश्वरः ॥
(मनु० १–२१)

उस्सै शब्दमात्र दे कन्ने शास्त्र रची बनाये ।
इस पवित्र बानी द्वारा दे जगत समूह रचाये ॥
[१]आपूं गै उस परमेसर ने बेद बखान एं कीते ।
नामरूप ए कर्म–प्रवृत्ति सैहत निरमान ए कीते ॥
अपञ्ची करी पञ्ज महांभूतें गी बी प्रगटाया ।
सूक्ष्म समष्टि-व्यष्टि रची ए ब्रह्मानन्द सुनाया ॥

पञ्चीकरण

पञ्जे तत्तें दे दो दो करी टोटे दस्स बनाये ।
इक २ तत्त दा इक २ टुकड़ा पञ्ज अलग रखाये ॥
बाकी पञ्ज रहे जो टोटे इक दे चार कराये ।
पैहलें पञ्ज टकाए बक्खी दूयें'च इक २ पाये ॥
इक २ अपने मुक्ख भागै'च चार २ दुए रलाये ।
पञ्चीकरण करी इस चाली भूत मलाप कराये ॥
इन्हेंगै पञ्जें भूतें दे ए स्थूल शरीर खोआन्दे ।
ब्रह्मानन्दा जो जग अन्दर भोग भोगनै औन्दे ॥

तत्त्व आकारादि

पृथवी चौरस, अरध चन्द्र, पानी त्रिकोन खोआन्दे ।
वायु गोल ते तिरमिरे वांगर ए आकाश सुनान्दे ।

१–अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपे व्याकरवाणि ॥ छां ६–३–२ ॥

पृथवी मद्ध, ते हेठ जल उप्पर तेज प्रमाणे ।
तिरछी वायु, आकाश सुषुम्ना, तत्त्व स्थान बखाने ॥
पृथवी पीली पानी चिट्टा तेज लाल रंग आखे ।
वायु नीली दरसाई ते सर्व रंग आकाशे ॥
गोडें पर पृथवी, जल पैरें, तेज मुंहै पर दस्से ।
वायु नाभी मूल दखाया, अम्बर उप्पर मत्थे ॥
मधुर स्वाद युक्त ए पृथवी, जल ए कसैले आखे ।
तीक्षण जल ते अमल समीरा कटु स्वाद आकाशे ॥
बारां अंगुली पृथवी तत्त है सोलां जल दरसाए ।
चार तेज अठ्ठ अंगुली वायु अथाह आकाश सुनाये ॥
कीड़ी थों लेई हाथी तोड़ी जीव जन्तु देह धारी ।
पञ्जें तत्तें दी सब रचना आखन बेद बचारी ॥

तत्त्व प्रमाण

पृथवी कोला दस गुण जल अधिक पुराण सुनान्दे ।
जलै थोंआं बी दस गुण जादै तेज बखान करान्दे ॥
तेजै कोला दस गुण जादै वायु लिखी टकाई ।
आकाश वायु थों कई गुण अधका साफ दित्ता समझाई ॥
गासै कोला कई गुण जादै करण अज्ञान बखाना ।
अज्ञानैं थों कई गुण अधका अभाव करण परमाणा ॥

अभावै थों बी कई गुण जादे माया रूप दखाया ।
आश्रा जिस साकार ब्रह्म दा लेइयै जगत रचाया ॥
देह मानु दी उप्पर जितनी इक तिल मलदा काया ।
ब्रह्मानन्दा उन्ना स्हारा ब्रह्म दा लैंदी माया ॥

श्रवण प्रकरण

भगत सुदामा गी इक बारी दो दिन फाके होए ।
न्याणे चार भुक्खै दे मारे उस कच्छ जाइयै रोए ॥
नार सुशीला ही सतवन्ती उस गी जाई समझांदी ।
कृष्ण जी कन्ने बालपनै पढ़ने दी याद करान्दी ॥
आखन लगी जो निक्के हुन्दे मित्र तुसाड़े हैसे ।
द्वारका दे बिच हुकम चलांदे राज सिंहासन बैठे ॥
तुस बी जाई उनेंगी मिलियै अपनी गल्ल सुनाओ ।
किच्चर तङ्गी जरगे तुस किज खाने गी लेई आओ ॥
त्रैवे पन बिपता बिच बीते चौथा बी हुन आया ।
नां गै रज्जी रुट्टी थोई नां तन टल्ला लाया ॥
जोर जुआनी बिच ए तंगी तुरसी गेई कटोई ।
औखी लबदी उमर बढ़ेपा, थार निं दूआ कोई ॥
भगत सुदामा गल्ल निं मनदा ओ नई खैहड़ा छोड़ै ।
मंगी छुं गी तण्डुल देइयै उत्तै पासै टोरै ॥

त्रौं पैहरें दे बिच सुदामा द्वारका पुज्जेग्रा जाई ।
त्रै डेयोढिग्रां ग्रापूं लङ्घी चौथी खबर पुजाई ॥
रतन जड़त सिंघासन उप्पर कृष्ण महाराज से बैठे ।
पटराणी रुकमण दे कन्ने खेड़दे चौपड़ ऐ थे ॥
द्वारपालें बी झटपट दौड़ी ग्रग्गें ग्ररज गुजारी ।
ग्राखन सिरै पैरें दा नङ्गा ग्राया कोई भखारी ॥
फट्टे दा लीरां ऐ कुरता लीरां धोती लाई ।
रिक २ करदियां हड्डियां ग्रोदियां लबदा कोई गराई ॥
दूरा दुरियै ग्राया दा मिलने दी ग्राशा रखदा ।
जाती दा ग्रो ब्राह्मण ग्राखै नाम सुदामा दसदा ॥
सुनियै कृष्ण जी छोड़ी चौंपड़ झट पट दौड़ी पौंदे ।
मित्र सुदामा गी गल लाया छम छम ग्रथरूं चौंदे ॥
राज सिंहासन बाली कण्डे पैरें दे हे कडदे ।
रुकमणी ग्रन्दा पानी, स्वामी ग्रापूं धोनै लगदे ॥
चौकी उप्पर स्नान कराईयै भोजन करन बठान्दे ।
महारानियां सट्टी उसदी सेवा करनै लांदे ॥
भगत सुदामा सोचै मेरा कृष्ण गी टपला पौंदा ।
जां इसदा ए ठाठ-बाठ सब मिगी गै सुखने ग्रौंदा ॥
प्रभु हे ग्रन्तरजामी ग्रोहदे मनै दी समझी सारी ।
हसदे हसदे बिच मखौलै ए गल्ल उसी उचारी ॥
भाबी साड़ी उन्दा कोई ग्रसेंगी हाल सुनाग्रो ।
उनें सुगात जो भेजी ग्रो बी खोलो मिगी खलाग्रो ॥

तण्डुलें वाली गण्ड सुदामा पिछड़ी पिछड़ी करदा ।
राज़ ठाठ दिक्खी शरमाया पान लगा हुन पड़दा ॥
कृष्ण महाराज ने हत्थ बदाइयै उसदी कच्छ टटोली ।
खिच्ची पोटली रखियै बान्दै तण्डुल ले फरोली ॥
पहली मुट्ठ भरी चौलें दी मूएँ दे बिच पांदे ।
हसदे हसदे खन्दे जन्दे सुआद बड़ा ऐ सरांदे ॥
दुई मुट्ठ बी खादी जैल्लै रुकमणी हत्थ पगड़दी ।
त्रैलोकी गै देन लगे ओ बोली ए झगड़दी ॥
अस बी दास तुसाड़े बैठे लम्मिआं आसां लाई ।
साड़े ताईं रैहन देओ किज रखो बिन्द बचाई ॥
विश्वकर्मा गी सुरगलोक दा सद्दिऐ हुकम सुनान्दे ।
अष्ट सिद्धियां नौ निधियां बी उस्सै कन्ने लांदे ॥
भगत सुदामा दे घर जाइऐ ऐसा महल बनाओ ।
त्रैलोकी दी सारी रचना उसदे बिच रचाओ ॥
रातीं बेल्लै उसदा पलंग बी अपने कच्छ डुहांदे ।
पटरानी गी सद्दी ओहदे पैर दवानै लांदे ॥
अद्धीं रातीं तोड़ी पिछलियां गल्लां करदे रे ।
इत्तै चाली उस गी उत्थें त्रै दिन बीती गै ॥
चौथे रोज घरै पासे दी कीती उन्न तेआरी ।
दूरै तोड़ी छोड़न आए आपूं कृष्ण मुरारी ॥
रस्तै टुरदा सोचै कृष्ण ने खातर बड़ी कराई ।
पर खरचै गी किज नईं दित्ता के दस्सां घर जाई ॥

इयै सोच मनै बिच मिथदा नगरी जाई पुजदा।
झौंपड़ी अपनी दा हुन उस गी कुतै नशान निं सुझदा ॥
बाग बगीचे चौहनें पास्सें अन्दर महल सुहाया।
चोबदार द्वारै पर पहरे दिक्खी मन घबराया ॥
आखै मेरे कंगले कन्नें ए के होनी बीती।
कुस सौहुकारै जां राजे ने कीती बड़ी कनीती ॥
मेरी झौंपड़ी पुट्टी-पट्टी अपना महल बनाया।
कन्ने जातक-टब्बर मेरा दर-दर होग रुलाया ॥
बाहर कडाया देसै शा जां कुतै न बन्दी पाए।
डरदा गल्ल कुतै नईं करदा अथरूं अक्खीं आए ॥
आखै निज्ज कृष्ण कच्छ जन्दा नवीं ए बिपता आई।
रैहने जुगड़ी कुल्ली हैथी ओह बी गई गुआई ॥
नेई साढ़सती बी सारी उमरी बिच निं दिक्खी।
मत्त जनानी दी मन्नी ए कृष्ण ने हुण्डी दित्ती ॥
कदें आखदा जां मैं औंदा रस्तै भुल्ली गेआं।
जां ऐ रात, में सुत्ता दा ए सुखना दिक्खन डेआं ॥
बिच दुआरी खड़ी सुशीला ने उसी दिक्खी लेआ।
दास दुड़ाए दित्ता अन्दर औने ताईं सनेया ॥
हत्थ जोड़ी ओह आखन, अन्दर जाने ताईं निं मनदा।
दरबाजे पर पुज्जा ओ बी डरदा थर-थर कम्बदा ॥
धर्म पत्नी फी आखर उसगी आपूं लैने आई।
कन्ने उसने उस रचनां दी सारी गल्ल सुनाई ॥

गल्ल सुदामा ने ए सुनिऐ अपनी होश संभाली ।
ब्रह्मानन्दा उमर बताई अग्गों उस इस चाली ॥

क्षीर सागर

आज्ञा लेई विष्णु दी राजा इन्द्र बली कच्छ आया ।
क्षीर समुन्दर मथने ताईं दौहनें मता पकाया ॥
देवतें-दैत्तें सारें रलियै मन्दराचल गी पुट्टेया ।
आपो अपनी शक्ति लाइयै जोरै कन्ने चुक्केया ॥
कईं बचारे उस पर्बत गी पुटदे घायल होए ।
कईं धरीड़ी आनदे उसगी रगड़ां खाइयै मोए ॥
अद्दे रस्तै सुट्टी उसगी मन्नी हार खड़ोंदे ।
विष्णु[1] जी दी उस्तति करियै देई दुहाईयां रोन्दे ॥
उन्हें दौनें दी सुनी दीनता होए भगवान सहाई ।
चुक्की पर्वत गरुड़ दी पिट्ठी उप्पर लेआ टकाई ॥
उसने इक डुआरी अन्दर क्षीर सागर जाई रखेया ।
जित्थें सागर मथने ताईं विष्णु ने सा दस्सेआ ॥

---

1 कियो सुमेर मधाना वासक नाग कर । खारा कियो समुन्दर रत्न निकाल कर ।
चन्द कलंक लगाया स्याह विच धर । वजीदा कौन साहब नूं आखे इञ नईं इञ कर ॥

बासकी नाग पताला सद्दी उसदी डोर बनांदे ।
इक लक्ख योजन लम्मा चैड़ा कच्छप रूप रचान्दे ॥
उस कच्छप दी पिट्ठी उप्पर मन्दराचल गी रक्खेया ।
बासकी नाग दी डोरी कन्ने भलेयां करिऐ कस्सेआ ॥
पूछल ते सिर पगड़ी लैता देवतें दैत्तें दौहनें ।
प्रथम गणेश दा पूजन करियै सागर लग्गा छलोने ॥
मन्दराचल ही बनी मधानी बासक डोर खचोंदी ।
तां कच्छुए दी पिट्ठी उप्पर खुरक जनेही होंदी ॥
पहली बारी छोलने कन्ने बिस हलाहल आया ।
उसगी सारें बिनती करियै शिवें दी भेंट चढ़ाया ॥
दुई बारी मथने कन्ने कामधेनु गौ आई ।
ओ भगवान ने किरपा करियै ऋषियें गी पगड़ाई ॥
त्री बारी जां छोलेया उसगी तां उच्चैश्वा आया ।
उस घोड़े गी राजे तांईं दैत्यें गी पगड़ाया ॥
चौथी बारी ऐरावत हाथी प्रगट होआ हा आई ।
देवराज इन्दर दे ताईं देवतें लेआ अपनाई ॥
पञ्जवीं बारी मथने कन्ने कौस्तुभ मणि सी आई ।
ओह विष्णु ने हार परोइऐ अपने गल लेई पाई ॥
छेवीं बारी पारिजातक कल्पवृक्ष प्रगटाया ।
उसगी लेइऐ दैत्यें सारें अपने हिस्सै पाया ॥
सतवीं बारी रम्भा नां दी अपसरा बाहर आई ।
उसने वैश्या बनियै नचदे अपनी उमर बिहाई ॥

अठवीं बारी लक्ष्मी उत्तम भूषण बस्त्र सजाई ।
कमलें दी मालां गी धारी बाहर समुन्दरा आई ।।
अति सुहामां रूप ओ दिक्खी दैत्य देवतें सारें ।
सागर मथना छोड़ी लक्ष्मी पास्सै हत्थ पसारे ।।
लक्ष्मी जी दी आज्ञा पाइयै पङ्गति इक बनाई ।
चुप-चाप होई बैठे आपो अपनै थाहरै जाई ।।
रतन जड़त इक सिंहासन जो पृथवी लेइयै आई ।
उसदे उप्पर लक्ष्मी जी गी दित्ता उनें बठाई ।।
गङ्गा जमना नर्मदा नदियां नारी रूप बनाई ।
अपना अपना जल सुन्ने दे कलशें बिच लेई आई ।।
कामधेनु ने बी उस बेल्लै पञ्चगव्य बनाया ।
पृथवी ने लक्ष्मी गी ओदे ने असनान कराया ।।
लक्ष्मी भूषणबस्त्र लाई रूप-शङ्गार बनाई ।
लैती हत्थ फुल्लें दी मालां पङ्गती दिक्खन लाई ।।
दैत्यें गी दिखदे हे इन्दर मन-चित बस नईं रौंदे ।
हंकारै दे बस हे होए द्वेष भाव नईं बौन्दे ।।
ऋषि मुनि तप-जोग कमाइऐ महां क्रोधें चलदे ।
नईं निक्के अपराधें पर बी शाप देने थों टलदे ।।
ज्ञानी लोकें सोधी आखे बिधि निषेध निं रखदे ।
प्रेमभाव नईं अन्दर इन्दै, सदा एकान्त ए बसदे ।।
हैन देवते सारे निर्बल जद जद बिपता पौंदी ।
नारायण दी शरणी जन्दे तां ओ दशा कटोंदी ।।

ब्रह्मा विष्णु इन्द्र कबेरे अपने स्वारथ भरदे ।
आपो अपनी पदवी कारण छल-बल रौंहदे करदे ॥
लोमश ऋषि गी दस्सी आखै ए बी बड़े बखैदे ।
आयु दा लेखा नईं कोई, कईं ब्रह्मा इस खादे ॥
सारी पङ्क्ती दिक्खी पिच्छों बिष्णो पासै आई ।
सर्व गुणें दी खान ओ दिक्खे गल जै माला पाई ॥
मानव-रूप समुन्दर धारी बाहर जलै दै आया ।
बिधि अनुसार नरायण कन्ने ब्याह लक्ष्मी दा कराया ॥
नौंमी बारी कन्या रूपें बारुणि बाहर आई ।
ओं सारें दी सहमति कन्ने दैत्तें लेई अपनाई ॥
दसवीं बारी जिस बेलै फी सागर मथना लाया ।
तां धनवन्तरी-चन्न ए जोड़ा अन्दरा बाहर आया ॥
वैद्य-रूप ईश्वर दा होइयै ओह अवतार खुहान्दा ।
शंख हरीड़ ते शल्य तन्त्र ते अमृत कलश उस आंदा ॥
इस्सै पर देवें दैत्यें दा झगड़ा होई पेया ।
दैत्तें कलश धन्वन्तरी हत्था बदिऐ खोई लेआ ॥
आपूं बिच्चें छिड़ी लड़ाई खिच्चम-खिच्ची होई ।
इक दूए दी मची दुहाई सुनदा नईं हुन कोई ॥
तां विष्णु भगवान ने उत्थें रूप मोहनी कीता ।
दैत्यें गी भरमाया ऐसा देवें अमृत पीता ॥
सूरज चन्न दमै पङ्क्ती दे सिरें दे कोल बठाये ।
उन्दे पास्सै विष्णु जेल्लै कलश ओ लेइऐ आये ॥

राहु दैत्य चलाक बड़ा हा, देवता रूप बनान्दा ।
सूरज चन्नै दे मंझ बेइऐ ओ बी अमृत पान्दा ॥
लेआ पशानी उसगी दौनें, दौनें रौला पाएया ।
चक्र सुदर्शन चलेया, उसदा सिर कप्पी लेई आया ॥
पर उस ने सा अमृत पीता सिर बड़्डें कद मरदा ।
झट पट उट्ठी करी खड़ोता रूप नमें सा धरदा ॥
मोहनी रूप प्रभु ने उस गी खीरी ए बर दित्ता ।
सत्तें ग्रैह दी पूजा कन्ने तुम्मीं लैगा हिस्सा ॥
सूरज चन्नै दा राहु ने अदूं दा बैर ऐ बसदा ।
ग्रैहणे दे बिच ब्रह्मानन्दा तां गै रौंदा ग्रसदा ॥

विष्णु पुराण

इक बड़ा सन्तोखी ब्राह्मण कदें सा काशी रौंदा ।
अपनै घर गै कथा बाचदा कुतै नाँ जन्दा औन्दा ॥
सेवकें कच्छा जे किज उस गी अनमंगेआ आई जन्दा ।
उसै बिच हा तृप्ति रखदा उऐ पीन्दा खन्दा ॥
उस्सै बांगूं सदाचारणी ओदी सी इक नारी ।
पतिब्रता धर्मै दी पक्की सेवा दी तत्कारी ॥
जङ्गल दिशा फरागत पाइयै प्रात कथा सा पढ़दा ।
दिन चढ़ने दे पिच्छों जाइयै जमना स्नान सा करदा ॥
इक बारी बिष्णु पुराण दी कथा जे करनै लाई ।
उसदे अन्दर शब्द 'विशम्भर' पढ़िऐ रोह गेआ आई ॥

पण्डत बी सा उस दिन तोड़ी त्रौं दिने दा फाकै ।
शब्दै गी उस पढ़ेया जेल्लै तां चित्तै बिच आखै ॥
विश्व दी जो ऐ पालना करदा ओ विशम्भर भिथेया ।
सन टब्बरै त्रौं दिनें दा फाकै झूंठा शास्त्र लिखेया ॥
लेई हड़ताल हत्थै बिच उसने झटपट अक्खर मेटे ।
विष्णु से उस बेल्लै जाइऐ क्षीर सागरै'च लेटे ॥
ग्रन्थ पलेटी लैंता पन्तै न्हौने गी टुरी पेया ।
विष्णु दा हड़तालै कन्ने मुँह भरोची गेआ ॥
लक्ष्मी पुच्छदी महाराज अज ए के होनी बीती ।
आखन लगे मैं जानी बुजी आपूं गलती कीती ॥
काहली पेई ओ दिक्खी उन्नेंगी पुछदी जां बरताना ।
आखन अजें नईं फुरसत मिक्की आइयै गल्ल सुनान्नां ॥
मारी टापी विष्णु झटपट गरुड़ सिंहासन बौंदे ।
बने सुदागर काशी दे बिच पंतै दे घर औंदे ॥
अनतोले अनमिने पदार्थ गड्डे भरी भरी आन्दे ।
घर पंतै दे आनी सुट्टे अन्दर बाहर भरान्दे ॥
पंडतानी पुच्छदी सेठै गी कुत्थों चीजां आइयां ।
पति नि रोएं होन ए दिक्खी इस गल्ला घबराइयां ॥
सेठ गलान्दा पंडतै कन्ने साढ़ी सांझ पुरानी ।
हत्थ जोड़ियै मेरे पास्या तुसें ए अरज सुनानी ॥
साङ्ग पाङ्ग ए सब न तुसाड़े उस्सै सेवक धरेया ।
जिसदा अज्ज सबेरे तुसें मुंह हड़ताला भरेया ॥

सेवकें कच्छा कम्में दे बस खुंज बी होई जन्दी ।
अग्गें अस बी चेतै रखगे औन निं देगे तंगी ॥
पंडतानी ने हड़ताला दी गल्ल निं समझी कोई ।
सेठ सयाना सनें नौकरें गेया उठी परतोई ॥
पंडतानी बी झट पट उट्ठीं चौका भाण्डा करदी ।
पंडतै दे घर पुजने तोड़ी भोग बनाईऐ धरदी ॥
नित्त नियम थों फारग होइयै पंडत बी घर औंदा ।
ठाठ बाट जेल्लै ए उसदी नजरी सारा पौंदा ॥
क्रोध करी पुछदा पत्नी गी कुत्थों चीजां आइयां ।
ते की मेरी बिन आज्ञा ए लैइऐ अन्दर पाइयां ॥
आखै कोई पुराना तुन्दा सेवक सा अज आया ।
उसने लेइयै नाम तुसाड़ा अन्दर बाहर भराया ॥
पंडतैं ने हड़ताला दा फी जिकर जदूं ओ सुनेया ।
अक्खीं अथरूं आए हत्था काण्डू छुड़की गेया ॥
पंडतानी गी आखन लगा ओ ते विष्णु है थे ।
सीस नुआइये ब्रह्मानन्दा पगड़ी की नईं लैते ॥

गोवर्धन पूजा

गोकुल बृन्दाबन दे सारे हर सालै ब्रजबासी ।
घर घर इन्दर-पूजन दे बिच मगन रैहन दिन राती ॥

कृष्ण जी दिखदे कत्तक चौदस दा दिन जेल्लै आया।[१]
आत यशोदा ने घर अपने पूजा ठाठ रचाया ॥
पुछदे माता अज्ज तुसें ए केहड़ी रीत मनाई।
आखै मिगी नि बेहल दना बी पिता गी पुच्छो जाई ॥
नन्द गलान्दे घर घर अज दिन इन्दर पूजा हुन्दी।
रसम कदीमी चलदी आई अस की जाचै खुंजी ॥
कृष्ण उनें गी परती आखन इन्दर पूजन छोड़ो।
जिदी कृपा उस पदवी पाई उस कन्ने चित्त जोड़ो ॥
प्रारब्ध नईं इन्दर मेटै नां कोई उमर बदान्दा।
इक सौ यज्ञ जो राजा करदा इन्दर - पदवी पांदा ॥
केईं बारी ए राज खुहाइयै रोदन करदा दिख्खेया।
ईश्वर अग्गें इसगी जाई मंगनी पौंदी भिख्खेया ॥
जद परमेसर दया करी इसदे सैहकारी बनदे।
तां मुड़ियै ए पदवी पांदा देवते राजा मनदे ॥
ए गोवर्धन पर्वत सारी बृज दा राजा मन्नेयां।
गौ ब्रैह्मण दी पालना करदा दुध दहीं अस खन्नेयां।
उस गिरिवर दी करो राधना इन्दर पूजन छोड़ो।
मनोकामनां होन पूरियां पिछली रस्मां त्रोड़ो ॥
ए सलाह उस नन्द मैहर ने अपने मन-चित लाई।
गोवर्धन पूजा करने ताईं डौंडी तुरत पटाई ॥

१—कृषिर्भूवाचकः शब्दो नश्च निर्वृति वाचकः ॥
तयोरैक्यं परंब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥ (स्मृति)

सुनी आज्ञा ब्रज दे बासी थाल मठाइयां भरदे ।
हर भान्ति दी लेई समग्री गिरिवर पूजन करदे ।।
गोवर्धन बी रूप धारियै भेंटा लैंदे सारी ।
दर्शन करिऐ खुशियां करदे बृज दे सब नर-नारी ।।
ज़ां इन्दरै गी देवतें रलिऐ सारा हाल सुनाया ।
अति गै रोएं होइयै उसने मेघराज बुलवाया ।।
हुकुम दित्ता तुस ब्रज पर जाइऐ जल-समूह ए छोड़ो ।
सने गोवर्धन धरती ओकी भलेयां करिऐ रोहड़ो ।।
प्रलय मचाने आलियां नुआं पवनां कन्ने लाइयां ।
ठाठ बाट लेई मेघराज ने बृज बिच धुम्मां पाइयाँ ।।
मोहले जेडियां फुङ्गां पौंदियां बिजली कड़कां मारै ।
अन्धी झक्खड़ अन्त नि कोई हलचल पेई गई सारै ।।
रोंदे - धोंदे बृजबासी सब कृष्ण दे द्वारै आए ।
आखन हुन गिरिवर गो आखो साहड़ी जान बचाए ।।
उन्ने हुकम ए दित्ता सारे उत्तै पास्सै आयो ।
रक्षा करग जरूर तुसाड़ी उसदी शरणी जाओ ।।
हाहाकार मचान्दे सारे गिरिवर दे कच्छ जाई ।
ग्वालबाल लैते संग सारे कृष्ण बी पुजदे आई ।।
खब्बै हत्थै दी चीची पर पर्बत आपूं चुकदे ।
ग्वाले बी सब सोटियां लैइयै नेड़ै आई ढुकदे ।।
उप्पर करिऐ हत्थ ओ अपने ढेकां देई खड़ोन्दे ।
दिक्खी चरज ए नर-नारी सब मनै च खुश हे होन्दे ।।

१ इक हत्थै ने पगड़ी मुरली मिठ्ठें सुरें बजान्दे ।
चक्र सुदर्शन गी हुन अपना करड़ा हुकुम सुनान्दे ॥
गिरिवर दी चौहनें पास्सें दा रक्षा करो खड़ोई ।
उप्परा औंदी भुत्रां तोड़ी फुंग पवै नईं कोई ॥
उप्परा पौंदे जलैंगी अपने तेजै कन्ने सुकाओ ।
इस्सै चाली गासा छाए सारे बदल मुकाओ ॥
सत्त दिवस ते सत्तै रातीं प्रलय दी बरखा होई ।
गास जखीरा सारा मुक्का बरखा गई थमोई ॥
निकली धुप्प लगा दिन लब्बन खुश होए बृजबासी ।
सारें किट्ठे रलियै आइऐ गल्ल कृष्ण गी आखी ॥
हुन तुस अपने हत्था दा ए पर्बत पुत्रा रखो ।
सत्त दिवस बीते बिन खादे थोड़ा ते किज चक्खो ॥
गल्ल सुनियै कृष्ण मुरारी पर्बत डोल टकाया ।
मात जशोदा दे नैनें हा नीर सुखै दा आया ॥

---

१ *सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरि जय जय हरि ।*
ऐसी बजाई कृष्ण कन्हैयां ने बांसुरी ॥
कितने तो इसकी सुनने से धुन हो गए धनी ।
कितनों की सुध बिसर गई जिस दिन वह धुन सुनी ॥
कितनों के मन से कल गई और व्याकली चुनी ।
क्या नर से ले के नारियां क्या मूढ़ क्या गुणी ॥
सब सुनने वाले कह उठे जय जय हरि जय जय हरि ।
ऐसी बजाई कृष्ण कन्हैया ने बांसरी ॥

पगड़ी हत्थ दबान लगी ओ आखै धन्न मुरारी।
[२]अट्ठें बरें दे बालक होइऐ पर्बत चुक्के भारी ॥
चमत्कार दिक्खी ए इन्दर डरदा थर थर कम्बदा।
कामधेनु लेई ब्रह्मानन्दा जाइऐ माफी मंगदा ॥

गजेन्द्र मोक्ष

क्षीर सागर दे अन्दर पर्बत सा त्रिकूट सुहाया।
दस हजार योजन सा लम्मा लिखने दे बिच आया ॥
उसदे त्रैवै शिखर लोहे सुन्ने चाँदी दे दसदे।
रतन जड़त इक उप्पर देव गन्धर्व हे दमैं बसदे ॥
रङ्ग बरंगे फुल्लें बाले बाग बगीचे लबदे।
योजनें बिच सुगन्ध समाई हीरे मोती जगदे ॥
बड़ा बिशाल सरोवर सोब्बै कमल फुल्लें दा भरेया।
मच्छ कच्छ अन गिनत बलाईं पैर निं जन्दा धरेया ॥
गजराज गजेन्दर नां दा हाथी उस पर्बत पर रौंदा।
जेठ महीनै तरेहाया दा पानी पीने गी औंदा ॥

---

२ ज़ाहिर में सुत वह नन्द जसोधा के आप थे।
वरना वे ही माई और आप ही बाप थे ॥
परदे में बालपन के यह उनके मिलाप थे।
ज्योति स्वरूप कहिए जिन्हें सो वह आप थे ॥
ऐसा था बंसरी के बजैय्या का बालपन।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैया का बालपन ॥

ज्हार हथनियां ते कईं बच्चे उसदे कन्ने चलदे ।
फुल्लें गी ओ मलदे दलदे आई सरोबर मलदे ॥
पानी पीन कुदाड़े मारन सारैं हल चल पाई ।
इक दिन ग्राह ने गजराजै दा पैर पगड़ेया आई ॥
दस हजार गजै दा बल गजराजै बिच सा बस्सेआ ।
पर सा ग्राह उस थों बी ज्यादै लिखने दे बिच दस्सेआ ॥
कदें गजेन्द्र ग्राह गी पगड़ी सुक्कै पास्सै धकदा ।
कदें ग्राह हा उसगी खिचदा पानी दे बिच त्रटदा ॥
इस्सै चाली लड़दे लड़दे बरस हजार बतान्दे ।
सने हथनियें बच्चे पिछड़े नस्सी पे करलान्दे ॥
हुन गजराज गेआ घबराई टब्बर गेआ सा सुट्टी ।
ग्राह कच्छा नईं होऐ खलासी आस जीने दी त्रुट्टी ॥
लगा हरि गी सिमरण ओल्लै शरणी ओदी होइऐ ।
आरत बचन करै सौ बारी बैन सुनान्दा रोइऐ ॥
तां गरड़ै पर चढ़ी प्रभु बी खिनें च पुजदे आई ।
"ब्रह्मानन्दा" ग्राह गी मारी गज दी जान बचाई ॥

ध्रुव-भक्त

उत्तानपाद दा पुत्तर ध्रुव सा पैहली रानी बिच्चा ।
मातरेयां ने पिता दी गोदी उस गी बौहन निं दित्ता ॥
तान्ना सुनियै मात सुनीति कच्छ गेआ ओ रोन्दा ।
डुसकी डुसकी साह निं फिरदा अत्थरुएं मुँह धोंदा ॥

आज्ञा दिन्दी माता, बेटा करो तपस्या जाई ।
जंगल पास्सै जन्दे अग्गों नारद मिलदे आई ॥
पञ्जें बरें दा जागत दिक्खो बन्नी लक्क खड़ोंदा ।
अति करी समझाया नारद नईं पिछड़ा परतोंदा ॥
परम श्रद्धा ईशर उप्पर उसदी दिक्खी जेल्लै ।
यमुना तट दी पारत पाई देई मन्त्र उस बेल्लै ॥
इक्कै जङ्गा भार खड़ोइयै ध्यान ईश्वर दा धरदा ।
इक महीना भर रेहया त्रियै दिन भोजन करदा ॥
सतवें दिन रेहया फी खन्दा अल्पाहारी होई ।
त्रै महीनें वृक्षें दे पत्तर, आनी देयै जे कोई ॥
पत्तरें दा बी त्याग करै जां चौथा महीना औंदा ।
पानी गै घुट दो घुट पीऐ तप करदा ओ रौन्दा ॥
पञ्जवें महीनै पानी दा बी सेवन छोड़ी दिन्दा ।
वायु भक्खै, ध्यानै दे बिच पौन निं दिन्दा छिण्डा ॥
छेमें महीनें वायु त्यागी साह बी नईं सा लैंदा ।
देह सुक्की लकड़ी जन होई कठन कष्ट सब सैंहदा ॥
प्राण-वायु बी जेल्लै उसनै अन्दर रोकी लेई ।
चलदी पौन रुकी तां त्रौन्नें लोकें हलचल पेई ॥
पवन बन्द जिस बेल्लै होई जीब जैन्त घबराए ।
ब्रह्मा सनें ए देवते सारे विष्णु दे कच्छ आए ॥
इक दम वायु बन्द होने दा कारण पुच्छेया जाई ।
विष्णु आखन लगे जे ध्रुव नें इक टक ताड़ी लाई ॥

गरड़ै उप्पर चढ़िऐ झट पट ध्रुव कच्छ आई खड़ोंदे ।
नेतर बन्द से कीते इस करि उसदी नजर निं पौंदे ॥

रूप प्रभु ने अपना उसदे अन्दरा कड्डी लेया ।
ध्यान त्रुट्टदे सार गै ध्रुव दा मन घबराई गेया ॥

अक्खीं खोली दिखदा अग्गें सन्मुख विष्णु आए ।
चरणें उप्पर सीस नुआन्दा मुंआ निं बोलेया जाये ॥

अपना शंख प्रभु ने जेल्लै ओदे कन्ने छुआया ।
तां फिर ध्रुवै ने 'ब्रह्मानन्दा' अटल सिंहासन पाया ।

राजा परीक्षत

राजा परीक्षत जङ्गलै दे बिच हरणै पिच्छे पेया ।
साज समाज सैं रेई गै पिच्छें साथ बी छुड़की गेआ ॥

बिना पानियें व्याकुल होइयै थां थां तुप्पन लग्गा ।
दूर दुराड़ै उस गी भृङ्गी ऋषि दा आश्रम लब्बा ॥

अपना आप बखानी दो घुट पानी मंगदा जाई ।
ऋषि हे बिच समाधि उसदी गल्ल निं सुनने पाई ॥

अति गै रोएं होआ ऐसा आपें नईं समान्दा ।
सप्प मोआ दा कोल गै दिक्खी ऋषि दे गल लमकांदा ॥

उसदा पुत्तर खेडै कौशकी नदी कनारे जाई ।
कुसै जागतै उसदे कन्नें तुरत ए खबर पुचाई ॥

कौशकी ने ए सुनी बारता अति क्रोधै भरेया ।
जल हत्थै पर लैता, लेइऐ मन्तर ऐसा पढ़ेया ॥

उसदे सत्तवें दिन तक्षक सप्प राजा गी जाई लड़दा ।
सुनी भागवत "ब्रह्मानन्दा" मुक्ति प्रापत करदा ॥

शिव पुराण

इक नगरवासी ब्राह्मण जाई काशी, बारां साल पढ़ियै विद्वान होआ ।
जदूं परतेआ आपने घरै पासै, तदूं उसदा बड़ा सनमान होआ ॥
धनवान आइयै इक नगर पौंदा कन्नें पण्डतै ए सलाह कीती ।
करी प्रेरणा प्रेम दे सैहत उसने, घर आपने कथा बठाई दित्ती ॥
दो त्रै महीने सन टब्बरै गी पंडत रेहा सा कथा बखान करदा ।
कथा होई समापत, दोआन्नी चाढ़ी पोथी उप्पर ओ सेठ प्रणाम करदा ॥
घर भारजा बलगदी पंडतै गी, कन्ने आण्ड-गोआण्ड प्रचार करदी ।
आखै अज कथा दा ऐ भोग पौना, थोना धन मता ए बचार करदी ॥
पंडत कथा गी बाचियै घर आया, अग्गों गल्ल चढ़ावे दी लाई दित्ती ।
उस खीसेया कड्डी दोआन्नी दस्सी हत्थ भारजा दे पगड़ाई दित्ती ॥
छण्डी मारेया ओस दुआन्नियां गी होइयै अग्ग बगोलड़ी बेई गई ।
आखै चंगी पढ़ी तुसें विद्या ए, नेई कथा दे सिर तां खेह पेई ॥
पन्त आपूं बचारा हा दुखी, आखै, एस बस्ती दी चंगी ऐ सेवकाई ।
हुन कुसै दै कथा नईं करन जाना, मन आपनै गल्ल में लेई ध्याई ॥
उज्जड़ खेड़ शिवाले च बाहर बस्ती, दुए रोज जाई प्रणाम करदा ।
अग्गें शिवें दै आसन जमाई बैठा, शिव पुराण दी कथा बखान करदा ॥
केईं दिन रेआ कथा बाचदा ओ, धनवान बी उस गी ताड़दा ऐ ।
आखै भेंटा पर होआ नराज पंडत अनुष्ठान करियै मिगी मारदा ऐ ॥

इक दिन पंडत अपने नियम कन्ने, जेल्लै कथा गी बाचने बेई गेआ ।
मगरो-मगर धनवान बी आई पुज्जा अते बाहर दरवाजे दै छुपी रेहा ।।

शिव कथा पर अति प्रसन्न होए मनै बिच ए गल्ल बचारदे न ।
इक ज्हार रपें दी भेंट देनी आला भैरों गी बल्लेंक मारदे न ।।

कल्ल होग भेंटा पूरी, आज्ञा जो, भैरो सत्त बचन करी आखदा ऐ ।
पंतै सुनी निं होई के गल्ल उन्दी ओ ते अपनी कथा गी बाचदा ऐ ।।

लोभी सेठ जो बाहर हा छप्पी बैठा उसने सुनी लेया सारी बारता गी।
झटपट ओ आपनै घर पुज्जा सारी गल्ल सुनान्दा ऐ भारजा गी ।।

आखै इक हजार दी कथा उप्पर शिवें चाढ़नी मिथी ऐ कल भेंटा ।
नफा पञ्ज सभें दा ऐ होई सकदा जे ते पन्तै दे कन्ने मैं करां ठेका ।।

दुए रोज थैली लैती पञ्ज सौ दी, पुज्जा पंतै दे घरै गी दौड़दा ओ ।
साष्टांग प्रणाम करी देऐ थैली, कन्ने हत्थ ओदे अग्गें जोड़दा ओ ।।

आखै कथा उप्पर जो ऐ भोग पौना ओदा मेरे कन्ने तुस करो ठेका ।
तुस पञ्ज सौ मेरे'शा नगद लेई लौ, मेरी होग जो चढ़नी ऐ कल भेंटा ।।

पंडत आखदा ओस जुआड़ी अन्दर नां मनुक्ख मनुक्खै दी जात लबदी ।
कुन करग भेंटा मेरी कथा उप्पर जित्थें दिनें दुपैहरीं बी रात लबदी ।।

सेठ शिवें दी गल्लै गी गुप्त रखी, ठेके आली गल्ला परा नइयों मुड़दा ।
थैली पंतै अग्गें उस खोली दित्ती अते मत्थै पास्से गी होआ दुरदा ।।

पंडत आपनै नियमानुसार जाई कथा करने गी जेल्लै ओ बेई गेया ।
धनी मनैं'च खुशी मनान लग्गा, आखै अज्ज मैं पञ्ज सौ लेई पेया ।।

पंडत भोला सा कथा जे होई पूरी, उट्ठी आपनी पोथी सम्हालदा ऐ।
धनवान ओदे अग्गें होई काहला हत्थ जोड़ियै अरज गुजारदा ऐ॥

आखै करो कथा बिन्द होर थोड़ी, दिक्खो पोथी उप्पर भोग पेई गेया।
ओदी गल्लै पर होइयै हरान पंडत मुड़ी कथा गी बाचना बेई गेया॥

थोड़ा चिर उसने कथा होर कीती जेल्लै दिखेया भोग नि कोई पेया।
तुरत पोथी पलेटिऐ आपनी ओ घरै पास्सै गी तुरत परतोई गेया॥

धनियै भैरों पर बड़े नराज होइयै, उच्चे बोलियै तोड़ बतोड़ कीता।
आखै एदिया कालिया मूरतै ने मेरा ओका बी पञ्ज सौ चौड़ कीता॥

अक्खीं लाल करियै उप्पर उच्छलदा ऐ कन्ने कस्सिऐ लत्त बी मारदा ऐ।
भैरों मूर्त्ति बिच्चा दा प्रगट होइयै पगड़ी गिट्टे या पुट्ठा पटकारदा ऐ॥

हड्डु गोडे सै लहु लुहान होए कन्ने मुँह मत्था लालोलाल होया।
लाई जोर बतेरा छड़कान लग्गा गिट्टा छुड़कना हुन महाल होया॥

रोइयै हाल दुहाइयाँ ओ पान लग्गा, हाय ! हाय ! के चरज ए होई गेया।
सिर भुआ दे कन्ने घसड़ोंन लग्गा अते गिट्टा सै उप्पर टंगोई गेया॥

शिव जी भैरों दा नां लेई पुच्छन लगे, उस पंतै गी भेटा ऐ किन्नी होई।
आखै पञ्ज सौ ते प्रातःकाल तरेया पञ्जें समेंदा नईं हुन फिकर कोई॥

जे कर जान बचानी ऐ एस अपनी, बाकी रकम बी आपूं ए करग पूरी।
नईं तां जींदा नि इसगी जान दिन्दा, औं छोड़ंग पुजाइयै गै जम्मपुरी॥

घर भारजा बी चिर बलगदी ऐ, पिच्छों तुप्पदी उसगी आई गेई।
नेड़ै पुज्जियै चरज ओ दिक्खदी के, बिच मन्दिरै हाल दुहाईं पेई॥

धनी आखदा देर नि लाएयां रत्ती, तौली घरैंगी परतिऐ जा अड़िए।
पञ्ज सौ रुपे लेई अन्दरा दा, औंदे पंतै गी कन्ने लेई आ अड़िए ॥
जदूं पति दी जिन्दू पर बनी दिक्खी, ओ दौड़दी घरै गी मुड़ी पेई।
पञ्जें समें दी अन्दरा गण्ड बद्दी, लेई पंतै गी कन्ने ओ टुरी पेई ॥
नक रगड़दा ऐ भेंटा रखिऐ ओ, ताँ भैरो बी गिट्टेगी छोड़दा ऐ।
'ब्रह्मनन्दा' लेई कन्ने भारजा गी सेठ घरै पासें मुँह मोड़दा ऐ ॥

राम स्तुति

रावण मारी लंका जित्ती, लशकर बिदा कराये।
सैहत सीता दे रामचन्द्र जी बिच अजुध्या आए ॥
चारै बेद बी प्रगटे भाटें दा ओ रूप बनान्दे।
राज सभा बिच आपो अपनी बख बख स्तुति सुनान्दे ॥

साम वेद

सामवेद होई अग्गें पैहलें जय जयकार बुलान्दा।
रामचन्द्रें दै सन्मुख जाइऐ अपना सीस नुआन्दा ॥
सगुण रूप गी धारण कीता भक्तें दे हितकारी।
प्राप्ति कारण सैहज बनाई (उ) पासना बिधि तुसाड़ी ॥
अति बिस्तार गी प्राप्त करियै त्रैगुण रूपी माया।
अखण्ड भुजें दी शक्ति द्वारा रावण नाश कराया ॥

निराकार परब्रह्म प्रभु माया थों पार न वसदे ।
ज्ञानी जन तद्रूप जे होइयै हृदय दे बिच रखदे ॥
नर अवतार लेई पृथवी पर भक्तें दे कष्ट मटाये ।
उपमा रहित ऐ रूप, नि ओदा बरनन कीता जाये ॥
दीनें दे तुस पालनकर्ता परम धाम अविनाशी ।
सीस झुकाई 'ब्रह्मानन्दा' साम वेद गल्ल आखी ॥

यजुर्वेद

अद्भुत माया, भेद नि पाया, अविद्या नाम खुआया ।
त्रैलोकी बिच उसने अपने गुणें दा जाल बछाया ॥
देवते असुर नाग नर-नारी जड़ चेतन जो गाये ।
जग-रूपी माया दे अन्दर सारे इस भरमाये ॥
काल कर्म गुण भार ए भरियै सबनें दे सिर रक्खे ।
चौरासी लख जोंनियें अन्दर जोरा जबरी पक्के ॥
जिस पास्सै तुस होई दयालु नजर सवल्ली रखदे ।
उसदे काल तें गुण कर्में दे त्रैवे ताप न नसदे ॥
जगत अधार दयालु स्वामी दयादृष्टि हुन करो ।
बार बार प्रणाम तुसेंगी दुःख दलिद्दर हरो ॥
ए बिनती प्रेमै ने करियै यजुर्वेद सुख पान्दा ।
करी समाप्त स्तुतियाँ 'ब्रह्मानन्दा' सीस नुआन्दा ॥

अथर्व वेद

जिन चरणें गी पूजी शिव ब्रह्मा ने खुशी मनाई ।
ऋषि दी पत्नी अहल्या छुइयै मानव जोनी पाई ॥
जिन चरणें दे बिच्चा निकली गङ्गा छर छर करदी ।
पाप नाशनी पदवी पाइयै ब्रह्मलोक बिच बगदी ॥
भागीरथ ने करी तपस्या मातलोक बिच आन्दी ।
देवते जिसदी बन्दना करदे पाप नाशनी खुआन्दी ॥
जिन चरणें बिच ध्वजा कलश ते अंकुश शोभा पान्दे ।
चिह्न कंवल न बने दे, कण्डे चुब्बन लब्बन बान्दे ॥
जिन चरणें दी किरपा होए छुटदा जम्मना मरना ।
बार बार में सीस नुआइयै उन्दीं बन्दना करना ।
भगती बिन ए ज्ञानी पाइऐ ज्ञान हङ्कारी होन्दे ।
ब्रह्मलोक गी प्राप्त हुन्दे फी पिछड़े परतोन्दे ॥
आशा दे बिन होइऐ जेड़े सच्ची भगती करदे ।
उऐ ज्ञानी माया दे इस भव सागर गी तरदे ॥
अथर्व वेद इस चाली भक्ति भाव गी हिरदै धरदा ।
'ब्रह्मानन्दा' सीस नुआई स्तुति समापत करदा ॥

ऋग्वेद

संसार-रूप ए रुक्ख तुसाड़ी गुप्त विभूति आखी ।
अनादिकाल प्रवाह-रूप थीं पद इसदा अविनाशी ॥

चारैं त्वचां इस दियां जेड़ियां चारैं वेद सुनान्दे।
अन्तःकरण चतुष्टय अथवा चार अवस्था गांदे ॥
कंईं ते सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग करिऐ मिथदे।
बिच बिच कोई धर्म अर्थ ते काम मोक्ष गी दिखदे ॥
कंईं ओंकार ते सत् रज तम गी त्वचा दा रूप न मिथदे।
काम क्रोध ते लोभ मोह हङ्कार गी शाखां दसदे ॥
कंईं शाखें गी जन्म ते वृद्धि ते परिणाम दखांदे।
क्षीण ते वृद्ध अवस्था मरना ए छे बर्ग गनान्दे ॥
छें शास्त्रें गी कंईयें थाह्‌रें शाखा करियै मिथेया।
कुतै ए पञ्ज ज्ञान इन्द्रियां छेमां मनै गी लिखेया ॥
कुतै २ कोई मनैगी छोड़ी पञ्ज तत्व गनान्दे।
इक इक ने पञ्ज विषय रलाई पञ्जी तत्त्व बनान्दे ॥
करम वासनां नेकां इस रुक्खै दे पत्तर दस्से।
कौड़े मिट्ठे फल संकल्पें दे न बक्खो बक्खे ॥
इस रुक्खै दै उप्पर फलची बेल-रूपी जो माया।
संकल्प-रूपी उस दे पत्तरें दी पेई जीवें पर छाया ॥
इक्कै पाद बिभूति दे बिच चौदां लोक समान्दे।
पाद त्रै आपूं सुख-रूपी संज्ञा मुक्ति पुआन्दे ॥
जेड़े लोक तुसें गी परब्रह्म अद्वैत अजन्मा मिथदे ॥
निर्गुण माया रैहत अगोचर अनुभव दे बिच दिखदे ॥

उऐ समरथा सार बखानन इस चाली जो ध्यान्दे ।
सगुण-रूप गी ब्रह्म आखियै नित अस रैहने गान्दे ॥

मन क्रिया बचन बकार गी तजियै भक्ति गी मुख आन्दा ।
ऋग्वेद स्तुति करि 'ब्रह्मानन्दा' अपना सीस नुआन्दा ॥

—:o:—

❀ पैहला श्रवण प्रकरण समाप्त होआ ❀

* मनन प्रकरण *

भक्ति मारग मुक्ति ताईं रस्ता सुगम बनाया ।
पातञ्जलदर्शन बिच दुआ साधन होर सुनाया ॥
यम ते नियम ते आसन प्राणायाम ते प्रत्याहारा ।
धारना ध्यान समाधि ऐ 'अष्टांग योग' बिस्तारा ॥
जीव-मात्र दे प्राण निं हरदे, सच्च निं मुआं छोड़न ।
चोरी बाली आस निं रखदे, ब्रह्म चरण निं त्रोड़न ॥
भोग समग्री तुच्छ जानिऐ लालच नईं बदांदे ।
अगला रस्ता सोधने वाले पञ्ज ए 'यम' न खोआन्दे ॥
अन्दरा बाहरा होई पवित्तर मित्र-भाव निं त्रोड़ै ।
प्राप्ति दे बिच सदा सन्तोषी नियम निं हत्था छोड़ै ॥
सुखकारक ए आसन रक्खे समता बिच बछाया ।
प्राणगति गी रोकी देना प्राणायाम सुनाया ॥
इन्द्रियें विषयें कोला हटाई चित्त अनुकूल बनांदा ।
पूरा रौहना एस अवस्था प्रत्याहार खुआन्दा ॥
नाभि चक्कर ते नासाग्नि चित्तै गी स्थिर करना ।
बार बार उस्सै दे कारण धारना पक्की धरना ॥
जिस देसै बिच चित्त जमाया करी एकाग्र लाया ।
ज्ञान निरन्तर जोत जलै जे तां ओ ध्यान खुआया ॥
उऐ ध्यान-रूप शुन्न होई केवल अर्थ प्रकाशै ।
योगशास्त्र करदा ऐ नखेड़ा, उसी समाधि आखै ॥

ए रस्ता पर फेरें बाला सिद्दा नईं पुजान्दा ।
प्राण रुके तोड़ी नईं भासै उतरे जग दरसान्दा ॥

प्राण मनै ने आपूं बिच्चें पक्का मता पकाया ।
इक दे रुके रुकी जा दूआ ऐसा नियम बनाया ॥

प्राणें दी गति पार्वती गी शिब जी नें समझाई ।
स्वरोदय अन्दर इक इक करियै झलेयां लिखी टकाई ॥

इड़ा बायां ते दक्षिण पिंगला नासें दे सुर दस्से ।
बिना सन्देह दौहनें दे अन्दर चन्द्र सूरज बस्से ॥

दौहनें सुरें दी सन्धि दा नां सुषुम्ना आखी सुनाया ।
शंभु दा उसदे बिच बासा, 'हंस' शंभु दरसाया ॥

छोड़दे श्वास हकार गी जापै खिचदे समें सकारा ।
शक्ति-रूप सकार गी समझो ते शिब-रूप हकारा ॥

दस औंगल प्रवेश सुनाया बारां बाहर मिनदे ।
इक्की हजार ते छे सौ पूरा दिनें रातीं बिच गिनदे ॥

पवन काया दी नगरी अन्दर पैहरेदार खुआन्दा ।
करी अभ्यास जो प्राणगति गी औंगल इक घटांदा ॥

निष्क्रामता दा प्रवेश ते आनन्द दो घटाये ।
कवि शक्ति त्रीयै, चौथे बिच बाचा सिद्धि पाये ॥

पञ्जमें दे बिच दूर दृष्टि, छेमें गासा चलना ।
चण्डबेग सत्तमें बिच, अठमें अष्ट सिद्धि दी गणना ॥

नौमें बिच नौ निधियाँ, दसमें बहु-रूपता दसदे ।
ञारवें छाया अभाव, बाहरवें हंस-रूप होई बसदे ॥

पैरें दे नेंहें शा लैइयैं सिरे दी चोटी प्राड़ी ।
होयैं प्राण देहैं बिच पूरख मौंत बी जन्दी हारी ॥
जो जो कर्म कमाये पिच्छें पूर्ण पुन्न जां खोटे ।
इक इक जीवैं पिच्छैं ओ न पर्बतें बांग खड़ोते ॥
बेर्दें दे बिच 'संचित' इन्दा नाम सुनाया ग्राखी ।
भोगे बाज कदें नईं हुन्दी लक्खां जन्म खलासी ॥
जिआं बूटें उप्पर हुन्दे फल लमके दे रौंदे ।
पक्की जान तां टपका लगदा इक इक करिऐ पौंदे ॥
इयां गै संचित कर्मैं दा फल जो पकदा जाई ।
इस देही ने उस उस जोनि बिच पौना ऐ जाई ॥
इयां गै इस योगी दे बी संचित कर्म हजारां ।
अपने पिच्छें खड़े ओ लबदे सारे लाई कतारां ॥
१ योगी फल गी प्राप्त होइऐ काया पलट करान्दा ।
पृथवी उप्पर बिचरन कारण नेक शरीर बनांदा ॥
केईं रूपें ऐ विषय भोगदा, ठाठ बाठ ने चलदा ।
केइयें कन्ने त्यागियें बांगू उग्र तपस्या करदा ॥

१—आत्मनो वै शरीराणि बहूनि भरतर्षभ । योगी कुर्याद्बलं प्राप्य तैश्च सर्वैर्महीं चरेत् । प्राप्नुयाद् विषयान्कैश्चित् कैश्चिदुग्रं तपश्चरेत् । संक्षिपेच्चपुनस्तानि सूर्यो रश्मिगणानिव ॥
(ब्रह्म सू० १–३–२७)

सूरज किरण समूह अपने गी जिश्रां समेटी लैंदा ।
इस्सै चाली योगी करदा फी बी इकला रैन्दा ॥
संचित कर्म दा क्षय करने गी योगी योग बदान्दा ।
इस्सै जन्मैं दे बिच अपना लेखा मूल मुकांदा ॥
कुक्कड़ सूर ते देवता कुत्ता, राजा कुष्टी रोगी ।
योगमाया ने धारी सक्कै शरीर हजारां योगी ॥
उन्दे बिच गै भोगी लैन्दा पुन्न पाप बिस्तारे ।
अग्गे जन्म जो लैने से उस इत्थें लेई ले सारे ॥
चोला छोड़ी प्रापत करदा, परम धाम गी जाई ।
'ब्रह्मानन्दा' घट घट बासी ब्रह्म अनन्त समाई ॥

देव लोक

[1]त्रौं बेदें दे रोचक बचनें ऐसी बुध भरमाई ।
लोकें परम पुरुषार्थ अपना सुरग गै लेया बनाई ॥
पर उस लोकै दै बासी बी रोने इऐ रोंदे ।
इक दुए गी बसदे रसदे दिखदे जली खड़ोंदे ॥

१— त्रैविद्या मां सोमपा पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते ।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान् दिवि देव भोगान् ॥
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयी-धर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥

इतना गै बादा उन्दे बिच, मुंआं नि आखना पौंदी ।
जिस चीजा दी इच्छा करदे हाजर होई खड़ोंदी ॥
पर बड़ा स्यापा दौं गल्लें दा उस जोनी बिच पेइयै ।
अग्गें लई किज करी नि सकदे देवलोक बिच रेइयै ॥
घोर तपस्या करने कारण जो सुर लोक पधारे ।
उनें गी चेतै रौंदे अपने पुन्न समूह न सारे ॥
लक्खां बरे ओ सुरगै अन्दर भोग भोगदे रौंदे ।
जिस बेल्लै पुन्न मुकदे औन्दे पिट्ट स्यापे पौंदे ॥
देवलोक दे बसनीकें गी उत्थें रोग निं लगदे ।
जलमय होन देह ओ बरफू बांगूं पिघली बगदे ॥
फी औंदे ओ मातलोकें इच करदे खूब दुहाई ।
खोते, सूर ते कुत्ते किरले नीच जोनियां पाई ॥
जियां मिट्टी दे भांडे चा घ्यो सब कड्डी लैंदें ।
भलेयां पूंजी पांजी लैन्दे खाली चघरे रैंदे ॥
भलेयां थिन्द निं जन्दा-उन्दा रचया-पचया रौंदा ।
जिस बेल्लै कोई धुप्पा छोड़ै तां फी पिघली पौंदा ॥
इयां गै जो घोर तपस्वी सुरगलोक जाई रैंदे ।
अपने संचत पुन्नें गी ओ भलेयां भोगी लैंदे ॥
पाप पुञ्ज पिछले लेई सारे पुन्न लेश किज रैंदै ।
तम प्रधान जोनी बिच पेइऐ कष्ट करोड़ां सैंहदे ॥
इक साधक इक बारी करदे सुरग जाने दी चरचा ।
गासा उप्पर बाजे बजङ्गन होग फुल्लें दी बरखा ॥

पर जद उसने देह छोड़ेया बाजा निं बज्जा कोई ।
नाँ गासा दा फुल्लें दी गै बरखा कोई होई ॥
इस गल्ला दे किज दिन पिच्छों महात्मा जी इक आए ।
चेलें उन्दे अग्गें अपने गुरु दे बचन सुनाए ॥
उनें आखेया उस गल्लै गी झुठ करी मत टालो ।
जिस थां उनें शरीर छोड़ेया उत्थें गै मिगी ब्बालो ॥
जिस बेल्लै ओ उस्सै थारै जाई महात्मा बौंदा ।
बैरी कन्ने बैर इक पक्का उसदी नजरी पौंदा ॥
त्रोड़ी झट मंगाया, उसदा सिकड़ा बक्खी कीता ।
उस दे अन्दर बैठा सा इक कीड़ा चुप चपीता ॥
जिस बेल्लै ओ कीड़ा मारेया होआ अजब तमाशा ।
गण गण उप्पर बाजे बज्जे बरसे फुल्ल आकाशा ॥
१ अन्त समै बस ध्यान गुरु दा बैरें पास्सै गेआ ।
'ब्रह्मानन्दा' बासना कारण कीड़ा बनना पेया ॥

राजा भरथरी

भरथरी राजै लेई फकीरी जङ्गल डेरा लाया ।
घोर तपस्या करदे दिक्खी आइऐ बरती माया ॥
इक दिन इक शकारी ने हिरणी पर तीर चलाया ।
ओ उस मारी, बच्चा नसदा भरथरी पासै आया ॥

१— यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ गी० ८।६ ॥

दिक्खी उसी देया जे आई, मन ममता ने भरदा ।
शरण आए दी रखेया करनी धर्म ऐ, सोच ओ करदा ॥
अपनी झौंपड़ी उसगी रखी पत्तर घा खलान्दा ।
खीर ओ मिरग स्याना होआ जङ्गल चुगनै लांदा ॥
दिनें चरै ओ जङ्गल जाइऐ सञा कुटिया औना ।
राजे कोल नरम घा उप्पर मजे दी निन्दर सौना ॥
इक दिन मिरग कुटि नईं आया भरथरी गे घबराई ।
सारा जङ्गल छानी मारेया तुपदे रात लंघाई ॥
उस फड़ाके गै दिक्खी ए माया दी चतराई ।
अन्त मता सों गता भावना, हिरण ओ बनेया जाई ॥
उत्थें ओ अपनी टोली दा होई सिरताज खुआन्दा ।
पिछले संस्कारें गी लेइयै अपना हुकम चलांदा ॥
पर उसगी चेतै सी करनी जून पशु जिआं पाई ।
इस कारण उस रक्खेया अपना पक्का नियम बनाई ॥
घा चरिऐ उस हरणें कन्ने लैना पेट भराई ।
रज्ज होया तां इकले गै टिब्बी पर बौना जाई ॥
इस्सै चाली रेआ बरागी बनिऐ जनम बतान्दा ।
देह छोड़ी ब्राह्मण घर जन्मी ओ जड़ भरथ खुआन्दा ॥
उत्थें बी नईं रोएया ओ हस्सेया, गल्ल कोई नईं करदा ।
नेकां कष्ट भराएं दित्ते ओ सब मौनी जरदा ॥
मन भोजन कोई अग्गे छोड़ै मन गै उस खाई लैना ।
भुक्खे गै भाएँ म्हीने बीतन मुंआ दा नईं कैहना ॥

इक बारी भीलें दा राजा जग करने दी मिथदा।
कालो गो खुश करनें गित्तै बल मानु दी तुपदा ॥
मात पिता तों चोरी भाई उस गी बेची आया।
भीलें काली दे सम्मुख फी उस गी खड़ा कराया ॥
खण्डा गूरी भीलराज ओ जड़ भरथै गी आखै।
तुम्मी अपना इष्ट सिमरी लै जो तेरै ए पासै ॥
उस अग्गों हां हूँ नईं कीती चुप गै रेआ खड़ोईं।
राजा खण्डा लगा चलान तां काली परगट होई ॥
कोप अति करी काली माता सिर राजे दा बडदी।
हत्थ जोड़ी जड़ भरथ गी आखै, नैंनें दा लऊ कडदी ॥
महाराज ए तुसें ऐ चंगा मौनी नियम बनाया।
इस बेल्लै ते बोलना सा जाँ सिरै प' खण्डा आया ॥
जे इक तोपा तुन्दे लऊ दा मेरे उप्पर पौंदा।
सत्त पतालें मेरे जुगड़ा थार कुतै नईं रौंदा ॥
इक दिन खेती करदे भाइयें दिखेया जल नईं रुकेया।
जड़ भरथै गी लम्मा पाइऐ गारा उप्पर थुप्पेया ॥
बन्न बनांदे रात जे होई आपूं सब घर आए।
मात पिता ने पुच्छना कीती टाल मटोल कराये ॥
पिता गेआ दिन चढ़दे खेतर जड़ भरथै गी दिखदा।
पानी बिच सा डुब्बा दा ओ मुँह सा बान्दे तिसदा ॥
उसगी जाइयै बाहर कड्डियै पिण्डा साफ़ कराया।
अति दुःखी होई रोदन करियै मुंआं बचन सुनाया ॥

जदूं दा तूं साड़े घर जम्मेयां नां हस्सदा नां रोंदा ।
भाई तेरे कष्ट पजान्दे ए नईं असें जरोंदा ॥
तूं कोई भूत-प्रेत एं बच्चा, पता निं लगदा कोई ।
जागत आखै लगदे नइयों, कुसी सुनाचै रोई ॥
दुःखें भरोचा बचन पिता दा सुनिऐ बिन्दक हसदा ।
रोंदे गी फी ज्ञान सुनान्दा भेत मनै दा दसदा ॥
नां कोई मात-पिता नां पुत्तर नां कोई भैना-भाई ।
'ब्रह्मानन्दा' ए सब माया बैठी जाल बछाई ॥

माया

साकार ब्रह्म दे शारे पर जो माया जगत रचान्दी ।
बांग कलन्दरै डुग-डुगी चाढ़ी सौ-सौ नाच नचान्दी ॥
जियां जलै पर तरदी बेड़ी पवनै दे बस्स हुन्दी ।
जोर मलाह बी लाई हुटदे रुकदी नां थमोन्दी ॥
छोड़ी सेध कुसेधा पौन्दी पुट्ठी फी परतोंदी ।
बिच बैठे बी डोबी मारै आपूँ थल्लै बौंदी ॥
[१]इयां गै जिस इन्द्री कन्ने मन बी जाइऐ जुड़दा ।
जोर बथेरा लान बबेकी पर नईं पिछड़ा मुड़दा ॥

१– इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ गी० २।६७ ॥

बुद्धि होऐ परम सयानी तां ओ साम्बी रखदी ।
नईं तां उसी ए डबरी सुटदी, जुगतो होर नि चलदी ॥

इन्द्रियें दे देवतें उन्दे द्वार न डेरे लाए ।
बिषय भोगें पर प्रीति उन्दी इयै कम्म सुहाए ॥

जिस इन्द्री दा विषय सरूपी वायु सन्मुख औन्दा ।
उऐ देवता ओ दरवाजा खोली झट खड़ोंदा ॥

ज्ञानै वाला दीया टमकै, माया दिक्खी लैंदी ।
छलबल करिऐ पुजदी नेड़ै, ताड़ा दे बिच रैंदी ॥

इक फनाकै दीया स्हाली, करड़ियां मुश्कां कसदी ।
आपूं छिण्डै जाई खड़ोन्दी खिड़ खिड़ करियै हसदी ॥

कईं जन्में दा फेर ऐ पौंदा, इस दी हुन्दी हासी ।
ए माया दे कम्म कबल्ले औखी होन खलासी ॥

बिनां कोहलुएं पीड़ी सुटदी बिना पुड़ें ए पींदी ।
बिना डुगडुगी नाच नचांदी, इनें सुखें बिच जींदी ॥

जड़ चेतन इस माया ने दो रूप न लेदे धारी ।
जड़ दा रूप रुपेया पैसा, चेतनरूप ऐ नारी ॥

जिस दे आश्रै जाइयै रौंदी उसगी मोही धरदी ।
शास्त्र बी ए भेद सुनान्दे श्रुति प्रमाण ए करदी ॥

पुन्नवान कोई बड़ा सूरमा इसदा सामना करदा ।
अनत्रुट भजन करै दिन रातीं तां मांया गी तरदा ॥

अपने जीवपने गी त्यागी ब्रह्म दा दर्जा पान्दा ।
चौदें लोकें दा ओ स्वामी 'ब्रह्मानन्द' सुनान्दा ॥

इद्रियां

हिरण श्रोत्र इन्द्री बस होई अपनी सुद्ध भूलान्दा ऐ ।
सीटी व्याधै दी ओ सुनियै खुशियें नई समान्दा ऐ ॥
मारी कुञ्जियां आई खड़ोता उसने तीर चलाया ऐ ।
सीटी पिच्छें जान गवाई फल मोहा दा पाया ऐ ॥
हाथियें दे शौकी बिच जङ्गलें खन्दकां जाई कडान्दे न ।
घा दे छत बनान्दे नकली हथनियां कोल खड़ान्दे न ॥
हाथी दिक्खी रेही नि सकदे औन कुदाड़े मारी ओ ।
हथनी कन्ने खैहरन लगदे अपनी खारो खारी ओ ॥
इन्द्रियें बस होइऐ पौन्दे गड़ गड़ गत्तें जाईए ओ ।
छे छे महीने फाके लगदे सुध बुध गे भुलाई ओ ॥
जित्थें लाट दिये दी लबदी पक्खरें दे दल आई जन्दे ।
लक्ख हटाए उनें नि हटना, अपनी जान गुआई जन्दे ॥
फंग जली गे पक्खरें दे पर पिच्छें नई परतोइयां ओ ।
नेतर इन्द्री दै बस होइयै जलिऐ कोले होइयां ओ ॥ १

१—दीपक देख जले परवाना उस ए की मजहब पनछाता ।
आशिक दीन मज़हब नहीं रखदे, उन्हाँ दरद खुदा कर जाता ॥
जिस ए इल्म भुलाया दिल थों उस लद्धा यार गवाता ।
हाशम तिन्हां ही रब्ब पछाता जिन्हां अपना आप पछाता ॥
जिस बिच चिनग बिरहों दी पेइय्या तिस नाल लहु मुख धोता ।
शमां जमाल ढिठा परवाने अते आन शहीद खलोता ॥
जां मनसूर होएया मद माता तद सूली नाल परोता ।
हाशम इश्क अजेहा मिलया जिस दीन मज़हब सब धोता ॥

भौंरे कलियें बिच पलटोए अन्दर गुन गुन करदे न ।
बाहर जाने दा चेता भुल्ला जानी आपूं मरदे न ॥

कलियें पत्तर लैंते मेटी करणी चेतै आई ऐ ।
घ्राण इंद्री दै बस्स होए कैदें जान गुआई ऐ ॥

कुण्डी डोर पलेटी आटा फाई सुटदे बिच पानी ।
जीव्ह सुआदें घेरी मच्छी अपनी मौत नईं जानी ॥

कुण्डी थल्लै पुज्जी नईं ते पौंदी गै निङ्गली लेई ।
ओ जाइयै तालु बिच चुब्बी दुस्सर गै निकली गेई ॥

लेई शकारी बाहर मारदा बट्टे पर पटकारी ऐ ।
जिन्द निकलने बिच निं औंदी मारै फिरी कटारी ऐ ॥

इक इक इन्द्री दै बस्स पेइयै पञ्ज उपरले मोए न ।
जिनें पंजें गी सेवन कीता ओ कद्दूं बचे नरोए न ॥

जियां रेशम भरेया कीड़ा आपूं करदा रचना ऐ ।
बाहर औने दा राह निं रखदा कीयां उस की बचना ऐ ॥

रेशमखानें जाइयै दिक्खो गड़ गड़ पानी गड़कै दे ।
टोकरे भरी-भरी खुपटियां उलटन तड़ तड़ करिऐ तड़फै दे ॥

इनें अक्खीं गै नरक दिक्खी लै ओकड़ा दिखगा मरिऐ तूं ।
गुरजां पौंदे बार निं औनी पिटगा हा हा करियै तूं ॥

सूली उप्पर चढ़ना कइयें कईं आरे ने चरोने न ।
शेरें सप्पें खानें केईं, कईं तेलै बिच्च तलोने न ॥

शास्त्रें मुख नरकें गी लिखिऐ बारां गिनी सुनाए न ।
पापियें दे करमें गी लेइऐ इक थों इक सुआए न ॥

उन्दे बिच हर वेल्लै रौंदा हाहाकार गै मचेया ऐ।
बारवां 'रौरव' सबनें कच्छा अति भयंकर बनेया ऐ ॥
ए सुख, जैहर भरोचे लड्डू स्वाद सुहाने लगदे न ।
खादे पिच्छों होन दुखादे नासें कच्छा बगदे न ॥
भूत जिसी ऐ लग्गी जन्दा उस नचना गै नचना ऐ।
हौन जिसी पर पञ्ज ए लग्गे उस कियां करि बचना ऐ ॥
बुलबुल फुल्ल खिड़े दे दिक्खी लेई डोआरां पौंदी ऐ।
रंग-बरंगी बोलियां बोल्लै आकड़ी आकड़ी बौंदी ऐ ॥
चार चुफेरैं बाग बहारां फर फर फंग सुआरै ओ।
बास भरोची कलियें उप्पर बैइयै चुंजां मारै ओ ॥
पत्तरझाड़ आई जिस वेल्लै हरे वधारे सुक्की गे।
कण्डें दौड़ी सैंहन सम्हाले, फुल्लें आसन चुक्की लै ॥
जित्थें छर छर चलन फुहारे कोयलां करण पुकारां।
तोतें लाई कतारां नवदे कूञ्जा गान मल्हारां ॥
उत्थें अज हरा नईं पत्तर कायें बी आलहड़े सुट्टे ।
आपो आपने फंग सुआरै कां-कां करियै उड्डे ॥
बुलबुल सोग पेया गल दिक्खी खिड़ खिड़ हसदा माली।
आखै तुद्ध नमाने पैंछी! आपूं गै गल्ल गाली ॥
की सिर पौंदा रोना जेकर प्रेम नि पैहले करदी।
आपूं पिट-स्यापे पाए हुन की नईं तूं जरदी ॥
तोबा तोबा करें इस वेल्लै हाहाकार मचायें।
पर जिस वेल्लै फुल्ल तूं दिक्खें ए सब बिस्सरी जायें ॥

सदा इयै किज दिक्खेया तेरा गल्ल नमीं नईं कोई ।
१'ब्रह्मानन्दा' अन्तै बेल्लै कुसी सुनान्नी रोई ॥

मन

इक धेल्ले दा लून खरीदी भुंगे दी कस्तूरी ।
ओ कुन होगी अन्ना देइयै पानी ऐ जिस पूरी ॥
बट्टें दी बेड़ी'इच बेइयै चाहना सागर तरना ।
मौहरा खाइयै धुप्पा सौन्दे स्सेहड़न अपना मरना ॥
छोड़ी शिड़क कुरस्तै चलदे पैंडे कियां मुक्कने ।
पिच्छें मौत पेई हत्थ धोइऐ उस जङ्गलें बी तुपने ॥
दिन थोहड़ा ते न्हेरियां रातां अग्गें पन्ध दुराडा ।
टोर जुक्का दी पुज्जन औखा अग्गें हाकम डाडा ॥
जिनें दन्दें ने बिल्ली पगड़ी बाल बलूंगड़ लैंदी ।
सत्तें घरें'च फेरी फारी पालना करदी रैंदी ॥
बाल निं डीङ्गा होऐ उन्दा खेडन गजदे बजदे ।
उऐ दन्द चूहे दी जिन्दू काल-रूप होई लगदे ॥
उऐ नेआ मन तेरा जे इसगी साफ बनायें ।
अनथक भजन करी दिन राती सच्ची सान चढ़ायें ॥
तां मित्तरें दा मित्तर तेरा जो आखें सो मनदा ।
कईं जन्में दे पाप करोड़ां धोइयै शीशा बनदा ॥

१—बागबां गर पञ्जरोज़े सोहबते गुल बायदश ।
बर जफाए ख़ारे हिजरां सबरे बुलबुल बायदश ॥

१-चौरासी दा चक्कर मेटी ग्रावागौन गी मारै ।
ग्रापूं बनी मलाह मुक्ति दा भवसागर थों तारै ॥
इस गी जे भोगें बिच लाइयै ग्रपना चाहें नबेड़ा ।
तां ए बैरियें दा बी बैरी सिर सिर पाग बखेड़ा ॥
ग्रुट्टी तन्द गण्डोन्दी ग्रौखी ग्रोड़नी ऐ इस तानी ।
देह मनुक्खा हत्थ नि ग्रौना, नरकें पौना जानी ॥
डोबू घाट संजोगी मेले उत्थें कुस छुड़काना ।
गुरजें बालें देनियां पीड़ां हा हा करदे जाना ॥
दिक्खी रोज गै भुल्ली जन्नां करनां कन्न घुसेड़ां ।
मचला बनियै तुपना ब्हान्ने पाइयां तुड्ड हनेरां ॥
पापें दी पींगै पर बेहियै चलना चाल कबल्ली ।
सीस बचाइऐ नक्क बडाना कुसगी होग तसल्ली ॥
हाकम बखले, देस पराया, कुत्थें नस्सी जागा ।
ग्रपना कोई लब्बना नइंग्रों, रोई - रोई ह़ल गुग्रागा ॥
जिनें गी दिक्खी हसनां जीन्नां उऐ खीर रुग्रान्दे ।
राह चलदे गी लान ब्याजू, हत्था मूल गुग्रान्दे ॥
नाते नइं ए हैन नकेलां मिलना ग्रथरू चौन्दे ।
ग्रपने हत्थें सूल सेहड़िऐ कण्डें उप्पर सौन्दे ॥
ए मित्तर नइं बैरी इन्दा खिनक बसाह नि करना ।
ग्रक्खीं दिक्खी मौहरा खाना ग्रापूं जानी मरना ॥

१-मनसैवेदमाप्तव्यम् नेह नानास्ति किञ्चन् ।
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ॥ (क० उ० ४।११)

तारू नईं ए डोबू ठोकी छाती जो न खड़ांदे ।
जिनें बकरोटें मैं मैं कीता छुरियें गले बडान्दे ॥

दरदी नईं ए गरजी जेड़े झूठ मसूरतां करदे ।
की निं डुब्बन, पत्थर बन्नी लक्क जड़े न तरदे ॥

हंस नईं ए बगले जेड़े पाड़े पाई २ बौंदे ।
बचन जगाती कोला कियां भार सिरैं पर रौंदे ॥

खू दुएँ लई कडुया, समझो अपने लेई ओ खाता ।
१ए कलजुग इ दिक्खी लैयां हत्थो हत्थ तमाशा ॥

दिनें जे देगा रातीं लैगा चिर नईं इत्थें लगदा ।
गल्ल दुहारै पौंदी नइयों सौदा नगद बनगदा ॥

दुर्जोधन ने छल बल करियै जूऐ जित्ती नारी ।
धर्मराज युधिष्टर कोला राज बिभूति सारी ॥

पौंदे गै उस राज सभा बिच द्रौपदी नगन कराई ।
खिनें'च चीर बदाए उसदे ईशर होए सहाई ॥

तेरें बरें दा देस नकाला देइयै पाण्डव कड्डे ।
गोट्टे - माने पथदे रे ओ सिरें मनासे बद्दे ॥

१–तू और की तारीफ कर तुझ को सनाखानी मिले ।
कर मुश्किल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले ॥
तू और को मेहमान कर तुझ को भी मेहमानी मिले ।
रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले ।
कलजुग नहीं करजुग है यह यां दिन को दे और रात ले ॥
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले ॥

कुत्थें चक्करवर्ती राजे राज करन बनी ठनियैं ।
ओ घोड़ें गी खरखरे करदे नौकर - चाकर बनियै ॥
बनवासे दी अवधि बीती तेरां बरे बताए ।
कृष्ण जी आपूं दूत बने दुर्योधन दे घर आए ॥
पञ्ज ग्राँ मंगे, दुर्योधन आखै रोएं होई ।
सुई दे नक्के जिन्ना बी में थार नि देना कोई ॥
इस्सै इड़सा जुद्ध रचाया ठारां क्षूणी मोइयां ।
कौरवें दा नईं चिन्न बी बचेया घर घर रण्डां होइयां ॥
मचला मन ए बनी कलन्दर डुगडुगी बेई बजान्दा ।
जंगल बैठेंगी बी जाइयै बूजो बांग नचान्दा ॥
चौं बेदें दा ज्ञाता रावण बन्दी काल बनाया ।
इस्सै मनै दी चालें चलेया कुल बी नाश कराया ॥
ए ऐ तेरा बैरी अन्दर बाहरें फिरनां तुपदा ।
इस कपटी गी बन्नें मारें तां गै स्यापा मुकदा ॥
[1]अन्दर बाहर जिच्चर तोड़ी साफ नि करें झरोखा ।
कईं जन्मे दा फेरा पौगी खागा दिन दिन धोखा ॥
बे लगाम होइयै जिस बेल्लै आप रखें पर औंदा ।
त्रुट्टी जा जञ्जीर फुलादी लख्ख कजीया पौंदा ॥
कदें ते हाकम बनिए आपूं लैंदा ऐश बहारां ।
कदें तां दर दर कुत्ते बांगूं खंदा सौ फटकारां ॥

१—ता न करदी सीना रा अज़ कुश्ता साफ़ । दावाए फ़करत बवद लाफ ओ गजाफ़ ।
कतर ए ज़ातश चू माबी लब बबन्द । आब कै गौहर शबद वे इनसदाफ ॥

इस्सै मनै दी अक्खीं दा मुंह अन्दरै पासै खुलदा ।
नाशवान बस्तें दे उप्पर तां गै रैंदा डुलदा ॥
भोग अनेकां भोगी दिक्खे ए पापी नईं रजदा ।
ताँ सम्याना भवसागर गी तरनें दा नईं बजदा ॥
लक्खां बारी राजा बनियै मैहलें अन्दर सुत्ता ।
तां बी ए कङ्गाल नि रज्जा फी भुक्खे दा भुक्खा ॥
जोबन, मस्त खमारी बनियै, जेल्लै फेरा लान्दा ।
नारी गी सुख रूप समझिऐ मातु ब्याह करान्दा ॥
इक खुशी दे बदलै पेई गे होर हजारां धन्दे ।
सुख ते रेया कनारै उल्टे दन्द रकोई जन्दे ॥
फी उसदे चक्कर पर चढ़ियै पुत्तर तुपदा रौंदा ।
मस्त खमारी उतरी जन्दी होर कजीया पौंदा ॥
रुट्टी दे बी ठेडे लग्गदे खरच नि पूरा होऐ ।
देस छोड़ी परदेसें जन्दा सिर गोडैं देई रोऐ ॥
भार पापें दे पिट्ठी चुकदा नीचें दे कम्म करदा ।
जियां कीयां करै कमाई टब्बरै अग्गें धरदा ॥
बनी गेआ धनबान बी तां फी लगदा होन हराता ।
साथें गी बी चोर समझदा कौड़ा लगदा नाता ॥
गुरु पीर बी सब गे भुल्ली देवते, पिता, भ्राता ।
माता पिता बी बैरी लबदे, बनेया अजब तमाशा ॥
शांदी पिच्छें होई बरबादी लोक परलोक बी गेया ।
गुरजें वाले आई खड़ोते नरकें जाना पेया ॥

खड़कै दे घर आए परौहने कीत्ते आदर भाओ ।
　　जियां अस आं लमका करदे तुस बी लमकी जाओ ॥
द्रुग्ग पेया दा छम-छम रोन्दा होरणें कियां कड्डै ।
　　अपना सिर जो तली प' रक्खै दुऐं गी ओ बड्डै ॥
उखली सिर जो दिन्दे ओ फी मोहलें शा नईं डरदे ।
　　हस्सी हस्सी सैहन धमाके 'सी' नईं मुंआ करदे ॥
[१]काम क्रोध ए मुक्ति-मारग दे दो चोर लुटेरे ।
　　रजोगुणै थों उत्पन्न होए जान्नी दुश्मन तेरे ॥
बड्डे २ सूर सुजाखे जो इस सड़का चलदे ।
　　बाज लटोए कदें निं लंगे छम छम रोंदे लबदे ॥
गासा उप्पर उडरे जेड़े ने परताए पुट्ठे ।
　　गुड्डियें बांगू डोरें बज्जे धरोड़ी थल्लै सुट्टे ॥
सत्त पतालें जाइयै बैठे जङ्गलें कन्दरें छप्पी ।
　　उत्थों बी ओ बन्नी आन्दे जान निं दित्ते नस्सी ॥
जिचर इनें चण्डालें वाला स्यापा नईं मुकागा ।
　　'ब्रह्मानन्दा' बकरे बांगर किच्चर खुशी मनागा ॥

प्रेम

मक्खियें दे बादशाह नें लशकर लेआ बुलाई जी ।
　　पक्खरें दे राजें दे महलें डेरे दित्ते लाई जी ॥

१—काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः । महाशनो महापाप्मा विद्धि एनं ही वैरिणम् ।
(गी० ३।७)

दिन दो चार मेहमानी खादी दूआ पुच्छना करदा ऐ ।
हुकम दस्सो तां करां में सेवा जे किझ बनदा सरदा ऐ ॥

उस आखेया तुस बी अपने लशकर सब मंगाओ जी ।
मेरी परजा कन्ने करना प्रेम भाव सखलाओ जी ॥

होइआं जे तरकालां दोऐ बादशाह रली आए जी ।
आपो अपने फौजां लशकर सही खड़े कराए जी ॥

बादशाह ने मक्खियें दा इक लशकर झट बुलाई लैता ॥
बसती'इच दिये बलने दा पता बी तुरत मंगाई लैता ॥

लट लट करदियां लाटाँ दिक्खी जां ओ अगड़ियां होइयां न ।
लग्गे सेक उनेंगी जेल्लै झट पिच्छें परतोइयां न ॥

बादशाहें गी आई आखेया दिये सब बली गेदे न ।
घर २ सारे चानन लबदा न्हेरे बिन्द नि रेंदे न ॥

दुआ लशकर होर भेजया उस बी आखेया इयै जी ।
त्रियै बी आई अरज गुजारी बली गे सारे दिये जी ॥

बादशाह ने पक्खरें दी इक सेना झट बुलाई जी ।
बसती जाना परती औना दित्ता हुकम सुनाई जी ॥

कोई नईं परतोआ जेल्लै तां फिर भेजी दूई जी ।
दिक्खदे रे किच्चर पर ओ बी उत्थों दी गै होई जी ॥

सक्त हुकम फांसी दा देइयै फौज तीसरी भिजबाई ।
प्रेम दिवाने दी ही सेना परती ओ बी नईं आई ॥

हसदा हसदा बादशाह दुये गी आखै इऐ जी ।
तेरियें मक्खियें भूठ मारेया, हुन ओ बले न दिये जी ॥

पख्खरें दा परती नईं औना जलियै जान गोआनी जी ।
सिर दित्ते बिन गल्ल नि बनदी पक्की इक नशान्नी जी ।।

मोए बाझ नि मिलदा माही शरत कदीमी जानीं ऐ ।
अख्खीं दिख्खी मौहरा खाना हसदे जान गवानो ऐ ।।

१मौत आई तां सारें मरना जीन्दे कोई कोई मरदे न ।
लाल माई दे मुक्ति वाले चढ़ी सिंहासन तरदे न ।।

धेल्ले जिन्नी कार नि करनी मंगै लख मजूरी जी ।
निम्बू इक ते पिण्ड भुस्सें दा किआं पौनी पूरी जी ।।

श्रद्धावान बवेकी जेड़े सीस तली पर रखदे न ।
बाजी लाइयै तोड़ नबान्दे मौती शा नईं डरदे न ।।

कर्म कमाना कम्म गुणें दा, अपने उप्पर लैंदा ऐ ।
तां गै आपूं जानी बुझी सिर सिर पिटदा रैंदा ऐ ।।

नेकी गी आपूं पर रखियै बनी बहादर बौंदा ऐ ।
बदियां ईश्वर दे सिर लान्दा डुसकी डुसकी पौंदा ऐ ।।

२कण्डे राइयै किक्कर उगने नईं बननी फुलवाड़ी जी ।
फी तुपदा ऐ दाखां जानी पैर कुहाड़ी मारी जी ।।

१—वसल को तो मुहाल कहते हैं, मरने को भी वसाल कहते हैं ।

२— मिसरी और के मुंह में दे जो वुह भी शक्कर खाता है ।
जो औरों को टक्कर दे वुह भी टक्कर खाता है ।।
जो औरों को डाले चक्कर में वह चक्कर खाता है ।
जो और को ठोकर मारे वह भी ठोकर खाता है ।।

अपनी करनी अपनी कलमां मत्थे उप्पर लिखदा ऐ ।
भोगने बेल्लै चित्रगुप्त दा नां लेई लेइऐ पिटदा ऐ ॥
दौं बेड़ियें उप्पर चढ़िऐ सागर लंघना चांहदा ऐ ।
[1]सिर देने दा सरफा करियै लैनेगी हत्थ बदान्दा ऐ ॥
फांसी वाले फैसले उप्पर आपूं दसखत करदा ऐ ।
लगने बेल्लै ओकड़ा तख्ता दुयें अग्गें धरदा ऐ ॥
जिच्चर मोह निं मुक्का जिच्चर झूठा प्यार निं मुकदा ऐ ।
[2]फारगती नईं जिच्चर दित्ती बाकीदार निं चुकदा ऐ ॥
होई बेबाक खड़ोते जो जो उनें गै जिन्द बचाई ऐ ।
चौरासी वाली ए पट्टी भलेयां मेसी टकाई ऐ ॥
[3]कर तूं रीस सपाहियें वाली आप मरें तां मारें ।
'ब्रह्मानन्दा' बनियै तारू आप तरें सो तारें ॥

१–करदी ख़ाक तुसाडे दर दी सब दूर अक्खीं दे परदे ।
पर कित विध ख़ाक असां हथ आवे भला दित्ते बिन सिरदे ॥ (हाशम)

२–नहीं कबूल अबादत तेरी जब लग पाक न होवें ।
आमल ख़ाक पवे मुल तेरा पर जब लग ख़ाक न होवें ।
नहीं बेबाक़ कदीं हर तरफों जो वे इत्तफ़ाक़ न होवें ।
हाशम की मुश्ताक इश्क दा जां सिर ताक न होवें ।

३–मजनूं देख लहू भर रोया जद मोया पतंग सिपाही ।
शाबाश यार मिलयों इक बारी मुड़ सही न पीड़ जुदाई ॥
असीं खराब होए मिल विछुड़े हुन फिरां खराब जुदाई ।
हाशम मुड़न मुहाल तिनां दा जिनां सिर २ बाजी लाई ॥

उपासना

खूनी मानु गी जिआं रखदे पैरें बेड़ियां पाई ऐ ।
चञ्चल मन ए बन्नने ताँईं उपासना विधि बनाई ऐ ॥
पहले दरज़ी टल्ले उप्पर लम्मे ढंगे लाँदा ऐ ।
फिरी मशीन चलाइयै ओके सारे त्रोड़ी टकांदा ऐ ॥
जियां अमारती गित्तै राजड़ा कच्चा कलबूत बनांदा ऐ ।
सोची साची भलेयां ओदे उप्पर डाट जमांदा ऐ ॥
होई तयार गेया जिस बेल्लै कसर निं बाकी दिखदा ऐ ।
उस कलबूतै गी फी आपूं डोल गै ढाई सुटदा ऐ ॥
पार नदी दै जाने ताईं मछुआ बेड़ी तुपदा ऐ ।
कण्डै लग्गी छाल मारदा किश्ती पिच्छें सुटदा ऐ ॥
इक कण्डे गी कडने ताईं दुआ कण्डा तुपदे न ।
निकले पिच्छों दौहनें गी फिर दूर-दरेडै सुटदे न ॥
मेहरबानी वाले जो नौकर उनेंगी मीत बनांदे न ।
इक राजे दे मिलने कारण सौ सौ सूतर पांदे न ॥
राजे कन्ने मितरी पेई गेई चाकरें गी कुन पुछदा ऐ ।
जियां परीक्षा देइऐ जातक पोथी-पाथी सुटदा ऐ ।
मांदगी बेल्लै हकीमें गी घर फीसां देई बुलान्दा ऐ ।
टल्ली-टूमां बेची बाची अपनी जिन्द बचान्दा ऐ ॥
गई बमारी खुल्लियां अक्खीं मुच्छाँ बेठी बैठा ऐ ।
फी नईं दिन्दा पुत्रें गी बी खरचे तांई पैसा ऐ ॥

ईश्रां गै जद तोड़ी एदा चित्त अडोल निं हुन्दा ऐ ।
[१]वायु रैहत दिये दे बांगर निश्चल होई खड़ोन्दा ऐ ॥
तां तोड़ी ए परम प्रेम उपासना दे बिच रखदा ऐ ।
तद्रूप थ्यो खिचड़ी दे बांगर होइयै रचदा पचदा ऐ ॥
मन वाणी ते काया कन्ने जो शुभ करम कमान्दा ऐ ।
[२]फलाकांक्षी नईं हुन्दा, सारे ईश्वर अर्पण लांदा ऐ ॥
सकाम कर्म दा इक फल लैन्दा जिसदी कांक्षा रखदा ऐ ।
निश्काम करै दुश्रा बी मिलदा लिखी वेदान्त ए दसदा ऐ ॥
मनै गी साफ बनाइयै शीशा, पिछली मैल जलांदा ऐ ।
[३]जगमग जोत चमकदी जेल्लै अपना दर्शन पांदा ऐ ॥
[४]जिस थीं उत्तम नां कोई दुश्रा लाभ होर पनछानै ए ।
नां गै देवलोक बिच डिट्ठा, नां ब्रह्मपुरि कोई जानै ए ॥
मैल धनोई चित्त चमकेया उपासना पिछें सुटदा ऐ ।
अग्गें अग्गें छालीं लान्दा नां ढौंदा नां हटदा ऐ ॥
मल-बिक्षेप गे नसदे-भजदे, आवरण रेया सा इक त्रीया ।
उस कच्छा बी होई खलासी अन्दर बलेया जां दिया ॥

१–यथा दीपो निवातस्थो नेंङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥ [गी० ६।१६]

२–दस्ते सवाल सैंकड़ों ऐबों का ऐब है । जिस हाथ में यह ऐब नहीं दस्ते ग़ैब है ॥

३–ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः । तेषामादित्य वज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ [गी० ५।१६]

४–यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाऽधिकं ततः ।
यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ [गी० ६।२२]

[1]बुद्धि शुद्ध समाधि लाइऐ मोक्ष पदार्थ पान्दी ऐ ।
मैली, लक्ख चुरासी वाले चक्कर नाच नचांदी ऐ ॥
अक्खीं खोलियैं दिक्खी लैं हुन कोकड़ा पासा चङ्गा ई ।
मानसरोवर हंसें दा जां ओ आङ्कने वाला ढङ्गा ई ॥
[2]जित्थों रोइयैं दस्सा करनां अपनी नीच कंगाली गी ।
उत्थें गै ऐ खान खुल्ली दी लाल जुआहरें वाली बी ॥
पर इस दिल दियें अक्खीं अग्गें सौ सौ पड़दा आया दा ।
जिस तेरे गल कईं जन्में दा रोना धोना पाया दा ॥
तूं राजें दा बी राजा एं सुखियें दा बी सुखिया एँ ।
अपनी भुल्ला होआ कंगाली दुःखियें दा बी दुःखिया एँ ॥
[3]अन्दरै दी गंगा नईं न्हौंदा, टिकटां लेई लेई जन्नां एं ।
धुप्पा बिच्च धलोफां मारें, बाझ मोतियें अन्नां एं ॥

१–व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेहकुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥ [गी० २।४१]

२–आंखें मुन्दी हुई हों तो दिन भी रात है। इसमें भला कसूर क्या है आफताब का।
किस काम की यह हस्तिए-मौहूम काईनात। सैराब कब करे तुझे धोका सुराब का।
अपना हजाब आप है तू ऐ मियां 'नयाज़'। उठने में तेरे होता है उठना हजाब का॥
२-भीखा भूखा कोई नहीं सब की गठड़ी लाल। गिरह खोल नहीं देखते इस विध हुए कंगाल॥

३–इक जाँवन मक्के ते हाजी होए, इक तीर्थीं जा जा मरदे।
बिच्चे मक्का ते बिच्चे काशी ओ दिल दी हज्ज न करदे॥
ते काठ दी बेड़ी चढ़ नहीं लंगदे, पत्थरां ते चढ़ तरदे।

चौरासी दा चक्कर फिरियै मानुख जोनी पान्दा ऐ।
पर इसदी जो कदर निं जानै हत्था लाल गुआन्दां ऐ ॥

भव सागर दे पार होने दी ए इक सुन्दर नौका ऐ।
इस पर बेड़ऐ पार निं उतरे फी कद मिलना मौका ऐ ॥

कण्डें दी जे शेज बछान्दे फुल्लें पर कद सौन्दे न।
डडलें उप्पर मैहल सुआरण इक दिन रुलकी पौन्दे न ॥

[1]अपने अंग कछोपड़ जिआं शैल समेटी लैन्दा ऐ।
इआं गै ए मन बी जेल्लै रत्ति बाहर निं रैन्दा ऐ ॥

मात - पिता - भ्रा - भैन-भनोई नेड़वां तेड़वां नाते।
पति-पत्नी ते पुत्तर धियां जिमियां कोठे - काठे ॥

सज्जन मित्तर सुन्ना चांदी स्वादू खाने दाने।
ध्यान बैठे कोई आवै निं चेतै तां स्थिर बुद्धि जानै।

वायु रैहत दिये दे बांगर बुद्धि जा खड़ोई।
तां उस बेल्लै निश्चा जानो शुरु समाधी होई ॥

[2]जिस रोगी गी मांदगी दे बस पथ नईं दित्ता होए।
इन्द्रियां नईं बरती सकदा भावें भोग बी थोऐ ॥

पर ओ स्वादें पिछलें वाला चेता नेईं भुलान्दा।
ध्रीड़ां देई धलोफां मारै अत्थरूं बी टमकांदा ॥

१—यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठता।
[गी० २।५८]

२—विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रस वर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥
[गी० २।५९]

मनै गी साधी ज्ञानी जेड़े सैहज समाधि लान्दे न ।
अन्दरै बाली खिच्चां त्रोड़ी आतम दर्शन पान्दे न ॥
मरद जनानी, नीच ऊच दा भेत निं कोई इत्थें ।
पापी बी इस प्रेम नदी बिच झलेयां तरदे दिखे ॥
[१]ज्हारां नदियां बगदियां रातीं-दिनें बी इक जनेइयां ।
पेइयां पन्थ मुसाफरें बांगू ढलदे पासै गेइयां ॥
घुम्मन घेर तूफानी खर-खर खूनी नाले बगदे ।
अक्खीं दिक्खे त्रेली औंदी शेर दलेर बी डरदे ॥
उछली उछली ओढ़क रलदे बिच समुन्दरै जाई ।
शान गुमान नशान नईं बचेया दित्ता रूप मटाई ॥
सागर दी मरजादै अन्दर फरक निं रत्ती पेया ।
तिल प्रमाण निं घटेया बदेया इक्कै नेआ रेया ॥
लक्ख चुरासी चक्कर फेरन पुट्ठियां पींघां पाइयां ।
डैनें बांगर लोभ-वासनां ताड़ा दे बिच रैहियां ॥
ए जिस बेल्लै मनै दे अन्दर पूरियां जान समाई ।
उस बेल्लै ताँ निश्चा जानो परम शान्ति तूं पाई ॥
इस गी प्रापत होए जेड़े ओ ते फी खुबदे नईं ।
कर्मखेतरै'च रड़दे नईं फल बनिऐ फी उगदे नईं ॥

१—यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ मुं० उ० ३।२।७॥
आपूर्यमानमचल प्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शन्तिमाप्नोति न काम कामी ॥ गी० २।७० ॥

अमर बनाइऐ इस देहै बिच परम शान्ति ओ पान्दे न।
जीन्दे गै ओ'ब्रह्मानन्दा' जीवन्मुक्त खुआन्दे न ॥

नौलख्खा हार

इक बारी इक बादशाह दी बेगम मैहलें चढ़दी।
गोल्लियें कन्ने धुप्पा बैई सलाह न्हौने दी करदी ॥

हार नौलख्खा बी उस अपना रखेया गला तुआरी।
उडदी इल्ल समानां आई लैई गई हार डुआरी ॥

चर्चा होन लगी बिच मैहलें पेइयां हाल दुहाइयां।
बादशाह ने फौजां आसै पासै तुप्पन लाइयां ॥

ढम ढम ढम ढण्डोरा उसने सारै शैहर फराया।
हारै गित्तै पंज हजार रपेआ नाम धराया ॥

खोज बथेरी कीती लोकें पता नि किज बो लगदा।
नां पौन्दी कोई पारत नां गै हार कुसै गी लबदा ॥

इक दिन इक गरीब गराईं लकड़ियां बेचन आया।
शैहरै बाहर बौली उप्पर अपना भार लोआया ॥

पानी पीने गी जे बदिऐ पैर ओ अग्गें धरदा।
सरै दे अन्दर हार जो लब्बा चकमक चकमक करदा ॥

भार उत्थें गै सुट्टेया उसने दौड़ी मैहलें आया।
शाही ढयोड़ी उप्पर उसने घण्टा जाई बजाया ॥

राजमन्त्री बाहर निकलेया, उसगी गल्ल सुनाई ।
साज समाज लेई सब अपना सरै पर पुजदे आई ।।
हार पेया दा सारें दिखेया लट लट चमकां मारै ।
पंज हजार हा दस्सने वाले दा ओ ओआ कनारै ।।
बारी बारी लोक तला दे अन्दर जाइयै पौंदे न ।
हार कुसै गी मिलदा नेइयों सख्खने बाहर औंदे न ।।
कण्डै औन तां पेदा लब्बै, बिच्च बड़े नईं थोन्दा ।
बादशाह बी रौला सुनियै आइऐ कच्छ खड़ोन्दा ।।
दिल्ली चरज अनोखा ओ बी मनै'च सोची लैन्दा ।
नौकर ए बेईमान न होए हार नि चुकदे जानी ।।
अति क्रोधी होइऐ आपूं बिच तला दे पौन्दा ।
देई धलोफां हुट्टी गेआ हार नईं हत्थ औन्दा ।।
इतने बिच इक महात्मा कोई आइयै पुच्छनां करदे ।
सुनिऐ बोले अस लेई औन्नैं, बिच सरै दै ढलदे ।।
कोल खड़ोइयै मातमा उप्पर अपनी नजर दुड़ान्दे ।
बूटे उप्पर हार लमकदा सारें गी दरसान्दे ।।
हारै दा प्रतिबिम्ब चमकदा पानी बिच सा पौन्दा ।
छौरे गी सब देन धलोफां असली कियां थोन्दा ।।
सच्चा कारण बेदें इसदा इयै लिखी सुनाया ।
सकल पदार्थें उप्पर पौन्दी व्यापक ब्रह्म दी छाया ।।
जिस गी सुख समझी ए अग्गें होइऐ हत्थ बदान्दा ।
उऐ इसगी दुःख बजोन्दा तां पिच्छों पछतान्दा ।।

हारै बांगू छौरें पिछें पेई २ जनम गुग्राए ।
छौरे वाले गी नईं तुपदे माया ने भरमाए ॥

जाग्रत बिच इस जीवै तांई धन-जन प्यारा लगदा ।
देस छोड़ी परदेसें जन्दा लोकेंगी ऐ ठगदा ॥

धनै दे लेई परलोक गुग्राइयै पाप सिरै पर चुकदा ।
बनियै बैल कमांदा रौंदा नां रजदा नां हुटदा ॥

धनै थमाँ इस पुत्तर प्यारा, करिऐ खरच पढ़ान्दा ।
बनै मकद्दमा ब्याह जां होऐ तां बी पैसा लांदा ॥

पुत्तरें कोला बी इसी जादे अपना देह प्यारा ।
उनें गी तङ्गी बेल्लै बन्धै छुड़ियै करै गुजारा ॥

देहै थवां बी प्यारी इन्द्रियां, हुकम सजा दा पांदा ।
दर्जन बैंत खुशी ने भलदा हत्थें नक्क बडान्दा ॥

इन्द्रियें थमां प्राण प्यारे, खून खराबे करदा ।
खुशी २ ए नक्क बडांदा पर फाँसी नईं चढ़दा ॥

प्राणें कच्छा आतमा जादे, कष्ट अति जद बनदा ।
तां आखै इस जीने कोला मरां कुतै सुख मनदा ॥

सुख रूप भुलाइयै आतम अपना छौरे पिछें मरदा ।
कियां मिलै ओ ब्रह्मानन्दा नियम निं पूरे करदा ॥

(इति मनन प्रकरण समापत होआ)

"निदिध्यासन प्रकरण"

बखली चीजै दे मालक गै बन्दी खानै पौंदे न ।
दुखें भरी जञ्जीरें कन्ने उमरां जकड़े रौन्दे न ॥

देह ए पञ्ज महाभूतें दा, इस दा दिखने वाला तूं ।
ए नश्वर जड़ रूप बकारी, चेतन अजब नराला तूं ॥

जाति-नाम ते जम्मना-मरणा, बर्ण ते आश्रम नाप बी ।
सत्तें धर्में फसिऐ जानी, चाड़ी लैता ताप ई ॥

पञ्ज ज्ञान, पञ्ज कर्म इन्द्रियां, पञ्ज प्राण सुनान्दे न ।
मन ते बुद्धि गिनी सतारां सूखम देह खुआन्दे न ॥

अपञ्ची कृत पञ्जे भूतें दा सारा तानां तनेया दा ।
तूं इन्दा बी दिखने हारा साखी द्रष्टा बनेयां दा ॥

शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध, ज्ञानेन्द्रिय विषय खुआन्दे न ।
तूं न्यारा एं इनें थवां बी बेद लिखी समझांदे न ॥

वाणी हस्त ते पाद उपस्था, गुदा कर्म विस्तारी ऐ ।
तेरी नजरी बिच हर बेल्लै इन्दी कार गुजारी ऐ ॥

पंज प्राण देहै बिच बसदे मन बुद्धि दी गरणना ऐ ।
इन्दे न्यारे धर्में गी बिच अपनै जानी मन्नना ऐ ॥

पुन्न पाप दा कर्त्ता पन ते भोगना दुःख-सुख सारा ई ।
लोक परलोक इच औना जाना सुरग नरक बिस्तारा ई ॥

बैरागादि शुद्ध बृत्तियां गफलत आलसकारी न ।
भुक्ख-त्रे ते अन्ध मन्दपन तुद थीं सब गै न्यारी न ॥
तूं सबनें दा साखी द्रष्टा, तत्ता नि तूं ए जांता ई ।
सूखम देह् बी तेरा नईं, नां कोई अङ्ग ते नाता ई ॥
१—कर्में दी नईं आसा रखदे ज्ञानी शुद्ध खुआन्दे न ।
अपने ज्ञानै दी अग्नि बिच सारे कर्म जलांदे न ॥
२—नां गै फलें दी बासना रखदे, नित्त तृप्त होई रौन्दे न ।
करदे होई बी किश नईं करदे, नां पिछड़े परतोंदे न ॥
चित्त जित्तेया चिन्ता मुक्की, झगड़े सिरा चुकाये न ।
ए जञ्जीर चौरासी वाले भलेयां दूर कराए न ॥
३—इच्छा बिन प्रापत जे किश ऐ, मग्न उस्सै बिच होये न ।
बन्धन-कारण करम त्यागे, सच्चे सुख तां थोए न ॥
४— डाकुएं दा बी डाकू होऐ आकिएं दा बी आकी गै ।
नीचें दा बी नीच ओ होऐ पापियें दा बी प.पी गै ॥
ओ बी एस ज्ञान नदी बिच बिन सरनाही तरदा ऐ ।
जन्दा मारू छल्ल चीरदा पिच्छड़े पैर नि करदा ऐ ॥

१– यस्य सर्वे समारम्भाः काम संकल्प वर्जिताः ।
ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणं तमाहु पंडितं बुधाः ॥ गी० ४।१६ ॥

२– त्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्यं तृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः ॥ गी० ४।२० ॥

३– यदृच्छा लाभ–संतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ गी० ४।२२ ॥

४– अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥ गी० ४।३६ ॥

१– जलदी अग्गी'च लकड़ियेंदे जली बली कोले होन्दे न ।
ज्ञान रूपी इस भट्ठी दे बिच सारे कर्म फकोन्दे न ॥

पूर्ण पुन्न ए होन जदूं तां सेवाकारी लैन्दे न ।
अनजाने पापें दे फल सब निन्दकें पासै रैन्दे न ॥

आपूं ते सामें दा सामां, लेश निं लगदा रत्ती ऐ ।
भुज्जे दानें फी नईं उगदे ए मरजादा पक्की ऐ ॥

२– त्रैलोकी बिच ज्ञानै कोला होर निं किझ पवित्तर ऐ ।
इस देहै इ'च एदे बाझ्झू नां कोई दुआ मित्तर ऐ ॥

निष्काम कर्म गी जो कोई भलेयाँ होई निरलेपी करदा ऐ ।
उऐ आतम-दर्शन करदा भव-सागर गी तरदा ऐ ॥

३– इस्सै अवस्था दा सब लक्षण मर्म-भेद समझाया ऐ ।
प्रभु ने गीता बिच सुनाइऐ ब्राह्मी स्थिति नां पाया ऐ ॥

अन्त समै जे इस बिच एदा मन चित्त ए जा जुड़ी कदें ।
तां नेईं इस चोल्ले बिच इस गी औंना पौंदा मुड़ी कदें ॥

प्रभु-भगती दा जोगी बनिऐ शक्क-सन्देह मटाई दित्ते ।
उऐ मुक्त खोआन्दा जिन्ने कर्म-पन्द जलाई दित्ते ॥

१– यथैधांसीं समिद्धोग्निः भस्मसात्कुरुतेऽर्जु न ।
ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ गी० ४।३७ ॥

२– नहि ज्ञानेने सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत् स्वयं योग संसिद्धः कालेन आत्मनि विन्दति ॥

३– एषा ब्राह्मीस्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वाऽस्यामन्त कालेऽपि ब्रह्मनिर्वाण मृच्छति ॥

१– ईश्वर अर्पण कर्म समर्पना, कर्म-योग बखानन ए।
सांख्य योग, अकर्त्ता बुद्धि कर्में दे बिच आनन ए ॥

सुषुप्ति बिच्चा उठ्ठी आखदा मिगी निं नींदर पेई ऐ ।
कुसै पासे दी सुत्ते बेल्लै रत्ती खबर निं रेई ऐ ॥

जाग्रत बिच बी नित्त उचारै अपनी खबर निं कोई ऐ ।
नां गै ब्रह्म स्वरूप गी जानै अज्ञान अवस्था होई ऐ ॥

त्रै अवस्था स्वप्ने वाली इन्द्रियें बिच रलाई ऐ ।
इनें त्रौनें मिलिऐ दित्ता, कारण देह बनाई ए ॥

नई जानना जानना ए सब, अन्तःकरणी वृत्तियां न ।
इन्दा बी तूं साखी बनिऐ दूर करें सब फड़ित्तियां न ॥

जिस लाइयां तिस तोड़ नबाइयां पिछड़े पैर निं करदा ऐ।
दुनियां दी आसा गी छोड़ी हसदे सूली चढ़दा ऐ ॥

२– मधुर पदार्थ प्रापत हुन्दे खुशियां नईं मनान्दा ऐ।
दुःख आवै तां दुःखी निं हुन्दा न अत्थरूं टमकांदा ऐ ॥

दुख-कसाले पौन जदूं तां हा-हा करियै पिट्टै जे ।
तोते वाला राम २ ते एका हा हा इक्कै जे ॥

तोते गी जिआं सारी उमरां, लटपट रौ पढ़ांदे जी ।
मैना गी बी राग अमोलक सौ तुस रवो सखान्दे जी ॥

१– *यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धनः ॥*
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्त संगः समाचर ॥

२– *न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाऽप्रियम् ।*
स्थिरबुद्धिरसंमूढ़ो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ गी० ५।२०

पर जिस वेल्लै मौका बनदा बिल्ली आइयै पौन्दी ऐ ।
राम २ सब भुल्ली जन्दा टीं टीं चेतै रौन्दी ऐ ।।

राम २ सा होठें उप्पर टीं टीं चित्तै बस्सेया जो ।
अन्त समै उस औना बाहर अन्दर रचेया पचेया जो ।।

अकल बवेक दी सज्जी कन्ने जेड़े प्रेमी मण्डे न ।
बाल २ पर लाली छाई अन्दरा रग २ रंगे न ।।

हा-हा उन्दे होठें उप्पर अन्दर ज्ञान समाया ई ।
खुशियें खुशियें डेरे चुकदे ओ मौका जद आया ई ।।

१- जिन्दा मन समता बिच रमेया उनें त्रिलोक ए जित्तेया ऐ ।
सम दर्शी दी पदवी पान्दे जग गी जानन मिथेया ऐ ।।

जिस पासै ओ इक टक होइयै नजर स्वल्ली करदे न ।
शेर बी डरदे 'ब्रह्मानन्दा' नाग बी पानी भरदे न ।।

१- इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं ही समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ।। गी० ५।१९

"पञ्च कोष"

अन्न प्राण ते मन विज्ञान आनन्दमय समझाये न।
ए पञ्च कोष इस आत्मा उप्पर तेत्री (३३) गिनी सुनाये न।

रज बीरज थीं उत्पन्न होइयै अन्न थीं वृद्धि पान्दा ऐ।
मरियै अन्न मय पृथवी अन्दर स्थूल शरीर समान्दा ऐ ॥

सुखें दुखें दे भोगने ताईं आकार प्रत्यक्ष बनाया ऐ।
जन्म मरण दे पहलें पिच्छों कुसै नशान नि पाया ऐ ॥

उत्पत्ति ते नाश रहत तूं इस थीं सदा न्यारा एं।
इस दियें इनें अवस्थें दा तूं द्रष्टा जानने हारा एं ॥

प्राण पञ्च कर्मेंद्रियां पंजै प्राणमय कोष खुआया ई।
सुणो नईं पछानी सकदे अपना नां पराया ई ॥

ए सूखम जड़रूप ऐ देही चेतन रूप न्यारा तूं।
इन्दी इक इक करणी दा बी आपूं जानने हारा तूं ॥

पञ्च ज्ञानेन्द्रियां ते मन मनो-मय कोश खुआन्दे न।
निकलियै बार पदार्थें कन्ने मिलियै जोड़ बनांदे न ॥

देहै ने हङ्गता, घरै ने ममता, ए चित्त दा चाला ई।
काम क्रोध करी युक्त हमेशां बे-निजमा मतवाला ई ॥

क्षण २ बिच्च बदलदा रौंदा ए सूक्ष्म देह धारी ऐ।
अचल एकरस तूं एँ अकरता, समदर्शी सुख कारी ऐ ॥

ज्ञानेन्द्रियें समेत ए बुद्धि विज्ञानमय कोष खोआन्दे न ।
लीन सुषुप्ति जाग्रत दे बिच कर्त्ता रूप सुनान्दे न ।।

१-सूखम देह दी विलय अवस्था नाशवान खोआन्दी ऐ ।
तूं इस दा बी साखी द्रष्टा श्रुति प्रमाण करान्दी ऐ ।।

पुन्न कर्म फल अनुभव दे बिचच बुद्धि अंतर-मुख होऐ ।
आतन दे प्रति–बिम्बै अग्गें सन्मुख जाई खड़ोऐ ।।

भोग निवृत्ति होई जा पिच्छें, निद्रा दे बिच बदलाये ।
उसदा नां बेदांत शास्त्र आनंद मय कोष सुनाये ।।

ए सदा नि इकरस रौंदा नाशवान ते बकारी ऐ ।
तूं साक्षी एँ 'ब्रह्मानंदा' आखन बेद बचारी ऐ ।।

"अध्यात्मादि"

पञ्ज ज्ञान पञ्ज कर्मेंद्रियां चार अंतःकरण रलांदे न ।
इयै चौदां सूखम मिलियै अध्यात्म नाम खुआंदे न ।।

दिक्पाल श्रोतर वायु त्वक् ते सूरज नैन मलाये न ।
जिह्वा बरुण, घ्राण अश्विणी, ज्ञानेंद्रिय देव सुनाये न ।।

बाक् अग्नि, हस्त इंद्र, पाद बामन गणांदे न ।
उपस्थ प्रजापति, गुदा यम कर्मेंद्रिय देव खुआंदे न ।।

१– *यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं न कंचन पश्यति अथ अस्मिन् प्राण एवैकधा भवति तदैनं वाक् सर्वैनामभिः सहाप्येति ॥ कौ० ३।३*

मन चंदरमा, बुद्धि ब्रह्मा, चित्त वासुदेव दसदे न।
हंकार रुद्र ए चौदां देवते अधिदेव होई करी बसदे न॥

शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ज्ञानेन्द्रिय-विषय बनाये न।
बचन आदान गमन भोग मलत्याग कर्मेन्द्रिय विषय सुनाये न॥

संकल्प विकल्प, ते निश्चय, चिंतन, अहंपना बिच रलाया ऐ।
चौदें विषें गै किट्ठे होइयै ए अधिभूत खुआया ऐ॥

ए त्रै २ पदार्थ मिलियै चौदाँ त्रिपुटियां होइयां न।
१-जाग्रत अवस्था सिद्ध होई जां पूरियां ए गणोइयां न॥

तेरी नजरी दे बिच हुन्दा ए सारा बरतारा ऐ।
ए जड़ तूं चेतन एं 'ब्रह्मा नन्द' इस शा बस न्यारा एं॥

जाग्रत जीव स्थान

जाग्रत बिच इस जीवैंदा गै नेत्र स्थान सुनांदे न।
वैखरी बाचा स्थूल भोग क्रिया शक्ति बखान करांदे न॥

रजोगुणैं बिच व्यापत रेइयै जाग्रत मान बनाया ऐ।
उस्सै दे बस्स होई इसने 'विश्व' ए नाम रखाया ऐ॥

१– मनः प्रचारोपाधि विशेष सम्बन्धादिन्द्रियार्थान्गृह्णंस्तद्विशेषापन्नो जीवो जागर्ति। तद्वासना विशिष्टः स्वप्नान्पश्यन्मनः शब्द वाच्यो भवति ॥ स उपाधि द्वयोपरमे सुषुप्तावस्थायां उपाधि कृतविशेषाभावात्मनि प्रलीन इवेति—स्वंह्यपीतो भवति इत्युच्यते ॥ ब्रह्म सूत्र० १।१।६

जाग्रत दा होना नइँ होना तेरे थबां निं छुप्पेया ई ।
'ब्रह्मानन्दा' साखी द्रष्टा बेदें दे बिच दस्सेया ई ।।

स्वप्न जीव स्थान

जाग्रत बिच जो दिक्खे पदार्थ सुने होन भामें कन्नें ।
सामतक्क गै भोगेदे जां होन मनै बिच गै मन्ने ।।
संस्कार ए हिता नामनी नाड़ी दे बिच रौन्दे न ।
सुत्ते दे जीवै दे उयै आई आई चेतै पौन्दे न ।।
तदनुसारी जो व्यवहारी हुन्दा सूखम कारी ऐ ।
'स्वप्न अवस्था' नाँ उस्सै दा आखन बेद वचारी ऐ ।।
सुखने दे बिच इस जीवै दा कण्ठ स्थान दखाया ऐ ।
मध्यमा बाचा सूखम भोग ते शक्ति ज्ञान सुनाया ऐ ।।
सतोगुणैबि च व्यापत रेइयै तेजस नाम पोआंदा ऐ ।
'ब्रह्मानन्दा' दिक्खने वाला साखी रूप खुआन्दा ऐ ।।

सुषुप्ति जीव स्थान

बिच सुषुप्ति सुत्ते बेल्लै सुख अज्ञान जो पांदा ऐ ।
जागी, करियै सिमरण उसदा आपूं फिरी सुनांदा ऐ ।।

आखै अज्ज सुखै बिच सुत्ते ऐसी नींदर पेई ही।
कुसै गै पासे दी बी अपनी रत्ती खबर निं रेई ही ॥
जिसने सुख ते अज्ञानै दा अनुभव खूब कराया ई।
उस्सै साखी चेतन करियै नाम सुषुप्ति पाया ई ॥
बिच सुषुप्ति दे इस जीवै हृदय स्थान बनाया ऐ।
आनन्द भोग ते पश्यन्ति बाचा अज्ञान दा अनुभव पाया ऐ ॥
द्रव्य शक्ति ते तमो गुण इसदा नाम प्राज्ञ सुनांदे न।
'ब्रह्मानन्दा' तूं एं साक्षी वेद प्रमाण करान्दे न ॥

सिप्पी

सिप्पी अपने रूपै दे बिच कितने टपले पांदी ऐ।
कदें तां 'कागज' 'अबरक' लबदी कदें जां लबदी चांदी ऐ ॥
सिप्पी कन्ने ते आपू" चे ए त्रैवे व्यतिरेकी न।
पर सिप्पी दा अन्वय जानी करदे ज्ञान बवेकी न ॥
सिप्पी दे त्रै अंश सयाने करी वचार बनांदे न।
सामान्य अंश, कल्पित अंश, कल्पित वशेष सुनांदे न ॥
इदं पना आधार रूप सामान्य अंश खुआंदा ऐ।
भ्रान्ति बेल्लै बी ओ कन्ने निबृत्त होयें बी दरसांदा ऐ ॥
नीलपृष्ठ तिकोनी सिप्पी अंश वशेष बनाई ऐ।
भ्राँति बेल्लै जिसदी कोई कुसै प्रतीति निं पाई ऐ ॥

त्रिकोणादि आधार अंश दी जद प्रतीति पौंदी ऐ।
अधिष्ठान, सिप्पी दरसांदी भ्रान्ति निवृत होंदी ऐ ॥
चांदि आदि कल्पित अंश वशेष गै मेशां दसदे न।
अधिष्ठान सिप्पी दे दरसें निवृत होइयै नसदे न ॥
इस्सै चाली आतमा दे अधिष्ठान रूप नईं जाने गै।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति दा बी करन नखेड़ा स्याने गै ॥
आपूं' चें ते आतमा कन्ने ए त्रैवे व्यतिरेकी न।
आतमा दा इन्दे ने अन्वय करन प्रमाण बवेकी न ॥
इक दे हुन्दे दुई नईं लबदी ए इन्दा बरतारा ऐ।
आतमां बिच अभाव हमेशां बेदें दा निस्तारा ऐ ॥
आतमा इनें त्रौहन्ने अन्दर ओत-प्रोत होई रौंदा ऐ।
सदा इनें बिच अन्वय इसदा, रत्ति फरक नि पौंदा ऐ ॥
आतमा दे अविद्या कल्पित त्रैवे अंश बनाये न।
सामान्य अंश, बशेष अंश, कल्पित बशेष सुनाये न ॥
सत्ता रूप ते है-पन इसदा सामान्य अंश बनाया ऐ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति दे बिच इक्कै नेआ समाया ऐ ॥
भ्रांति हुंदे जिस बेल्लै ए आतमा गी नईं जाने जी।
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति बक्खो बक्खी भेद बखाने जी ॥
बेदांतै'इच करी नखेड़ा लिखी टकाई नीति ऐ।
भ्रांति बिच बी सत्पने दी होऐ इसी प्रतीति ऐ ॥
भ्रांति दूर करै ते अपना दर्शन आप पछानै ए।
मैं सत्, मैं चित्, मैं आनंद आतम रूप बखानै ए ॥

परिपूरण असंग हां, नित्त मुक्त ब्रह्म दरसांदा ऐ ।
अविद्या मिटै तां पिच्छों अपना असली दर्शन पांदा ऐ ॥

इस्सै चालो सत्त रूप सामान्य अंश खुआया ऐ ।
आधार रूप बी नां इस्सै दा बेदें'च दरसाया ऐ ॥

चेतन असंग आनंद अदुत्त्या ए जो गिनी सुनाए न ।
इस आतमा दे इऐ केहड़े अंश बशेष खुआये न ॥

भ्रांति हुंदे बेल्लै इंदी प्रतीति मूल नि होऐ जी ।
पर इंदा प्रतीति होने करियै भ्रांति नाश गणोऐ जी ॥

इस लेई ए अंश बशेष अधिष्ठान बी कन्ने दसदे न ।
त्रैवै दसां प्रपञ्च रूप कल्पित वशेष होई बसदे न ॥

आतम रूपी ब्रह्मण दे अज्ञान काल बिच रखे न ।
'मैं ब्रह्म आं' इस ज्ञान दे हुन्दे भेद ए सारे नस्से न ॥

स्थानु दे बिच पुरुष प्रतीति, साखी ऐ अंदर सुखना ।
मरु भूमि बिच जल दरसाना आकाशै बिच नीलपना ॥

रस्सी दे बिच सप्प जो लबदा, जलै दै अंदर बृक्ष डार ।
शीशे बिच जिआं छाया मिथ्या ईआं आतमा बिच संसार ॥

भेद भ्रांति, करता ते भोक्ता, संग भ्रांति सुनाई ऐ ।
भ्रांति बिकार, ब्रह्म थीं बखरी जगत-सत्ता दरसाई ऐ ॥

अक्खीं लबदा मनै'च औंदा जितना ए संसार जी ।
शास्त्र भ्रांति रूप करी दसदा इस दे पंज प्रकार जी ॥

जीव ईश्वर दा भेद जो रखेया अनुभव करि सुनांदे न ।
जीवें दा बी आपूं बिच्चें, जड़ें दा कन्ने रलांदे न ॥

जीव-जड़ें दे भेद गी दस्सियै, जड़ ईश्वर दा आखन जी ।
पंज प्रकार दी भेद भ्रांति ग्रंथें बिच प्रकाशन जी ॥
शीशे अंदर जिआं छाया मूहें दी समझोंदी ऐ ।
शीशा छुइयै, नजर ए साड़ी पिछड़ी गै परतोंदी ऐ ॥
उस्सै बेल्लै झट ओ वृत्ति मूहें गी जद दिखदी ऐ ।
मूंह छौरे बिच फर्क निं कोई इक्कै मिक्कै मिथदी ऐ ॥
अज्ञान दे शीशै शुद्ध ब्रह्म ने सुट्टी अपनी छाया ऐ ।
नेकां रूप बनी ओ छौरा जीवाभास खुआया ऐ ॥
जीव रूप ईश्वर ते छौरा बक्खो बक्ख नईं कोई ऐ ।
पर माया दे जोरें जंदी जीव-मति भलखोई ऐ ॥
ब्रह्म न्यारा जीव न्यारा ए सब झूठी माया ऐ ।
गुप्त रहस्य जो असली चमकै, बिरलें नजरी आया ऐ ॥
भेद भाव दे भाव न झूठे ए अज्ञान गै भारा ऐ ।
'ब्रह्मानन्दा' निश्चा करी लैं जीव-ब्रह्म नईं न्यारा ऐ ॥

प्रमाण

१-मन बाणी दा साथ त्यागी पिछड़ा परती जंदा ऐ ।
आनंद रूप जद ब्रह्मगी जानै ओ कोई भी नईं खंदा ऐ ॥

१—यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह । आनंदं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन् ॥

पर जेल्लै मन-इंदियें कन्नें ए संजोग बनांदा ऐ ।
अज्ञानियें द्वारा तां परमातम संज्ञा जीव पुग्रांदा ऐ ॥

१–ब्रह्म सूत्रें दे अनुसारी ए प्रामाणक नीति ऐ ।
कर्म ते कर्त्ता पनै दी तद तक हुंदी भेद प्रतीति ऐ ॥

जद तोड़ी ए महावाक्य दा अर्थ निं सुनदा जाई ऐ ।
कर्म व्यवहार दी बेदाँतै बिच तां तक विधि बताई ऐ ॥

'तत्त्वमसि' इस आतम ज्ञानै दी जद धारणा होई जंदी ।
बंध मोक्ष व्यवहारै वाली, कैद तदूं ए कटोई जंदी ॥

२–खुन्दरें दे बिच छुप्पेया ऐसा ओ परमातम साखी ऐ ।
अति कठनता जरियै लबदा भाएं घट घट वासी ऐ ॥

अध्यात्म दे चिन्तन द्वारा जो उसी जानी लैन्दे न ।
हर्ष शोक दा करी नबेड़ा होई कनारै रैंदे न ॥

१–पर एवात्मा देहेन्द्रिय मनो बुद्ध्युपाधिभिः । परिछिद्यमानो बालैः शरीर इत्युपचर्यते ॥ यथा घटकरकाद्युपाधि-वशादपरिछिन्नमपि नभः परिछिन्नवदेव भासते, तद्वत् । तदेपक्षया च कर्म कर्तृत्वादि भेद व्यवहारो न विरुध्यते प्राक् तत्वमसि इत्यात्मैकत्वोपदेश ग्रहनात् ॥ गृहींते तु आत्मैकत्वे बन्धमोक्षादि सर्व व्यवहार परिसमाप्तिरेव स्यात् ॥
ब्रह्म सूत्र १।२।३ श.भा.

२–तं दुदर्शं गूढ़मनुप्रविष्टं गुहाहितं गह्वरेष्टं पुराणम् ।
अध्यात्म योगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्ष शोकौ जहाति ॥ कठ. उ. १।२।१२

१-ब्रह्म सूत्रें दे बिच लिखिऐ साफ करी समझांदे न ।
गौण ते मिथ्या आतमा इसदे पुत्र देह खुआन्दे न ॥
भावना नाश होयै तां पिच्छों 'अहं ब्रह्म' गी जानदे न ।
कम्म नि कोई बाकी इसगी ए गल्ल बेद बखानदे न ॥
२-जानने जोग परमातमा दे गै अनुभव तोड़ी सारे न ।
प्रमाण, प्रमेय ,प्रमाता इस लेई श्रुतियें बिच बिचारे न ॥
होई गेआ साक्षात जां अपना, पिछली मैल धनोई ऐ ।
शीशे बांगू चमकन लग्गा रग रग गेया रङ्गोई ऐ ॥
३-सारें भूतें च रचेया पचेया कन्ने बक्खरा भासै दा ।
जानने जोग ऐ सार बस्तु ओ शास्तर खोली आखै दा ॥
करदा प्रगट उत्पत्ति बेल्लै स्थिति बिच रेइऐ पालै ए ।
नाश समें प्रलया करने गी रूप संहारी धारै ए ॥
४-जोतियें दी ए परम जोति ऐ चराचरें बिच बसदा । ऐ
तमो गुणें थीं परें ए रौंदा नाश करें नई उसदा ऐ ॥

१- गौणं मिथ्यात्मनोऽसत्वे पुत्र देहादि बाधनात् ।
सद्ब्रह्मात्माऽहमित्येवं बोधे कार्यं कथं भवेत् ॥
अन्वेष्टव्यात्म-विज्ञानात् प्राक् प्रमातृत्वमात्मनः ।
अन्विष्टःस्यात् प्रमातैव पाप्म दोषादि वर्जितः ॥
देहात्म प्रत्ययो यद्वत् प्रमाणत्वेन कल्पितः ।
लौकिकं तद्वदेवेदं प्रमाणं त्वाऽऽत्म निश्चयात् ॥ ब्र.सू. शं. भा. १।१।४
२- आत्मानं चेद्विजानीयात् अयमस्मीति पूरुषः ।
किमिच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् ॥ बृ. उ. ४।४।१२
३- अविभक्तं भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूत भर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥ गी० १३।१६
४- ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥

चौदें लोकें दे जो पदारथ नाम रूप प्रकाशी जी।
इन्दे नाश होये दे पिच्छों ब्रह्म रेया इक बाकी जी॥
देई प्रमाण बिच शास्त्रें दे गै एबी लिखी दखाया ऐ।
विशणु प्रभु ने नारद जी गी प्रलय प्रसङ्ग सुनाया ऐ॥
जगदाधार रूप जो पृथवी पानी बिच लय पान्दी ऐ।
पानी तेजें इच, तेज वायु बिच, पौन आकाश समान्दी ऐ॥
गास बी सूखम ब्रह्म शरीरें अन्दर जाई समान्दा ऐ।
'ब्रह्मा नन्दा' ब्रह्मा बी उस ब्रह्मै बिच लय पान्दा ऐ॥

ब्रह्मा

लख सतारां ज्हार अठाई बरें दा सतजुग लिखेया।
बारां लख छयानवे ज्हार बरें दा त्रेता मिथेया॥
अट्ठ लखें चौंठ हजारें बरें दा द्वापर मिथेया।
चौं लखें ते बत्ती ज्हारें बरें दा कलियुग रखेया॥
१-साढ़े इक हजार युगें दा दिन ब्रह्मा दा हुन्दा।
उतनी गै फी रात सुनाई जिस दे बिच ओ सौंदा॥

१– सहस्र-युगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः॥ गी० ८।१७

जिआं इस लोकै बिच जन्तु रातीं बेल्लै सौंदे ।
संस्कार सब दिनै दे सारे अन्दर उसदे रौंदे ॥
दुऐ दिन प्रातः दे बेल्लै जिआं जागी पौंदे ।
इयां गै ओ संस्कार बी सनमुख आई खड़ोंदे ॥
इस्सै चाली अपनी रातीं ब्रह्मा सौंदा जेल्लै ।
सारी सृष्ठि उप्पर प्रलया हुन्दी ऐ उस बेल्लै ॥
पर संस्कार सबनें जीवें दे किट्ठे हुन्दे आई ।
ब्रह्मा दी सूखम देहै दे अन्दर जान समाई ॥
१-बीती रात तां जागै ब्रह्मा जां प्रभाती होई ।
जीवें दे कर्में गी लेइयै सृष्टि रची खड़ोई ॥
मिटना मिटिऐ होना मुड़िऐ सृष्टि-निजम बनाया ।
अनादि समे शा प्रलय-सृष्टि दा चक्कर चलदा आया ॥
२-कारण रूप सनातन गै त्रैकाल अमर जो रौन्दा ।
जड़-चेतन सब मिटदे बनदे नाश नि उसदा होन्दा ॥
३-नजरी औंदा नईं ओ तां गै निर्गुण धाम खोआन्दा ।
उसगी प्रापत होऐ जेड़ा मुक्त होऐ सुख पान्दा ॥

१- अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्त-संज्ञके ॥ गी० ८।१८॥

२- परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तो अव्यक्तात्सनातनः ॥
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥

३-अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमागतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ गी० ८।२१

१-ओ सबनें शा न्यारा बसदा परम प्रेम ने लबदा ।
चराचरें बिच व्यापी रेया आधार रूप ओ सबदा ॥
सवै बरे दी आयु उसदी लिखी प्रमाण कराई ।
ब्रह्मा दे इक ज्हार युगें दी बैष्णव घड़ी सुनाई ॥
विष्णु वाले कई हजारां युग जां बीती जन्दे ।
शिवजी दी इक कला बीतदी 'ब्रह्मानन्द' सुनान्दे ॥

अन्तः करण

लाल टल्लों'च बलौर जो रखेया ओ बी सुआ लबदा ।
लाली धर्म बलौरै दा नईं पर ए टपला लगदा ॥
टल्लों' ने संजोग सम्बन्ध बलौरै जां बनाया ।
भलेयां होई पनछान नि उसदी धोखे दे बिच आया ॥
पर जिस बेल्लै दौन्नें गी गै बखरे-बखरे कीता ।
फी बलौर चिट्टे दा चिट्टा भूठा होया फजीता ॥
अन्तः करणी धर्म जो कर्त्ता भोक्तापना सुनान्दे ।
तादात्म्य सम्बन्धै कारण आतमा कन्ने रलांदे ॥
सुषुप्ति दे बिच लीन ए हुन्दा भरमें दा बिस्तारा ।
पर उन्दा ओ दिखने वाला आतमा सदा न्यारा ॥

१– पुरुषः स परः पार्थ भक्तया लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥ गी० ८।२२

घड़े दे अन्दर गास जो दुसदा 'घटाकाश' खोआन्दा ।
घड़े दे भजदे सार कुतै ओ की नजरी नईं औन्दा ॥
आकाश गी कोई छुई नि सकदा लख तरां कोई मेलै ।
'घटाकाश' गै महाकाश ऐ भजदा घट जिस बेल्लै ॥
देह दे सरबन्धै कारण आतम जीव खोआन्दा ।
जन्म-मरण ए धर्म देहै दा इस पर असर नि पान्दा ॥
पञ्ज शरीर महाभूतें दे, उन्दे थों बखरा बाहरा ।
नारी-पुत्तर नातें कोला रवै सदा ओ न्यारा ॥
जेकर कुतै क न्हेरै रस्सी पुञ्जां पेदी होऐ ।
नजरी गी ओ टपला लगदा दिक्खी नईं पनछोऐ ॥
अन्धकार दोषै दे कारण रस्सी नईं पनछोन्दी ।
रज्जु उपहित चेतन आश्रत मूला विद्या रौंहदी ॥
उस बिच हलचल पौने कारण सर्पाकार बनान्दी ।
ए परिणाम अविद्या दा चेतन दा भरम खुआंदी ॥
शुद्ध ब्रह्म दे आश्रत जेड़ी मूल अविद्या रौंदी ।
प्रारब्धी कर्मैं बस उस बिच हल चल आइयै पौन्दी ॥
चिदाभास जड़ चेतन रूप बकार गी लैंदी धारी ।
इयै भरम ऐ ब्रह्म-सम्बन्धी आखन बेद बचारी ॥
कारज-कारण रूपै दे बिच भेद-दृष्टि ए सारी ।
त्रै काल बी सुन्ने कोला मुरकी नईं न्यारी ॥
बाहरी भेद छुड़ी करी दिक्खो तत्त मनै'इच रखी ।
तां मुरकी ते सुन्ने अन्दर भेद नईं इक रत्ति ॥

शुद्ध ब्रह्म ते जगत दे अन्दर इस करी टपला रौंदा।
कारज-कारण रूपै दे बिच भेद प्रतीति पौन्दा ॥
अधिष्ठान ब्रह्मा थों इसदी बखरी नईं ओं सत्ता।
जगत ऐ मिथ्या 'ब्रह्मानन्दा' इयै नखेड़ा पक्का ॥

अध्यास

भरम-भेद दा बेदान्तै'इच करी नखेड़ा दस्सेया।
अनहोनी परतीती दा गै नां 'अध्यास' ऐ रखेया ॥
'सधवा' शब्द बशेषण नारी दा नईं भेद सुझान्दा।
पर नषेध विधवा दा करी सुहागन बोध फन्दा ॥
इआं गै सत्तादक जेड़े भेद अनेक खुआन्दे।
करी नषेध इस परपैञ्चै दा आतम-बोध करान्दे ॥
अन्तः करणें दी वृत्ति बिच चेतन अकस जो पेया।
चिदाभास प्रतिबिम्ब सरूपी चेतन ओ बनी गेया ॥
चेतन गुणें बिना जो बस्तु चेतन बनिऐ दस्सै।
उस दा नां बेदान्तै अन्दर 'चिदाभास' लिखी रखे ॥
अल्प देशकालै बिच बर्त्ती नाम बशेष पुआन्दा।
इस्सै चाली चिदाभास बशेष चेतन खुआन्दा ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ते अज्ञान काल दा साखी।
अन्तःकरण परिणामी वृत्तियां, अल्प देश दा बासी ॥

जिग्रां सूरज गासा चमकै, सारै व्यापदा रौंदा ।
पर सबनें थारें पर इक्कै नेआ बिम्ब नईं पौंदा ।।
जल अडोल जां जित्थें कोई शीशा पेदा होये ।
उसदे अन्दर चमकै जेल्लै रूप-बशेष बजोऐ ।।
सामान्य व्यापी सूरज जिग्रां लट लट चमकां मारै ।
तेज युक्त बी इन्ना ऐ पर अग्ग नि लांदा सारै ।।
सूरजकान्त मणी, पर जित्थें कुदरै पेदी होऐ ।
रूप बशेष बनै उस थाहरै, बस्त्र जली खड़ोऐ ।।
सामान्य चेतन बी इस चाली सर्वदा व्यापी रौंदा ।
पर बोल चाल ते फिरना उस थीं बशेष व्यवहार नि हुन्दा ।।
पर अन्तःकरण रूप उपाधि जिस २ थाहरै होऐ ।
चिदाभास रूप उत्थें गै बनियै बशेष चेतन गनोये ।।
कर्त्ता भोक्ता बोलना चलना लोक परलोक गी पान्दा ।
इस्सै चाली बाकी होर बशेष व्यवहार बनांदा ।।
सामान्य चेतन ब्रह्म तत्त ऐ होआ सब नखेड़ा ।
उपाधि युक्त चिदाभास मिथ्या शास्त्र करन नखेड़ा ।।
पुन्न पाप दा कर्त्ता पन ते भोगना सुख दुःख सारा ।
लोक परलोक दा गमनागमन जन्म-मरण विस्तारा ।।
लक्ख चौरासी योनी प्राप्ति होर धर्म संसारी ।
चिदाभास दे मिथ्या दस्से श्रुतियें बिच बिचारी ।।
अस्ति भाति प्रिय नाम ते रूप प्रत्यक्ष प्रकाशदे ।
नाम रूप दो मिथ्या दस्सी पहले त्रैवे सच्च आखदे ।।
पिण्ड थीं लेई ब्रह्मण्डै तोड़ी ब्रह्मानन्द ऐ आखदा ।
अस्ति भाति ते प्रिय आत्मा त्रौं रूपें दे बिच प्रकाशदा ।।

पुरुष

१–जीवें सैहत प्रकृति दौवें आदि रैहत खुआन्दे।
इन्द्रियां ते त्रै गुण माया थों उत्पन्न दरसांदे ॥
कारज करण शरीर इन्द्रियां माया खेल रचाया।
पुरुषै भोग भोगने तांईं हेतु बनी दखाया ॥
जड़ प्रकृति कल्ली कच्छा कारज किज नईं बनदा।
ना गै पुरुष विकार रैहत गी भोक्ता शास्त्र मनदा ॥
स्थित प्रकृति अन्दर होइयै भोक्ता पुरुष खुआन्दा।
चौरासी लख योनी बिच पेई आपूं चक्कर लांदा ॥
बास शरीरै बिच बी करदे दीप न्याईं रौंदा।
समीप बर्तता कारण साखी मात्र होई गणोन्दा ॥
ईआं गै जो सैहत प्रकृति पुरुष गी जानी लैंदा।
बिधि नषेध बी ब्रह्मानन्दा दोष निं बाकी रैन्दा ॥

———

१–प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धयनादि उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवान् ॥
कार्य करण कर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते। पुरुषः सुख दुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनि जन्मसु ॥
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन पुरुषः परः ॥
य एवं पुरुषं प्रकृतं च गुणैःसह। सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥
॥ गी० १३।१६, २०, २१, २२, २३ ॥

पीपल वृत्त

१—इस संसार प्रपञ्च रूप गीं पिप्पल वृक्ष सुनान्दे ।
श्री कृष्ण जी गीता दे बिच साफ करी समझांदे ॥

अनादिकाल प्रबाह बी इसदा अविनाशी पद रखेया ।
मूल भाग ईश्वर गीं मिथियै शाखा ब्रह्मा दसेया ॥

वेदरूपी पत्तर जो इसदे, इस चाली कन्ने दिखदा ।
शास्त्र उसगी पुरुषें दे बिच 'ब्रह्म वेता' करि मिथदा ॥

पुन्न सरूपी उपरलियां शाखां देव लोक गी दसदे ।
टाहलियां निचलियां जीव जन्तु जो मात लोक बिच बसदे ॥

त्रैगुण रूपी जल सिञ्चन'ने इसदी हुन्दी वृद्धि ।
विषे पञ्च कोपलां करि दस्सियां कर्म रूप फल सिद्धि ॥

प्राणी मात्तर इस लोकै दे मूल रूप नईं दिखदे ।
शास्त्र बी इस बूटे दा कोई आद अन्त नईं मिथदे ॥

नां गै भलेयां स्थिति इसदी दिखने दे बिच औन्दी ।
असंग रूपी शस्त्र कन्ने जड़ इसदी कट्टनै पौंदी ॥

१—उर्ध्वं मूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् । छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखाः गुणप्रवृद्धा विषय प्रबालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानु बन्धीनि मनुश्यलोके ॥

१–एदे मूल ईश्वर पदगी जो दृढ़ विश्वास ने तुपदा।
साधन सैहत बिवेक युक्त होई आश्रा लैन्दा उसदा ॥
आतम-ज्ञान गी पाई जो तदरूपता बिच समान्दा।
दुःख दा लेश निं ब्रह्मानन्दा ऐसे पद गी पान्दा ॥

उत्तम अधिकारी

शरतां चार इस प्रेम नदी दियां उन्दा पूरा होना औखा।
अङ्गार चबाने, पर्वत चुकने, सत्त समुन्दर तरना सौखा ॥
२–बिवेक बैराग ते षट् सम्पत्ति मुमुक्षता चौथी होई।
इन्दे बिच जो पूरा उतरै सत्-अधिकारी सोई ॥
सत् असत् इनें दौनें दा बख-बख करना जेड़ा।
उसदा नाम बिवेक रखेया वेदें करि नखेड़ा ॥

१–प्रह्लाद भक्त दी रक्षा कीनी आप हर। हरणाक्ष नखीं बदारिया नरसिंह रूप धर ॥
द्रुपद सुता के आए ताके गए घर।
वजींदा कौन साहिब नूं आखे तूं अन्ज नहीं अन्ज कर ॥

२–नित्यानित्य वस्तु विवेकः इहामुत्तार्थ भोगविरागःशमादमादि साधन संपत्, मुमुक्षत्वं च।
तेषु हि सत्सु प्रागपि धर्म जिज्ञासया ऊर्ध्वं च शक्यते ब्रह्म जिज्ञासितुं च न विपर्यये ॥
ब्र० स० १।१।१ शं० भा०

इस भूलोक दे कोला लैइयै ब्रह्म पुरी दे तोड़ी ।
सारें भोग विलासें वाला तिनका देयै त्रोड़ी ॥
सुखने बिच भी इन्दा जेल्लै चेता नइयों औंदा ।
उस बेल्लै दी मौन अवस्था गै बैराग खुआन्दा ॥
शम दम दे कन्ने श्रद्धा तितिक्षा होये जरूरी ।
उपरति ते समाधानता षट सम्पत्ति पूरी ॥
१–जीआं वायु रैहत ठकानै तेल दिये बिच जलदा ।
जोत वी डामांडोल निं हुन्दी लट लट करदा बलदा ॥
उऐ नेया अभ्यास करि जद मनैगी साफ बनांदा ।
शीशे वांगर चमकन लगदा तां ओ 'शम' खुआन्दा ॥
दिखी पदार्थ इन्द्रियां बी कदे निं होन विकारी ।
उसगी बुद्धिमान विवेकी आखन 'दम' बिचारी ॥
गुरुमुख ते सतसङ्गति बिचा सुनी होवै जो बानी ।
परम विश्वासी होयै पलै बिच 'श्रद्धा' ओ बखानी ॥
सुखदुःख ते सरदी ते गरमी शास्त्र लिखी सुनान्दे ।
मान-अपमान ते भुक्ख प्यास ए दो-दो द्वन्द्व खुआन्दे ॥
इन्दो प्राप्ति दे बिच रैहिये चित्त समान जो रखदा ।
उस्सै दा नां करि तितिक्षा वेद प्रमाण ऐ दसदा ॥

१–यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमास्मृता ।
योगिनो यत चित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥ गी० ३।१६ ॥

मात लोक थीं ब्रह्म पुरी तक जो २ भोग बनाए।
जितने बी इन भोगने वाले जीव समूह रचाये ॥
सबनें दे त्यागै दी इच्छा चित्त बिच जा समाई।
उपरति नां अवस्था उसदा वेद बखानन गाई ॥
जिस बेल्लै मुंह-अखीं दा जा अन्दरैगी परतोई।
परम जोग दा दर्शन पान्दा समाधानता होई ॥
परम धाम सत् रूप जो मुक्ति क्लेश रैहत सुखदाई।
उस प्राप्ति दी इच्छा जेड़ी मुमुक्षता ओ दरसाई ॥
ईश्वर वेद गुरु अन्तःकरण बी होन दयाल जे चारै।
तां सब साधन पूरे उतरन वेदान्तैच विचारे ॥
इक विच कसर बी बाकी तां ए सारे रौन अधूरे।
जे चारे ए होन सहाई तां कम्म उतरन पूरे ॥
पूरे गुरु दा मेल कराना ईश्वर कृपा सुनान्दे।
गुरु दयालु शिष्येंगी बी आप समान बनांदे ॥
वेद शक्ति भी सिमरण रैहिए हृदय बिच ममा।
दृढ़ अपरोक्ष दी ज्ञान अवस्था परम तत्त्व दरसा ॥
होई वेद कृपा परिपूरण अन्तःकरण सहाई।
नईं तां ए बी हुन्दियां नईंयों वेदें गल्ल समझाई ॥
पूर्व जन्म जां इस केड़े बिच निश्काम कर्म जे कीते।
कन्ने प्रबल उपासना वाले प्रेम प्याले पीते ॥

१–उसदे कन्ने मन-चित्त एदा शुद्ध एकाग्र होग्रा ।
ब्रह्मानन्दा चमकां मारै शीशा जियां धनोग्रा ॥

गुरु

ब्रह्म ज्ञानै दी प्राप्ति दी विधि वेदान्त न रखदे ।
२–ब्रह्म श्रोत्रो ब्रह्म निष्ठा दो गुरु दे लक्षरण दसदे ॥
सृष्टि दा °[१]आरोप करि अपवाद°[२] गी बी जो जानै ।
शिष्यें दी शङ्कें दा समाधाने बी जो पनछानै ॥
आतम रूपै दी स्थिति दे प्रमाणें गी जो बखानै ।
विधि-निषेधै दियें मरोड़ी-घुण्डियें गी जो जानै ॥
ब्रह्म श्रोत्री इयै नेया महात्मा गी ऐ ए आखेया ।
प्रमारण देई बस शास्त्रें इस दी कीति ऐ ए व्याख्या ॥
जाग्रत थीं सौने तोड़ी ते उठने थीं सौने तोड़ी ।
स्वासें दे संचारै तोड़ी धारना नईं त्रोड़ी ॥

१—मिकराज़े मौज दामन-ए-दरिया कतर गई ।
वहदत का बुरका फट गया सारी सतर गई ॥

दरियाए बेखुदी पर बादे-खुदी चली ।
कसरत की मौज हो के वह सारे पसर गई ॥

इस्म ओ सिफत के शौक ने ऐसा किया रजील ।
गुमनामी बे सिफानी की सारी कदर गई ॥ [बाकी अगले सफे पर]

शत्रुयें मित्रें दे कन्नें, अपने बगानें कन्नें ।
स्वर्ण मृत्तिका दे बिच जेड़ा पक्षपात नईं मन्नें ॥
इस देहू दे अन्तै तोड़ी चरासी मिटने तोड़ी ।
माया दे विस्तारै कन्नें प्रीत नईं जिस जोड़ी ॥
ब्रह्मनिष्ठ ए गुरु दे लक्षण पूरण होये सारे ।
निश्चय युक्त प्रमाण द्वारा श्रुतियें बिच विचारे ।
ए दो लक्षण जिस बिच पूरे सदगुर पदवी पान्दा ।
जीवनमुक्त सो ब्रह्मानन्दा दूएंगी पार लगान्दा ॥

———

भूले थे देख दुनियां की चीजों को गरचे हम ।
हादी ने इक तमंचा दिया होश फिर गई ॥
गफलत की नींद में जो तअय्यन की ख़ाब थी ।
बेदार जब हुए न जाना किधर गई ॥
माशूक़ की तालाश में फिरते थे दर ब दर ।
नज़र आया बे नकाब दूई की नजर गई ॥
दिलदार का वसाल हुआ दिल में जब हसूल ।
दिलदार ही नज़र पड़ा दीदा जिधर गई ॥
साक़ी ने भरके जाम दिया मारफत का जब ।
दस्तार भूली होश गया, यादे-सर गई ॥

२—परीक्ष्य लोकान्कर्म चितान्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन ।
तद्विज्ञानार्थं स गुरु मेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥ मुंडक १।२।१२

०१—ब्रह्म स्वरूप वस्तु में अज्ञान और उसके कार्य प्रपञ्च का जो कथन है उसका नाम आरोप है ।

०२—प्रपञ्चका निषेध करके अधिष्ठान ब्रह्म का जो अवशेष अर्थात बाकी रहना है उसका नाम अपवाद है ॥

खेत्र

जिमींदार जिआं खेतर राहियै फसल त्यार बनादां ।
बड्डी बुड्डी गाही कड्डी दाने अन्दर पांदा ॥
मुक्कने तोड़ी खन्दा पीन्दा कम्मणे गी भी बण्डदा ।
उस्सै बिचा अपने जेठ जठेरें गी बी मनदा ॥
इस्सै चाली माया ने ए देह भी खेतर रचेया ।
१—जीव एदा जिमीन्दार खोआइयै अन्दर रचेया पचेया ॥
कायक वाचक मानस रूपी जो २ बीज रलान्दा ।
ओ सारे गै दाता ईश्वर इसदे लेखै पान्दा ॥
शुभ कर्म दा फल सुख थोन्दा पापें दा दुख मिलदा ।
न्यां कारी त्रकड़ी बिच तुलदा फरक नि पौंदा तिल दा ॥
२—पञ्च मांभूत अहंकार ते प्रकृति बुद्धि रलाई करियै ।
मनै दे सैहत दस इन्द्रियां पञ्च विषे गणाई करियै ॥
सुख दुःख इच्छा द्वेष ज्ञान शक्ति धीरज शरीर विकार धारी ।
संज्ञा खेतर ब्रह्मानन्दा श्रीकृष्ण भगवान विचार कारी ॥

१—इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहु क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः (गी० १३।१)
२—महा भूतान्यहंकारो बुद्धि रव्यक्त मेव च ।
इन्द्रियानि दशैकं च पंच चेन्द्रिय गोचराः ।।गीं० १३।५
इच्छा द्वेष सुखं दुःखं संघातिश्चेतना धृतिः ।
एतत् क्षेत्रं समासेन सविकार मुदाहृतम् ।।१३-६ १३-७।।

ज्ञान

१–अपने गुण स्तुति, दम्भ, पर-पीड़ा दे रैहत होई सरलता छोड़दे नईं।
गुरु सेवा, स्वरूप तत्परता, शरीर संयमी नियम त्रोड़दे नईं॥

२–पदार्थें बिच त्याग बुद्धि, हंकार दे रैहत होई बरतदे नीं।
जन्म मरण व्याधि ते वृद्ध अवस्था दुःख प्राप्ति दे बिच तड़पदे नईं॥

३–पुत्र स्त्री घरै दी तांहग नइयों, हानी लाभ दे बिच समान रौंदे।
होई परम प्रेमी परमात्मा दे, त्याग जन समूह करि निष्काम रौंदे॥

४–तत्त्व निर्णय, नित्य एकान्त वर्ति मान रैहत पर प्रमाण रखदे।
ए संज्ञा ज्ञान नित्य विचार करिऐ, विपरीत इसदे अज्ञान दसदे॥

५–जानने जोग जो तत्त्व वस्तु सत् असत् थीं परे प्रकाशदी ऐ।
कृष्ण गीता दे बिच प्रमाण कर दे जिसगी जानिऐ मोक्ष प्राप्ति ऐ॥

१–अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्ति रार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः॥गी० १३-८

२–इन्द्रियार्थेषु वैराग्य मनहङ्कार एव च।
जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख दोषानुदर्शनम्॥ १३-८

३–असिक्तरनभिश्वङ्गः पुत्र दार गृहादिषु।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु॥ १३-६

४–मयि चानन्य योगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्त देश से वित्वमरतिर्जन संसदि॥ गी० १३।१०
अध्यात्म ज्ञान नित्यत्वं तत्त्व ज्ञानार्थ दर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्त मज्ञानं यदतोऽन्यथा॥ ,, १३।११

५–ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतत्त्वमश्नुते॥
अनादि मत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥ ,, १३।१२

१–सब पास्सें हत्थ पैर उसदे अक्खीं सिर मूंकन्न, श्रुति आखदी ऐ ।
स्वरूपै अपने बिच होई स्थित बैठी, चराचर बिच ओदी व्याप्ति ऐ ॥
२–सबँ नेत्र आदि इन्द्रिय गुणें अन्दर रूप रस जो विषय विकार रखदे ।
उन्नें वृत्तियें बिच तद्रूप होइयै समभाव इसगी तदाकार दसदे ॥
३–स्थावर जङ्गम भूतें दे बिच ओ परमात्म साथी ।
बस्त्रें दे बिच सूत्रें वाङ्ग अन्दर बाहर व्यापी ॥
ईश्वर रूप विज्ञान आत्मा सदा न्यारा रौंदा ।
अविद्या कल्पित जीव खुआइयै चौरासी बिच पौंदा ॥
४–इस लोकै बिच जिआं मदारी खेड तमाशा करदा ।
रस्से उप्पर चढ़ी खड़ोन्दा गासै पास्सै चलदा ॥
दौहनें हत्थें अपने कन्ने तलवार ते ढाल पगड़दा ।
रण भूमि वांङ्ग युद्ध रचान्दा बैरियें कन्ने लड़दा ॥
पर ए सब किभ नकली उसदा नजरी कुसै निं पौवे ।
असली जो मदारी ऐ ओ भुञ्जां खड़ोता रौवे ॥
जिआं तिलें बिच तेल छपेदा मैंहदी दे बिच लाली ।
बीजै अन्दर खै समाया सैहत पत्र फल डाली ॥

१–सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ,, १३।१३
२–सर्वेन्द्रिय गुणाभासं सर्वेन्द्रिय विवर्जतम् । असक्तं सर्व भृच्चैव निर्गुणंगुणजोक्त च ।
३–बहिंस्तश्च भूतानाम चरं चरमेव च । सूक्ष्म त्वात्तदविज्ञैयं दूरस्थं चान्तिके चतत् ॥
४–परमेश्वरस्त्वविद्या कल्पाच्छरीरान्कर्त्तु भोक्तु विज्ञानान्माख्यादन्यः ।
यथा यायाविनश्वर्म खड्गधरन्सूत्रे णाकाशमधिरोहतःस एव मायावी परमार्थरूपो रूपो भूमिष्टोऽन्यः । यथा वा घटालाशादुपाधिपरिछिन्नादनुपाधिरपरिछिन्न आकाशोऽन्य (श० भा० ब्र० सू० १।१।१७)

१–सेन्धे अन्दर खारापन ते गन्ने बिच मधुराई।
काठै दे बिच अग्ग छपीदी दिक्खी कुसै नि पाई॥
यत्न शील पुरुषें दे अग्गें अति निकट होई बौंदा।
बे जतनें गी अक्खीं लक्खां योजन टपला पौन्दा॥
रामचन्द्र जी राजसभा बिच बैठे प्रश्न उचारी।
पुछदे अमृत कुत्थें रौंदा उत्तर देयो विचारी॥
ऋषिमुनि सब ज्ञानी ध्यानी सभा दे बिच से आये।
सारें आपो आपनी बारी उत्तर गिनी सुनाये॥
आखन इक समुन्दर दे बिच अमृत रक्खेया रौन्दा।
नईं हुन्दा तां देवतें गित्तै उसी की मथना पौंदा॥
अमृत रूपी चन्द्रमा गै दूये ए दरसांदे।
रश्मी द्वारा पुष्ट वनस्पति करै प्रमाण करांदे॥
त्रीये नारी दे मूहैं बिच अमृत हुन्दा दसदे।
तां गै उन्दे पति पान मुख करियै बसदे रसदे॥

१–ईख में मधुराई जैसे सेन्धे में है खारा पन।
तिलन में तेल और शीतलता ओले में॥
नीम में है कटुता जैसे मिरच में है तीखापन।
दूध में है घृत और सुगन्ध है वेले में॥
आम में खटाई जैसे अग्नि में है ऊष्णता।
शोरे में है खाद और रूई है बिनौले में॥
काष्ठ में है अग्नि जैसे बीज में है वृक्ष छुपा।
तैसे ही है राम छुपा प्राणियों के चोले में॥

चौथे बिच पतालें भरेया अमृत दस्सन रौंदा ।
सार रूप ए वस्तुऐ सारें'शा थल्लें बौंदा ।।
पञ्जवें आखन देवलोक बिच अमृत रौंदा जाई ।
तां गै सुरगैदे बसनीकें अमर दी पदवी पाई ।।
महांवीर जी बोले अपने पूर्ण बिचार द्वारा ।
सागर बिच जे अमृत रौंदा तां की हुन्दा खारा ।।
खिन २ दे बिच घटना-बदना चन्नैगी की पौन्दा ।
इक रस रखने वाला अमृत जे उस दे बिच रौंदा ।।
स्त्री दे होंठें दा अमृत पुरुष पान जे करदे ।
विधवा शब्द नि जग बिच बनदा पति नि उन्दे मरदे ।।
बड़े २ विषधारी अजगर बिच पतालें बसदे ।
जित्थें अमृत हुन्दा उत्थें विष दा नां नि दसदे ।।
राग द्वेष ते क्लेश युक्त सब देवलोक दे वासी ।
जित्थें अमृत होयै उत्थें रौंन क्लेश नि बाकी ।।
ज्ञान रूप पर ब्रह्म व्यापक स्वयं प्रकाश जो दसदे ।
तदाकार होए जो साधक स्थिति ओदे बिच रखदे ।।
अमर होई इस्सै देहै बिच परम धाम गी पांदे ।
उन्दे अंग संग अमृत रौन्दा ब्रह्मानन्द सुनान्दे ।।

त्रैगुण

१—सतोगुण ज्ञानै बिच बन्नदा ऐ, रज लालचै दी पींगा चाड़दा ऐ।
अज्ञान ते मोहै दे बस करियै तम जीवै गी थल्लै पटकारदा ऐ॥
सतोगुणी जदूं ए शरीर छोड़ै देवलोकै दे बिच ऐ वास करदा।
रजोगुण इस लोकै बिच जन्म दैइयै कर्म सङ्गियें दे कन्नै साथ करदा॥
तमो गुणै दी भावना बिच जेकर ए जीव शरीरै गी छोड़दा ऐ।
ताँ कीड़ें मकोड़ें दी नीच योनि बिच एसदा संग ए जोड़दा ऐ॥
सतोगुणें'च सुखै दी प्राप्ति ऐ रजो गुणें'च पेई दुःख भोगदा ऐ।
तमोगुण अज्ञानै दे द्रुग सुट्टी इस जीवै गी मोहै बिच रोलदा ऐ॥
२—आपूं गी न्यारा असंग समझी जद गुणें गी कर्त्ता मन्नदा ऐ।
साक्षात् स्वरूप गी प्राप्त होआ परमशान्ति दे बिच ओ रमदा ऐ॥
३—सतोगुणें दा कारज प्रकाश जेड़ा, रज कर्म सम्बन्धेगी जोड़दा ऐ॥
तम आलस ते निद्रादे बस्स सुट्टी शुभ कर्म करने थवां मोड़दा ऐ॥
उन्दी प्राप्ति बिच प्रसन्न नइंयों नां निवृत्ति दी कांक्षा रखदा ऐ।
कृष्ण गीता दे बिच प्रमाण करदे ओ ब्रह्म स्वरूप होई वसदा ऐ॥
साखी मात्र दी न्याईं ओ होई रौंदा नां गुणें दे बिच पेई डोलदा ऐ।
दुःख प्राप्ति बेल्लै नईं खिच लगदी नां सुखें गी अग्गें टटोलदा ऐ॥

१—तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनोमयम्। सुख सङ्गेन वध्नाति ज्ञान संगेनचानघ॥
रजो रजात्मकं विद्धि तृष्णा संग समुद्भवम्। तन्निवध्नाति कौंत्तेय कर्म सङ्गेन देहिनम्।
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्व देहिनाम्।
प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निवध्नाति भारत॥ गी० १४।६-७-८

२–३—(अगले सफे पर)

सुख दुःख ते मिट्टी-स्वर्ण-पत्थर नां दृष्टि दा भेद प्रमाण मिथदा ।
　　स्तुति निन्दा गी इक समान सुनदा अपना रूप ओ इक समान दिखदा ॥
नां आदरै बिच प्रसन्न हुन्दा नां नरादरै कोला गैं नस्सदा ऐ ।
　　मित्रें बैरियें बिच निं फर्क कोई गुणें थवां परे होई बसदा ऐ ॥
मान ते मोह थीं रैहत होइयैं संग दोष गी बी जिनें जित्तेया ऐ ।
अध्यातम बिचार बिच न मगन होऐ उनें जगत गी जानेया मित्थेया ऐ ॥
सब वासना उन्दियां नष्ट होइयां कन्ने द्वन्दें कच्छा दूर बसदे न ।
　　ब्रह्मानन्दा लेया परम पद उनें गीता बिच कृष्ण जी दसदे न ॥

॥ निदिध्यासन प्रकरण समाप्त होआ ॥

२—नान्यं गुणेभ्यः कर्त्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
　　गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥　　गीता १४।१९
३—प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पांडव । न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति ॥
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते । गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ।
समदुःख सुखःस्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः । तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
　　सर्वारम्भ-परित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥ गी० १४।२२–२५ ॥

* फल प्रकरण *

१–बास चराइऐ फुल्लें आली वायु होयै कनारे ।
इस्सै चाली इन्द्रियें कन्ने जीव डुआरी मारै ॥

जीव अविद्या दे कारण गै लोक परलोक गी जन्दा ।
त्रैलोकी दा स्वामी अपनी करनी सेवक हुन्दा ॥

रामचन्द्र जी राजसभा बिच बैठै, गल्ल बचारी ।
हनुमानै गी पुच्छन कुन तूं मुआं बचन उचारी ॥

सोचै आखां दास, तां हुन्दी ज्ञान रूप दी हानि ।
सेवक-पनै च दोष ऐ औंदा आखां जे मैं ज्ञानी ॥

(आखै) देह दृष्टि ने दास तुसाड़ा, जीव बुद्धि ने 'अंशाँ' ।
वास्तव जो तुस उऐ औं आं, एदे बिच नईं संशा ॥

बेदान्तै दी भलेयां जिसने होयै पढ़ी दी पट्टी ।
उस गी लोड़ निं रौंदी अग्गें, कर्म काण्ड दी रत्ती ॥

त्रैगुण मूलक कर्म रचित जो-जो बी बस्तां बनियां ।
२–छान्दोग उपनिषदै बिच ओ सब गै नाशवान करी मन्नियां ॥

लोक परलोक दे भोग पदार्थ सदा निं इक रस रौंदे ।
पिट्ट स्यापा पौंदा जेल्लै क्षीण होने पर औंदे ॥

१–शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः । गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ।
२–तद्यथेह कर्मचितो लोकः क्षीयते एवमेवामुत्र पुण्यचितो लोकः क्षीयते (छां० ८।१।३)

अपने पिता वरुण कच्छ जाइयै भृगु प्रश्न उच्चारै ।
"हे भगवान मिगी ब्रह्म दखाओ" तैत्तरी ए बचारै ॥
१–जिस व्यापक थीं भूत चराचर सब उत्पत्ति पांदे ।
उत्पन्न होइयै जिस करी जीन्दे, जिस बिच फी समान्दे ॥
जानने जोग ऐ उऐ ब्रह्म जो घट २ बिच समाया ।
इस विधि कन्ने वरुण ने पुत्तरै भृगु गी ब्रह्म दखाया ॥
२–बायु गी बी उस्सै ब्रह्म दे भय करी चलना पौंदा ।
सूरजै गी बी डरदे गै नित्त पन्ध सिरै पर रौंदा ॥
ओदे डरै करी ए अग्नि बलदी लट-लट करदी ।
इन्द्र बी उस थीं थर-थर कम्बदा, तां गै बरखा बरदी ॥
मौत बी उस्सै कोला डरियै खिन २ दौड़ां मारै ।
निश्चे सैहत प्रमाण जो कीता "काठक मन्त्र" उच्चारै ॥
३–धरती उप्पर उऐ रौंदा अन्दर बी ओ वसदा ।
पृथवी जिसगी जानै नईं ओ 'बृहद आरण्यक' दसदा ॥
जिस दा देह पृथबी प्रेरणा अन्दर रेई करान्दा ।
उऐ आतम तेरा बी ऐ अजर ते अमर खुआन्दा ॥

१–यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते । येन जातानि जीवन्ति । यत्प्रयान्त्यभिसंविशन्ति तद् ब्रह्म । (तै० ३।१।१)

२–भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः ॥ भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥ कठ० उ० २।६।३

३. यः पृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अन्तरो यं पृथिवी न वेद यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमन्तरो यमयत्येष आतमाऽन्तरयाम्यमृतः ॥ बृ. ३. ३।७।१,२ ॥

१–जिआं मकड़ी जाला बुनिऐ अन्दर आप समान्दी ।
पृथवी बिचा जड़ी-बूटियां "मुण्डक" लिखी सुनांदी ॥
चेतन पुरुष बी अपने अन्दरा केस बाल प्रगटांदा ।
इस्सै चाली परब्रह्मै'शा जग उत्पत्ति पांदा ॥
२–उसदे दर्शन मातर करियै क्षै करमें दा दसदे ।
हृदय दे सब बन्धन-संशय छेदन होइयै नसदे ॥
३–देह रूपी इस ब्रह्मपुरी बिच, उसगी तुप्पो जाई ।
हृदय दे मैहलें दे अन्दर बैठा डेरे लाई ॥
४–आदि अन्त रहत निर्गुणिया निरलेपी ओ सोब्बै ।
देह दे बिच रैहन्दे होई भोग नि कोई भोगै ॥
सर्व-व्यापी संगरहत ओ सूखम रूप खोआन्दा ।
घट-घट दे बिच व्यापत आपूं आतम रूप सुहान्दा ॥
भूमण्डलै गी इकला जिआं सूरज गै परकाशै ।
इस्सै चाली देहै गी बी आत्मा शास्त्र आखै ॥
देह-खेतर क्षेत्रज्ञ आत्मा खोआन्दी सूखम रूपी ।
ज्ञान नेत्र न जिन्दे उयै जानन भेद बरीकी ॥

---

१. यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च पृथिव्यामोषधयः संभवन्ति । यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात् संभवतीह विश्वम् ॥ मुं० १. १. ७ ॥
२. भिद्यते हृदय-ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीन्यते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥ मुं २. २. ८ ॥
३. अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तस्मिन्यदन्तरस्तदन्वेष्टव्यं तद्वाव विजिज्ञासितव्यम् ॥ छां० उ० (८. १-१)
४. अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ॥
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥गी० १३।३१

प्रापत होइयै आतम रूप गी परम धाम गी पान्दे ।
इस्सै चाली गीता अन्दर श्री कृष्ण सुनाँदे ॥
६—इस ज्ञानै दा आश्रय लेइऐ जीव बरतदे जेड़े ।
जनम मरण दे बन्धन ओदे मूल निं औंदें नेड़े ॥
दुःख सुख-द्वन्द संजोग मनै दा आगमापायी विनाशी ।
साधन युक्त कोई धीर मुमुक्षु सैहनशील सुख-कांक्षी ॥
होई निरलेप विक्षेप निं आनै रवै नित्त उदासीनी ।
अमरलोक दा ऐ अधिकारी उऐ परम प्रवीणी ॥
१—सत असत दौंनेंदा निर्णय जिनें सुजाखें कीता ।
नित्त धाम दे ओ बसनीकी होए परम पुनीता ॥
नाशरहत ते अमर व्यापक शासक घट-घट बासी ।
सम दर्शी त्रैकाल एकरस उसदा नां अविनाशी ॥
इस अविनाशी नाश रहत दे सब देह न आने जाने ।
एदा नाश निं कुते बी बेल्लै, बेदें लिखी बखाने ॥
पत रखियै जेड़ा पालना करदा शास्त्र रची सुनादा ।
अङ्ग संग रेइ परलोक सुधारै असली पति खुआन्दा ॥
नां ए जमदा नां ए मरदा अजर ते अमर पुरातन ।
आंच निं लगदी देहैं'इच रौन्दे ऐसा परम सनातन ॥

---

६. इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागतः । सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ गी० १४।२ ॥

१—नासतो विद्यते भावो नाऽभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपिदृष्टो अन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ गी० २।१६

बाल युवा ते वृद्ध अवस्था औन्दियां बारोबारी ।
पर इन्दे बिच रवै आतमा अजर ते निरअबकारी ॥
उं'या गै ए देह छोड़ना, दना सन्देह नईं बाकी ।
जिआं मनुख पुरानी सुट्टी बदलै नवीं पुशाकी ॥
नां तलवारां बडुन इसगी नां गै अग्ग जलांदी ।
पानी बी इसी गाली निं सकदे नां गै पवन सुकान्दी ॥
घोर नरक जो भोगी निकलन, स्थावर जोनियां पान्दे ।
पशु-पखेरू सौ गुन सुखी न लिखियै बेद सुनान्दे ॥
मानु यक्ष गन्धर्व देवतें दा बी लेखा कीत्ता ।
१–ब्रह्म सूत्रें लिखी सुनाया सौ २ गुणा वदीका ॥
व्यापक ब्रह्म दे इक चरणै बिच ए सब सुख न समान्दे ।
त्रै वें पाद आपूं सुख रूपी लिखी प्रमाण करान्दे ॥
२–बारां बरे पर श्वेतकेतु ने पढ़े हे बेद-पुराण ।
उस हंकारै कारण कीता पिता गी नईं परणाम ॥
तां पुत्रै गी कच्छ बठाली पिता बोलदा ऐ ।
इक्कै प्रश्नै कन्ने ओदि बुद्धि तोलदा ऐ ॥

१–आनन्दं प्रचुरत्वं च ब्रह्मणो मनुष्यश्चत्वादारभ्योत्तरस्मिन्नुत्तरस्मिन्स्थाने । शतगुण आनन्द इत्युक्त्वा ब्रह्मानन्दस्य निरतिशयत्वावधारणात् (ब्र०सू० १।१।१३)

२–उत तमादेशमप्राक्ष्यो येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं विज्ञातमिति, कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति यथा सौम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारोनामधेयं मृत्तिकेत्येवसत्यम् । एवं सौम्य स आदेशो भवतिं ॥ छा: (६।१।१,३)

जिस दे दिखने मात्र कन्ने सब किज नजरी औन्दा ।
उस इक्कै दे सुनने कन्ने सब किज सुनेआ दा समझोन्दा ।।
उस्सै इक दे जानने हारा पूरण ज्ञानी हुन्दा ।
पढ़िऐ विद्या जीव ए जित्थें ब्रह्म समानी हुन्दा ।।
श्वेतकेतु ने वचन पिता दे सुने गेआ भलखोई ।
पगड़ी लैंते चरण पिता दे उन्दी शरणी होई ।।
१—जिआं अरुन्धती दस्सने गित्तै पहलें गास दखान्दे ।
पिछों तारें बिचा सत्तें ऋषियें गी दिखलान्दे ।।
पैंहले चारें त्याग करि ओ खीरले त्रै प्रमाण करदा ।
उन्दा बी पिच्छों निषेद करियै, अन्त अरुन्धती गी बखान करदा ।।
इयाँ गै रूप अपवाद कारण प्रपञ्च आरोप गी आनदा ऐ ।
इक २ दे पिच्छें निषेध द्वारा अन्त ब्रह्म गी खीर बखानदा ऐ ।।
जिआं मित्ती दे लौंदे बिचा जितने बनदे भाण्डे ।
घड़े कुनाली कुन्नियां प्याले बक्खो बक्ख खुआन्दे ।।
नाम रूप दा भेद उन्दे बिच दृष्टि मारार दिक्खेया ।
मित्ती सच्ची 'ब्रह्मानन्दा' सारियां शक्लां मित्थेया ।।

ज्ञान भूमका

निश्चा सारे ज्ञातिएं वाला इक जनेआ लिखेया ।
परिस्थिति दा भेद भूमका न्यारा न्यारा मिथेआ ।।

शुभेच्छा सुविचारणा तनुमानसा सत्त्वापत्ति ।
असंसक्ति पदार्थाभावनी तुर्यगा सतवीं रक्खो ॥

लक्खन उत्तम अधिकारी दे जान मनै'च समोई ।
तां उस बेल्लै जानो पूरी शुभ इच्छा हुन होई ॥

आतमा ज्ञानै दी इचछा दा मनै'च लेई उत्साह ।
१–ब्रह्म श्रोत्रिय ब्रह्म च लीन गुरें दी शरणी जा ॥

जोग-साधना कन्ने जेल्लै चित्त ए जा खड़ोई ।
'सुविचारणा' नाँ ज्ञानै दी दूई भूमका होई ॥

श्रवण मनन दे द्वारा मार्ग निरणा करिऐ रखेआ ।
जीव ते ब्रह्म दे एके दा ए सफल अभ्यास ऐ दस्सेया ॥

बहिर्मुखी मन निदिध्यासन'ने अन्तर मुख जा होई ।
'तनुमानसा' ज्ञानै दी ओ तीसरी भूमका होई ॥

श्रवण मनन निदिध्यासन कन्ने संशा दूर ऐ हुन्दा ।
निर्विकल्प वृत्ति बिच रेइऐ आतम नजरी पौन्दा ॥

तत्त्व ज्ञान होऐ तां हिरदा निरमल होइऐ भासै ।
'सत्त्वापत्ति शास्तर उसगी चौथी भूमका आखै ॥

१–यथारुन्धतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थांस्थूलां तारामुख्यां प्रथममरुन्धीति ग्राहयित्वा तां प्रत्याख्याय पश्चादरुन्धतीमेव ग्राहयति तद्वन्नायमात्मेति ब्रूयात् ॥
(ब्र० सू० १।१८)

२–परीक्ष्यलोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाऽभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥ मुं० १।२।१२ ॥

निदिध्यासनै दी अभ्यासी पक्व अवस्था जां होई ।
अंहता ममता विनसै जेल्लै शुद्ध समाधि समझोई ॥
'देह झूठी' प्रतीति होऐ रज-तम थमां खलासी ।
ओ 'असंसक्ति' नां आली पञ्चम भूमका आखी ॥
अधिष्ठान रूपै दै अन्दर इयां रौहना लगदा ।
देह आदि दा अभाव तदूं ए नजरी पौना लगदा ॥
नन्द अलौकक ऐ अनुभव हुन्दा दुख नईं कोई दिसदा ।
छेमी भूमका नाम 'पदार्था भावनी' पाया जिसदा ॥
ज्ञाता ज्ञान ते ज्ञेय ए त्रवैं त्रिपुटी करियै आखे ।
चौथी पञ्चवीं भूमका इयै भाव रूप परकाशै ॥
छेवीं दे बिच इस त्रिपुटी दा बी अभाव जा होई ।
'भाव अभाव' थीं मुक्ति पाइऐ बत्त अगड़ी पनछोई ॥
उत्थान रैहत ए वृत्ति जिसलै अधिष्ठानै'च समाई ।
तां ज्ञानै दी 'तुर्यगा' जानो सत्तवीं भूमका आई ॥
पर्वत रूपी करड़े साधन होऐ सबल्ले सारे ।
आपूं लङ्घी पार खड़ोता पितर भी कन्ने तारे ॥
चार धाम दे तीर्थ करियै इतना फल नईं पान्दा ।
नां गंगा-जमना बिच न्हाइयै इन्ना पुन्न कमान्दा ॥
भूमण्डल दे ब्राह्मणें गी बी दान देई खुश करियै ।
नां इतना फल प्राप्त हुन्दा काशी दे बिच मरियै ॥

इक खिन आतम-रूप स्थिति दा जितना फल मन पान्दा ।
१–इऐ फल ऐ जो मानु गी देवतें बिच पुजान्दा ।।
बैकुण्ठ नवासी बिष्णु दा वर्णन बी सुननै औन्दा ।
ए ज्ञानी बी दूआ बिष्णु मातलोक बिच रौंदा ।।
पृथवी उप्पर जिस थारै पर गैं अपनी ए रखदा ।
अश्वमेध यज्ञै दा महात्म शास्त्र उस थां दसदा ।।
चक्रवर्त्ती राजा जेड़ा ईश्वर रूप खुआन्दा ।
ओ बी अपने देसै अन्दर गै ऐ आदर पान्दा ।।
जिस दे अकस दा विष्णु बनेयां उस बिच जाई समान्दा ।
उस्सै दी तद्रूपता करियै त्रैलोकी पूज्य खुआन्दा ।।
जिआं राजा अकस अपना रानी पर उलटांदा ।
तां ओ अकस इस धरती उप्पर 'राजकुमार' खुआन्दा ।।
पर जिस बेल्लै ओदा उयै अकस गोली'चा जनदा ।
तां मैली संगति दे कारण दासी-पुत्तर बनदा ।।
शुद्ध ब्रह्म दा अकस पेया बिच शुद्ध सतो गुण माया ।
ओ प्रतिबिम्ब ज्ञानी होइयै ईश्वर रूप खुआया ।।
अकस मलीन तमोगुण रूपी अविद्या दे बिच आया ।
उस कारण ए 'ब्रह्मानन्दा' जीव दुखें बिच पाया ।।

१–सर्वेऽस्मै देवा बलिमावहन्ति ।। (तै० १।५।३)
तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति ।। छां० ७।२५।२

तत्पद

छेवें प्रपाठक छांदोगै बिच ए प्रसङ्ग समझाया ।
उद्दालक मुनि ने श्वेत केतु गी अर्थ महांवाक सुनाया ॥
'तत्' प्रथम पद उस मंत्रै दा दूआ 'त्वं' दरसान्दे ।
इनें दौहनें दा वाच्यार्थ लक्ष्यार्थ प्रमाण करान्दे ॥
शब्द ते अर्थै दा सम्बन्ध गै जो जो ओ समझाया ।
इक शक्ति दुई लक्षणावृत्ति दा भेद-सार प्रगटाया ॥
शब्दै ने अर्थ-ज्ञानै दा साक्षात् सम्बन्ध बनाया ।
'शक्तिवृत्ति' नां उस्सै दा ऐ शास्त्र प्रमाण कराया ॥
शक्तिवृत्ति दे परम्परा-सरम्बन्ध न जो २ रखदे ।
ओ शब्दै दी अर्थै कन्ने 'लक्षणा वृत्ति' दसदे ॥
शक्तिवृत्ति दा अर्थ टकोदा वाच्यार्थ ऐ खुआन्दा ।
लक्षणावृत्ति आला मतलब लक्ष्यार्थ दरसान्दा ॥
जहत अजहत ते भाग त्याग ए लक्षणा त्रै प्रकारी ।
बोध करान्दी सूखम दा अज्ञान गी परें पटकारी ॥
वाच्यार्थ सम्पूर्ण दा त्याग करिऐ जे सम्बन्धी दे अर्थै गी बाचदे न ।
बेदान्तै दे बिच प्रमाण कीता जहत लक्षणा उस्सैगी आखदे न ॥
जियां कुसैगी पुच्छना करै कोई अड़ेया कुत्थें ऐ रौहने दा थार तेरा ।
गंगा उप्पर गै कुल्ली बनाई दी ऐ जित्थें रवै दा ऐ परोआर मेरा ॥
सत रज ते तम गै सृष्टिया दी मूल साज समग्री आखदे न ।
हिरण्यगर्भ बराट भगवान दे गै ए बखरे रूप प्रकाशदे न ॥

बैश्वानर सूत्रात्मा अन्तरयामी उऐ खुआया ऐ।
इक शा होआं अनेक ए उसने इच्छा गी प्रगटाया ऐ ॥
जीव रूप होई परवेश कीत्ता जितने तोड़ी ऐ फैली सृष्टि सारी।
चरज काज इयै ओस ब्रह्म दा ऐ दसदी श्रुति ऐ तत्व ए गूढ़ भारी॥
सर्वशक्ति१ सर्वज्ञ२ ते व्यापक३ उसदा रूप सुनाया।
इकपना,४, स्वाधीनपना५, समरत्थपना६ दरसाया ॥
ओ परोक्ष७ ते माया उपाधिवानपना८ बी उसदा।
अट्ठ प्रकार दे धरमें आला रूप ब्रह्म दा दुसदा ॥
इनें सैहत माया दे कन्ने चिदाभास बी छाआ।
इनें सारें गै जुड़िऐ मिड़िऐ ईश्वर बनी दखाया ॥
तत् पदै दा बाच्या मतलब इस चालो ने खोआन्दा।
होआ नखेड़ा बेदान्तै'च बेद बी ऐ समझान्दा ॥
इन्नें उप्परलें सारें धर्में सैहत ऐ माया सारी।
तां भलेयां इस चिदाभास दा कीता त्याग वचारी ॥
हिरन्यगर्भ अव्याकृत दा जो अधिष्ठान खोआन्दा।
ईश्वर साक्षी शुद्ध ब्रह्म तत्पद लक्ष्यार्थ पान्दा ॥
ब्रह्म दे सतपने आला टपला ईश्वर दे बिच लगदा।
तादात्म्य सम्बन्धै कारण उयै सच्चा ईश्वर जचदा ॥
ईश्वर दे कर्त्तापने आला अध्यास ब्रह्म बिच रौंदा।
जगत दा कारण 'ब्रह्मानन्दा' ब्रह्म ओ तां समझोन्दा ॥

'त्वं पद'

हरिद्वार कुम्भें पर कोई पुरुष जे दिक्खेयां होऐ।
उऐ कदें कश्मीरै अन्दर मुड़िऐ नजरी पौवे ॥

दृढ़ वचार करी दिखने आलै निश्चा पक्का मिथेया ।
आखें ए ताँ उऐ जेड़ा गंगा जी सा दिक्खेया ॥

ओ बखरा सा देश काल ते एकड़ा उस थीं न्यारा ।
इनें दौनें दे भेदै करियै फरक पेया ए सारा ॥

जां दौनें देशें कालें गी, बक्खो बक्ख जे कीता ।
पुरुष मात्रै बिच भेद नि रेआ मुक्का भरम फजीता ॥

नैत्र कण्ठ ते हृदय त्रैवै, जीव दे देस खोआये ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति त्रैवै उसदे काल सुनाये ॥

स्थूल ते सूखम कारण त्रैवैं भोग समग्री सारी ।
विश्व ते तैजस प्राज्ञ जीवपन दे अभिमानी कारी ॥

जाग्रत थीं लेई मुक्ति तोड़ी भोग रूप संसारा ।
ए सब कर्म न जीवैं दे ए बेद करन निस्तारा ॥

अल्प शक्ति अल्पज्ञपना परिछिन्नपना बी सुनाया ।
नैकपना परवशतापन असमर्थपना समझाया ॥

अपरोक्षपना अज्ञान उपाधीवानपना न खोआन्दे ।
अट्ठैं धर्म ए इस जीवै दे श्रुतियें बिच समझांदे ॥

उप्परैं वालें सारें कन्ने अविद्या बिच रलाई ।
दित्तो छाया चिदाभास दी उस्सै बिच मलाई ॥

अधिष्टान कूटस्थ ए मिलिऐ जीव रूप समझाया ।

त्वं पद दा वाच्यार्थ श्रुतियें इस चाली दरसाया ॥

चिदाभास इनें गै सारें सैहत त्याग कराया ।

स्थूल सूक्ष्म कारण देहै दा बाकी अधिष्ठान खोआया ॥

जीव साक्षी कूटस्थ आत्मा बेद जिसी समझांदे ।

"त्वं पदै" दा ओ लक्ष्यार्थ निरणा मूल करान्दे ॥

कूटस्थै दे सत्तपनै दा जीवैं'च टपला लगदा ।

तादात्म्य संबन्धै कारण इयै जीव गै सचवा लयदा ॥

जीव ते ओदे कर्त्तापन दा ए अध्यास ऐ रौन्दा ।

'ब्रह्मानन्दा' तां कूटस्थ ओ कर्ता प्रतीति पौन्दा ॥

कर्म

आप अपने स्वरूपै दा बोध करिऐ चिदाभास गी जद्दूं ज्ञान हुन्दा ।

बाच्यभाग दा करै त्याग तां गै, लक्ष्यार्थ बी तां प्रमाण हुन्दा ॥

आखे सञ्चित प्रारब्ध ते आगामी ए कर्म बी त्रै प्रकार दे न ।

ए प्रत्यक्ष दे बिच प्रतीत हुन्दे, ते बेद बी इयै उच्चारदे न ॥

सञ्चितै बिचा दा कर्म जेड़े जेड़े पक्कने उप्पर न आई जन्दे ।

उयै कर्म प्रारब्ध दा रूप होइयै, वर्तमान शरीर बनाई दिन्दे ॥

ज्ञान प्राप्ति दे होने थवां पैहलें, वेदान्त प्रमाण करान्दे न ।

मरणे तगर ऐ जो २ कर्म करदा, ओ कर्म क्रियमाण खोआन्दे न ॥

अंश आवरण अज्ञान दा जो, लिखी शास्त्रें बिच सुनाया ऐ।
ओ ब्रह्मज्ञानै दी प्राप्ति ने नाश मूल समूल कराया ऐ ॥
खीर प्राप्ति ओसदी होए पिच्छों ओ आश्रा सा जिनें २ लेया।
उन्दे सञ्चित नामी कर्मै दा बी, आपूं गै नाश होई गेया ॥
ज्ञान प्राप्ति होने थवां पैहलें जो होने जां जेड़े हे होई बीते।
इस देहै दे कन्ने गै एस पुरुषै जो कर्म कीते क्रियमाण कीते ॥
'अहं ब्रह्म'आँ नईं आँ कर्त्ता भोक्ता इस्सै प्रबल जकीनै दे पूर्ण जोरें।
'ब्रह्मानन्दा'ए कर्म सब नाश भलेयां होन राग ते द्वेष जे ए त्रोड़ें ॥

अज्ञानता

देह मानु दी धारण करियै, ईश्वर गी नईं पाया ।
उसने जानी कौडी बदलै, हीरा जन्म गवाया ॥
इक २ अंग अनमुल्ला मोती कदर निं जिस ने कीती।
एकड़ी उसदी सारी आयु रोन्दे धोन्दे बीती ॥
नौ दस महीने गर्भै दे बिच उलटा होई टगोंदा।
सौ तरलें ने बाहर निकलदा रौला पाई २ रोन्दा ॥
बाल अवस्था दे बिच विद्या गी बी रोन्दे पढ़दा।
होई जुआन बी रोन्दा, रोन्दे काज-कमाइयां करदा ॥
अन होने कम्में गी करदा भला बुरा नईं मिथदा।
पापें दी पण्ड भरदा जन्दा नईं डरदा बिन्द खिचदा ॥

जोर जुआन्नी दे बिच आई चूर नेआ होई रौंदा ।
गिनी गिनी ऐ पैर टकांदा आकड़ी २ पौन्दा ॥
आप समान निं मिथै कुसै गी छलबल थीं नईं टलदा ।
बिना शराब होऐ मतवाला, डींगियां चालां चलदा ॥
बांका छैल छबीला बनियै, मुच्छ मरोड़ी बैठा ।
सुखनै बिच बी इऐ आखै, 'हाय पैसा' 'हाय पैसा' ॥
धन-जोबन इनें दौनें मिलिऐ सन्न नेआ बरड़ाया ।
सज्जन मित्तर कोई निं सुझदा, अपना कन्ने पराया ॥
१—घेरा पाया आन बुढ़ापै आई बमारियां लगियां ।
देहू दा ए पिञ्जरा बनेया, रिक २ करदियां हड्डियां ॥
दन्द ते दाढ़ाँ सुखना होइआं रुट्टी बी गेई छुड़की ।
जोर उमंगां रूप शलैया सब दी होई कुड़की॥
अक्खीं दी बी सोज निं रेई, देई धलोफां टुरदा ।
शकल डरौनी होई ऐसी जींदा लबदा मुड़दा ॥
गल्ल निं इसदी समझा औन्दी मां कोई इसगी सुनदा ।
घरै दा मालक होआ परौना रोन्दा अथरुं चुनदा ॥
औन लगी इसी अपनी करनी पिछली चेतै सारी ।
औषध बी हुन काट निं करदी लग्गी नेई बमारी ॥

१—क्या यारो कहें गो कि बुढ़ापा है हमारा । पर बूढ़ा कहाने का नहीं तो भी सहारा ।
जब बूढ़ा हमें हाये जहां कह के पुकारे । काफर ने कलेजे में गोया तीर है मारा ॥

गुरज लेई जमदूत खड़ोते चौहनें पासें आई ।
टब्बरै ने बी लोकाचारी हाल दोहाई पाई ॥
मुआं बी नईं बोली सकदा हत्थ-पैर नईं हिलदे ।
कन्नें बोल सनोचन नइयों नीर अखीं दा बगदे ॥
१–डुस्की २ डेरे चुक्किऐ पेया चुरासी अन्दर ।
वूजो बांगर नाच नचांदी माया रूप कलन्दर ॥
भोग वलास ते खाना पीना पशुयें बिच बी दिक्खेया ।
रातीं दिनें कमान्दे रौना इक जनेआ मिथेया ॥
सुख-दुख कन्ने सरदी-गरमी अपना साक पराया ।
पैंछियें बिच वी इक जनेआ दिखने दे बिच आया ॥

१–वुह पालकी बनी थी सुनैहरी जो ज़र निगार ।
झालर पै जिस की होते थे मोती पड़े निसार ॥
ला पालकी पै मौत ने जब कर दिया सवार ।
फिर वुह न पालकी न वुह झालर न वह कहार ॥
जब चार कान्धों पर हुईं भारी सवारियां ।
झक मारती यह रह गईं सारी सवारियां ॥
असवार जब अजल का हुआ आनकर असीर ।
घोड़े भी हिनहिनाते रहे सब जवां ओ पीर ॥
हाथी खाक डालते सिर पै रहे हकीर ।
यह बात तो अयां है कहूँ क्या मियां नज़ीर ॥
जब चार कान्धों पर हुईं भारी सवारियां ।
झक मारती यह रह गईं सारी सवारियां ॥
(कुलियाते-नज़ीर)

बैर-बरोध लड़ाई-झगड़े रौला मार कुटाई ।
कीड़े किरमें दे अन्दर बी इक समान समाई ॥
ममता दे बिच बच्चें दी ए पालना करदे रौना ।
इक जनेआ जीव जन्तुयें अन्दर जागन-सौना ॥
सारियें जोनियें दा सिरताज मनुक्ख शरीर ऐ राजा ।
ज्ञान प्रापत करना गै सा इसदे अन्दर बादा ॥
इसगी पाइयै बी ए जेकर सखना-मुखना गेया ।
फी इस दे ते पशुयें अन्दर फरक नि कोई रेआ ॥
कीमत पशुएं दे हड्डें-चम्मै दी किज ते पान्दे ।
पर इस गी जां धरती दबदे जां फी चिखा चढ़ान्दे ॥
मुर्दा मानु दा धरती पर दा, कम्म कुसै नईं औंदा ।
'ब्रह्मा नन्दा' डङ्गर आखें लड़ने गी तां पौंदा ॥

आरोप-अपवाद

चौं बेदें दा सार वेदान्ती इस पोथी बिच भरेया ।
जेड़ा इस दी सार पछानग भवसागर थीं तरेया ॥
विधि-निषेधैं दा निरणा बी इस दे अन्दर रक्खेया ।
साधन मुक्ति वाले सारे करी नखेड़ा दस्सेया ॥
दोष ते माया मन इन्द्रियां बख-बख गिनी सुनाये ।
लम्मी चौड़ी छोली छा नईं, थोड़े बिच मुकाये ॥

दिक्खने बिच ए लबदी भामें निक्की सारी पोथी ।
बिना गुरें सच्चें दै इसदी रमज पछाननी औखी ॥
काम अकाम सकाम बी सारे भलेयां करिऐ दस्से ।
त्याग बुद्धि दे साधन सारे दस्से बक्खो-बक्खे ॥
सधवा-विधवा, मरद जनानी, व्याहे दे जां कुआरे ।
इस मार्ग बिच भेद निं कोई इक जने गै सारे ॥
लोकैं ते परलोकै आले पंध ते जमना-मरना ।
नित्त नमें दुक्खें गी दिखना नित्त गै हाहा करना ॥
सूलें दी ऐ सेज जगत इस बिच नईं कोई सुखिया ।
अंदर झांको तां सेई हुन्दा इक कोला इक दुखिया ॥
तिल मातर नईं हसना मिलदा, रोना पण्डां भरियां ।
राजा रंक सिरै दौहनें पर इक जनेइआं धरियां ॥
मन घायल सबने दे, उप्पर शैल पुशाकाँ लाइयां ।
रग-रग अन्दर मैल भरौची, होइयाँ कठन सफाइयां ॥
इत्थों लेइयै देव-लोक तक बखले बनिऐ रौन्दे ।
नमी बासनें दे बस्स पेइयै दुःख नित दिक्खने पौंदे ।
जिआं सिनमें आले चिट्टी चादर इक टगांदे ।
लोकें गी फी दस्सनें गी नित्त नमीं गै खेड रचान्दे ॥
हाथी घोड़े फौजां लशकर उस पर चलदे लबदे ।
मित्तर बैरी, लड़ना मरना, सारे सच्चे लगदे ॥

बाग बगीचे खूह तला ते, सागर नदियां, नाले।
पर्वत खोहां जंगल मन्दर दिखदे दिखने वाले ॥
लहु लुहान लुटेरे डाकू बनियै खून बी करदे।
फैसले जज सुनान्दे बैठे लबदे फांसी चढ़दे ॥
कुतै तां राजे हुकम चलांदे, तखतें उप्पर बैठे।
कुतै कङ्गाल डंगोरी पगड़ी दर २ मंगदे पैसे ॥
कुतै तां जोबन मतियें नारें हार शङ्गार बनाये।
मांगां सिरें भराइयै सुरखो बिन्दियां पौडर लाए ॥
कइयें नीर भरेदे अक्खीं दर २ पिटदियाँ आइयां।
हाल बे हाल देहै दी सुध नईं गलै'च जुलफां पाईयां ॥
कुतै तां साधु तीर्थें उप्पर घोर तपस्सेया करदे।
कुतै शराबी होई मतवाले आपूं बिच्चें लड़दे ॥
कुतै बमानें चढ़ी देवते, सैर अकाशी करदे।
कुतै ते पापी नरकें पेइयै दुःखें दी अग्गी सड़दे ॥
रंग रंगीले बनियै लाड़े सिरै'प सेहरे लाये।
फुल्लें शैल सजाइयै बेदी गोरिएं मंगल गाए ॥
कुतै तां मैहलें उप्पर बैइये दिक्खन मीर नजारे।
केईं कुल्ली-मजदूर बने, कईं झोकन भठ भठियारे ॥
पर जेल्लै ओ खेड ऐ मुक्की, लैती फिल्म तुआरी।
चिट्टी चादर रेई गई बाकी, खेड मुक्की ओ सारी ॥

कुत्थें गे ओ फौजां लशकर जंगी घोड़े हाथी ।
कुत्थें गेईयां गड़ २ चलदियां तोफां, बैरी, साथी ॥
नां उत्थें रे बाग बगीचे नां नदियां नां नाले ।
नां कोई लबदे जंगल मन्दर खोहां पर्वत काले ॥
कुत्थें गे ओ खूनी डाकू कातल चोर लटेरे ।
कुत्थें गे ओ जज कनूनी फैसले पढ़दे जेड़े ॥
नां कोई तख्त नां राजा लबदा नां कोई मंगने वाले ।
नां रे कोई लड़ने आले ऐबी ते मतवाले ॥
कुत्थें गे ओ हार शंगार ते जोवन भरियां नारां ।
कुत्थें गे ओ रोने आले उच्चियां हाल पुकारां ॥
कुत्थें गे ओ देव देवते करदे सैर अकाशी ।
कुत्थें गे ओ नरकें दे बिच रोने वाले पापी ॥
नां लाड़े नां लाड़ियां नां गै बेदीं शैल सजाइयां ।
नां ओ रंग रंगीलियां नारां मंगल गाने जो आइयां ॥
कुत्थें गे मैहलें बिच जेड़े रेइयै लैन नजारे ।
कुत्थें गे ओ कुल्लियें अन्दर रौन्दे जो भठियारे ॥
इस्सै चाली सुखने दे बिच जन्तु सारे सौंदे ।
संसकार सूखम सृष्टि दे जो २ चेतै पौन्दे ॥
हृदय अकाश अंगूठे जितना बेदें बिच सुनाया ।
उसदे उप्पर सिनमे वाले खेड रचान्दी माया ॥

अनमिलियें चीजें गी मिलदा अनमिथियें गी मिथदा ।
अनइच्छेंगी प्राप्त हुन्दा अन दिविखयें गी दिखदा ।।
कुतै ते जीन्दे मानु दिखदा कुतै फी रुक्ख फले दे ।
कुतै इसो मोये बी लबदे पितरें बिच्च रलेदे ।।
कुतै ते बीर बहादर बनियै शेरें कन्नें लड़दा ।
कुतै नकारें बांगू अपने छौरे कच्छा डरदा ।।
छप्पड़, नैहरां, नदियां, नाले अपने इसने जाने ।
ममता दे फी पन्ध बदान्दे कुड़ियां जागत न्याणें ।।
त्रैलोकी दे शैल पदार्थ सुखनें अन्दर दिखदा ।
उन्दें बिच गै रचेग्रा रौन्दा जागियै झूठे मिथदा ।।
हृदय अकाशै दे बिच इतनियां चीजां, कुत्थों आइयां ।
डूठे जितने थाहरै अन्दर किआं करि समाइयां ।।
एकड़े नेत्र सौने बेल्ले दौमें बन्द से होए ।
स्वप्न पदार्थ दिखने वाले नमें ओ कुत्थों थोए ।।
जागै जेल्लै फी ओ दुनियां कुत्थें जाई समाई ।
मैं मेरी दे नेड़वां नाते की नईं लबदे आई ।।
जे सारे ओ सच्चे हुन्दे तां ओ सन्मुख रौंदे ।
थोड़े मते ते उन्दे बिचा आइयै कच्छ खड़ोन्दे ।।
सुखनें अन्दर जिस बेल्लै तूं गाड़ी नीन्दर पेया ।
एकड़े ठाठै बाठै हत्था दा बी भलेयां गेया ।।

बादशाह ने महल भुलाये कैदियें बन्दीखाने ।
नां कोई सज्जन मित्तर लबदे, अपने नां बगाने ॥
सब्बै रोग भुलाए मांदें, बांकें ओ शलेयापा ।
मातमियें दे सोग मिटी गे, भुल्ला पिट स्यापा ॥
मैं मेरी दी जात बसारी तेई अवस्था आई ।
सुखने वाली दुनियां हुन ओ कुत्थें गेई समाई ॥
जे ओकी सब सच्ची सी तां हुन बी चेतै औन्दी ।
मती नई तां थोहड़ी गै बिन्द सामनै नजरी पौन्दी ॥
भलेयां सोच वचार द्वारा, नीत मिथी लै पक्की ।
जागने सुखने सिनमें वाली कोकड़ी दुनियां सच्ची ॥
बुद्धि रूप त्रकड़ी कन्ने त्रौनें गी जे तोलें ।
पखपात इक पासै रखियै झूठ नि जेकर बोलें ॥
तां फी आखने पौगी तुई त्रैवे इक जनेइयां ।
माया दे टपलाने करियै सच ओ लबदियां रेइयां ॥
जां सबूत इस झूठै बाला भलेयां होआ नखेड़ा ।
तां फी तुगी चुरासी अन्दर सुट्टने वाला केहड़ा ?
एबी लक्ख चुरासी फाइआं आपूं तुद बनाइयां ।
लंका दियें डैन-वासनें तेरै बिरसैं पाइयां ॥
पेई इन्दे बस्स आपूं गै तूं पैर कुहाड़ी मारी ।
सुन्ने दा हुन 'लोहा' बनेयां आव गुआई सारी ॥

बिगड़ेया अजें बी किज नईं तेरा, अक्खीं खोलियै दिक्खें।
बेदें उप्पर करी भरोसा सच्च मने बिच मित्थें॥
अपनी कीती करणी गी तूं आपूं मेटी सकनां।
ब्रह्म स्वरूप ऐ तेरा अपना, कुसै ने के तुई दसना॥
१–प्रातः काल दा भुल्ला जेकर सञ्जां बी घर औंदा।
ओ बी अपने टब्बरै दे बिच भुल्ला नेईं गणोंदा॥
तुम्मी इयां बैपन अपने जेकर भुल्ली गुआए।
सुआसें दे अन-मुल्ले मोतीं पैरें बिच्च रुलाये॥
चौथापन बी जन्दे जे तूं अक्खीं खोली लेइयां।
लख चुरासी वालियां समझो फाइआं त्रुट्टी गेइयां॥
इस दुनियां दे रौले कच्छा जितना छिण्डै रौगा।
उतना इनें दुखें कोला तूं सुखिया होइयै बौगा॥
कुड़ियां चिड़ियां आण्ड-गुआण्डी सारियां किट्ठियां रलियां।
गीत गाँदियां गुडी पटोले लेइयै खेडन चलियां॥
गुड्डे लाइऐ गलें, ने अपने करदियां खातर दारी।
नाते बनिऐ खारियां पाइयै रचदियां कुड़मा चारी॥
दाज दान सब साज बनाइयै कीतियां जां कुडमाइयां।
पंडत सद्दी लगन सधाये, बेदीं खूब सजाइयां॥

१–राजेआ आं बाशद कहे बाज़ आयद व शैहर–सूए वहदत आयद अज तफरीके दैहर।

गान सुहाग ते गुड्डियें गी बी हार संगार कराइयाँ ।
बाँके छैल पटोले देइयै बेदीं बिच व्याहियाँ ॥
ए कुडियें दी खेड सी झूठी आद कदीमी सारी ।
सच्ची करी'ब बरतो जाँ तक आई निं अपनी बारी ॥
बर लायक होइयाँ जद आपूं मापें व्याह कराये ।
दाज लेई गेइयां सौहरे घर जाँ असली पति पाये ॥
पति पत्नी दे सरबंधै दे भेद खुल्ले जद सारे ।
उन्दे बिच गै रचियां पचियां नकली पति बसारे ॥
इयाँगै तूँ जेल्लै अपने असल स्वरूप गी पागा ।
जाग्रत गी बी सुखने बांगूं झूडा मिथी भुलागा ॥
जाग्रत दे जो पति जाँ पत्नी पुत्तर धियाँ नाते ।
ब्रह्म लोक दे सकल पदार्थ शास्त्र बिच जो आखे ॥
इन्दे सबनें सुखें बालियाँ खिचवां जाङ्गन त्रुट्टी ।
लख चुरासी दे बेही खाते लेखा जागी मुक्की ॥
परम सुखी उस परम धाम बिच नेआ समाई जागा ।
जित्थों मुड़ियै सुखने बिच बी दुख दा लेश निं पागा ॥
ए दुनियां बी गुड्डियें वाली माया खेड रचान्दी ।
नकली गी असली करी दसदी ऐसे टपले पांदी ॥
तुम्मी इस भुल्ला बिच पेइऐ चारैपन गुआन्नाँ ।
अन्दरे वाली खिच्च निं त्रोड़ें बाहरें रौला पान्नाँ ॥

छपड़ियें बिच मारें छालीं मानसरोवर छोड़ें ।
ठीकरियें दे पिक्छें पेइयै पारस हत्था रोड़ें ॥
कक्खें ओल्लै लक्ख छप्पेदा ए मौका कद औगी ।
जांनी बुज्जी मचला नईं बन सिर २ रोना पौगी ॥
जिआँ लुहाई घानी उप्पर खण्ड खडालीं रचदा ।
रङ्ग बरंगे रूप बनाइयै बेचने ताईं रखदा ॥
जागत कुड़ियाँ लैंदे जंदे आइयैं बारो बारी ।
पंख-पखेरू भान्त सभान्ते गोपियाँ कृष्ण मुरारी ॥
पैसे पैसे दौं दौं पैसें, हाथी-घोड़े बिकदे ।
निक्के निक्के जागत पूगत हस्सी हस्सी दिखदे ॥
इक दूये दी रीसो रीसी लेई लेइऐ घर जन्दे ।
पिच्छों सारे भन्नी त्रोड़ी आपूं बिच्चें खन्दे ॥
दूये दिन हलवाई बेइयै लेखा सारा करदा ।
बचियाँ खुचियाँ लेई खडालीं त्रकड़ी दे बिच धरदा ॥
उनें खडौनें वाला नाँ ते शकलाँ दिंदा मेटी ।
आखै इतनी खण्ड बची गेई इतनी छोड़ी बेची ॥
इस्सै चाली जाग्रत वाले नाम ते शकलाँ मिथ्या ।
अनुभव दे बिच सारा किज ए करी नखेड़ा लिखेया ॥
जिस अविनाशी ब्रह्म दे अंदर नाम ते रूप समाँदे ।
उयै व्यापक घट घट वासी बेदें बिच सुनाँदे ॥

सनेयारा जिग्राँ लोकें कच्छा सुन्ना किट्ठा करदा ।
भाँति २ दे ग्रोंदे बिच्चा बंदे-गैहने घड़दा ।।
उनें सबनें दे नाँ ते शकलाँ न्यारे २ रक्खे ।
इक कन्ने नईं दूग्रा रलदा घाट बी वक्खो-बक्खे ।।
ग्रवधि बी इक २ दी न्यारी दिखने दे बिच ग्राई ।
पाँदे गै केईं त्रुटदे पर केईं उमराँ देन लंगाई ।।
पर जद उनेंगी ग्रपनी तंगी बेल्लै बेचन लाँदें ।
कोल सराफै नेइयै पहलें उन्दा मुल्ल पुग्रान्दे ।।
नाँ ते शकलेंगी ग्रो पैहलें गै नईं किज बी मिथदा ।
कण्डी चाहड़ी बट्टी उप्पर घस्सी २ दिखदा ।।
भलेयाँ करियै ग्रपनी विद्या दे बिच जाँ परखाँदा ।
नाम ते शकलाँ छोड़ी सुन्ने मातर दा मुल्ल पाँदा ।।
फी देईयै सनेयारे गी कठियाली बिच रखाँदा ।
गाली गूली सबनें वाली इक्कै डली बनाँदा ।।
१–सुन्ने बिच्चा सारियाँ शकलाँ निकली बाहर ग्राइयाँ ।
सुन्ने बिच गै कायम रेइयाँ सुन्ने बिच समाइयाँ ।।

१—मैं माही दी माही मेरा साडा साक अनोखा ऐ ।
मैं मुरकी ते मांही सोना इस विच शक न धोखा ऐ ।।
नाम रूप दी गलियों बाहर मिलन माही दा सौखा ऐ ।
लैहर पानी दा मेल की गोविन्द विछुड़न जिसदा औखा ऐ ।।

इस्सै चाली ब्रह्म दे बिचा जगत ए उत्पत्ति पाँदा ।
ब्रह्म बिच गै कायम रौंदा ब्रह्म दे बिच समाँदा ॥
नाम ते रूप ए बेदें अंदर मित्थेया सारे दस्से ।
जिश्राँ सराफै ने बी तोली लेखे बिच निं रक्खे ॥
जाग्रत सुखने सिनमे वाला पैहलें होश्रा नखेड़ा ।
हुन तूं आपूं दस्सें इत्थें सच्चा झूठा केड़ा ॥
हुन चलियै घमेयारे पासै उसदा दिक्खो बक्खर ।
ओ बी किश्राँ चलाँदा अपना मनचित लाइयै चक्कर ॥
गिल्ली मिट्टी पिण्ड बनाइऐ चक्करै उप्पर रखदा ।
डण्डे कन्ने उसी घुमाँदा अपनी माया दसदा ॥
नेक तराँ दे भाण्डे टीण्डे कुन्नियाँ घड़े बनाँदा ।
न्यारे २ रचिये बाहर रींगाँ लाई टकाँदा ॥
धुप्पा दे बिच फी सारेंगी सुक्कने दिंदा पाई ।
आवे अंदर रखी जाँ फी भलेयाँ लै पकाई ॥
बक्ख २ पाएं नाम खुश्राये घाट बी बक्खो बक्खे ।
न्यारे कम्म औंने दे कारण मुल्ल बी न्यारे रक्खे ॥
बारी २ बर्तने कारण जिश्राँ भजदे जंदे ।
इयाँ गै ओ ठीकरियाँ होई मिट्टी बनदे जंदे ॥
मित्ती'चा गै नाम ते शकलाँ बाहर निकली आइयाँ ।
मिट्टी बिच्च गै कायम रेइयाँ मिट्टी बिच समाइयाँ ॥

नाम ते शकलें मिलिऐ गै ए सब पुआड़ा पाया ।
इंदे करी गै माया दे बिस्तारै दे बिच आया ॥
धिङ्गो धींगी तूं इनें गी अपने पास्सै खिचनाँ ।
जोरा जबरी जानी बुजी तद् रूपता मिथना ॥
भवसागर दे पार होनेगी खोल अक्खीं दा पड़दा ।
'ब्रह्मानंद' बी हुन ए सारी बिधि समाप्त करदा ॥

———

"॥ फल प्रकरण समाप्त होआ ॥"

* ध्याता-प्रकरण *

"गुंगे दा गुड़"

१–ओंकार रूपी जग सारा मङ्गल मूल व्यापी ऐ।
दुःख दा लेश मात्र नईं इस बिच बेदें ए गल्ल आखी ऐ॥
नाभी बिच भरी कस्तूरी नजर निं अन्दर कीती आ।
मिरगें वांधूं जङ्गलें तुप्पना उमर व्यर्थी बीती आ॥
मैं मेरी दे फन्दे फसियै सूली जिन्द चढ़ाई ऐ।
पानियैं बिच रौंदे बी मच्छी सदा रवै तरेहाई ऐ॥
२–चौहनें वेदें पार निं पाया असल स्वरूपै तेरे दा।
नेति २ आखी हुट्टे आपूं तूं दुख स्हेड़े दा॥
३–ए मदारी मन माया दा नित्त कुरस्तै पांदा ई।
सब्ज बाग कण्डें गी दसदा विषय संयोग बनांदा ई॥
शूरबीर बी इस बैरी ने शम्मो-शम्म रोग्राये न।
करी सुजाखें गी बी अन्ना अक्खीं लेतर पाये न॥

१–ओंकार एवेदं सर्वम् (छां० २।२३)
२–स एष नेति नेत्यात्माऽगृह्यो नहि गृह्यते (बृ० ३।६।२६)
३–असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहम् चलम्।
अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते॥ (गी० ६।३५)

पापें दियें पींगें पर चाहड़ी ने परताये पुट्ठे न।
डुबकूं २ करियै डोबे डबरी जाई सुट्टे न॥
जड़ी परौहनें कन्नें जन्दी, खसमै कियां बसानी ऐ।
सिर देई बाहमां पिट्टन पौना रोन्दे उमर बिहानी ऐ॥
वेद शास्त्र कंठागर कीते धरम-पुरान बी पीते न।
चारै धाम चुरासी अड्डे पैरें चलियें कीते न॥
मन तेरा जे नेईं ए मोआ फी डींगे दा डींगा गै।
होई सुजाखा बी तूं तांइयै भींगे दा रेआ भींगा गै॥
चान्द्रायण तूं बरत बी कीते वाणी मौन बी रक्खी ऐ।
जल-छेजां पो-माघ कीतियाँ, जेठ पंजगनी तप्पी ऐ॥
दिशां वस्त्र, कर पातर जाने, भसम शरीर रमाई ऐ।
कंथा ते कौपीन बी त्यागी जंगल ताड़ी लाई ऐ॥
१—इतना किज हुन्दे बी जेकर पी मन दौड़ां लान्दा ऐ।
रेआ परानी फाइयें पेदा सुखनैं सुख नेईं पान्दा ऐ॥
कुन हा तूं, आया हा कुत्थों जाना कोकड़े थारैगी।
के आन्दा कें नेणां कन्ने कुत्थें सुटना भारै गी॥

१—ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायतेकामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशादबुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥ (गी० २।६२,६३)

के इस जग दा रूप सभाबक के ईश्वर दी माया ऐ।
ए सब मिली 'वचार' खोआया बेदें पार नि पाया ऐ॥
१–जे एदे बिच्च पूरा उतरें जनम सुफल ए ओन्दा तां।
जीन्दे जी इस देहा कन्ने विशणू दा पद थोन्दा तां॥
नित्त धाम बी नां उस्सैदा उयै मुकती आखी ऐ।
परम शान्तिगी उयै पान्दा जो उसदा सुख बासी ऐ॥
२–भेद बरीकी, रौले व्यरथी हत्थ गुरें दै कुञ्जी आ।
फेर चुरासी दा नेईं मुकना जे इस रस्तै खुञ्जी जा॥
३–चंगी–माड़ी दमैं बासनां जे हिरदे बिच भरियां न।
मोह्-माया दे जाल बछाइयै भलेयां मुश्कां घड़ियां न॥
लोहे-सुन्ने दिएं बेड़ियें कैद मशाफर कीते न।
अबधी दा कोई लेखा नइयों कल्प करोड़ां बीते न॥
रोन्दे आए, रोन्दे बस्से रोन्दे डेरे चुकदे न।
नां खलासी हुन्दी नां गै पिट्ट सयापे मुकदे न॥

१–काम क्रोध विमुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्म निर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्॥ (गी० ५।२३)

२–जो लख चन्दा ऊगवें सूरज चढ़ें हजार।
एता चानन हुन्दियां गुरु बिन घोर अंधार॥ (गुरु नानक वानी)

३–इच्छा द्वेष समुत्थेन द्वन्द्व मोहेन भारत।
सर्व भूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परन्तप॥ (गी० ७।२७)

१–जीना तुच्छ ते लम्मी आसा, बिगन चफेरै फिरदे न ।
करड़े पैंडें, सौ सौ ठोकर दागे दे सब हिरदे न ॥
ए समेयाना भव तरने दा साधन चप्पू ढिल्ला ऐ ।
मन-मलाह मशटंडा जीआं दुद्दै राखा बिल्ला ऐ ॥
दिक्खी लै हुन अपनी अक्खीं कुन्न नबेड़ा करना ई ।
इस पापी दी बेड़ी चड़ियै डुबनाई जां तरना ई ॥
२–संसारै बिच कोई नि बैरी; भलेयां नजर दड़ाई ऐ ।
अपने गै इस मनै दे कन्ने; अट्ठै पैहर लड़ाई ऐ ॥
नां मरदा नाँ कपट गै छोड़ै आखे पर बी चलदा नेईं ।
आपरशें पर औंदा जेल्लै ठाके दा बी टलदा नेईं ॥
इक खिन इसी टकाई नि लगदी दौड़ी दौड़ी हुटदा नईं ।
इसदी फाइया जिन्द फसी गेई जालोखाला मुकदा नईं ॥
केईं जनमें दा पिच्छें लग्गा इसदा साक चरोका ई ।
छल-कपटा थों टलदा नइयों रग-रग इसदी धोफा ई ॥
हासे दा बी करै पनासा ए नित इसदा चाला ऐ ।
जमला मचला खूनी जिद्दी बेनिजमा मतवाला ऐ ॥

१–आदमी रा पुर बलाए हस्ततन । जीं सबब दर बन्द मुरदन ज़ीस्तन ।
२–आलम सी की अख्त्यार हर चन्द सुलह कुल ।
पर अपने साथ मुझ को शब-ओ-रोज़जंग है ।

सुखने विच बी दा नईं खायां इस हंकारी पापी दा।
इसगी किन्द शरम नईं भाखी नां डर-खौफ चुरासी दा॥
दुएं दे सिर रोना सुटदा आपूं गांदा रागड़ियां।
जित्थें इसदी पेश निं चलदी, उत्थें पान्दा चागड़ियां॥
बेतरसा हत्यारा बनियै गिनी-गिनी बदले लैन्दा ऐ।
पिछों छिडै जाई खड़ोन्दा खिड़ खिड़ हसदा रैन्दा ऐ॥
मोआ दा बी मान नईं ए पी जीन्दा होई जन्दा ई।
मासै दा के लेखा करना हड्ड बी रड़की खन्दा ई॥
१–ज्ञानै दी ए बत्त निं सौखी खण्डे धारा रस्ता ई।
सिर देइयै बी होऐ नबेड़ा तां बी सौदा सस्ता ई॥
२–जान तली पर रखदे जेड़े ओ इस बत्ता औन्दे न।
हसदे-हसदे सूली चड़दे तां दम मुजरै पौन्दे न॥
३–सीस दी बाजी लाइयै खेडन तां पौं बारां पौन्दे न।
जिन्दू दा जिनें सरफा कीता त्रै वे काने थोन्दे न॥

१–ज्ञान को पन्थ कृपाण की धारा। परत खगेश होये नहीं वारा॥
जो निर्विघ्न पंथ निरवेही। सो कैवल्य परम पद लेहीं॥

२–चढ़ा मनसूर सूली पर पुकारा इश्क वाज़ों को।
ये उसके वाम का ज़ीना है आए जिसका जी चाहे॥
मुहब्बत के महल पर आशिके जांबाज़ सोते हैं।

३–रर्रा आखे रंगन सच्ची आशक लोकां रंग लई।
हो मनसूर पयाले पीते जान सूली ते टंग लई॥

१–त्रैलोकी दे राजै उप्पर सुख मुकती दे हसदे न।
साध जनें दी परख नराली, करी नखेड़ा दसदे न॥
थोड़ी नेई मरोड़ी ऐ पर भेद कुसै गै पाया ऐ।
कक्खै ओहलै लक्ख समाया कीड़ी परबत ढाया ऐ॥
२–लिखने बिच ए रमज नि औंदी अकल बी चक्कर खंदी ऐ।
जीब्हा दी समरत्थ गोआची नां औंदी नां जन्दी ऐ॥
सागर दी थाह लैने खातर लूना दी इक डली गेई।
मुड़ियै औना कुस भड़ूये ने उत्तै आपूं रली गेई॥
खसमे दा सुख लाड़ी जानै मुआं नि आखी सकदी ऐ।
मना दे अन्दर सार पछानै बाहरें थोड़ा हसदी ऐ॥
इस थों उत्तम लाभ नि इत्थें नां कोई मिट्ठा नाता ऐ।
गुंगे आंगू गुड़ खादा दा दुऐ सुआद नि जांता ऐ॥
जो मौती गी जीना समझै जीन्दे गै मरी जन्दा ऐ।
अपना मरना अक्खीं दिखदा तां एका गुड़ खन्दा ऐ॥

१–यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाऽधिकं ततः।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते॥ (गी० ३।२२)

१–जो सुख इक पल यार देखन विच सो जहान दोंहां नहीं दिस्से।
जिस दे उत्ते मेहर सांई दी सुख आवे तिसदे हिस्से॥

२-गग्गा आखे गुरु बगैरों समझ न तैनूं आई ए।
जीव ब्रह्म विच भेद न कोई फुरने नाल जुदाई ए॥
एह हैं रमज़ फकीरां वाली लिखने विच न आई ए।
काली दासा खुदी छोड़ तूं बाकी फेर खुदाई ए॥

१–एस गुड़ैगी चखदे चखदे दन्देंगी दन्दकीड़ पवै ।
जीव्ह बचारी थर-थर कम्बदी चुप चपीती होई बवै ॥
२–ओठेंगी बस मोहर ऐ लग्गी मन बी निश्चल होआ ऐ ।
तां जानेयाँ ब्रह्मानन्दा स्वाद गुड़ै दा थोआ ऐ ॥

कुल्ली-जुल्ली

खुरपा त्रंगड़ तजने औखे कखें दी ए कुल्ली बी ।
लीरां-लीरां झिमझिम करदी जूएं भरोची जुल्ली बी ॥
सुखने नेया ए जग जीना मिट्ठी छुरी कसाइयें दी ।
घर-घर छिन्ने, पे पुआड़े खुल्ली खान लड़ाइयें दी ॥
३–खीलां होइऐ मन मुरझाए जिगर बी सूलें सल्ले न ।
रग रग होई ऐ दुखयारी थार दुखें सब मल्ले न ॥
नां दुनियां दा रौन सखान्दा नां दुनियां छड़कोन्दी ऐ ।
चोरै दी मां जियां कोहलै अंदर मूं देई रोंदी ऐ ॥

१—यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ (केन० ३०१-४)
२—यतो वाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ॥ (तै० २।६)
३—कीजिये क्या आह कि घर जाईये । छूटिये इस दुख से जो मरजाईये ॥
इस तरह जी में सांस खटके है । सांस है या कि फांस खटके है ॥

लूमड़ी आला लालच इसदा भलेयां ग्रट्टी पुटदा ऐ ।
मूहों मूंह ए चोटां खंदा तां बी चा नईं चुकदा ऐ ॥
पैहलें खुशियें-खुशियें आपूं सिर उखली लमकांदा ऐ ।
धम धम मोहले पौंदे जेल्लै पी अत्थरूं टमकांदा ऐ ॥
१—इस्सै रोने-धोने अंदर सारी उमर गोआई ऐ ।
बैतरणी दै कंडै पुजदे करनी चेतै आई ऐ ॥
फूं फूं करियै फिलगर दौड़े बिच्छू डंग चलांदे न ।
गुरज लेइ जमदूत बी चौहनें पासें घेरे पांदे न ॥
२—इक छुड़दा तां दुआ पगड़ धम धमाके उठदे न ।
बारो बारी फिरी धरीटन मारी कुट्टी सुटदे न ॥
चित्तरगुप्त बी लेइयै बेइयाँ सन्मुख आई खड़ोंदा ऐ ।
उसगी दिखदा थर २ कंबदा रौला पाइयै रोंदा ऐ ॥
३—लैने दे हुन पेई गे देने फी गर्भें बिच पौंदा ई ।
लख चुरासी नईं कटोंदी नीच जोनियें औंदा ई ॥
भोगें दे इस ए फल पाए अजें बी किज नईं सुजदा ऐ ।
अक्खीं हुन्दे अन्ना बनदा फी खोबै जाई खुबदा ऐ ॥

१—आया न चैन जी को न दिल से तपक गई ।
मैं चुप रहूं कहां तक छाती तो पक गई ॥

२—फरीदा तिन्हां मुख डरावने जिन्हां विसारयानांव ।
एथे दु ख घनेरड़े अग्घे ठौर न ठाऊं ॥

३—मोघाशा मोघकर्माणो मोघ ज्ञाना विचेतसः ।
राक्षसी मासुरीं चैव प्रकृती मोहनीं श्रिताः ॥ (गी० ६।१२)

१–भोगें गी गै रोग जानियै राजें राज बी छोड़े हे ।
सुख छोड़े ए धना दे सारे तिनके भलेयां त्रोड़े हे ॥
जंगल जाइयै तप हे कीते जीने दे फल पाए तां ।
२–कुल बी उनें पबित्तर कीते पितर बी पार कराए तां ॥
धन्न धन्न उंदे जिगरे जानो धन्न २ उंदियां माइयां न ।
धन्न ही उंदी कुख सवल्ली सुरगें पींगां पाइयां न ॥
इंदर बी जिस परम पदै दे पानेगी नित इच्छदा ऐ ।
आतम जोगी उस बिच रमदा तां उसगी ओ दिखदा ऐ ॥
मनै दे गासै अंदर दिक्खै मिट्ठा रुख खजूरै दा ।
चड़ी पजांगां हाम नि पुजदी छौरा लबदा दूरै दा ॥
रग-रग इसदी रसें भरोची उप्पर तृप तृप चौंदी ऐ ।
नाँ उसदी कोई छेड़ सनोचै नाँ गै नजरी पौंदी ऐ ॥
पञ्ज थेयारी, चौकस हरदम पैहरेदार खड़ोते न ।
चिड़ी नि उत्थें फड़कन दिंदे कडदे मारी सोटे न ॥
केईं इसदे तरेआए इसदी आसा करदे आए न ।
नां अंदर गै लंगण दित्ते नां पिछड़े परताए न ॥

१—सब सुन्दर तज महल-अटारी नारी नेह भुलाना ।
अन्त बार कछु संग न लीना कीना हंस पयाना ॥
२—कुलं पवित्रं जननी पवित्रा कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन ।
अपार संसार सागरेऽस्मिन् लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः ॥

रू-फरयाद नि सुनदा कोई नां डर-खौफ दुहाइयें दा ।
सुखनै बी हा पुज्जन औखा घेरा पेया कसाइयें दा ॥
१–सूरबीर केईं लशकर लेइयै उमरां भर गै लड़दे रे ।
ए बैरी पर सर नेईं होए खीरा तोड़ी अड़दे रे ॥
ज्ञानै दी तलवार कदें बी आपूं गै नेईं चलदी ऐ ।
इसदा करड़ा नां गै सुनियै मन ते छात्ती हलदी ऐ ॥
मौती मरना बड़ा सुखल्ला जिन्द बी देनी सौखी ऐ ।
जीन्दे देस-नकाला लैना घड़ी लंगानी औखी ऐ ॥
२–घरा थमां ते नां-नगरा थों पौंदे हत्थ ए धोने न ।
जीन्दे जींदेगी रोई लैना बन्नी लक्क खड़ोने न ॥
३–आदर-इज्जत दुनियां आली मित्ती बिच्च मलानी आ ।
सिरे दा हत्थ प्याला पगड़ी दर-दर अलख जगानी आ ॥

१—खुशी गुमान नफस दियां फौजां नित्त दुध उन्हां मुख चोवे ।
लक्ख बरसां तक जीवे कोई ते लक्ख फौजां घड़ ढोवे ॥
करे मुहिम लड़े दिन राती तां रैइयत ना होवे ।
करड़ी कैद नफस दी हाशम इत्थें हर कोई अटक खड़ोवे ॥
२—घर से गए नगर से गए नाम से गए । हम तुम से दिल लगा के सभी काम से गए ।
३—जिस दिन शैहर महबूवां वाले कोई आशक पैर धरेंदा ।
जान खुराक बनावे गम दी अते पल २ सूल सहेंदा ॥
सीस उतार प्याला करके लै हत्थ भीख मंगेंदा ।
हाशम तरस महबूबां आवे तां कुज खैर पवेंदा ॥

आसें मेदें दे ए बन्धन दूर नसाइयै बौना ई ।
१–ईश्वर कन्ने हिरख जगाइयै सदा न्यारे रौना ई ॥
२–मन्नै जां कोई भिड़कां मारै चित्त गिला नेईं रखना ई ।
मत्थै भुल्ली बट्ट नि पाना, मनैगी भलेयाँ कस्सना ई ॥
भुक्खा दे बिच रज्जे रौना नंगे रेई खटोना ई ।
३–दुख-सुख, हानि लाभै अन्दर नां हसना नां रोना ई ॥
४–असली भेद लखोंदा नेइयों बांह मरोड़ी खंदी ऐ ।
धींगो धींगी जोर भराँ तां कान्नी भज्जी जंदी ऐ ॥
रवै सरस्ती संगचोई दी बेदें बी कन्न फण्डे न ।
शेष बचारे मौन धारेया ऋषि बी होऐ ठण्डे न ॥
५–कुसने पाणी ऐ ए बुझारत कुसै ने कियाँ बुजनी ऐ ।
शौ दरेया बिच ठिल्ली बेड़ी तरनी ए जां डुबनी ए ॥

१—अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योग क्षेमं वहाम्यहम् ॥ (गी० ६-२२)

२—शादी गमी उन्हां इक्को जेही जेड़े आप खुदी थीं गुजरे ।
अते जो कुछ होवे सिर ते मन्नन, ओ हर इक थीं बेउजरे ॥

३–सुहृन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्यबन्धुषु ।
साधुश्वपि च पापेषु समबुद्धि र्विशिष्यते ॥ (गी० ६।६)

४–एह पढ़ना इल्म ज़रूर होया पर दस्सनां नामनज़ूर होया ।
जिस दस्सिया सो मनसूर होया उस सूली पकड़ चढ़ाया ए (बुल्ला)

५–आश्चर्य वत् पश्यति कश्चिदेनं आश्चर्य वद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्य वच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं न च वेद कश्चित् ॥
(गी० २।२६)

सिरा दी बाजी लाइये जेड़े बादर खेडां करदे न।
तांग तरोड़न ममता आली उन्दे बेड़े तरदे न॥
दुबधा दे बिच फसियै जेड़े लत दपासी रखदे न।
जिंद्दू दा ओ सरफा करियै दुख-कसाले चखदे न॥
नां सौरै ए लोक गै उन्दा नां परलोक सजोन्दा ऐ।
दौं घरें दा बनै परौहना भुख्खा रेइयै रोंदा ऐ॥
१—जवकी तक्के कैसी करनां झूठे भरम मसाई लै।
बनी सूरमां उठदा की नईं शस्त्र सान चड़ाई लै॥
बाण बबेक बरागा आले भरियै खूब चलान्दा जा।
लोभ मोह गी करी नशाना बारो बारी ढांदा जा॥
औखा रस्ता पैंर पोआने कडें उप्पर चलना ई।
दंदे औखे टपदे जाना पिछड़ा कदम नि धरना ई॥
२—ढौना, बौना कुतै नि रस्तै ए बी शरत कबल्ली ऐ।
जिन्दे निश्चे टलदे नेइंयों उंदे मनें तसल्ली ऐ॥

१—रक्खीं लाज नलाज न होवीं ऐथे पैर पिछां नहीं धरना।
जैहर खुराक बनाई आपे ते मरन कोलों क्यों डरना॥
चमके चिखा इश्क दी प्यारे ऐथे साबित हो जल मरनां॥
हाशम एह कमाल इश्क दा जो सीस अगाहां धरना॥
२—'हाशम' तिन्हां रब पछांता जिन्हां अपना आप पछांता।

१--हरदम चौकस रौहना पूरे खौफ चफेरै रौंदे न।
हिम्मत करियै अग्गें बदना तां गै सफर कटोंदे न॥

२—इस बत्ता पर चलियै जेकर बैरी पंज तू मारी ले।
ताँ समझी लै अगले-पिछले सारे जनम सोआरी ले॥

चैंचल मन ए तेरा जेल्लै निश्चल होइयै बेई गेया।
तां समझेयां अमरत रूप खज़ूरा दा रस लेई लेया॥

लक्ख चुरासी चक्कर मुक्कै आतम जोत समाई जा।
कुल्ली छुड़नी ब्रह्मानन्दा तां तेरी मुजराई आ॥

सिरताजी

भोलें दे बस पेआ परौहना बचियै कुत्थें जाना ई।
मरणे तोड़ी नईं बलगोनी जीन्दे रड़की खाना ई॥

१—अपनी खुदी ही परदा है दीदार के लिये।
वरना कोई नकाब नहीं यार के लिये॥

२--घर को तू अपनी हस्ती के वीरान कर नयाज़।
हस्ती से हक की फिर वह रहेगा बसा हुआ॥

१-नाते साक ते पुत्र-धीयां सब गै सुखै दे साथी न ।
सच पुच्छो तां नरकै दे बिच सुटने वाले पापी न ।।
पापें दी पण्ड पिठ्ठी चुक्की सारी उमर कमान्दा जा ।
कौडी इक्क नि पल्लै रक्खै नक्को नक्क रजांदा जा ।।
इक दिन बी हत्थ पिच्छें खिच्चे सब खूह खाते पौन्दा ई ।
बैरी बनियै बरतन लगदे इक नि नींदा नौंदा ई ।।
चौखर बी अपने बच्चेंगी थन पीने गी लांदे न ।
पर घा खाने लग्गन जेल्लै मारी लत्त हटांदे न ।।
पखरू भी निक्के गिल्लुयेंगी मुहां चोगां दिन्दे न ।
उड्डन लगदे तां उस्सै खिन छोड़ी जन्दे छिण्डे न ।।
पुन्न भोगने लेई ए जीव देह मानु दी पान्दा ऐ ।
जड़-चेतन दा इस पृथवी पर होई सिरताज खुआन्दा ऐ ।।
नातें दियां नकेलां घड़ियै आपूं गै गल पान्दा ई ।
ऊंटै बांगूं बस्स होई जन्दा गरड २ गरडांदा ई ।।

१—यह मुलक ओ माल ओ जाहो हशम ये खेशो अकारब जो हैं बहम ।
सब जीते जी के हैं हमदम फिर चलना है तनहा बाबा ।।
जो नेक कमाई करते हैं जो सांसों पार गुज़रते हैं ।
जो जीते जी ही मरते हैं जीना है बस उनका बाबा ।।

१—सेहड़े साक सुखौ दे कारण गल पेई जन्दा रोना ई।
जींदे होन खलासी औखी नाँ नबेड़ा होना ई॥
सुखनां करी-करी पुत्तर लैंदा मल मूत्तर बी सुटदा ऐ।
सुत्ते गी बलसांदा सुनियै अद्धी रातीं उटदा ऐ॥
२—होआ जुआन ओ पुत्तर जेल्लै तरले करी २ सददा ऐ।
ताँ अग्गों दा बुड़ बुड़ करियै शेरे वाँगू गजदा ऐ॥
दस्सन कम्म ताँ मिरगी पौन्दी बड़काँ मारी पौंदा ई।
खाने चंगे चोखे मंगदा रज्जने बिच निं औंदा ई॥
घरै २ दा लाहमे लेइयै रोज पोआड़े पान्दा ऐ।
सिनमें बाज घड़ी निं टिकदा कौडी नईं कमान्दा ऐ॥
किज निं थोयै भाण्डे भनदा, खोइयै बी लेई जन्दा ऐ।
दोआर-शुआर बी चुक्की चाहड़ी होटल जाइऐ खन्दा ऐ॥
बनी शराब-कबाबी खोरी बनदा जाई जुआरी बी।
ताँ सुन्ने पर चढ़ै सुहागा करदा चोरी चारी बी॥

१—ये उलफतें जो साथ तेरे आठों पैहर हैं।
यह उलफतें नहीं हैं मेरी जान कैहर हैं॥
जितनी मिठाइयां हैं मेरी जान जैहर हैं। (नज़ीर)
२—जो तुझे भूल गए हैं तू भी उन्हें याद न कर।
शिकवा-ए-ज़ौरोजफा ऐ दिले नाशाद न कर॥

घरै दा हुन कोई ठाकै किआँ गालीं उप्पर औंदा ई ।
गिट मिट बोलै छड़ी रंगेजी उट्ठी मारा पौंदा ई ।।
पर भाऊ दा चा नईं चुक्का आखै जागत ञ्याना ऐ ।
बावै जाई २ छिल्लियाँ सुखदी जागत उसने ब्याना ऐ ।।
घोड़ियाँ गाई २ लाड़ी आंदी तेल द्वार चुआया ऐ ।
दाजै गी नूंह छून निं दिन्दी बक्खरा चुल्ला ताया ऐ ।।
सस्सू कन्ने रोज लड़ाइयाँ सौहरे दा के सरफा ऐ ।
नित्त नमीं गै पूजा हुँदी गालीं दी बी बरखा ऐ ।।
बुड्डी अजें निं रज्जी, टुकदी होठ कदें गल्ल करदी ऐ ।
नूं पुत्तरै दा कोडर करियै आण्ड-गुआण्डें लड़दी ऐ ।।
बुड्डे गी बी किन्द निं औंदी अग्गों लिम २ करदा ऐ ।
अन्दर ए किज खातर हुन्दी, बाहरें पान्दा परदा ऐ ।।
अजें बी तृष्णा मोई नइयों चा पोतरे खडाने दा ।
मूत्तर भरे गी पिठी चुकदा बनेया बैल लबानें दा ।।
बाबा २ सुनियै उन्दा फुल्ला नईं समाँदा ऐ ।
गालीं कड्डुन ताँ बी थिड़ियै खिड़ २ हासा पाँदा ऐ ।।
बुड्डा-चौरा आखन भाएं खिञ्जदा नइयों, पाजी ऐ ।
अपने मुआँ मियाँ मिठ्ठू सारें दा सिरताजी ऐ ।।
उडदी इल्ल समानै उप्पर मीलाँ उच्ची चढ़दी ऐ ।
ओदे कन्ने कोई निं छोंदा चूहड़ी उस दी पदवी ऐ ।।

तारे बाँगर लबदी गासा लम्मे चक्कर कटदी ऐ।
अपनी दृष्टि पुञ्जाँ पेदे मुरदारै पर रखदी ऐ ॥
मुरदे उप्पर ध्यान जो लाया उस दा ए फल पाया ई।
नीच बासना दे बस्स होइयै ताँ चण्डाल खुआया ई ॥
काँ भी उडदा काँ २ करियै छत्तै उप्पर बौंदा ई।
उच्चै थाहरें बौन्दा गन्दी चीजें उप्पर पौंदा ई ॥
उस कन्ने बी कोई निं छोंदा चूहड़ा गै नाँ पाँदे न।
बेहड़ै बी कोई बड़न निं दिन्दा दूरा कड्डी लान्दे न ॥
नीच सङ्गति नीन्दा करियै मित्ती बिच रलान्दी ऐ।
उच्ची बुद्धि सूखम करियै तौली मुक्त करान्दी ऐ ॥
खोते गी बी जेकर कोई कितना रातब पाँदा जा।
सौ लाडें ते प्यारें कन्ने अट्ठै पैहर खलान्दा जा ॥
रूड़ी बाज सन्दोख निं करदा नाँ गै खादा सुजदा ऐ।
जद कोई खोल्लै उत्तै बेल्लै दौड़ी उत्थें पुजदा ऐ ॥
अन खादे कोई नाँ नई लैंदा नाँ गै छोना भान्दा ऐ।
नीच संगति करने करियै खोता नाम पुआन्दा ऐ ॥
मानु बनी बी बासना आले हार गला निं लुआन्दा ऐ।
पिछ्छले भूत निं अन्दरा निकले होर नमें चमकान्दा ऐ ॥
ताँ कैंदी सिरताजो इसदी, कुस जोनी दा राजा ऐ।
इल्लें कायें खोतें कच्छा के एदे बिच बादा ऐ ॥

गल्लें कुसैई नि जित्तन दिन्दा, नाँ गै गण्डी बनदा ऐ ।
मकड़ी आँगू फसने कारण आपूं जाला तनदा ऐ ॥
इस्सै चाली जगत-जंजालें सारी दुनियाँ बद्दी ऐ ।
छड़की २ मरदे जन्दे पर तृष्णा नईं मरदी ऐ ॥
१—घड़ी २ दे हैन परौहने मालक बनियै बौंदे न ।
सवैं बरें दियाँ ताँगा रखदे ताँ गल रस्से पौंदे न ॥
पेई चुरासी लैन लोआरे, जकड़े संगल त्रुटदे नईं ।
फारगती मिलनी होई औखी पिछले लेखे चुकदे नईं ॥
२—नरकें बिच हौकारे इत्थें बी, उऐ किज होई रेआ ।
घर २ लक्का फाह लग्गे दे जो पुच्छेया सो रोई रेआ ॥
सुखिया सो जो फसेया नइयों रौंहदा सदा न्यारा ऐ ।
३—जो भुल्ला भोगें पर डुल्ला फसेया सो दुखियारा ऐ ॥
सुखी मिलै जे सुखिये गी तां दना खुशी नईं हुन्दा ऐ ।
दुखिये गी पर मिलै जे दुखिया रोना नईं थमोन्दा ऐ ॥

१—ई जां आखर बवीं गरदद खराब, हस्त वे बुनियाद आलम चूं दुबाब ॥
२—दुनियां इसे न जान यह दरिया है कहर दार ।
लाखों में इससे उतर कर कोई हुआ न पार ॥ (नज़ीर)
३—जब आंखें मुंदी हुई हों तो फिर दिन भी रात है ।
इसमें भला कसूर क्या है आफताब का ॥
किस काम की यह हस्ती ये मौहूम कायनात ।
सैराब कब करे है तुझे धोका सुराब का ॥ (नयाज़)

पुत्र ते गास पुड़ें दीं अन्दर सब गै दरड़े जन्दे न।
१—सुखैदे साथी मिले बथेरे दुःख कुसै नईं बण्डे न ॥
इक २ साह ते अक्ख झमकदी जे लेखै बिच पौंदा जा।
किरडें बांगूं चक्की बिच्चा सुक्का निकली बौन्दा जा ॥
तां ओ साधक जीन्दे जी गै बिष्णु रूप खुआन्दा ऐ।
मरियै सुखें दे लोकें अन्दर परम पदैगी पान्दा ऐ ॥
सब जीवें दा राजा सच्चा ते सच्चा सिरताजो ऐ।
'ब्रह्मानन्दा' तां तेरी बी चारै चक्क नवाबी ऐ ॥

बलि दा बकरा

मैं-मैं करदे ए बकरोट्ट काबू चड़न कसाइयें दै।
मदा ने अन्ने दौड़न हाथी गड़-गड़ गे बिच खाइयें दै ॥
साडे त्रै हत्थ मानु दिखो बड्डा पंज कल्यानी ऐ।
माया इसदे बारण्डे करदी बलि दा बकरा जानी ऐ ॥
अक्खीं दे फरनाके कःने बिना जंजीरें बजदा ऐ।
छात्ती पर ए चोटां खंदा चोटाँ खाई निं रजदा ऐ ॥

१—बवक्ते तंग दस्ती आशना बेगाना मे गरदद।
सुराही चूं शवद खाली जुदा पैमानाए गरदद ॥

कक्खों हौला, पानी-पतला अपने कम्में बनदा ऐ।
मौहरे गी मठेयाई जानै अमरत मौहरा मनदा ऐ॥
मंगदा रोना, चाहन्दा हस्सै ए गल्ल कदें बी बननी नईं।
गेदा मौका हत्थ निं औना कपटी हाण्डी चड़नी नईं॥
किला फुलादी पज्जै कियां कागजी तोफ चलान्दा ऐ।
अपने हत्थें सूली स्हेड़ै कंडें छेज बछान्दा ऐ॥
अन्दर रग-रग कालख फैली अजें बी नईं शरमान्दा ऐ।
ज्ञान दा साबन मलदा नइयों चिक्कड़ जिन्दू लान्दा ऐ॥
१–झमला बनियै अक्ख निं पुट्टै फाइयें पैर फसाए न।
सोआस नमुल्ले रोली दित्ते लेखे बिच निं लाए न॥
२–अपनी करनी आपूं भरनी हुन के पिच्छों रोना ए।
सीस मनाइयै बार पुछान्दा होआ जे किश होना ए।
चिड़ियें खेतर लेआ चुगाई राखी कैदी करदा ए।
आपूं पान्दा भुक्ख-बरानी जानी फाकें मरदा ए॥
शतरञ्जी ए चाल निं छोड़ै रोन्दा पेइयां फाइयां की।
करनी गी खू-खातै पाइयै पिटदा अक्खीं लाइयां की॥

१–विषयां दा फड़ लेया कुहाड़ा वृक्ष धर्म दा कट्टन नूं।
काली दास कीतो मूंह काला आयों शोभा खट्टन नूं॥
२–ऐ खाना ख़राब अज़ ख़ुदा बे खबरी। ऐ मौजे सुराब अज़ ख़ुदा बेखबरी।
ईंहस्ती ए मोहूम तो नकश अस्त। बरआब ए जोशे हुबाब अज ख़ुदा बेखबरी॥

१–में-में, तूं-तूं, मेरा-तेरा इयै हरदम गाया ऐ।
एदे जादूं ने भरमाया जीब चुरासी पाया ऐ॥
२–सूरज हुन्दे नेहरा करदी दिनै दी रात बनान्दी ऐ।
मुक्ति दी ए बैरन पक्की सुत्तीं कला जगान्दी ऐ॥
सुखने जितने इस जीनेगी सबै बरेंदा दसदी ऐ।
दुएं दे गल पाइयै फाइयां न्यारी होइयै हसदी ऐ॥
इस्सै कपटी कैहर कमाए सूलें कन्नें सलदी ऐ।
जीन्दे जी ए नरकें पान्दी बिच कड़ाइयें तलदी ऐ॥
बड्डे तारू डबरीं डोबे पैर-खुरा नईं लग्गा ऐ।
घर-घराट नईं रौन्दा अपना नाँ पिच्छा नां अग्गा ऐ॥
काम क्रोध, मद, लालच बनियै माया नाच नचान्दी ऐं।
झूठ, कपट, छल छिद्दर आले पैन्ने तीर चलान्दी ऐ॥
बन्धन बनियै चमके रौन्दे इक इक जीवै कन्ने ए।
कन्नें हुन्दे बोले बनदे अक्खीं हुन्दे अन्ने ए॥

१–जो तू कहता है ऐ गाफिल यह मेरा है यह तेरा है।
यह जिस का है उसी का है न मेरा है न तेरा है॥
तेरी क्या ज़ात है क्या नाम है क्या काम करता है।
मुसाफिर बेवतन है या तेरा इस जा पै डेरा है॥

२–बहार चन्द रोज़ा से दिल अपना शाद क्यों कीजे।
हवाये हुसन पर दिल को अबस बरवाद क्यों कीजे॥ —नयाज़

प्योके हुन्दे प्यारे कुड़ियें जिच्चर ओ नईं ब्याहियां न ।
झक परोख निं हुन्दी कोई खेडां बी मनभाइयां न ॥
छाल-छड़प्पे, नच्चन-कुद्दन, घर-घर स्हेलड़ चारा ए ।
ढोलकियें दे तालै कन्ने भाखां लाना प्यारा ए ॥
ब्या हुन्दे, सौहरे घर जाई नां-गोतर बदलाए न ।
थोड़े दिन ओ रोइयां-राइयाँ प्योके एन्त भुलाए न ॥
नां ओ खुल्ली जादी रेही नां ओ दौड़ कुदाड़े न ।
गल्ला गल्ला रोकां टोकां करड़े सब बरतारे न ॥
इक इक दी सारा पर चलना मत्थै लीकर पानी नईं ।
नां गै अक्ख तरेडी करनी आण्ड-गोआण्ड गोआनी नईं ॥
खसमेंगी खुशियें बिच रखना सेवा सच्ची करनी ए ।
दुख हुन्दे बी हसदे रौना चाल कुचाल निं चलनी ए ॥
१—पति दी आज्ञा पालन करियै जिसने प्रेम बदाया ऐ ।
दिन दूना ते रात चौगना नित्त नमां सुख पाया ऐ ॥
छन्न-गोहाण्डी सिफतां करदे प्योके हुन्दी स्त्राहता ऐ ।
सस्स ते सौहरे खुशियां बुजदे इज्जत करदा नाता ए ॥
मूंहजोरी ने पतियें कन्नें जिसने सीस भोहाड़े न ।
मां-बब्ब उन्दो बात निं पुछदे छुड़के स्हेलड़ चारे न ॥

१—जेहड़ियां सौहरे सोहनियां सोई पेके होवन ।
शौह जिन्हां ते माईल चढ़ सेजे सोवन ॥ —बुल्लेशाह

छड़की छड़की रातां बीतन दिन चड़नेगी औन्दा नईं ।
रोन्दे कुड़दे उमर कटोन्दी सुख अक्खीं बिच रौन्दा नईं ॥
परम-पति सबदा परमेसर बेदें सच सुनाया ऐ ।
जनम-मरन सब उसदे हत्थें घट-घट बिच समाया ऐ ॥
१—आज्ञा उसदी जो नईं मनदा मन मुखिया होई चलदा ए ।
बार-बार नरकें बिच पौन्दा हा हा कारे करदा ऐ ॥
२—नां बनदा ए लोक गै उन्दा नां परलोक गै थोन्दा ऐ ।
हीरा जनम नि मुड़ियै थोन्दा डुससी डुसकी पौन्दा ऐ ॥
बाल बरेसा पेया रण्डेपा किच्चर उस सुख पाना ऐ ।
प्यौकै मीने सुनने पौन्दे ओड़क सौहरै जाना ऐ ॥
हड्डै-मासै दे पिंजरे बिच बा-पखेरू रौन्दा ऐ ।
पर नजरी नईं औन्दा इयाँ खुन्जा दड़ियै बौन्दा ऐ ॥
इस पैंशी दा दा नईं खाएयो डींगी चाल ए चलदा ऐ ।
अट्ठै पैहर रवै मतवाला कम्म कुचज्जे करदा ऐ ॥
शेख-चिल्ली दे लारें लाइयै उप्पर गासें चुकदा ऐ ।
खिन्नू आंगर मारै ठोकर चुक्की पुत्रां सुटदा ऐ ॥

१—एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः । अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ३।१६
२—लिये अब जाल हाथों में शिकारी रोज़ फिरता है ।
न कर ऐ बुलबुले नादां चमन में आशियां अपना ॥
कई गुल खिल के टूटे हैं हज़ारों बरग ओ बर लाखों ।
हज़ारों उड़ गये तायर बनाकर आशियां अपना ॥

बाज परें दै गासें उडरै त्रैलोकी फिरी औन्दा ऐ।
ज्हारां फाइयां लाइयै बन्नो ए निचला नईं बौन्दा ऐ॥
आपूं दा नेईं खन्दा कोई नां मौती थों डरदा ऐ।
नां गुर-पीर गसांई इसदा नां गै लैहन्दा-चढ़दा ऐ॥
कदें ते शेरें बांगू धाड़ै जोर कबत्ता दसदा ऐ।
कदें पी बकरे आंगू डरदा मैं-मैं करदा नसदा ऐ॥
फप्फै कुटनी आङ्गू कपटी छल-छिदरा नि खुंजदा ऐ।
हंस बनी बनी मित्तर बनदा काएं आंगू ठुंगदा ऐ॥
नां मन्नै, नां खैहड़ा छोड़ै मोआ अत्त कनीति ऐ।
बदियें दे सिर भाण्डे भनदा नेकी इक नि कीती ऐ॥
साथी पञ्ज रलाइयै कन्ने डाकू बनियै लुटदा ऐ।
पिड़ पल्लै किज पौन नि दिन्दा नंगा करियै सुटदा ऐ॥
सब कीता-करतेया खन्दा बाता-लो नईं लगदी ऐ।
नां नखरे गै मुक्कन इसदे नां भुख इसदी रजदी ऐ॥
पञ्जें दा ए लश्कर लेइयै चोरी कूच करांदा ऐ।
छेमां आपूं अगुआ बनियै चौदां भुवन लुटांदा ऐ॥
धरमा दे सब ग्रन्थें अन्दर इस्सै धुम्मां पाइयां न।
राजें थों बी भिख मंगाई घर-घर लीकां लाइयां न॥
बार चलांदा मिट्ठी छुरियें तेज दुधारा खण्डा ऐ।
लक्ख लड़ो तुस इसदे कन्ने मेशां जित्ती जन्दा ऐ॥

रत्त मनुक्खें दी ए पीन्दा बल उंदी ए दिंदा ऐ।
मोएंगी लेखै नेईं रखदा जीदें दी चिख चिनदा ऐ ॥
दिनें दपैरीं चोर बनांदा लाड करी सिर कपदा ऐ।
दूए दे सिर बदियाँ लान्दा आपूं कोठे टपदा ऐ ॥
१–चाएं बिच नि फुल्ली जाएयां एदे थों तूं बखरा एं।
करें बसाह जे ब्रह्मानन्दा तुम्मी बलि दा बकरा एं ॥

निम्मा दा रुख

ए संसार निम्मा दा बूटा कौड़ा चार चफेरे दा।
माया बेल करेलें दी ने उप्पर छाइयै घेरे दा ॥
२–राग द्वेष न पत्तार इसदे बीज बासना पाया ऐ।
जनम-मरन फल-फुल्ल न इसदे पैंछी जीव बनाया ऐ ॥
खंड चड़े फल दिक्खी दिक्खी दूरा पैंशी औन्दे न।
मिट्ठे दे लुब्बें ओ लड़दे उसदे उप्पर बौन्दे न ॥

१–कूये जानां में पहुँच कर क्या दिला करता है नाज़।
इस गली में तुझ से बेहतर सैंकड़ों उफतादा हैं ॥
२–लुकमा तुख्म अस्त ओ बरश अन्देशा हा। लुकमा वैहर ओ गौहरश अन्देशा हा ॥

खुशी खुशी हे बैठे आइयै उड्डन औखा बनेया ऐ।
माया ने मन-मकड़ी आला उप्पर जाला तनेया ऐ ॥
फड़-फड़ फड़की होए बेहाले पेश निं किज बी जन्दी ऐ।
खण्ड ओ खान हे आए हुन ते खण्ड उनेंगी खन्दी ऐ ॥
बासनें ए मन रली बनाया बासनेंगी मन घड़दा ऐ।
इक दुए दी रीसो-रीसा जीव चुरासी चड़दा ऐ ॥
आसा दी ए फांसी डाडी, बार बार जनमान्दी ऐ।
चंगे कम्म ए करन निं दिन्दी घर-घर नाच नचान्दी ऐ ॥
जिच्चर तोड़ी जीन्दा ए मन इच्चर बैर कमान्दा ऐ।
उलटी इसदी रसम कदीमी मरै तां यारी लान्दा ऐ ॥
भोगें दी फाइयें चा निकली जीन स्वादु जीन्दा ऐ।
जनम-मरन दा करी नबेड़ा नित अमर रस पीन्दा ऐ ॥
१—दिखने-सुनने अन्दर आवै सो सब झूठा मिथ्या ई।
मृग तृष्णा दा जल जो पीन्दा रजदा नईं कोई दिखेया ई ॥

१—अज़ सुराबे दैहर सैहरावी मखाह ।
बिगुज़र अज़ तहसीले ओ खुदरा मकाह ॥
ईं कि मेबीनी बैहर अस्ते न आब ।
ति शनाए हरगिज़ नशुद जो कामयाब ॥

१–भोगें अन्दर फसियै ए मन तृप्ति कदें नि पान्दा ऐ ।
घ्यो दिएं धारें अग्ग जो स्हालै उल्टी अग्ग बदान्दा ऐ ॥
दुक्खें गी गै सुख ए जानै अगड़ा होइयै बौन्दा ऐ ।
सुखा दी उसगी छिट्ट नि थोन्दी दुख-डबरी बिच पौन्दा ऐ ॥
२–भोगें दा ए लालच माड़ा मन मानु दा रजदा नईं ।
झूठी भुख नि जन्दी इसदी हठ अपना पर तजदा नईं ॥
३–पुन्न पाप नि मनदा कोई धरम-अधरम बी भाखा नईं ।
चंगी-माड़ी इक बरोबर, अक्खीं हैन, सुजाखा नईं ॥
अट्ठै पैहर गड़ाके मारै अक्ख कदें टमकान्दा नईं ।
सोचा-समझा आला रस्ता इसगी बिन्द बी भान्दा नईं ॥
भोगें दी ए बेड़ी पैरें कियां कियां त्रुट्टनी ऐ ।
लम्में पैन्थ कटोने औखे डंड सिरा नईं चुकनी ऐ ॥

१–शीरीं नाम धराया शीरीं पर कौड़ी जैहर हमेशा ।
देंदी जैहर प्याला भरके नित्त खून करन दा पेशा ॥
इक घुट लै फरहाद बचारा ओह मार मोया सिर तेशा ।
हाशम प्यार महबूबां वाले ते गल २ दा रग रेशा ॥

२—आशक जेडा बे अकल न कोई जिन जान समझ नित तपना ।
वेद कुरान पढ़े जग सारा उस नाम जानी दा जपना ॥
आतिश लैन बेगाने घर दी अते फूक देवे, घर अपना ।
हाशिम शाह की हासिल इश्कों ऐवें मुफत बरी विच खपना ॥

३—अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात् कृताकृतात् ।
अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्पश्यसि तद्वद ॥

१–हंसें कन्ने साथ निं इसदा मान सरोवर पुज्जना ऐ ।
काएं कन्ने साथ निं छोड़ै मरना ऐ जां उज्जना ऐ ॥
झमले बनियै सुत्ते जेड़े मचले कुन्न जगाने न ।
इस टोरा ए बत्त निं मुकनी अत्थरूं फी टमकाने न ॥
२–जागत गोदा शैहर ढण्डोरा सबनें ए गल्ल आखी ऐ ।
जिसने भेद ए जानी लैता उस्सै रमज पछांती ऐ ॥
दौनें हत्थें जड़ा लटान्दा राखी उसने करनी के ।
खड्डें-खोलें झड़ियां लाँदा उसने दौलत सलनी के ॥
हंसें कच्छा होया दुराडा मोती कियां चुगने न ।
हत्थें लाइयै अक्क दरैंकां अम्ब कियां करी उगने न ॥
अमरत छलकै मनै दे अन्दर तृप्ति बाहरा तुपदा ऐ ।
जंगल - जाड़ें प्हाड़ें - धारें दर-दर जाइयै पुछदा ऐ ॥
३–अपने दर नईं झांकी पांदा दुएं दे खड़कान्दा ऐ ।
फुंगा बिच समुन्दर रौंदा नाड़ें छाम्बे लान्दा ऐ ॥

१—है दुनियां जिस का नाम मियां यह और तरह की बस्ती हैं ।
जो महंगों को तो महंगी है और सस्तों को यह सस्ती है ॥
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इनसाफ़ और अदल परस्ती है ।
इस हाथ करो उस हाथ मिले यां सौदा दस्त बदस्ती है ॥
२—असां पढ़िया इल्म तहकीकी है उत्थें इक्को हरफ हकीकी है ।
होर झगड़ा सब वधीकी ऐ ऐवें रौला पारवैहन्दी ऐ ॥
३—ढूंढते हैं आप से उसको परे । शेख साहिब छोड़ घर बाहर चले ।
हम न जाते बाहर आप से । वुह ही आड़े आ गया जिधर चले ॥
३–नक़द हाले खेशरा गरचे बुरेम । हमजा दुनियां हमज़ उकबाबर खुरेम —मौलानारूम

१–भिड्डा दी ए उन्न सुहानी कुसै ने खीरी मुननी ऐ।
कुसै नि उसदा सरफा करना कुसै नि मैं-मैं सुननी ऐ ॥
राही सुरत बसारी सुत्ते डाकू जाल बछांदा ई।
लेखा गिनती करन नि हुन्दे झोलां भरी-भरी पांदा ई ॥
मरि-मरियै मन रजदा नइयों मुड़ियै मरना तुपदा ऐ।
सुक्की हड्डी रड़कै कुत्ता नां रजदा नां सुटदा ऐ ॥
इल्ला ने मुंह मास हा लेदा अम्बर चक्कर लाँदी ही।
बौहने गीतै थार नि लबदा ओड़क ओ घबरान्दी ही ॥
कायें दी इक टोल्ली रलियै उसदे पिच्छें लगदी ऐ।
उडरी - उडरी फामी होई मास नि खाई सकदी ऐ ॥
चौहनें पासें ठूंगे लगदे थां थां स्हारा तुपदी ऐ।
जीना औखा लबदा खीरी मास मुंआं दा सुटदी ऐ ॥
स्वास सुखें दा औंदा, जेल्लै सीख ओ मुंआं पौन्दी ऐ।
हुट्टी दी ओ फामी होइयै बूटे उप्पर बौन्दी ऐ ॥
इस्सै चाली भोगें दी ए सीख जिनें मूं लाई ऐ।
पञ्जें काएं दी ए टोली आपूं पिच्छें पाई ऐ ॥

१—उम्र बर बादोहवा बुनयादे तुस्त। हेच हेचस्त ई' जहां बीनी केह हस्त॥
कारे आलम पुरफनाह रा हेच दां। आकबत हासल हमां रा हेचदां॥

१—इस टोली ने कई हजारां साथी होर बनाए न ।
पुत्तर-धियां नेकां छलिये तेरे पिच्छें लाए न ॥
इन्दे बिच फसैदे रेइयै छड़पन नेइयों चुकदी ऐ ।
इल्ल गै चंगी तेरे कोला सीख परे जो सुटदी ऐ ॥
निक्का जागत साथें-साथें खेडी-खेडी हुटी गेग्रा ।
रोन्दा सुनियै दौड़ी माता मूड़ै उसने चुक्की लेग्रा ॥
जेल्लै तुम्मी जम-जालै थों होई कनारै बेई जागा ।
बुद्धि रूपी माऊ दी गोदै पौन्दा गै झट सेई जागा ॥
ग्रपना ग्रसली रूप पशानी सारे दुख भुलाने न ।
ग्रनुभव कीते दे सुख सारे जागी करी सुनाने न ॥
२—सुत्ते दे ग्रो सुख रस सुच्चा जिस साखी ने दिखेया ऐ ।
ग्रो तेरा स्वरूप गै ब्रह्म ए बाकी सब किज मिथेया ऐ ॥
उयै सुख जे चेतै करियै बारम्बार बचारें तूं ।
मुड़ियै दुख नि स्हेड़ें नाँ गै हालोहाल पुकारें तूं ॥

१—उलझते फरजन्द ग्रो ज़न ज़न्जीर है । इस लिये चलने में वां ताख़ीर है ॥
तू मुस्ताजर नहीं ग्राया है बन कर बागे इमकां का ॥
न इस्तमरार का पट्टा है तेरे नाम सुलतां का ॥
२—तुझ को बातन की नहीं ग्रपने खबर, गैर पर गफलत से रखता है नज़र ।
जिस को तू फिरता है हरसू ढूंडता-उसका परतो तेरे ग्रन्दर है छुपा ॥
दर बदर करता है क्या उसकी तलाश ग्राप को पहचान तू ऐ बद कमाश ॥
दिल ही दिल में जुस्तजूग्रो सैर कर कतह हुब्बे जांह तरके गैर कर ॥

नीच बासना दै बस पेइयै सुख असली ठुकरान्नाँ ऐं।
कलप-बृछ तूं मुंडा कप्पी खेतर बाड़ दोआन्नां ऐं॥

सरकस आले शेर पगड़दे बन्दी दे बिच पान्दे न।
दन्द तरोड़ी फाकें मारी सारी खेड सखान्दे न॥

पिरी तमासै बान्दर बकरे उसदी पिट्ठी चड़दे न।
दान्द गमाँ बी बुड़-बुड़ करदे सिंग खुबान्दे चलदे न॥

आप भुलाइयै समझी बैठा बिल्ली थों बी नीन्दा ऐ।
तां गै बल्दें-बकरें कन्नें किट्ठा पानी पीन्दा ऐ॥

पर जिस बेल्लै आपूंगी ओ "शेर आं" समझी जन्दा ऐ।
झूठे बन्धन–भरम नि रौन्दे बैरी मारी खन्दा ऐ॥

इयां गै तूं भोगें आले पिंजरै आपूं पौन्नाँ ऐं।
ब्रह्म स्वरूप भुलाइयै असली, नीच जीव बनी बौन्ना ऐं॥

भलेयां खोल दिलै दियां अक्खीं अन्दर झांकी पान्दा जा।
सुख रूपै बिच ब्रह्मानन्दा अपने आप समान्दा जा॥

उक्खल मोहले

ए जग मौती दी ऐ उक्खल, मोहले दूत सुनाये न।
जोनियें अन्दरा निकलियै जीवें इस बिच सिर लमकाये न॥

१—सब समाज ठग्गें दा रलेया राही बगारी पगड़े न ।
सिर पापें दियाँ पग्डाँ चुक्कियाँ धकदे अगड़े अगड़े न ॥
सुन्ना बिच कठियाली पेइयै अपनी आव बदान्दा ऐ ।
मोहले पौन्दे इस जीवैगी तां बी नईं शरमान्दा ऐ ॥
२—लेखे पाइयै साहूकारें ने किज देना गै पौंना ऐ ।
कुड़की वालें लेई बरैंटां ओड़क तुपदे औना ऐ ॥
कन्न घुसेड़ियां किच्चर करगा, इक दिन ते पगड़ोना ईं ।
जक्को तक्कें झट नि लंघना बन्दी बिच जकड़ोना ईं ॥
पुलसा वाले आई खडोते कालियां बरदियां पाइयां न ।
हत्थें लेई जञ्जीरां कड़ियां, छन २ करी छनकाइयां न ॥
छेड़ां सुनी कलेजे हलदे, जिगर बी धड़की पौन्दे न ।
अल्ले फिफड़े फड फड़ करदे, अक्खीं अत्थरू औन्दे न ॥

१—दुनियां रहे गुज़ार है इस पर न भूलना ।
किस को यां करार है इस पर न भूलना ॥
गुलज़ारे जिन्दगी में जवानी की आबोताब ।
दिन चार की बहार है इस पर न भूलना ॥
दुनियां के रंगे खूब में बूए वफा नहीं ।
यह लाला दागदार है इस पर न भूलना ॥

२—न कर लेखा शाहां दे नाल कुझ देना आवीगा ।
हट्टी वाला सच्च कुड़े आ तैनूं पकड़ लै जावेगा ॥

नां कोई उत्थें चलै सफारश नाँ कोई सुनै दोहाइयें गी।
नां लैन्दे श्रो गुज्ज ते मोड़े नां कोई तरस कसाइयें गी ॥
बन्दी खाने टिकटिकी उप्पर मुशकाँ कड़ी २ बनदे न।
लस २ उन्दियां तेगां चमकन दिक्खी जिगरबी कम्बदे न ॥
श्रद्दी जान ते सुनियै निकलै, पौंदे के क़िज होना ईं।
बद्दे हत्थ बी मलन निं होने, पिछले निम्बलेंई रोना ईं ॥
१—नां राजें दे फौजां लशकर, उत्थें पुज्जन होने न।
शाह कङ्गाल न इक जनेहे उक्खलै बिच कटोने न ॥
इतने बिच गै गल्ल निं मुक्कनी नां छुटकारा होना ईं।
कईं जनमें दा देस नकाला, काला पानी थोना ईं ॥
हसदे हसदे करनी कीती, भोगदे रोना पेई गेया।
भलेयाँ चा नईं चुक्का तेरा अजें बी बाकी रेई गया ॥
श्राशा दे इस इक शब्दै ने त्रैलोकी गी बन्नेयां ऐ।
तोड़ कुसै दी चढ़न निं दित्ती रोन्दा गेया जो जम्मेयां ऐ ॥

१—ऐ नफ़स अगर ब दीदाये तहकीक बिंगरी।
दरवेशी अख्तयार कुनी बर तवंगरी ॥
आहिस्ता रौ कि बरसरे बिस्यार मर्दु म अस्त।
ईं जुर्मे खाक रा कि तू इमरोज़ बरसरी ॥
ऐ बादशाहे बक्त चूं बकतत फ़रासद।
तो नीज़ बाग दाये मैहलत बराबरी ॥

कोई नीच कङ्गाल ते रोगी अक्खीं दा हा अन्ना बी ।
देवराज जां इन्दर होयै ब्रह्म लोक दा ब्रह्मा बी ।।
रज्जियै कुसै गी जान निं दिन्दी चिच्चड़ी बाँगू चमकी ऐ ।
दिन दिन दूनी भुख बदान्दी रगै रगै बिच बनकी ऐ ।।
सारे इकले-मुकले जमदे सूई निं कन्ने आन्दी ऐ ।
नां गै चाननी चौं दिने दी बिरसे दे बिच पौंदी ऐ ।।
इस थोड़े ने जीने अन्दर बाल २ फसी जन्दा ऐ ।
इक दूए गी किआं छुड़ाना, जीव जीवै गी खंदा ऐ ।।
१—इक नैंह ते लक्खां गण्डीं लग्गियै पलचोई गेइयां ।
तृष्णा नइंयों त्रोड़न दिन्दी खुल्लना औखियां होई रेहियां ।।
जिनें कर्म निश्काम दी सान्ना उप्पर हृदय चढ़ाई दित्ते ।
यज्ञ दान तप तीर्थं करियै मन चित्त साफ बनाई लित्ते ।।
बेइऐ बिच बचार मोरचों तीर बराग चलाई दित्ते ।
नीच बासनां खूनी लशकर नाम नशान मटाई दित्ते ।।
पढ़ी-बचारी उत्तम शास्त्र ज्ञान दा अंकुर लाई दिन्दे ।
सत् संगै ने प्रेम-भावना दी ओ जोत जगाई दिन्दे ।।

१—किस तरह माह नौ अंजुम के उकदे वा करे ।
जिस जगह लाखों गिरह हों एक नाखून क्या करे ।।

गुरु दा वाक्य उपदेश मातर उन्दे बोध दे कन्ने संजोग करदा ।
फी बचार दी धार बी तेज बनदी, ताँ बासना वाला संजोग बनदा ॥
जिआँ अन्धी ते झखड़ दे चलदें, पर्वत अचल कदें नईं हलदा ऐ ।
इस्सै चाली ए मन बी शुद्ध होई मुड़ी बासना बिच नईं रलदा ऐ ॥
जल थोऐ ताँ बेल बी बदी पौन्दी रुखें उप्पर ओ जाइयै चढ़ी जन्दी ।
सत संगति पाइऐ इयां बुद्धि दिनों दिन ए दूनी ऐ बदी जन्दी ॥
जिआं बेल चढ़ी बूटे पर पत्तर सारे मलदी ऐ ।
इस्सै चाली शुद्ध ए बुद्धि भवसागर गी तरदी ऐ ॥
१—बिन साधन बी शुद्ध होआ मन कार्य सिद्ध करी लैंदा ।
मैला साधन हुन्दे-सुन्दे हत्थ गै फी मलदा रैंदा ॥
२–पूर्व शुद्ध होआ दा ए मन उच्चा जन्म दोआन्दा ऐ ।
मैला नीचें दे बस पाइयै रातीं दिने रुआन्दा ऐ ॥
जिस बेल्लै ए शुद्ध होयै तां मित्तरें बांगूं रैन्दा ऐ ।
मैला मारु बैरी बनियै गिनी २ बदले लैन्दा ऐ ॥

१—मैं हाथ मलता रह गया पहुंच न पाया यार तक ।
रंग अपना पांव पड़के हिना ने जमा लिया ॥

२—प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वती समः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते ॥ गी०६।४१

अनसोधा जो सँखिया खन्दा ओ मरना फल पाँदा ऐ।
शुद्ध होये गी खाने बाला अपनी उमर बदान्दा ऐ॥
उयै टड्ड बनी करी बजदे ब्याहें ढोल जो गजदे न।
उयै सँख नड़ोयै बोलन, उऐ मन्दरें बजदे न॥
उयै सागर मोती दिन्दा उऐ पीन्दे खारा ई।
उयै बरखा बनियै बरदा हर जीवै दा स्हारा ई॥
उयै जीभ हाथी पर चाड़ै उऐ भुञा सुटदी ऐ।
उयै शिव-शिव रटदी दिक्खी उऐ गालीं फुटदी ऐ॥
उयै पैर हजार करोहें टुरी २ तीर्थ करदे न।
उयै अद्धी रातीं उट्ठी जन्दरे भन्नन चलदे न॥
उयै निच्छ सुलखनी बनियै कारज सिद्ध करान्दी ऐ।
उयै अबगुन बरतन लगदी घर २ पिट्टना पान्दी ऐ॥
उयै हत्थ प्रातः बेल्लै नित्त २ माला जपदे न।
उयै भुसमुसै छुरियाँ पगड़ी दूयें दे गल कटदे न॥
१—उँयै नैन मनै बिच बस्से कृष्ण दा दर्शन पाँदे न।
उयै दूयें कन्ने पलची सुत्तियाँ कलां जगांदे न॥

१—काफर नैन भरे दिल डंगीं जेड़े दिस्सन बाल अञाने।
चामिल चदन करन नित्त शोखी अते सौदा करन तिंगाने॥
हासी पा दित्ती गल फांसी हुन रोन्दे वक्त बिहाने।
हाशम देख अधीन नैनां नूं कोई जाने बहुत नमाने॥

२—कदें नि निक्का तीला जरदे; सज्जन सौ समान्दे न।
उयै खुशियें खिड़ी २ पौन्दे अत्थरूं बी टमकान्दे न॥
उयै हैंस न मान सरोवर मोती खाई २ पलदे न।
उयै काएँ कन्ने रलियै पानी बाजूं मरदे न॥
उयै बुलबुल फुल्ल जे दिखदी आकड़ी २ पौन्दी ऐ।
उयै पत्तर-झाड़ा बेल्लैं रोन ते पिट्टन डौंदी ऐ॥
उयै राजे तख्तें उप्पर छत्र चौर झुलांदे न।
उयै विपता बिच बगारी बनियै खेत्रें सिले चुनांदे न॥
उयै घड़े न जीन्दे बेल्लै बिच घड़ियाली लगदे न।
उयै मरने उप्पर दिक्खे जो धरेयाड़ी भजदे न॥
उयै तोते पिंजरे अन्दर राम नाम गी रटदे न।
उयै बिल्ली पौने बेल्लै टीं २ करियै नसदे न॥
उयै लोहा किश्ती लग्गा बेड़ा पार करान्दा ऐ।
उयै हथकड़ियाँ बी बनिऐ बन्दी खाने पांदा ऐ॥

२—चाहत के गुल कुछ इस तरह हैं जी में खिल गये।
जो दिल भी उन के मिल गये और तन भी मिल गये॥
सच पूछिये तो रखती है चाहत भी क्या मजा।
जो फरक कीं न आशक ओ माशूक में हो जा॥
यक रंग दोस्ती में रहे दोनों बरमला।
जो उसपै होगया वही इस पर होगया॥ —नज़ीर

उयै हत्थ से अर्जुन दे जो धनष गण्डीव चलाँदे से ।
मां भारत दे युद्धै अन्दर सौ सौ कैहर कमान्दे से ।।
गोपी तला दे उप्पर भीलें सामनै डोले लुट्टी ले ।
उनें गै हत्थें धनुष नईं उठदा बल, विद्या सब मुक्की गे ।।
उयै लेखा इस चित्तै दा मुंह बाहरै गी खुल्लेया ऐ ।
रगै रगै बिच मैल भरोची ताँ भोगें पर डुल्लेया ऐ ।।
नित्त निरन्तर अभ्यासै दा इसगी साबन लगदा जा ।
लो लगदी जा जिश्रां-जिश्रां अन्दरा न्हेरा कडदा जा ।।
परती जन्दा मुंह इसदा जां आपूं गी जद दिखदा ऐ ।
त्रैलोकी दे सकल पदार्थ सुखने बाँगूं मिथदा ऐ ।।
नित नित अमृत रस पीने दा, जां चसका इसी पौन्दा ऐ ।
बाहरले सारे स्वाद भुलान्दा होई न्यारा रौन्दा ऐ ।।
१–खुलमखुल्ले दर्शन करियै परम सुखेंगी पान्दा ऐ ।
अपनी करनी कीती सारी इक इक लेखै लांदा ऐ ।।

१—जब उमड़ा दरिया उल्फत का हर चार तरफ आबादी है ।
हर रात नई इक शादी है हर रोज मुबारिक बादी है ।।
हर आन हंसी हर आन खुशी हर वक्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक मस्त फकीर हुए फिर क्या दिलगीरी है बाबा ।। —नज़ीर

१–होई चुरासी कच्छा खलासी जन्म-मरन छुड़काया ऐ ।
आपूं बनी मलाह मुक्ति दा बेड़ा पार कराया ऐ ॥
हुन फी कैंदे मोहले पौने, उक्खल गै जां भज्जी गेया ।
आपूं गै तूं 'ब्रह्मा नन्दा' बांज पेयै दे रज्जी गेया ॥

———

ध्याता प्रकरण समापत होआ ।

१—अरज़ ओ समा कहां तेरी वुसअत को पा सके ।
मेरा ही दिल है वह कि जहां तू समा सके ॥
वहदत में तेरे हरफ दूई का न आ सके ।
आईना क्या मजाल तुझे मुंह दिखा सके ॥
क़ासद नहीं यह काम तेरा अपनी राह ले ।
उसका पयाम दिल के सिवा कौन ला सके ॥
इतफाये नारे इश्क न हो आबे अश्क से ।
यह आग वुह नहा जो पानीं बुझा सके ॥

* ध्यान-प्रकरण *

ठग बनजारा

नमें दरें दी नगरी अंदर ठग बनजारा बसदा ऐ।
भित्ती उप्पर करै मलम्मा सुन्ना करियै दसदा ऐ ॥
चमक दमक नईं समझा औंदी, इस दे तौर न्यारे न।
पार सराफें नईं कोई पाया परखां करी २ हारे न ॥
रंग बरंगे रूप बनाइयै पिच्छों तार हलान्दा ऐ।
चौदां लोक तली पर रखदा पुतली बांग नचांदा ऐ ॥
जैहर भरे अमृत फल रचियै गुप्त संजोग करांदा ऐ।
राह चलदें गी पाई भुलेखे खुशियें नईं समान्दा ऐ ॥
मित्तरें दा बी मित्तर लबदा जदूं लोआरै चढ़दा ऐ।
बस चलै तां पिञ्जरें पांदा बैरियें बांगूं छलदा ऐ ॥
बिना फिन्नै फुंकारां मारै बाज जंजीरें बन्नदा ऐ।
त्रैलोकी बिच हलचली पान्दा सप्पें बागूं डंगदा ऐ ॥
बाज अग्गी गै चिखा चनाइयै जींदे जाली सुटदा ऐ।
छाती उप्पर थोड़े मारी बांग कसाइयें कुटदा ऐ ॥

न्हेरेगी चानन करी दसदा नदियाँ रड़ै बगांदा ऐ ।
बिजली बनी २ चमकां मारै बदलें बाज बरांदा ऐ ॥
कागजी फुल्ल सुगन्धि भरियै बागें अन्दर टुंगदा ऐ ।
भौरें उप्पर लाई गुलेलाँ इक २ करियै फुंडदा ऐ ॥
बाज परें गै उडरण जानै अम्बर टाकी लान्दा ऐ ।
राह चलदें गी सूली टंगदा खिड़ २ हासा पान्दा ऐ ॥
तेलै बाज कड़ाहियें तलदा, भट्ठियें बिना तपांदा ऐ ।
चिड़ियें दे घेरे बिच आनी बाजें गी पगड़ांदा ऐ ।
सिप्पी अन्दर चांदी दसदा रस्सियें सप्प बनांदा ऐ ।
भिड्डें गी ढालां पगड़ाई शेरें'ने भगड़ान्दा ऐ ॥
आपरछें पर आवै जेल्लै सिर २ बाजी लाँदा ऐ ।
शतरञ्जै दियाँ चालां चलदा, ओड़क मात करान्दा ऐ ॥
१–जे कर जन्म होये अन्तै दा तां इस दा मच्च मरदा ऐ ।
पुन्नें दे फल अग्गें औन्दे, सत संगति पर चढ़दा ऐ ॥
दिन २ धार त्रिक्खी बनियै इस गी निरमल करदी ऐ ।
नौसरबाजी छुड़की जन्दी ताँ गै तृष्णा मरदी ऐ ॥

१—वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्—गी०८।२८

इन्द्रियां काबू बिच करियै चिन्ता परें त्रटदा ऐ ।
छाती अग्गें करी खड़ोन्दा पक्कियां कमरां कस्सदा ऐ ॥
भागवान अधिकारी बनियै साँख योग बी पान्दा ऐ ।
संचित कर्म समापत करियै अगले लेखे लान्दा ऐ ॥
१–चित्त बहिर्मुख चंचल होइयै चुरासी भटकान्दा ऐ ।
अन्तर्मुख मस्ती बिच आइयै सुख भण्डार भरान्दा ऐ ।
२–कामादिक रिपुयें गी मारी पूरण जतन जो करदा ऐ ।
आतम बोध दी नौका चढ़ियै भव सागर गी तरदा ऐ ॥
भोगें रोगें बिच पलचोइयै कष्टें कन्ने औंदे न ।
बिपता करि २ राखी करदे ताँ बी छुड़की पौन्दे न ॥
३—अहंपने दे घेरै आइयै ब्रह्म जीव बनी लबदा ऐ ।
बाड़ त्रुटदे सार अन्दरला भाव प्रगट होई जगदा ऐ ॥
आतम सूरज चार चफेरै पूर्ण दृष्टि पौंदा ऐ ।
जग-मग जग-मग जोत चमकदी गगन दा अमृत चौंदा ऐ ॥

१—चुनां दां कि हर कों जहां रा शिनाख्त । दरो जाये आराम बूदन न साख्त ॥
हर आंकस कि दिल बन्दद अन्दर जहां । हुशीवार खानन्दश अज़ अब्लिहां ॥

२—तरति शोकमात्मवित् (छां० ७।१।३)

३—छोड़ इस कसरत को तू वहदत में आ । चख ज़रा तू बैहरे वैहदत का मज़ा ।
बैहरे वैहदत का अगर हो मौजज़न । आप तू कसरत का फिर हो बेख़कन ॥

इस्सै रसै दे चसकै पेइयै पिछले दुख भुलांदा ऐ।
कई जनमें दी कीती कतरी सारी मुजरै पान्दा ऐ ॥
हर पत्तर हर फुल्ल फलै बिच आपूं गी नित्त दिखदा ऐ।
मित्तर, बैरी, साध, चोर सब आतम करियै मिथदा ऐ ॥
१–बीती दी नईं चिन्ता करदा अगली गी नईं इच्छदा ऐ।
बुरे-भले हानि-लाभैंगी इक जनेहा दिखदा ऐ ॥
अति-कष्ट जां आइयै बनदा अत्थरूं नईं टमकांदा ए।
इष्ट पदार्थ अग्गें दिक्खी लालां नईं चोआन्दा ए ॥
बिनां महा पुरुषें दी सेवा मर्म निं जानेया जन्दा ए।
गास लमकदे अमर फलें गी भागवान कोई खन्दा ए ॥
भव सागर दा ताना तनियै बासना जाल बछान्दी ए।
तृष्णा मच्छी उस बिच फसियै हा-हा कार मचान्दी ए ॥
राग द्वेषै दियां गण्डीं देइयै मोह पलेसें कस्सियां न।
तृष्णा नईं ए त्रोड़न दिन्दी दिन २ होइयां पक्कियां न ॥
अम्बर बद्दल छाये काले सूरज चमकन औखा ए।
मंझ धारा दे घुम्मन फिरदे, बाज मलाहें नौका ए ॥
२—इस संसार रुखै दी जड़ अज्ञान शास्त्रें दस्सी ए।
बासना जल छड़कोन्दा रौंदा दिन २ बनदी पक्की ए ॥

१—गुज़श्ता ख्यालो आयेंदा ख्याल अस्त। ग़नीमत दां हमीं दम रा कि हाल अस्त ॥
२–ऐ अजीज़े मन शुनौ हाले जहां, मेरवद आलम चूं सैलाबे रवां।
नै हकीक़त दारदो नै कैफीयत, नै मकां पैदा दरां नै मनज़लत।

आतमबोध कुहाड़े कन्ने जिस जिस इसगी बडेया ए ।
परम जोति दा दर्शन पाया अन्दरा न्हेरा कडेया ए ॥
१—मैं मेरी दे संगल त्रोड़े हर्ष बिषाद मटाये न ।
पञ्जें बैरी करी नशाना इक २ करियें ढाये न ॥
मोह-पलेस दे खोल्ली सुट्टे तृष्णा तान्नी त्रोड़ी ऐ ।
टोर कायें दी छुड़की गेई हैंसें ने मित्तरी जोड़ी ऐ ॥
छप्पड़ें कच्छा होई खलासी मान-सरोवर थोई गेआ ।
अनबेंदे जां मोती पाए कौडी बनज फकोई गेया ॥
दृष्टि बारली गई बदलोई अन्दर नजर दुड़ान्दा ऐ ।
रोम-रोम ते रग-रग बिचा ब्रह्म भाव गी पांदा ऐ ॥

१—तुम्हारे दौर में हमने साकी अजब ही दौर शराब देखा ।
इधर तो वाअज़ गिरा पड़ा है उधर को ज़ाहिद खराब देखा ।
जो एक झपकी में जुज़ से कुलहो और एक कतरे से होवे दरिया ।
तमाम आलम में तूने हमदम कोई भी मिसले हुबाव देखा ।
नहीं है धोका कुछ इस में ऐ दिल कि है यह धोका तिलस्मे आलम ।
जो कुछ सुना था सो था फसाना जो कुछ कि देखा सो ख़ाब देखा ।
—दीवाने न्याज़

१—त्रैलोकी दा नाता त्रोड़ी परम धाम गी आया ऐ।
जीन्दें गी जीन्दे रोई बैठा खुशियें नईं समाया ऐ॥
नटनी जिआं घुंगरू पाइयै छन-छन रस्सै चढ़दी ऐ।
ताल सुरा दा मूल निं खुंजदी नृत्त चुफेरै करदी ऐ॥
हत्थ लुआरी तानां खिचदी सारतीं मारी हसदी ऐ।
पर अपने अन्दरै दी दृष्टि छनकारें पर रखदी ऐ॥
पनघट पर पानी गी भरियै सेहलड़ियां सब चली पेइआं।
आपो अपनी न्यारी न्यारी कत्थ-कहानी करी रेइआं॥
रंग-बरंगे बिन्ने सबनें अपने सिरें टकाये न।
जिनें ध्यान घड़े बिच रखे उन्हें गै भरे पुजाए न॥
२—इस्सै चाली सहज अवस्था बिच मनै गी रखदा ऐ।
करदा बी ओ किज नईं करदा समता अन्दर बसदा ऐ॥

१—मुर्दने तन दर रियाज़त ज़िन्दगीस्त, रंजईं तन रूह रा पाबन्दगीस्त।
मिल्लते इश्क ईं हमां दीं हा जुदास्त, आशिकां रा मज़हबो मिल्लत खुदास्त।

२—सब कुझ बनेया ते कुज न बनेयां आसां लद्दी ढूंड नशानी।
सब कुझ करदे कुझ न करदे ऐथे चाल इओ इन्सानी॥
जो बनेयां सो आपे बनेयां न दूजा कोई ज़िकर ज़ुबानी।
सन्तरैन असां की लैबारिया जो जी कीता कुर्बानी॥

२—ब्रह्मण्याधायकर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ गी० ५।२०

१—गिद्दड़ शेरै पिच्छें दौड़ी मास रज्जिऐ खन्दा ऐ।
ईश्रां मन चेतनता पिच्छें सत्ता लैन ए जन्दा ऐ ॥
जां तक ए फुङ्कारां मारै तां तक वित्त खुश्रान्दा ऐ।
फूं फूं छुड़की जन्दा जेल्लै ब्रह्म रूपता पान्दा ऐ ॥
२—बिन चिन्ता चित्त परम सनातन, चिन्तामय संसारी ऐ।
जां चिन्ता थों होश्रा न्यारा बनेया शिव अबिकारी ऐ ॥
३—ब्रह्म हृदय बिच चित्त रूप रैइयै संकल्प करान्दा ऐ।
उच्चा परम पदैगी पान्दा, नोन्दा थल्लै ढान्दा ऐ ॥
उयै चित्त शान्त शिव सच्चा कल्पित चलने हारा ई।
मन बी दूश्रा नां उस्सै दा बेदें बिच निस्तारा ई ॥

१—हिरस करवाती है रूवाह वाज़ियां सब वरना यां।
अपने अपने वनरिये पर जो गदा था शेर था ॥
२—कर्मजं बुद्धि-युक्ताहि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्म बन्ध विनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ गी० २।५१
३—आदम किधर ख़्याल है हक को तू जान ले।
हम तुम हैं एक दो नहीं यह बात मान ले ॥
बुद्धि से दूर चित से अलग मन से पार हो।
चिन्ता दूई की छोड़ दे अनुभव प्रमाण ले।
ख़ालिक है तू भी मैं हुं अगर फरक फिर कहां।
रचता है स्वप्न सृष्टि को मुझ से निशान ले ॥
गदला है आवे इश्क झिझकता है दिल तभी।
पीना अगर है शौको मुहब्बत से छान ले ॥
खुद से खुदा जुदा नहीं हरगिज खुदा परस्त।
कहता है रास्त हाथ में निर्भय कुरान ले ॥

१–मनै दा चलना गै सुख मन्नै, इसगी नईं समझान्दा ऐ ।
तां जानी लै मैल नि जन्दी दिन दूना दुख पान्दा ऐ ॥
२–चेतन थीं पिच्छें हटी जन्दा भोगें दे बिच डुलदा ऐ ।
तां अन्दरै दी जोत नि जगदी आपूं गी बी भुलदा ऐ ॥
३—बासना युक्त संकल्पें पेइयै कामना होर बदांदा ऐं ।
नित्त नमें करमें गी करदा नीच जोनियां पान्दा ऐ ॥
४–कमजोरें गी रबै रोआन्दा बड्डो दिक्खी जलदा ऐ ।
जित्थें जन्दा दुख नईं चुकदे रोई रोइयै हत्थ मलदा ऐ ॥
५–चित्त नरोआ नित्त एकरस, लेश नईं बिच माया दा ।
आपूं जानी जानी फसेया पिञ्जरा घड़ियै काया दा ॥

१—अश्रद्दानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।
अप्राप्य मां निवर्त्तन्ते मृत्यु संसार वर्त्मनि ॥ गी० ९।३
२-नहीं कबूल अबादत तेरी जब लग पाक न होवें ।
आमिल खाक पवे मुल्ल तेरा जब लग खाक न होवें ॥ —हाशम
३—युक्तः कर्मफलंत्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कर्म कारेण फले सक्तो निबध्यते ॥
४—चूं कज़ा आयद शवद दानश बखाब । माह स्याह गर्दद बगीरद आफताब ॥
बारहा दर दामे हिरस उफदादाई । खल्के खुदरा दर बुरीदन दादाई ॥
तो नमेदानी कि आखर कीस्ती । जहद कुन चन्दां कि दानी चीसती ॥
अज़ खुदी बिगुज़र कितायाबी खुदा । फानी ई हक शौ कि तायाबी बक़ा ॥
५—मंमां आखे समझ इयाना उमरा बिरथा बीतीआ ।
कपड़ेयां दी करें सफाई नियत्त साफ न कीती आ ।
जाहिर पाक पोशाक लगाई अन्दर भरी पलीती आ ।
न अमलां बिन ठाकुरद्वारा न कुझ मल्ला मसीती आ ।

भोगें'छा नईं जाँ तक नसदा, तां तोड़ी दुख पान्दा ऐ ।
अंहता-ममता दी चिख चिनियै जीन्दे लाम्बा लांदा ऐ ॥
सिहं सूरमा उच्ची पदवी, लेला बनी खोआन्दा ऐ ।
लालें दा बनजारा होइयै कौडी मुल्ल पुआन्दा ऐ ॥
त्रै लोकी दा स्वामी आपूं खेडें जगत रचान्दा ऐ ।
बकरी वाला मैं मैं करदा छुरिवें गला बडान्दा ऐ ॥
१–अगें बी इस कईं घर गाले नेआ मोआता लान्दा ऐ ।
'ब्रह्मानन्दा' साम्ब इसी ए खोले करी टकान्दा ऐ ॥

चलदी गड्डी

२–पटड़ी उप्पर रेल खड़ोती कूकाँ देई जगान्दी ऐ ।
उट्ठो राहियो टिकटां लेई लौ गड्डी चलना चाहन्दी ऐ ॥

१—सैईयो नी मग़रूर न होईयों तुसां क्यों घर बार भुलाये ।
मापे लाड लडावन सानूं पर कारण देन पराये ॥
ईहो छोड़ गैय्यां कल वेहड़ा जिन्हां जा घर होर बनाये ।
हाशिम जान ढुंडाऊ साडे कोई अज आए कल आए ॥
२—इमा सर्वाः प्रजा अहर हर्गच्छन्त्येतं ब्रह्म लोकं न विन्दन्ति ॥ छां० उ० ८।३।२

१—त्रौं भान्ति दे बने मुसाफर बौन्दे बक्खो बक्खें न।
२—इसदे इक इक डब्बे अन्दर नौ दरवाजे रक्खे न॥
टोर बी इस दी अजब नराली नईं लोआरें चढ़दी ऐ।
इक्की ज्हार ते छे सौ फेरा दिन रातीं बिच करदी ऐ॥
टी-टी काली बरदी पाई पड़तालें गी चढ़दा ऐ।
टिगटें बाजू बौन नि दिन्दा, कन्नो पगड़ी कडदा ऐ॥
जिन्दे भार बंदीकी नइयों, तोल्लें सामें रौन्दे न।
ओ जंगाती कौला छुड़की होईं न्यारे रौन्दे न॥
'चिड़ियां रैण बसेरा' करने गी पञ्छी जन औन्दे न।
'मैं-मेरी' दे लेईं कजीए उमरां लड़दे रौन्दे न॥
औन्दे नङ्ग-मनुङ्गा आया, कन्ने कक्ख नि जाना ऐ।
पिछलें शाहें दा जो लेखा, अपने सिरें चुकाना ऐ॥
३—पति-पत्नी ते पुत्तर-धियां, आण्ड गुआण्डी नाते न।
अन्तै बेल्लै मोहरा बनदे, इक इक करियै जाचे न॥

१—त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितंनाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥ —गी० ७।१३

२—सर्व कर्माणि मनसा सन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नव द्वारे पुरे देहे नैवकुर्वन्नाकारयन्॥ —गी० ५।१३

३—अज़ बराये खेशोअकरुबां रोज़ो शब दरबन्द बन्दे ईं औ आं।
ईं न्यन्देशी कि आखिर कीस्तम।
नाहके बर खुद पसन्दी बारे गम अज़ाख्यालत ईं हमा चीज़े बवद,
चू ख्यालतरा ममानदईं कै बवद॥

हत्थें रखदे चिखै दे उप्पर लोकाचारी रोंदे न ।
१–धन-दौलत दे ए सब लोभी बारस बनी खड़ोंदे न ॥
ए किज दूएं उप्पर बीतै, अक्खीं अपनी दिखदा ऐ ।
फी बी आकड़ी २ पौंदा सच्चा सब किज मिथदा ऐ ॥
२–जादूगिर इञ्जनैं बिच दड़ियै पुट्ठी कला दबांदा ऐ ।
बिच बैठें पर टूने करदा डींगे नाच नचांदा ऐ ॥
आशा तृष्णा डैन चुड़ेलां दन्द करीची आईयाँ न ।
लप २ करदियां जीव्हाँ कड्डी गिरजें बांगूं छाइयाँ न ॥
छक २ छेड़ सनोची जेल्लै फड़ २ फिफड़ा डरेया ई ।
इस रेलै दा इक २ पुर्जा गौढ़ बंगालै घड़ेया ई ॥
त्रुट्टै भज्जै फी नईं बनदा, नां गै मुल्लें बिकदा ऐ ।
मूरख इस दी कदर निं जानै कौडी बदलै मिथदा ऐ ॥
कारीगिरै दी रचना लिखदे कान्नी कम्म निं करदी ऐ ।
अकल बचारी हारी जन्दी, जाइयै बेचलै बड़दी ऐ ॥
जीव्ह बी दन्दें अंदर सञ्जरी आखने थीं थथलाई ऐ ।
शेषनागै बी कन्न झाड़दे तोबा तोब मचाई ऐ ॥

१—कुज़ा ए चश्मे हरीसां पुर न शुद । ता सदफ़ कानहे न शुद पुर दुर न शुद ॥
हर किरा जामाज़ इश्के चाक शुद । ओज़ हिरसो ऐब कुल्ली पाक शुद ॥
२—ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया —गी० १८।६१

इक २ रंग अनमुल्लड़ा मोती खड्डें जाई रुड़ाँदा ऐ।
लालें दा बनजारा होइयै ठीकरियां गल पांदा ऐ॥

दूयें दीयां बदगोइयां नित्त घर बैठा गैं करदा ऐ।
अपनी खट्टा हेठ नि दिखदा कोई आखै जलीं मरदा ऐ॥

अपने मूआँ बनै सुजाखा दूए गी अन्ने मिथदा ऐ।
गिल्लड़ें बाँगू रोआर नि लबदा पारें २ दिखदा ऐ॥

अपना आप नि लब्बै जिच्चर भवसागर नईं तरदा ऐ।
बट्टें दी बेड़ी पर चढ़ियै डुबकूं २ करदा ऐ॥

१—होरनें मी खूह खाते सुटदा, आपूं मौजां मंगदा ऐ।
पिछले निम्बलें गी बेई रोंदा, जां यम पुट्ठा टंगदा ऐ॥

२—मोह माया दे नशेगी पीयै भौगें उप्पर डुल्ला ऐ।
अतिसारै दा सन्न बरड़ाया अपना पराया भुल्ला ऐ॥

१—चूं चाह कुनदाये दरदिल कि खल्क रा दर अन्दाज़ी।
नमेतरसी अज़ां रोज़े कि खुद रा अन्दरां बीनी॥
इला खाकानिये मिसकीं चे बन्दी दिल दरीं दुनिया।
कि ता बरहमज़नी दीदा न ईं बीनी न आं बीनी॥

२—बागबां गर पंजरोज़ी सोहबते दिल बायदश।
बर जफ़ाये ख़ारे हिजरां सबरे बुलबुल बायदश॥ —दीवान हाफिज़

१–कुत्थों आया ते के करना कुस देसै गी जाना ऐ।
　　कोकड़ी पीङ्ग त्रुट्टी पौनी, कुस २ साथ नभाना ऐ॥
कुसने लिखनी चिट्ठी पिच्छों, कुस सुखसांद सुनाने न।
　　किच्चर रौंगन नेड़वाँ नाते कुत्थें जाई समाने न॥
कुस दी तोड़ लग्गी दी चढ़नी, अद्दा कुस दी त्रुटनी ऐ।
　　कुसगी मिलना राज संहासन, कुदी मत्थे दी फुटनी ऐ॥
कुस २ कन्तैगी बस करियै फुल्लें छेज बछानी ऐ।
　　कुस २ पाई गलै बिच जुलफ़ाँ रोन्दे रात बिहानी ऐ॥
कुस दी नेक नछत्तर पाइयै कुक्ख सवल्लड़ी होनी ऐ।
　　कुस कुस दे घर बाजे बजने, कोदी चिखा चनोनी ऐ॥
कुस दै पौनियां न्हेरियाँ राताँ, कुस घर चानन होना ऐ।
　　२–कुसगी मिलने माल खजाने कोदा भुग्गा फकोना ऐ॥
कुदी सुहागें भरी पटारी सदा सलामत रौहनी ऐ।
　　कोदी बेदी बिच गै बौन्दे तोड़ा रास लटोनी ऐ॥
कुसने रंग मल्हारां गान्दे खुशियें नईं समाना ऐ।
　　कोकड़े केड़ें संख सुनाइयै ढडाँ बजदे जाना ऐ॥

१—कस चेह दानद मा अर्ज़ी बहरे अमीक़, संगरेजा कदर दारद या अक़ीक़।
सूये कुनह खेश कसरा राह नेस्त, जर्रा अज़ ज़र्रा ए आगाह नेस्त॥
हस्त बाहिर ज़र्रा दरगाहे दीगर पर ज़ हर राह बदो राहे दीगर॥

२—कितने मुफलिस हो गए कितने तवंगर हो गए।
ख़ाक में जब मिल गए दोनो बराबर हो गऐ॥

कुसदे सुत्ते कन्दाँ भन्नदी दौड़ी दौलत औनी ऐ।
कुस दा लड़ छुड़काइयै नसदी दिखदे बिपदा पौनी ऐ ॥
कुस २ हार संगार सजाई गल मिलि मिलिए बौनाऐ।
कुसी बजोगी रातें अन्दर रोना-कुड़ना पौना ऐ ॥
कुस मुलखै दे मालक बनियै छत्र-चौर झुलाना ऐ।
कुस ने हत्थ प्याले पगड़ी दर २ मंगदे जाना ऐ ॥
कुसदे बागें बुल-बुलें कोयलें मिट्ठे गीत सुनाने न।
कोदै अक्क धतूरे जम्मने कां भी नसदे जाने न ॥
कुस दे भाग सुत्ते दे जागी पीङ्ग लोआरै चढ़नी ऐं।
कुस दी डोर समाना त्रुटनी कुल्ली-जुल्ली सड़नी ऐ ॥
कुस २ मांगाँ सिरें भराई बांह छनकांदे चलना ऐं।
कुस २ सौड़ सिरै पर चुक्कनी पिट्ट सेयापा करना ऐ ॥
कुस ने बैरी'ने लड़नेगी सिर २ दुरियै जाना ऐ।
जीनें दी बिन्द आस निं रखनी हसदे मौहरा खाना ऐ ॥
१—सौ जीने दे तुल्ल ए मरना भागवान कोई पान्दा ऐ।
पुन्न अनेकाँ आई खडोन्दे तां संजोग बनान्दा ऐ ॥

१—खुद हम ओ आब ओ हम ओ साकी ओ मस्त।
हर सिह यक शुद चूं तिलस्मे तो शिकस्त ॥
बरगे बेबरगी तुरा चूं बरग शुद। जान बाकी याफ़्ती ओ मरग शुद ॥
ज़ाहिरो बातन अगर बाशद यके। नैस्त कसरा दरनजाते ओ शके ॥

१–आतम दा बेई सिमरण करदा दृष्टि अन्दर रखदा ऐ ।
बाहरै दे सब स्वाद भुलान्दा नित्त एकान्तें बसदा ऐ ॥
२–शम दम दे उपदेशें कन्ने सुत्ता चित्त जगांदा ऐ ।
धार बबेकी तेज जाँ बनदी तां मन टिकना पांदा ऐं ॥
ब्रह्माकार होई जां वृत्ति दिन दिन उच्ची चढ़दी ऐ ।
करड़े साधन सौखे लबदे तृष्णा बैरन मरदी ऐ ॥
जड़-चेतन दो अंश न वृत्ति दे लिखने बिच आया ऐ ।
जड़ैगी वृत्ति रूप सुनान्दे, आतम चेतन गाया ऐ ॥
मौनी चित्त गै चेतन मात्तर ओ शिव रूप खोआन्दा ऐ ।
देश काल थीं अन्त निं जिसदा बेद नखेड़ा आन्दा ऐ ॥
साखो चेतन दी सत्ता'ने वृत्ति चमकी पौंदी ऐ ।
ओदे बिना निं रस्ता लबदा अग्गों परती औंदी ऐ ॥
पत्थर पुतली आखने पर बी नाच नईं करी दसदा ऐ ।
इयाँ चित्त भी चेतन बाझूं धार चढ़ी नईं सकदा ऐ ॥
चन्द्राकार लिखी दियें किरणें अमृत नईं बरसाना ऐ ।
प्राणें बिन मुर्दे ने जिआं गाइयै कद्दूं सुनाना ऐ ॥

१—मयि चानन्य योगेन भवितरव्यभिचारिणी ।
विविक्त देश सेवित्व-मरति जनसंसदि ॥
अध्यात्म ज्ञान नित्यत्वम् तत्व ज्ञानार्थ दर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥ गी० १३।१०।११

२—योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ गी० ६।१०

सूरज दा नां लैने कन्ने धुप्प कदें नईं चढ़नी ऐ।
नाँ उस कन्ने कमलें खिड़ना नाँ उस गरमी करनी ऐ॥

कागज लिखे दे फौजाँ लश्कर कुस युद्धे बिच लड़ने न।
उनें नाँ तोफ-बन्दूक चलानी नां कोई बैरी मरने न॥

बैलें बिना ए गड्डा सुन्ना, दिये बिन घर न्हेरा ऐ।
चेतन बाझ मनै गी उबड़ा चुकने वाला केड़ा ऐ॥

जेठ हाड़ै दी धुप्पा दे बिच सूरज चमकन लगदा ऐ।
दिक्खी मिरग जे दौड़ी पौंदे, लेतर पानी लबदा ऐ॥

कच्छ आए तां सुक्क-मसुक्का पानी फुक्का नि थोई ऐ।
दौड़ी-दौड़ी जान गुवाई दूनी बिपदा होई ऐ॥

मृग तृष्णा ए नां इस्सै दा बेदें बिच सुनाया ऐ।
चित्त बी ए इस्सै चाली झूठे भोगें पासै आया ऐ॥

खिनक पदारथ बी ए सच्चे करियै तांइयै दसदा ऐ।
भोगदे बेल्लै बैरी लबदे तां मुड़ी पिछड़ा नसदा ऐ॥

इस चित्तै दा चेतन बाजू कौडी मुल्ल नि पौन्दा ऐ।
चेतन युक्त ए 'ब्रह्मानन्दा' राजसंहासन बौन्दा ऐ॥

चलदी चक्की

१–धरती अम्बर दौं पुड़ें दी अजब न्यारी चक्की ऐ।
अरबां बरे होए इसी चलदे तां बी दना नि घस्सी ऐ ।।
दुखें भरी ते सूलें सल्ली मटकी मटकी चलदी ऐ।
जो जो इस दे गालें पौंदा दो दो फाड़ां दलदी ऐ ।।
ब्रह्मा इसदा बनी बटैहड़ा अपने हत्थें घड़दा ऐ।
शिवजी गाला खाई समांदा, विष्णु राखी करदा ऐ ।।
कद्दूं घड़ी, किच्चर इस रौंहना, आद अन्त नईं आया ऐ।
ऋषी-मुनि सब हारे बैठे पार कुसै नईं पाया ऐ ।।
जादूं भरी ते टूने हत्थी इसी शास्तरें दस्सेया ऐ।
नर अवतार ते पशु पखेरु, जिस दिक्खी सो फसेया ऐ ।।
छड़की २ होये बेहाले, अपना पराया भुल्ली गेया।
दिखेया सुनेया, खादा पीता, सारा गै ओ चुल्ली पेया ।।
इस चक्की दे हेठें उपरें चौदां लोक न सज्जे दे।
आसें-पासें जाल बछाइयै पेचें कन्ने बज्जे दे ।।
तृष्णा पापन इस जालै दा ताना बूना तनदी ऐ।
पेचें दे बिच गण्डीं देइयै दिन-दिन पक्की बनदी ऐ ।।

१–चलदी चक्की देखके दिया कबीरा रोय। दो पाटन के बीच में साबत रहा न कोय ।।

पंज बेदरदी, कमरां कस्सी पैहरे दार खडेरे न।
अन्दरा बाहर औन निं दिन्दे, फिरदे चार चुफेरै न॥
त्रौं गुणें त्रौं कर्मे दे बस होइयै चक्की चलदी ऐ।
माया दे पेचें बिच कस्सी जकड़ी दी नईं हलदी ऐ॥
झूठी चक्की झूठा ताना झूठा जाल बछाना ऐ।
झूठा इस दा घड़ने वाला, झूठा सब समेयाना ऐ॥
मनै दा फुरना चित्त खुआन्दा उयै जगत रचान्दा ऐ।
फुरना छोड़े पिच्छें उयै ब्रह्मरूपता पान्दा ऐ॥
प्राण शक्ति जे बस जा होई, मन समता-सुख पान्दा ऐ।
शीशे दा प्रतिबिम्ब बी जियां शीशे बिच समान्दा ऐ॥
१-पल भल दे फरनाके अन्दर सारा किज ए मिटदा ऐ।
अनहोआ परतीति पौंदा, अक्ख खोली नईं दिखदा ऐ॥
प्राण वायु दी चलन शक्ति गी लेई मन दौड़ाँ लान्दा ऐ।
ज्ञान शक्ति ने दूरा दा बी बस्तु जानी पान्दा ऐ॥
अपनी नां किज शक्ति एदी नां कोई इस थीं डरदा ऐ।
दमें परायें शाहें बांगूं करज बसूली करदा ऐ॥
मनै दे रोके प्राण जो रुकदा, प्राण रुके मन रुकदा ऐ।
प्राणें बिन सुत्ते दी न्याईं प्राण रूप होई उठदा ऐ॥

१-चादर से मौज की न छुपे चेहरा आब का। बुर्का हबाब का न हो बुरका ए आब का॥
अपना ही कुछ तसर्रुफे अवहाम है कि हम। चेहरे पै हक के पाते हैं परदा नकाब का॥

१-ज्ञान चलन दो शक्तियाँ लेइयै जिस बेल्लै मन उठदा ऐ ।
सौ मित्तरें दा मित्तर बनदा, तलियें उप्पर चुकदा ऐ ॥
प्राण वायु दी ज्ञान शक्ति गी जां चिन्तन बिच लान्दा ऐ ।
न्हेरे बिच दुणखरे दै बांगू बनियै भूत डरांदा ऐ ॥
हाथी घोड़ें बाज रथें दै सेना कुस बनानी ऐ ।
संकल्प रचित सारी त्रैलोकी इस्सै बिच समानी ऐ ॥
तेरे संकलपें जग रचियै ब्रह्मा दे सिर सुटदा ऐ ।
संकल्प त्यागे जगत कुतै नईं, सारा झंजट मुकदा ऐ ॥
बिना बचारे जगत उपजदा, करो बचार तां मिटदा ऐ ।
मृग तृष्णा दे जलै दा ज्ञानी झूठा उसगी मिथदा ऐ ॥
बिन सत्ता मन जड़ होश्रा दा मुड़दे बांगू रौन्दा ऐ ।
मुड़दा फी जींदेंगी मारै, चरज बड़ा ए श्रौंदा ऐ ॥
निराधार निर्गुण हुन्दे बी बिना देहै दे गजदा ऐ ।
सारे जगत गी खाई समांदा तां बी मूल नि रजदा ऐ ॥
बिन फौजें दै श्राकी होइयै घर २ जंग रचाया ऐ ।
मोश्रा हरान लगा जींदेगी, कैसी श्रद्भुत माया ऐ ॥

१-दरगुज़र अज़ नामो बिंगर दर सिफ़ात । ता सिफातत राह नुमायद सूये ज़ात ॥
गुम शवी दरज़ाते आसाईज़ ख़ुद । चश्मे तो यकरंग बीनद नेको बद ॥
इख़्तलाफ़े ख़लक अज़ नामो फ़ताद । चूं बमाहनी रफ़त आरामो फ़ताद ॥
आंकि बीनद ओ मुसब्बव रा अयां । कै निहद दिलबर सबब हाये जहां ॥

रस्सी अन्दर सप्प संजारे, मूर्ख दिक्खी डरदे न।
सिप्पी दे बिच चाँदी चमकै लोभी लालच करदे न ॥
अन्नें अंगें बोले नचदे, खुसरे टब्बर पालै दे।
लूलें रलियै जान्नी चाड़ी, गुंगे साज सम्हालै दे ॥
गासी फुल्लें दा देई सेहरा सण्डा पुत्तर ब्याहना ऐ।
सेहे सिगें पर दाज चुक्किऐ घर बूजो दै. जाना ऐ ॥
झूठे-मूठे डाकू आये सुनियै जी घबरांदा ऐ।
रौला पाइयै कुसगी आखै डरदागै थथलान्दा ऐ ॥
न्हेरे अन्दर सप्प निकलेया सुनियै दीयें बलना नईं।
हक्के-बक्के होई खड़ोगा कदम बी अग्गें चलना नईं ॥
१—मनै दे बस मूरख होई बैठा, मन किआँ बस करना ऐ।
जाई डोबुयें डबरी सुट्टना थप-थप करदे मरना ऐ ॥
२—मनै दी रग-रग मैल भरोची परख-बुद्धि नईं रौंदी ऐ।
ज्ञान-दीप बी डग-मग करदा चमक नि अन्दर पौन्दी ऐ ॥

१—कहते थे कितने हम तो हैं ज़ात में कलांजी।
हम शेख़ हम मुग़ल हैं, हम हैं पठान हां जी॥
जिस दम कज़ा पुकारी अब उठ चलो मियां जी।
फिर शेख़ जी न सैय्यद मिर्ज़ा रहे न खां जी॥

२—क्या फर्क दाग़ो ग़ुल में जिस ग़ुल में बू न हो।
किस काम का वह दिल है के जिस में तू न हो॥

१–बाहरी चीजां चिन्तन करदे मन मुट्टा होई जन्दा एँ ।
तां गै इक-इक कदमै उप्पर सौ-सौ ठोंकर खन्दा एँ ॥
मिट्ठा सुर बीणा दा सुनियै जो डरी डरियै पौंदा ऐ ।
सुत्ते गी बी मुरदा समझी, थर-थर कम्बदा रौंदा एँ ॥
बिच चुरस्तै बली टकाई, भूत समझियै नसदा ऐ ।
२–मुट्टी बुद्धि दे अन्दर कोई सूखम तत्व निं बसदा एँ ॥
जो सुख आतम लाभ दे अन्दर, होर कुतै नई दिक्खेया ऐ ।
जिस २ गी मन चिन्तन करदा, सारा गै ओ मित्थेआ एँ ॥
३–पूरण भजन जो नित २ करदा अजर-अमर होई जन्दा ऐ ।
गर्भ-योनि बिच मुड़ी निं औंदा, सदा अमर फल खन्दा ऐ ॥
देबतें गी बी देह ए दुर्लभ, पुन्ने'ने गै थोन्दा ऐ ।
इस्सै कन्ने मुक्ति मारग दूनो दून कटोंदा ऐ ॥
सब सिद्धि साखी'ने हुन्दी क्रिया प्राण करान्दे न ।
कन्न भी अपनी शक्ति लेइयै सारे शब्द सुनान्दे न ॥

१—कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥
२—भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृत-चेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ गी० २।४४
३—प्रसादे सर्व-दुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ गी० २।६५

निर्गुण इक निरामय सच्चित केवल परमानन्दा ऐ।
आतम भुल्ली जा तां ए चित्त सप्प बनी करी खन्दा ऐ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था त्रौन्नें दा जो साखी ऐ।
तेरी इक इक करनी दिखदा उयै देव अविनाशी ऐ॥
तेरी मनौता चित्त बनाया लग्गा तुगी भुलेखा ऐ।
अन्ने गी चिड़िया-घर दस्सन करदे कुसै नई नेता ऐ॥
तेरे सुत्ते बी ए जागै, सुखै दा अनुभव पान्दा ऐ।
तेरे जागे तेरे मूहां उयै सुख प्रगटान्दा ऐ॥
तेरे सुत्ते ओ बी सौन्दा कुस ने ओ सुख दिखना सा।
जागने पर कुस सत्ता कन्ने उसगी सुख करी मिथना सा॥
१—उस्सै दा नां साखी-चेतन उयै आतम तेरा ऐ।
ओदे गै तां दर्शन करियै होना अन्त नबेड़ा ऐ॥
२—हरदम उसदा चेता रखदे छोड़ मनै दियें चालेंगी।
बार २ सिमरण बिच आनें सौ माला दियें मालेंगी॥

१—यार को हमने जाबजा देखा। कहीं ज़ाहिर कहीं छुपा देखा॥
कहीं मुमकिन हुआ कहीं बाजिब। कहीं फ़ानी कहीं बक़ा देखा॥
कहीं आशिके नियाज़ की सूरत। सीना बिरयां ओ दिल जला देखा॥(दीवाने नियाज)

२—साबत हो जिस दरस इश्क दे लेया हरफ हकीकत वाला।
हो बेज़ार गया सब इलमों तस्बीह रही न माला॥
न ओ सुघड़ न मूरख होया उन्न फड़ेया पन्थ निराला।
हाशिम ज़ाहिद अबादित कोलों उन मतलब लेया सोखाला॥

१—तेरा गै ओ रूप आखेया उयै ब्रह्म अबकारी ऐ ।
उयै बसदा घट-घट उयै बांका छैल बिहारी ऐ ॥
उस्सैगी बेदें बिच सिमरी नेति नति दस्सेया ऐ ।
सर्व जगत दा स्वामी बनियै त्रैकोकी बिच बसेया ऐ ॥
जेठ हाड़ै बिच उस्सै कारण धुप्प पंजग्नि तपदे न ।
तीर्थें उप्पर जाइयै मालां लेइयै उसगी जपदे न ॥
उस दी मैहमां शंकर गी ताँडव नाच नचांदी एँ ।
शारदा मस्ती दे बिच आइयै वीणा अन्दर गांदी ऐ ॥
२—उस्सै गी तुपदे ए जोगी जाई जुआड़ी बसदे न ।
ज्ञानी कन्दरें दे बिच बैइयै हिरदे दे बिच रखदे न ॥
बादशाहें बिच उयै बसदा छत्तर चौर झुलान्दा ऐ ।
दुखी कङ्गालें अन्दर बैइयै टुगड़े मंगन लान्दा ऐ ॥
उयै जंगलें दे बिच सञ्जरी बनियै शेर डरान्दा ऐ ।
बकरें अन्दर मैं-मैं करियै छुरियें गला बडान्दा ऐ ॥

१—एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेतः केवलो निर्गुणश्च ॥ श्वे० उ० ६।११

२—ला ज़ुरम हर मुर्ग़ बे हंगाम रा । सर बुरीदन वाजिब अस्त अग़लामरा ।
मुर्दने तन दर रियाज़त ज़िन्दगीस्त । रंजईं तन रूह रा पाबन्दगीस्त ॥
हर चेआं बरतो करा हिम्मत बवद । चूं हक़ीक़त बिंगरी रहमत बवद ।
आरफ़ां के जामे हक़ नोशींदा अन्द । राज़ हा दानिस्ता ओ पोशीदा अन्द ॥

बागें अन्दर लाई कतारां पैंछी बनियै नचदा ऐ ।
बुल-बुल बनी फुल्लें पर बौन्दा नाज ते नखरे दसदा ऐ ॥
इन्दर बनियै जल बरसान्दा नदियां नाले भरदा ऐ ।
दुखिया प्यासा बनी पपीहा आपूं पी-पी करदा ऐ ॥
बनियै जज अदालती बौन्दा फैसले पढ़ी सुनान्दा ऐ ।
आपूं मुलजम होई खड़ोन्दा फांसी चढ़ना चान्दा ऐ ॥
हर पत्तर हर डाली ते हर रग रेशे पर छाया ऐ ।
ऐसा ब्रह्म ओ ब्रह्मानन्दा तेरे बिच समाया ऐ ॥

मनै दी माला

१–इक मनै दी मालां दे बिच सौ २ दुःख परोता ऐ ।
सुखै दी नीन्दर सौन नि मिलदी सन्मुख काल खड़ोता ऐ ॥
जीव जीबै दा भोजन बनेया इक दूयेगी खन्दा ऐ ।
जमदूतें दे चढ़ी लोआरै दक्खन पासै जन्दा ऐ ॥
अन्धी कन्ने मक्खी-मच्छर दिन २ लक्खां मरदे न ।
नेकां गै जीवें दे दिन २ प्राण शकारी हरदे न ॥

१—हरकि बेमन शुद हमां मन हा दरोस्त । यार जुमला शुदचूं खुद रा नेस्त दोस्त ॥
वारे ख़ुद बर कस मनेह बर खेशनेह । सरवरी रा कम तलब दरवेश नेह ॥

१–आतम-बोध निं जिच्चर होयै जनम-मरण नईं छुटदा ऐ।
बासना देह-खेतर ए राहन्दी तृष्णा औंकर फुटदा ऐ ॥
मरना जीना छुड़कै नां गै माया जाल कटोना ऐ।
रोज गै भिड भगेयाड़ै खानी, राखै किच्चर रोना ऐ ॥
२–भोगी, बैल ते ऊंटै अन्दर फरक निं किज बी लबदा ऐ।
उनें गी रस्से पाइयै बनदे ए तृष्णा बिच बजदा ऐ ॥
इक जनमै दा रस्सै बजना कई जनमें दी आशा ऐ।
नित्त किड़े दी पालकी चढ़ना, नित्त चेहाली बासा ऐ ॥
आतम-ज्ञान सुखै दा साधन, पुन्नें बाज ए लबदा नईं।
बिन जिगरे दी मैल धनोए अन्दर दीया जगदा नईं ॥
३–अन्दर चानन्नी सब जग चानन, अन्दर न्हेरै न्हेरा ऐ।
हंसें दे घर मोती चुगने, कायैं काग बसेरा ऐ ॥
दृष्टि बिच गै सृष्टि सारी त्रैलोकी दा बासा ऐ।
जे दृष्टि बिच सृष्टि नईं तां ए सब खेड तमाशा ऐ ॥

१—युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥
२—रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णा - संग - समुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्म संगेन देहिनम् ॥ गी० १४।७ ॥
३—यार चश्मे तुस्त ऐ मरदे शिकार। अज़ खसो खाशाक ओरा पाकदार ॥
आफते ईं दर हवा ओ शहवत अस्त। वरना ईं जा शरबत अन्दर शरबत अस्त
हरकि रा बाशद तमह अलकन शवद। बातमह के चश्मे दिल रौशन शवद ॥

चंगे भले बतोड़ बनाने गारड़ी युक्ति औन्दी ऐ।
कालीबीरै दा जस गान्दे छण्ड दुआलें पौन्दी ऐ॥

१–भजनें चित्त एकागर कीता चुप चुपीता बेई रेया।
बासना आइयै कारक गाइयै हल चलियें बिच पेई गेया॥

२–बांग बतोड़े खिट्टां दिन्दा अग्गा पिच्छा दिखदा नईं।
मौहरा खाइयै धुप्पा सौन्दा, लाभ हानि गी भिथदा नईं॥

तृष्णा बिसली मन-बुद्धि गी मैली करियै सुटदी ऐ।
काम क्रोध दुर्गुण उपजान्दी भलेयां त्रट्टी पुटदी ऐ॥

बाहरा दिखदे कोमल शीतल, अन्दरा रग २ गुण्डी ऐ।
चिखा दे तोड़ी साथ नभाँदी कन्ने गै सती हुन्दी ऐ॥

तिल प्रमाण दिखने बिच लबदी छालीं पर्बत लंघदी ऐ।
काली नागें भरी पटारी छूते बिन गै डंगदी ऐ॥

बुद्धि-गुफा दी निकट नवासी बेचलै सञ्झरी सौन्दी ऐ।
हड्डु बी रड़की २ खादे रज्जने बिच नि औन्दी ऐ॥

१—श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि॥ गी० २।२

२—नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
नचाभयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्॥ गी० ५।६६

१–बर्षा रुत दी नदियें बांगूं दिन दिन दूनी गजदी ऐ ।
मुक्ति वाले कल्पवृक्ष गी जड़ा समेत गै बडदी ऐ ॥
त्रौं गुणें अन्दर पलचोई, उप्परा गण्डीं लांदी ऐ ।
बिरधपनै फी खज्जल करदी सौ २ झिड़क दोआंदी ऐ ॥
२–गुणें'च रैहना बन्धन पान्दा निर्गुण होना मुक्ति ऐ ।
सब किज करदे किज नईं करना अजब नराली युक्ति ऐ ॥
अहंकार नईं अन्दर आनै करता पन थीं खाली ऐ ।
भोक्ता बी ओ कदें निं बनदा जो रौन्दा इस चाली ऐ ॥
३–पर्वतें बांगूं निश्चल होइयै भेद बुद्धि गी कडदा ऐ ।
अंग-अंग तां समता छान्दी, अन्दरा रग २ रजदा ऐ ॥
मैं, तूं, ए, ओ, मेरा, तेरा सुखनै याद निं औन्दा ऐ ।
ओत-प्रोत पूरण अबनाशी सारै नजरी पौन्दा ऐ ॥
द्रष्टा-दर्शन-दृश्य ए त्रैबे कल्पना मातर दसदा ऐ ।
ज्ञाता ज्ञान ते ज्ञेय त्रिपुटी दा, भाव निं अन्दर रखदा ऐ ॥

१—कूज़ाए चश्मे हरीसां पुर नशुद । ता सदफ़ कानेह न शुद पुर दुर नशुद ॥
हर किरा जामाज़ इश्क चाक शुद । ओज़ दिरसो ऐब कुल्ली पाक शुद ॥
नकद हाले खेशरा गर्दें बुरेम । हमज़ दुनिया हमज़ उक़्वा बरखुरेम ॥
२—गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देह समुद्भवान् ।
जन्म मृत्युजरा दुःखैविमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ गी० १४।२०
३—तां जाने दिल हारे जानी, जद जान जानी बल हारे ।
हिकमत जान सिपाही वाली जो आप मरे सोई मारे ॥—हाशम

आतम रूप जगत गी दिखदा ऐसा ध्यान जमाँदा ऐ ।
इस जीवै दे दुखियापन गी लेखे बिच निं लांदा ऐ ॥
चंगी माड़ी दमैं बासनां अन्दरा बाहर त्रटदा ऐ ।
मित्तर बैरी साध ते डाकू भेद बुद्धि नईं रखदा ऐ ॥
जड़ चेतन दो किट्ठे रलियै जगतरूप होई बसदे न ।
चेतन मेरा आतम रूपी, जड़ पदारथ दसदे न ॥
१—नां मेरे'ने छून्दा मिलदा नाँ मेरे'छा न्यारा ऐ ।
माया ने सब रचना कीती झूठा जगत पसारा ऐ ॥
नां मैं कदें कुसै दा बनेयां कुसै बी किज नईं मेरा ऐ ।
हर २ बिच आपूं गी दिखना झूठा मेरा तेरा ऐ ॥
२—ऐसा ध्यान हिरदे बिच रखदे, शीतल मन होई जाना ऐ ।
इक तत्तै दा दर्शन करना बाकी जगत भुलाना ऐ ॥

१—मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्त-मूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्व भूतानि न चाहं तेष्ववास्थितः ॥
न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूत भृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूत भावना ॥ गी० ६।४,५

२—नहीं परवाह कुछ इसकी खुशी होवे या ग़म होवे ।
ये दोनो भूल जाते हैं कि जब वसले सनम होवे ॥
हमारे हम नशीनों की खबर जाने खुदा क्या है ।
किं हम हैं हमनशीं जिसके उसे कब रंजोग़म होवे ॥

१–लीला मात्तर करनी सारी भोग बासना तजनी ऐ ।
ध्येय बासना मिथ्या जानी भलेयां अन्दरा कडनी ऐ ॥
त्याग अहंता ममता करियै निर्बिकल्प होई जाना ऐ ।
प्रारब्धा दे क्षीण होने पर ब्रह्म रूप गी पाना ऐ ॥
२–निर्बिकल्प देह रैहत होई जाना, ज्ञेय बासना त्यागी ऐ ।
विदेह मुक्ति नां उसदा उयै निर्बिकल्प समाधी ऐ ॥
३–लोकाचार कर्म जो करदा हर्ष-विषाद नईं आन्दा ऐ ।
विषय-बासना त्यागी बैठा जीवन मुक्त खुआन्दा ऐ ॥
४–मूल अज्ञान मिटै तां गै फी बासना दा मूंह भजदा ऐ ।
अहंभाव दा लेश नि रौन्दा, जीव पना नईं लबदा ऐ ॥
५–छड़ा मुड़ा इक चेतन मात्तर जग मग जोत जगांदा ऐ ।
भेद कल्पना त्यागन करि विदेह मुक्ति गी पान्दा ऐ ॥

१—खुद हम ओ आबोहम साक़ी ओ मस्त । हर सिह यक शुद चूं तिलस्मे तो शिकस्त ॥
२—श्रुति विप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥
३—योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ गी० २।४८
४—प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ गी० २।५५
५—विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ गी० २।७१

"मैं आं, देह मेरा ए देह ऐ" ऐसा भाव नि रखदा ऐ ।

सब बिच इक शिव शान्त ते चेतन तत्त्व निरामय बसदा ऐ ॥

सुख सम्पत दुख-बिपता दे बिच, हर्ष शोक नईं करदा ऐ ।

माया मात्तर सब गी दिखदा न्यारा नित्त बिचरदा ऐ ॥

१—नां जीने दी आशा नां गै मरनेंशा घबरांदा ऐ ।

शीतल शान्त होइयै निर्मोही जीवन मुक्त खोआन्दा ऐ ॥

इष्ट बस्तु दी चाह नईं करदा नां अनिष्टे दा त्यागी ऐ ।

उस्सै त्रैलोकी गी जित्तेया उयै ते बड़ भागी ऐ ॥

शेर ते चित्तरे ते सप्प दिखी त्रास जड़ा नईं पान्दा ऐ ।

समदर्शी निरभौ निरमानी जीवन मुक्त खोआन्दा ऐ ॥

नां देहै बिच ममता रखदा नां बस्तु बिच ममता ऐ ।

सुन्ना मिट्टी पत्थर लोहा हर दृष्टि दी समता ऐ ॥

जागदे बी श्री सुत्ते आंगू सब व्यवहार चलान्दा ऐ ।

समदर्शी दी पदवी पाइयै जीवन मुक्त खोआन्दा ऐ ॥

सुखनै बिच बी कामादि गी भला नईं जो भान्दा ऐ ।

ब्रह्म निष्ठ ओ ज्ञानी योगी जीवन मुक्त खोआन्दा ऐ ॥

१—इहैव तैर्जितो सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।

निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ गी० ५।१९

सरदी-गरमी, गमी-खुशी गी सम जानी जो सैन्दा ए ।
जो नित चन्नै वांगू हरदम निर्मल शीतल रैन्दा ए ।।
जीन्दे मौत तली पर रखदा, लाइयै तोड़ नभान्दा ऐ ।
त्रौं तापें थीं सदा न्यारा, जीवन-मुक्त खोआन्दा ऐ ।।
बोध-बाटका अति सुहानी, गुण नईं आंखे जन्दे न ।
ज्ञानै दी लोई बिच चलदे ठोकर कदें निं खन्दे न ।।
जां तक रस्सी नईं पनछोयै घर २ सप्प डरान्दा ऐ ।
अपना आप निं जिच्चर जानै बोध निं होने पान्दा ऐ ।।
मरु भूमि बिच मृगजल जियां भरम चिति'ने लबदा ऐ ।
आतम ज्ञान होये दे बाजूं ए जल सच्चा लगदा ऐ ।।
सिप्पी गी जिस लेया पछानी, चान्दी भरम निं पौन्दा ए ।
बासना नाश होये दे पिच्छों मैं मेरा नईं रौन्दा ए ।।
परमानन्द सदा शिव शंकर जिस ने जानी लेया ए ।
शोक मोह डर चिन्ता तृष्णा दे बिच मुड़ी निं पेया ए ।।
मालां बिच मनके दी न्याईं सारै आपूं व्यापी ए ।
सूरज बी उसदी गै लोई गी लैइयै परकाशी ए ।।
ईश्वर जिस पर होयै करोपी पैदल उसी चलान्दा ए ।
होर बी जादे कोप करै तां भार बी सिरें चुकान्दा ए ।।
जीना, मरना, मार्ग चलना, भार देहै दा भारी ऐ ।
बासना बेड़ी ठन २ करियै पगड़ी लेया बगारी ए ।।

राह चलदे गी मितर थापी साथ नभाना चाहन्दा ऐ ।
खिडदे ब्रेल्लै छम २ रोन्दा, रौला पाई सुनान्दा ऐ ॥
पिछ्ले साथी बिसरे सारे चेतै इक नईं औन्दा ऐ ।
नमियां होर बलाईं सेहड़ै पैर पसारी बौन्दा ऐ ॥
जल तरङ्ग सम जगत गी जानै तां ईश्वर खुश रौन्दा ऐ ।
तां गै सिरा 'ब्रह्मानन्दा' पैदल चलन कटोंदा ऐ ॥

मैं-मेरी

मैं-मेरी दा गूढ़ा नाता सौ धोते नईं चुकदा ऐ ।
जुटड़े बांगू कन्ने जम्मेया, थोड़े बिच नईं मुकदा ऐ ॥
बाल पने बिच मात पिता इसी दिन २ पक्का करदे न ।
गैं-गैं पर मेरा ते तेरा कुट्टी २ भरदे न ॥
जागतें दी खेडा बिच पैइयै दूना इसी बदान्दा ऐ ।
खन्दे-पीन्दे, लड़दे-भिड़दे इक २ कन्ने रलान्दा ऐ ॥
१—औन लगी जां थोढ़ी सुरत मदरसै पढ़नै पौन्दा ऐ ।
उत्थें बी इक दूये कन्ने इयै रगड़ा रौन्दा ऐ ॥

१—माकूल पढ़ी मन्कूल पढ़ी हर मन्तक में चालाक हुए ।
यां जितने इल्म के दरिया हैं उन सब के ही तैराक हुए ॥
सब जीते जी के झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए ।
जब मौत से आकर काम पड़ा सब किस्से कज़िये साफ़ हुए ॥
—नज़ीर

होआ जवान तां ब्याह रचाया, लाड़ी बी हुन आई ऐ।
घरै दी करती हरती बनियै 'मेरी' होर बदाई ऐ ॥
जितने खिन्द-खन्दोले मुगते उतना जादै पाला ऐ।
जितना टब्बर-टोर कबीला उन्ना गै मूंह काला ऐ ॥
इक भींगी दुई भूतें भन्नी, त्री गल्लें थथलांदी ऐ।
रूप-शलैपा चेई २ पौवै सुत्ती बी बसलांदी ऐ ॥
जागत कुड़ियाँ रीं रीं करदे होर कजीया पौन्दा ऐ।
कोई मूड़ै, ढाका, कोई पिच्छें रिड़दा औन्दा ऐ ॥
इक रुस्सै, इक बिलदा पुत्रा रीं रीं करियै रोन्दा ऐ।
दिनें बी अक्ख निं झमकन मिलदी, राती नईं सनोंदा ऐ ॥
इक नंगा मिट्टी बिच बिलियै चो-चो नली बगांदा ऐ।
रुट्टी २ करदा कोई, भुक्खा ढिड बजान्दा ऐ ॥
चौन्ने पासें नजर दुड़ाई "मैं मैं" दा गै डेरा ऐ।
सल २ करदियां जूआँ-लीखां भरेया अन्दर-बेड़ा ऐ ॥
ए किज नरक बी अक्खीं दिक्खी रज्जने बिच निं औंदा ऐ।
भागवान आपूं गी मिथदा आकड़ी २ पौंदा ऐ ॥
१–जीन्दे ए किज करनी कीती अन्त बी नेड़ै आया ऐ।
गुरज लेई जमदूतें चौहनें पास्सें घेरा पाया ऐ ॥

१—बटमार अजल का आ पहुंचा टुक उसको देख डरो बाबा।
अब अश्क बहाओ आखों से और आहें सरद भरो बाबा॥
दिल हाथ उठा इस जीने से ले बस मन मार मरो बाबा।
तब बाप की खातर रोते थे अब अपनी खातर रो बाबा॥
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर ज़ीन धरो बाबा।
अब मौत नक्कारा बाज चुका चलने की फिकर करो बाबा॥

दुर्गन्ध भरे नरकें दे अन्दर पुट्ठा करियै सुटदे न ।
फत २ करियै डुबकियां लान्दा पिछले लेखे पुछदे न ॥

उत्थों निकली लऊ भरे दे छप्पड़ें दे बिच पौन्दा ऐ ।
कितना चिर गै उन्दे अन्दर हा-हा करदा रौन्दा ऐ ॥

उत्थों कढियैं तत्ती भुञ्जां उप्पर जाई लटांदे न ।
सल सल करदे बिच्छू हेठें उप्परें डंग चलांदे न ॥

उत्थों छुड़की मुश्कां बन्नी पर्वत नेईं चढ़ाया ऐ ।
चोटी उप्परा धिक्का दिंदे गड़-गड़ थल्लै आया ऐ ॥

अग्गी बिच तपाइयै सीखां, अंगें उप्पर लांदे न ।
बांग कबाबें भुन्नी सुटदे, गिरभें कच्छा खलांदे न ॥

बिन दांदें दै कोहलू चलदे दिक्खी छक्के त्रुटदे न ।
गन्नें बांगू मुश्कां कढ़ियै उखलें दे बिच सुटदे न ॥

लोहे घड़े दे पुरष ते नारी अग्गीं बिच तपाँदे न ।
पापी मरद जनानी जेड़े उन्दे गले लोआंदे न ॥

नाँ मरदे नाँ जीना मुकदा नाँ उत्थों छुटकोंदा ऐ ।
देया करी . जमराज बी उन्दै आई कच्छ खड़ोंदा ऐ ॥

आखै मेरे बस नईं किज बी तरस बतेरा औंदा ऐ ।
पर डाडे दा हुकम कबल्ला सिर-सिर मननै पौंदा ऐ ॥

हा-हा करी सुनांदे कुसगी व्यर्थ तुसाड़ा रोना ऐ ।
पिच्छें जैसी करनी कीती वैसा गै फल थोना ऐ ॥

पुन्न कर्म फल जिस-जिस कीते ओ सुरगें गी जन्दे न ।
पापी अपने पापें दे बस नरकें धक्के खंदे न ॥
ए जमराज दी नगरी मारू तरस कुसै नईं करना ऐ ।
बादशाहें बी कर्में दा फल इक जनेहा भरना ऐ ॥
ईश्वर ने किरपालु होई देह मनुख रचाया सा ।
इक-इक अंग तृम्बें घड़ियै अपने हत्थें बनाया सा ॥
भूतें दै घर सत्तू बण्डे, खीतें खरखरे होए न,
कुत्तें दे मूंह खीरां पेइयां ऊंटें जीरे थोए न ॥
कायें गी थोए मानसरोवर तरना कुन्न सखाना ऐ ।
बे कदरें हत्थ पारस चड़ेया कौडी बदलै जाना ऐ ॥
चिड़ियें खेत चुगाया आपूं कुसी गुलेल चलांदा ऐ ।
सीस मुण्डाइयै मूरख जियां पिच्छों बार पुछान्दा ऐ ॥
१—चायें २ पाप कमाये रोना गै गल पौना ऐ ।
सुखने होए फुल्ल, त्रिखे कण्डें पर गै सौना ऐ ॥

१—शोखी शरारत मकरो फन सब का बिसेखा है यहां,
जो-जो दिखाया और को वह आप देखा है यहां ।
खोटी खरीं जो कुछ कहे तिस का परेखा है यहां ।
जो-जो पड़ा तुलता है दिल तिल-तिल का लेखा है यहां ।

जीन्दें मास पराये खादे जीह्व लोग्रारें चाड़ी ऐ।
इक-इक लेखा देना पौना जां हुन ग्रपनी बारी ऐ॥

इयै देह भरोसा ऐ थी भव सागर दे तरने दा।
शुभ कर्में दा लेई सहारा दिन-दिन पैड़ी चढ़ने दा॥

भोगें दे बिच इसी फसाइयै ठोकरियां ठनकान्दा ऐ।
केईं जन्में दे पुन्नें दा फल सारा गै खूह पान्दा ऐ॥

कुड़ी कुग्रारी सौहरै चलदी रोई घुमाईंयां करदी ऐ।
सारे ग्रपने ब्याहन्नूं टल्ले ग्रत्थरूयें ने भरदी ऐ॥

मात पिता दे स्हेलड़ चारे छुड़कन ग्रौखे होये न।
ग्राण्ड-गोग्राण्डी नाते बी सब किट्ठे होइयै रोये न॥

बखलें कन्नें पेया बसेवा, पिछले नाते त्रुटदे न।
धीङ्गो-धीङ्गी पुत्त पराये डोली चाढ़ी चुकदे न॥

जां थोड़े दिन कीता बासा खसमें दा सुख पाया ऐ।
प्योके बाला स्हेलड़ चारा इक-इक करी भुलाया ऐ॥

पिछले पुन्न जे होन सहाई तां सत्संगत थोन्दी ऐ।
ग्रन्दरा 'मेरा' निकलन लगदा 'मैं-मैं' दिक्खी रोन्दी ऐ॥

छड़ २ छड़ियां छण्डन लगदी सौ २ सूतर पान्दी ऐ।
ग्रग्गें मौत खड़ोती लबदी ग्रपना ग्राप बचान्दी ऐ॥

सद्गुर जी दी कृपा जे होयै त्रीया नेत्तर खुलदा ऐ।
परम जोती दा दर्शन पान्दा "मैं-मेरा" सब भुलदा ऐ॥

सेठ समेत कटुम्बै कोई तीर्थ करने जाई रेह्या ।
चोर लुटेरें रस्ता रोकी घेरे अन्दर पाई लेया ।।
नाँ तलवार बन्दूक ऐ कन्ने नां बरछी नां भाला ऐ ।
नां कुदरै फरेयाद सुनोचै नां कोई मददी बाला ऐ ।।
बियाबान उस थारै अन्दर मुश्कां कड़िये सुट्टेया ऐ ।
धन-दौलत सब खूसी लैती भलेयां करियै लुटेया ऐ ।।
राजा इक शकार चढ़ेदा उस पासेगी औन्दा ऐ ।
ए सारा किज होआ—बीता उसदी नजरी पौन्दा ऐ ।।
डाकू चोर बी गे पगड़ोई, धन बी सारा थोई गेया ।
सेठ बी आखो जमपुर गेदा मुड़ियै जीन्दा होई गेया ।।
सत्-संगत दे धनै गी लैइयै, समता तीर्थ करदा ऐ ।
काम क्रोध पंज डाकुयें कन्नें मैं-मेरा बी रलदा ऐ ।।
बासना भरी जञ्जीरें कड़ियै भोगें दे बिच सुट्टेया ऐ ।
शुभ करमें दा माल खजाना इक-इक करियै लुटेया ऐ ।
हाल पुकार पेई जिस बेल्लै सद्गुर राजा आया ऐ ।
'तत्त्वमसि' दा तीर चलाइयै इक-इक बाल बचाया ऐ ।।
साक्षात होयै अपना परिपूरण तां अनुभव ए पाँदा ऐ ।
"मैं-मैं" रोन्दी निकली अन्दरा, 'मेरा' बी करलांदा ऐ ।।
निक्का जागत बिद्या सिक्खन बिच स्कूलै आया ऐ ।
पिछला साथ त्रुटदा दिक्खी रोई-रोइयै चिचलाया ऐ ।।

चुप्प चुपीते बौना औखा, डुसकी २ पढ़दा ऐ ।
गल्ला गल्ला ब्हाने पाइयै माऊ कन्ने लड़दा ऐ ॥

इक दूये दी रीसो-रीसा जेल्लै चसका पौन्दा ऐ ।
खुशियें २ पढ़ने ताईं अग्गें होई-होई बौन्दा ऐ ॥

बी. ए. ऐम. ए. कीता, हाकम बनियै कुरसी चढ़दा ऐ ।
गिटमिट-गिटमिट बोल्लै बोली नोटें खीसे भरदा ऐ ॥

सत् पुरुषें दी संगत जेल्लै फल देने पर औंदी ऐ ।
मनै दी बृत्ति भोगें कच्छा होई न्यारी बौंदी ऐ ॥

तृष्णा दी ओ फाई पक्की तद्दूं त्रुट्टन लगदी ऐ ।
ऊंटें बांधूं छड़ियां छुण्डदी दिन दिन आकड़ भंजदी ऐ ॥

बासना कन्ने साथ बनाइयै जीवैंगी मोही लैंदी ऐ ।
आपूं छिण्डै जाई खड़ोंदी बिट २ दिखदी रैन्दी ऐ ॥

होयै जे बुद्धि बड़ी सेयानी इसदे दा नईं चढ़दी ऐ ।
श्रवण-मनन दा स्हारा लेइयै अन्दरा पगड़ी कडदी ऐ ॥

गुरु वचनें पर श्रद्धा करियै निदिध्यासन जां औंदा ऐ ।
जींदे गै उस परम पदै दे खुल्ले दर्शन पांदा ऐ ॥

१—नित्त सुखै दा अनुभव करदा सब बिच समता दिखदा ऐ ।
"मैं-मैं" नसदी देई दुहाइयाँ 'मेरा' सिर २ पिटदा ऐ ॥

१—ये रुत वो है के जिस में खुर्दो कबीर खुश हैं ।
अदना गरीब मुफलिस, शाहो बज़ीर खुश हैं ॥

माशूक शादो खुर्रम, आशिक असीर खुश हैं ।
जितने हैं अब जहां में सब ऐ नज़ीर खुश हैं ॥

गुप्त गंगा बिच लाई चलोबी काशी पिच्छें रेई गेई ।
१—कईं जनमें दी कीती-कतरी सारी लेखै पेई गेई ॥
२—जिसगी दर दर तुपदे हुट्टा, अपने अन्दर पाई लेया ।
बखलें कच्छा होई खलासी, भुल्ला दा घर आई गेया ॥
जिस-जिस पासै नजर दुड़ान्दा उयै घट-घट बासी ऐ ।
उस्सै दी बेदें बिच मैहमाँ उयै मथरा-काशी ऐ ॥
पलकें दे पड़दे लमकाइयै राम झरोखै बेई गेया ।
टीसी उप्पर ध्यान जमांदा हर दा मुजरा लेई लेया ॥
मनैं'च गै गुलजार भरोची, बागें फिरना भुल्ली गेया ।
करनी क्यारी होई हरेयाली, कपटै दा काँ चुल्ली पेया ॥
३—जुगें-जुगें दी कल्पनां मेटी सद्गुर भेद न्यारा ऐ ।
सप्प छोड़ी सब बरमी कुटदे, बिरला जानने हारा ऐ ॥

१—दूर नकाब कीता दिलबर ने अते चमकी तेग मयानों,
या ओह बरक अबर सों निकली या हूर डिगी असमानों ।
देख शहीद होये दिल घायल अते गुज़रे एस जहानों ।
हाशिम ज़ाहिदां ज़ुहद भुलाया अते रही कलाम ज़बानों ॥

२—कसू से क्या बयां कीजे इस अपने हाले अबतर को ।
दिल उसके हाथ दे बैठे जिसे जाना न पहचाना ।
नज़र जब दिल पै की देखा तो मसजूदे खलाइक है ।
कोई काबा समझता हैं कोई समझे है बुतख़ाना ॥

३—मनुश्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ गी० ७।३

१–जोग-जग्ग, जप-तप, ब्रत संयम क्रिया कलाप बथेरे न ।
होई परख तां जांता ए सब झूठे झगड़े झेंड़े न ।।
२–ब्रह्मा विशणु शिवजी तुपदे नर अवतार बी धारे न ।
बेदें बी कोई पार निं पाया 'नेती' आखी हारे न ।।
३–कुञ्जी हत्थ निं आवै जिच्चर छुटदा नईं "मैं मेरा" ऐ ।
गुरु भक्ति बिन ब्रह्मानन्दा सौ चानन बी न्हेरा ऐ ।।

❀ ध्यान प्रकरण समाप्त होआ ❀

१—तुझी को जो यां जलवा फरमा न देखा ।
बराबर है दुनियां को देखा न देखा ।।
अज़ीय्यत मुसीबत मलामत बलायें ।
तेरे इश्क में हम ने क्या-क्या न देखा ।।
हजावे रुखे यार थे आप ही हम ।
खुली आंख जब कोई परदा न देखा ।।

२—स एष नेति नेत्यात्माऽगृह्यो नहि गृह्यते ।। —बृ० ३।६।२६

३—आचार्य वान् पुरुषो वेद, तस्य तावदेवचिरं यावन्न
विमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये । छां०—६।१४।२

ध्येय प्रकरण

घोआर

टब्बरै कन्ने मोह नईं चुक्का, अपनी टिकट कटोन लगी ।
घरै वाली बी कच्छ खड़ोइयै डुसकी-डुसकी रोन लगी ॥
लगा सोहाग डोआरी मारन, बिपता सिर आई बनदी ऐ ।
छाती उप्परें हत्थ लोआरी छन-छन गजरे भनदी ऐ ॥
मत्थे दी बिन्दी गी पूञ्जी, मीण्डियां खोली सुटदी ऐ ।
कीरने करी-करी उसी सुनांदी दड़ २ छाती कुटदी ऐ ॥
जीह्व ओदी तै मौनी होई गेई, अन्दर भांबड़ बलदा ऐ ।
बिट-बिट करियै सब किज दिखदी नीर अक्खीं दा चलदा ऐ ॥
जीन्दे नजरी कोला जेड़े ओहलै होन नईं दित्ते ।
सारे गै ओ इक-इक करियै कच्छ खड़ोते ते पिट्टे ॥
जमदूतें बी लेई जंजीरां, छन-छन करि छनकाइयां न ।
हत्थें गी हथ कड़ियां लाइयां पैरें बेड़ियां पाईयां न ॥
बरछियां-भाले-गुरज चलान्दे जम-फांसी बिच जुटदे न ।
लेई जमूर ओ अग्ग तपे दे मास मरोड़ी पुटदे न ।

छयासी (८६) योजन पृथवी कच्छा जम नगरी दा बासा ऐ ।
नां कोई सज्जन मित्तर उत्थें नां कोई लबदा नाता ऐ ॥
कुत्ते बांग धरीड़ी इसगी उसदे अन्दर नेता ऐ ।
हा हा कार चफेरै सुनियै आया पिछला चेता ऐ ॥
तोबा तोब बथेरी करदा, उत्थों नईं छुड़कोन्दा ऐ ।
बीते निम्बल चेतै औन्दे, तेलै बिच तड़कोन्दा ऐ ॥
भुक्खा ते तरेहाएया होइयै शम-शम करदा रोन्दा ऐ ।
पानियें दी इक बून्द नि लबदी नां खानेगी थोन्दा ऐ ॥
छिक्कें भरे अनेक पदारथ थाँ-थाँ टङ्गे लबदे न ।
पुन्नें वाले औन्दे जन्दे मुट्ठीं-उञ्जल भरदे न ॥
रंग बरंगे शरबत शीरे मटकें अन्दर पाये न ।
जिनें छबीलां लाइयां पिच्छें उन्दे गै हत्थ आये न ॥
जिस जिस पासै मूंह ऐ करदा, उत्थों धक्के खन्दा ऐ ।
छिक्के तोड़ी हांब नि पुजदी उबड़ा उबड़ा जन्दा ऐ ॥
१—देहै दे रोगें दे कच्छा भुक्ख बमारी डाडी ऐ ।
भुक्खे दी ब्याहती बी लाड़ी जने खने दी भाबी ऐ ॥

१—जब आदमी के हाल पै आती है मुफ़लसी ।
किस २ तरह से उसको सताती है मुफ़लसी ॥
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफ़लसी ।
भूका तमाम रात सुलाती है मुफ़लसी ॥
ये दुख वो जाने जिस पै के आती है मुफ़लसी ॥

चुल्ला तवा गलास रकेबी नां मटकी बिच पानी ऐ।
इस भुक्खा ने खोले करियै इक-इक हट्ट पुरानी ऐ॥
पैरें बिच बी बौन नि मिलदा, दिन दिन आव घटान्दी ऐ।
इयै बड़ी दलेरी इसदी नैंह ते बाल बदान्दी ऐ॥
जीन्दे कोई नई जान्नी चड़दा, कुन्न नड़ोयै जाना ऐ।
बिना लकड़ियें चिखा चुनोनी मुर्दा गै भुलसाना ऐ॥
बख्तावरें गी मोयें-रोन्दें सोग बी करनै पौन्दा ऐ।
भुक्खे दे घर जीन्दे-जगदे पिट्ट सेयापा रौन्दा ऐ॥
बख्तावरै दे दिनें दुपैहरीं शाह बी औन्दा लजदा ऐ।
भुक्खे दे घर अद्दी रातीं चौकीदार बी गजदा ऐ॥
बख्तावरें दै कुड़ियां जम्मन, ढोल धमक्कड़ होन्दा ऐ।
भुक्खें दै घर जागत जम्मै सारा टब्बर रोन्दा ऐ॥
रानीखां दा साला होइयै गिनी गिनी पैर टकांदा ऐ।
भुक्खे दै घर बनी जोआई औन्दे बी शरमान्दा ऐ॥
बख्तावरें दी आकड़ दिक्खी शेर बी अग्गों डरदा ऐ।
भुक्खे कन्ने मोआ दा गिदड़ बी उट्ठी लड़दा ऐ॥
बख्तावर परदेसें जन्दे उत्थें कुरसी पुजदी ऐ।
भुक्खा भावें घरैं'च रौन्दा तां बी मा नि पुछदी ऐ॥
बख्तावर जे बौन जोआड़ी, उत्थें लङ्गर लगदा ऐ।
भुक्खे दे घर जान्नी आवै तां बी ग्रा नईं लबदा ऐ॥

बख्तावरें दी कन्न पीड़ बी सौ-सौ आइयै पुछदा ऐ।
भुक्खे दी भायें जिन्द बी निकलै, कोल नईं कोई ढुकदा ऐ॥
जीन्दे ए बी बख्ताबर सा मोये कङ्गाली पैई ऐ।
जां हुन लेखे देने आए आकड़ भजदी गई ऐ॥
नां दुरियै कोई तीर्थ कीते नां सत्संगति बैठा ऐ।
सारी उमर कमान्दे बीती पैसा गै बस पैसा ऐ॥
दूयें गी खूह खातै सुटेया, आपूं मौजां लेइयां न।
इक-इक काली करनी पिच्छें सूलां भरने पैइयां न॥
जिन्दे कारण पाप कमाये संग कोई नईं आया ऐ।
अपने हत्थें कालख घोली, धन-परलोक लुटाया ऐ॥
गर्भें दे सब कौल भुलाये जां मस्ती बिच आया ई।
साथेंगी बी चोर समझेया बेड़ा मंझ डुबाया ई॥
मास पराये सीखें चाड़े तड़-तड़ करी तड़काये हे।
करी कबाब सुआद बनाया, बे-दोसे मरवाये हे॥
जमराजै दी नगरी अन्दर सारे लेखे दिन्दा ऐ।
अजें बी उस दे दूतें कच्छा दना नि पौंदा छिण्डा ऐ॥
सौ योजन इस कोला अग्गें नदी बतरणी लबदी ऐ।
सल-सल करदे सप्प-गुनाहीं, छै-छै करदी बगदी ऐ॥
उसगी दिक्खी धीरज सम्बदा थर-थर कमनी पौन्दी ऐ।
दूयें गी करलान्दे सुनदा, करनी चेतै औंन्दी ऐ॥

चित्तर गुप्त बी लैइयै बेहियां आइयै कच्छ खडोन्दा ऐ ।
उसदी सेना जेल्ले दिक्खी हा-हा करियै रोन्दा ऐ ॥
जम दे दूतें करी सुपुर्दी पिच्छें मुड़ना चाहेया ऐ ।
चित्तर गुप्तै दी बही कन्ने इसदा लेख मलाया ऐ ॥
उन्दे उप्पर होई करोधी ए गल्ल उसने आखी ऐ ।
चीची औंगल हलदी इसदी अजें बी आयु बाकी ऐ ॥
इस दे नां दा होर सा दूआ, टपले बिच ए आन्दा ऐ ।
तौले जाई इसी घर छोड़ो, सुनियै खुशी मनान्दा ऐ ॥
मुड़ियै जीव आई जिस बेल्लै देहै दे बिच पौन्दा ऐ ।
राम-राम करी अक्खीं मलदा उट्ठी भुन्जां बौन्दा ऐ ॥
कईं महीने लाये भोगदे जो-जो करनी कीती ऐ ।
इक्कै रातीं दे बिच इसगी इतनी मुद्दत बीती ऐ ॥
सुरत आई जिस बेल्लै भलेयां, कम्में गी हत्थ लांदा ऐ ।
सारी अपनी होई बीती इक-इक करी सुनांदा ऐ ॥
थोड़े दिनें दे अन्दर इसगी ए सारा किज भुलदा ऐ ।
सुखनै बांगू मिथियै उसगी फी भोगें पर डुलदा ऐ ॥
इस्सै दा नां माया मोहनी इयै लख चुरासी ऐ ।
इस्सै दे गल रस्से पाइयै आपूं चढ़दा फांसी ऐ ॥
हत्थें घड़ी पञ्चांग तरोड़ी अद्द मझाटै पेया ऐ ।
काठै दी घोड़ी पर चढ़दा जीन्दा मोयै जनेहा ऐ ॥

चौं कूटें दा चक्कराबरती मैं-मैं दे बस्स पेया ऐ ।
बकरी दा बकरोट्ट बनेया जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
अम्बरसरी कड़ाह दे बाँगू दौंहनें पासें गेया ऐ ।
पितरें गी बी नरकें नेता, जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
झड़ियें बिच बी फुंगा बाजू पी-पी करने पेया ऐ ।
स्वाती दे होई सुखने बीते, जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
दिनें-दुपैहरीं सूरज हुन्दे अक्खीं लबने रेया ऐ ।
बसती बिच बी उजड़ू बोल्लै, जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
१–अमरत कुण्ड भरोचा अन्दर, झांकी पता नि लेया ऐ ।
बांग सकन्दर कन्दरें तुपदा जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
ज्ञान बेचियै माया आन्दी, फी घमेयार गै रेया ऐ ।
पोथी वाही जिआं खोती, जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
चारै बेद जबानी कीते अन्दरा शक नईं गेया ऐ ।
माऊ दी कुक्ख नि होई सवल्ली जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
चारै धाम चुरासी अड्डे, साबन मलदा रेया ऐ ।
जिगरै दी नईं मैल धनोई, जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥
जे उपदेश गुरें दा लेइयै जीवपना नईं गेया ऐ ।
(तां) ब्रह्मानन्द बी इन्दे बांगू जीन्दा मोयें जनेहा ऐ ॥

१—दिल के आईने में है तस्वीरे यार। जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली॥

तृष्णा

१—बट्टें कचछा दन्द से पक्के, ठल-ठल करियै हल्लन लगे।
राहियें बांगू डेरे पुटदे किरन-मकिरनी चलन लगे ॥
दौनें खड़ोटें हेठें-उप्परें कस्सियै दाड़ां टंगियां न।
छत्तें दी कड़ियें दे बांगू ओ बी इक इक जन्दियां न ॥
बिना चुगाठै दा दरवाजा होठ मीटियै बौंदा ऐ।
जाँ बटुये गी शीशा दसदा, रोना चेतै औंदा ऐ ॥
२—नरदां मात होइयां सब, बाजी शतरंजै दी मुकदी ऐ।
माया ऐसी खेड रचाई तृष्णा अजें निं चुकदी ऐ ॥
निम्बलें धुन्द चुफेरै छाई नजरी छोड़ेया छिण्डा ऐ।
नेड़ै पेदी चीज निं लबदी पेया धलोफां दिन्दा ऐ ॥
दिनें-दपैहरीं रात होई गई, जिन्द लोआरे खन्दी ऐ।
अक्खीं दा बी मुल्ल निं रेआ, तृष्णा अजें निं जन्दी ऐ ॥
कन्नें दी बी कुड़की होई गई, डम डम सिरा निं मिटदा ऐ।
तृष्णा दा घर चा नईं चुक्का, उबड़ा होई-होई दिखदा ऐ ॥

१—*कन्नां दन्दां अखियाँ सवनां दित्ती हार।*
देख फरीदा छड गये मुंड कदीमी यार ॥

२—*गिरे जब दांत हैं तो मरग से क्या चारा साज़ी है।*
दिला जब उठ गईं नरदें करीब उल्खतम बाज़ी है ॥

१—मासैगी बी झुरड़ियां पेइयां, सिर बी डिग-डिग कम्बदा ऐ ।
सोटी टेकी उट्ठन लग्गा, खौं खौं करियै खंगदा ऐ ॥
लउयै दा बी पानी बनेयां, पिंजर रिक रिक करदा ऐ ।
गल्ला-गल्ला उप्पर खिजदा ब्हाने पाई-पाई लड़दा ऐ ॥
अन्दरा कोई किज नईं लब्बै पीड़ कलेजै उठदी ऐ ।
सुनियै बी खरसाही लगदी, तृष्णा अजें नि चुकदी ऐ ॥
पिट्ठ बी कुब्बी होन लगी ते नली बी नक्का चौन्दी ऐ ।
खौं-खौं खंग करान्दी नां गै रातीं नीन्दर पौन्दी ऐ ॥
पुत्तर-नूं नईं आखै लगदे, नां बेल्ले पर रुट्टी ऐ ।
घरै वाली बी कूच करी गेई तृष्णा अजें नि चुक्की ऐ ॥
टुगड़ा बी नईं चापन हुन्दा आ नि अन्दर ढलदा ऐ ।
खादा-पीता मौहरा लगदा, बैठा झिड़कां झलदा ऐ ॥
टब्बर आखै मोआ नि बुढा, थां-थां थुक्की भरेया ऐ ।
हानी ते सब खाई समाये, आपूं चिखा नि चढ़ेया ऐ ॥
जागत कुड़ियां रली चिड़ान्दे, चिड़ी नि इसथों डरदी ऐ ।
सोटी लेई-लेई पिच्छें लगदा, तृष्णा अजें नि मरदी ऐ ॥
इन्द्रियां सब ढिल्लियां होइयां, लालां मूँह टपकांदा ऐ ।
मोआ-मोआ सारै हुन्दा, ए नईं मरना चान्दा ऐ ॥

१—बूढ़े हुए रहे न तकल्लुफ शबाब के। वुह धूप थी जो साथ गई आफताब के॥

अाण्ड-गोआाण्डी तंग आई गे, अरडां मारी रोन्दा ए ।
नाँ कोई इस दी गल्ल समझदा, नां मूँहा किश खोन्दा ऐ ॥
इज्जत गई नां लज्जा गै रेई, देही लोआरे खन्दी ऐ ।
टब्बर बी हुन बैरी बनेयाँ तृष्णा अजें निं जन्दी ऐं ॥
१–आतम इस थीं सदा न्यारा, ए मित्ती दी काया ऐ ।
जीबैं इसगी धारण करियै अपना आप भुलाया ऐ ॥
२–पानियै आपना रूप बदलेया, बुलबुला बनी खड़ोई गेया ।
पल झल इस बिच बासा करियै फी पानी गै होई गेया ॥
दिनें-दुपैहरीं सूरज लबदा, ओड़क रात बी पौनी ऐ ।
ए मित्ती दा देह जां गलेया मौत जरूरी औनी ऐ ॥
मैल भरोचे टल्ले दिखी खुशी-खुशी बदलांदा ऐ ।
रोगें भरी पुशाक ए उमरी दी नईं सुटना चांहदा ऐ ॥
आपूं गी देह समझी बैठा, इस बिच ममता पाई ऐ ।
'मैं-मेरी' दी जानी बुजी औख सिरै पर लाई ऐ ।

१—दद्दा आखे देखो मूर्ख करदा कम्म कुचज्जे जी,
साहां दा घड़याल निं सुनदा दम-दम ठोकर बज्जे जी ।
ए कलबूत मिट्टी दा घड़या खबर नहीं कद भज्जे जी,
कालीदासा खुदी छोड़ तूं तां तेरा कम्म फब्बे जी ॥
२—बुद बुद तरंग जल में जल से न भिन्न कबहूं ।

बेद जगत गी मिथेया दसदे, सुखने तुल्ल ए माया ऐ।
नीन्दर, व्याधि रलियै कन्ने दुख भण्डार भराया ऐ॥
इस दे अन्दर जीव ए सुत्ता जागने बिच नि औन्दा ऐ।
बखलें गी अपना करि मिथदा, असली रूप भुलान्दा ऐ॥
जगत भाव दा छत्तर छाया आपूं बिच खटोई गेया।
मौरा फुल्ल खिड़े दा दिक्खी रंगें बिच टपलोई गेया॥
प्रभु दयालु रची सृष्टि सारें दी सुखदायी ऐ।
पर जीवैं माया दी दूई होर गै रची टकाई ऐ॥
सृष्टि दा स्वामी होई ईश्वर, सब बिच्च रखदा समता ऐ।
पर जीवें दी अपनी-अपनी न्यारी-न्यारी ममता ऐ॥
ईश्वर सृष्टि बाध होई दी सौखी मुक्त करान्दी ऐ।
जीवें गी नरकें बिच सुटदी दिन दिन बन्धन पांदी ऐ॥
साखी करी प्रकाश होई दी जीव सृष्टि जगदी ऐ।
अन्तः करण दी बृत्ति कन्ने ईश रची दी लबदी ऐ॥
ज्ञानी धनै गी मित्ती जानी भार नि एका चुकदा ऐ।
मूरख दूयें दे घर पेदा अट्ठी रातीं पुटदा ऐ॥
बखली चीजें गी अपनाइयै बन्दी खानै पौन्दा ऐ।
सुखिया ओ, जो इस थीं मेशां होई न्यारा रौन्दा ऐ॥
खसम-तरीमत, पुत्तर-धीयां ईश्वर सृष्टि सारी ऐ।
धिङ्गो-धिङ्गी इस जीवै ने अपने बिच सञ्जारी ऐ॥

मेरा-मेरा आखी इसगी रोम-रोम बिच कस्सेया ऐ।
आपूं फांसी चढ़ने ताईं हत्थें रस्सा बट्टेया ऐ॥
पूरा निरलज्ज होई जा जेड़ा नक्कै गी के करना ऐ।
उखली अन्दर सिर दित्ता फी मोहलें'श के डरना ऐ॥
रणभूमि दे संख बी दौनें पासें बज्जी चुक्के से।
धनषबान लेई कौरव-पाण्डव लड़ने गित्तै उठ्ठे से॥
गुरु-दादें दी हत्या सोची अर्जुन गी मोह आया ऐ।
धनष बी हत्था सुट्टी बैठा पाप नि करना चाहेया ऐ॥
देहै गी थर-थर कम्मनी पेई गेई अत्थरूं बी टमकांदा ऐ।
श्री कृष्ण गी लड़ने कोला साफ जबाब सुनांदा ऐ॥
१—भगवान रथै पर बैठे हसदे उसगी रमजां लांदे न।
करी उपदेश दलेरी दित्ती गीता ज्ञान सुनांदे न॥
आखन लगे तूं रण भूमि थीं छतरी होइयै नस्सना एं।
बैरियें कच्छा नक्क बडाइयै मिगी तमाशा दस्सना एं॥

१—तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णा-कुलेक्षणम्।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः॥
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्त्ति-करमर्जुन॥
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत-निश्चयः॥ (गी० २।१-२-३७)

मारेया जागा तां बी तेरा सुरग द्वारा खुल्ला ऐ ।
जित्ते दे बी चक्राबरती राज तेरा अनमुल्ला ऐ ॥
त्रैलोकी दा सूरमा होइयै देह दा सरफा करना ऐं ।
उखली बिच जां सिर लमकाया मोहलें'शा की डरना ऐं ॥
भिक्षा मंगदा ऐ सन्यासी गालीं सेठ सुनांदा ऐ ।
भिक्षु बिट-बिट दिखदा रौंदा मत्थै बट्ट नि पांदा ऐ ॥
मित्तर बैरी दमैं बराबर समता बिच समाया ऐ ।
परख नि आई साहुकारै, जानी पाप कमाया ऐ ॥
लोक-परलोक बी इक जनेहे, अपनाँ कन्ने पराया ऐ ।
परम हंसै दी पदवी पाई विष्णु रूप बनाया ऐ ॥
घर-घराट जिस तज्जी दित्ते, क्रोध करि के करना ऐ ।
उखली दे बिच सिर लमकाया मोहलें'शा की डरना ऐ ॥
पराधीनता फल पापें दा सुखनै सुख नईं थोन्दा ऐ ।
दूयें दा मूंह दिखदे रौना जीन्दै नरक बजोन्दा ऐ ॥
१–बैरी ढिड्डु गै कन्ने लग्गा सब किज पाप करांदा ऐ ।
कक्खें हौला, पानियें पतला करियै हत्थ अडांदा ऐ ॥

१—जब मिली रोटी हमें सब नूरे हक रौशन हुये ।
रात दिन शमसोकमर शामो-शफ़क़ रौशन हुए ॥

मिस्सी-लूनी भाड़ा देइयै हर चाली इसी भरना ऐ।
उखली बिच जां सिर लमकाया मोहलें'शा की डरना ऐ॥
अपने धरमैं दा पालन गै पापें दी जड़ बडदा ऐ।
धरम पराया मैल बदान्दा हत्या बनियै लगदा ऐ॥
१–अपना रूप गै असली जानैं त्रैलोकी दा माली ऐ।
जे भोगें बिच प्रीति रखै नां पत्तर नाँ डाली ऐ॥
जे मुक्ति दा सुख लैना तां अन्दरा 'मेरा' कटदा जा।
समता दी तलवार चलाइयै ममता दी जड़ बडदा जा॥
जिस जिस पासै नजर दड़ागा कोई नि तेरा आकी ऐ।
चार चुफैरै ब्रह्मानन्दा उयैं घट-घट बासी ऐ॥

सोहाग

उमरीं रेई सोहागन सैहजो, सिर नईं कदें गुन्दाया ऐ।
मत्थै नि भुल्ली बिन्दी लांदी नां नक्क लौंग छोआया ऐ॥
नां रौली'न मांग भरान्दी, इस के साथ नभाना ऐ।
आखै खिनक सोहागैं उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ॥

१—श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥ (गी० ३।३५)

इनें कैन्तें दियें छेजें चढ़ियै किच्चर सुखिया रौना ऐ ।
रात सुखें दी सौन नि मिलना, कल्ल बछोड़ा पौना ऐ ॥
काले नागें बुनियें छेजें जो सुत्ता सो डंगेया ऐ ।
इक इक रस्सी बिस भरोची कुसै नि पानी मंगेया ऐ ॥
सप्पें भरी सोहाग पटारी जिस छूती ओ पुट्ठा ऐ ।
कई जनमें बिच जाग नि औनी लम्मी नींदर सुत्ता ऐ ॥
कालै दे बस्स होई जिनें'शा अपनी आई नि टलनी ऐ ।
पल भल जीयै उनें दूयें दी किच्चर राखी करनी ऐ ॥
लै-लै करदे हरे रुख बी जड़ें समेतें सुक्की गये ।
कां करलाइयै काँ-काँ करदे फङ्ग सुवारी उड्डी गये ॥
फलें भरोचियां टाल्लियां बी सब इक-इक करि छुड़कोइयां न ।
तोते टीं-टीं करदे नस्से, कोयलां दिक्खी रोईयां न ॥
फुल्लें दे थां लै कंडेयारी, बुलबुलें साथ त्रुट्टा ऐ ।
कलियां सब मुरझाई पैइयां भौरें दा चा चुक्का ऐ ॥
जात बाकियै काल खड़ोता सारेंगी उस खाना ऐ ।
आखै खिनक सोहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ ॥
कल मैहलें बिच गैह-मैह हुन्दा, डयोडी नौबत खाना हा ।
साज सजाए झुलदे हाथी, शाही सब समेयाना हा ॥
चार चुफेरै फौजां लश्कर डेरे तम्बू ताने हे ।
हीरे-मोती जगमग करदे खुल्ले माल खजाने हे ॥

सुन्न मसान पेई अज्ज उत्थें, चिड़ी निं बसदी लबदी ऐ ।
१—बाजे-गाजे मुक्के सारे ढड भेयाली गजदी ऐ ।
चौहनें पास्सें सोग पेया दा, अक्क धतूरे जमदे न ।
उजाड़ं उजाड़ं उल्लू करदे मुरदें गी गै मंगदे न ॥
गलियें बिच मसान बने दे, बिच मदानें गलियां न ।
बागें अन्दर किक्कर उग्गे कण्डे गै हुन कलियां न ॥
२—सब किज अक्खीं अग्गें हुन्दा फी की भुल्ली जाना ऐ ।
आखै खिनक सोहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ ॥
३—गेआ बिहाग पेइआं तरकालां, रात गई दिन चढ़दा ऐ ।
सीत गेया ते गरमी फी बरसात आई हुन बरदा ऐ ॥
जम्मी कुड़ी सोहागन होई आनी पेया रण्डेपा ऐ ।
बालपने दा बैरी जोबन उसदा चोर बुढ़ेपा ऐ ॥

१—मुहैय्या गरचे सब सामान मुलकी और माली थे ।
सिकन्दर जब चला दुनिया से दोनों हाथ खाली थे ॥
२—खुद से खुदा जुदा कहे जान अधूरा है ।
दिखला दे खुद ही में खुदा पीर उसे कहते हैं ॥
दुनियां तो सराय है, तू उसे जागीर समझता है ।
कबज़ा में हमेशा जो रहे जागीर उसे कहते हैं ॥
३—इस गुलशने जहान में गुल चाहे जो खिला ।
बादे खिजां से एक दिन मुरझा ही जायेगा ॥
आदम के दम की एक दम में हान जान ले ।
यह काफिला सराय है, मेरी जान जान ले ॥

काठै दी घोड़ी पर बेइयै थार झेयाली पाना ऐ ।
आखै खिनक सोहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ ॥

धरती दे चौं कोनें अन्दर हा-हाकार होई रेआ ।
१–अजें बी सुत्ते जाग नि आई, सारा माल लुटोई गेया ॥

गड़-गड़ कुतै भुंचाल होआदा, कड़-कड़ बिजली पौंदी ऐ ।
पाप कमाई दौलत माया धरि-धराई रौंदी ऐ ॥

नीन्दरा सुत्ते जागी उठदे, मचले कुन्न जगाने न ।
अक्खीं दिक्खी मौहरा खन्दे, खड़ियें खड्डें जाने न ॥

बिस भरोचे लप-लप करदे नागें दे मुंह जाना ऐ ।
आखै खिनक सुहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ ॥

बत्तर (७२) चौकड़ी जुगें २ दी रावण राज कमाया ऐ ।
चन्दर सूरज पैहरै बाले काल बी बन्दी पाया ऐ ॥

सवा लक्ख हे पुत्तर-पोतरे धन्न कुटुम्बा चारी ऐ ।
शूरबीरें दा लेखा नइयों इक'शा इक बलकारी ऐ ॥

मौती ने पर इक इक काया सिल सलाटे चट्टी ऐ ।
नां कोई कुलै दा जीन्दा बचेआ नां दिया नां बत्ती ऐ ॥

१—हीर आखेआ सुत्ते सो सब मुठ्ठे, नींद मारेया राजेयां रानियां नूं ।
नींद वली ते गौस ते कुतब मारे नींद मारेया राह पधानियां नूं ॥

कुत्थों आये, ते कुत्थें रे ओ, कुत्थें जाई समाये न ।
पता-नशान निं तुप्पेया लबदा, मित्ती बिच रलाये न ॥
ए संसार बजोगें भरेया दुखिया जीब नमाना ऐ ।
आखै खिनक सुहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐं ॥
शिवजी बड़े दयालु होइयै, आपूं सती ध्याही ऐं ।
दक्ष पिता घर उसने अपनी काया भसम कराई ऐं ॥
राजा दशरथ दाढ़ी आया बाल बग्गा इक दिखदा ऐ ।
जोबन दे होई सुखने बीते चौथा आश्रम मिथदा ऐं ॥
सोच बिचार करी राजा ने खीर बजीर बुलाया ऐं ।
रामचन्दें गी राज सिंहासन आपूं देना चाहेया ऐं ॥
पर होनी नई ए गल्ल मनदी, उलटी चाल चलांदी ऐं ।
चौदें बरें दा देश नकाला देइयै कूच करान्दी ऐं ॥
तापस भेस बनाइयै कन्ने सीतां बी चली पौन्दी ऐं ।
दिनें पोहानी कण्डे छड़दी, रातीं भुञ्जा सौन्दी ऐं ॥
बनै-बनै दी बिपदा झांकी कन्दरां पर्वत छड़दी ऐं ।
सरदी-गरमी भुख-कड़ाका खुशी-खुशी सब जरदी ऐं ॥
रावण हरियै लंका नेती अशोक बाटका रखी ऐं ।
पर होनी ने सबर निं कीता दूनी बिपता दस्सी ऐं ॥
रावण मारी आये अयोध्या राज सिंहासन बौंदी ऐ ।
उत्थें बो फी अगन-परीक्षा आपूं देनी पौंदी ऐ ॥

कलि बचारी डारें जाली, 'होनी' अजें नईं रज्जी ऐ।
दिन चार सुखैं दे बीते नईं, घरा दा फी ओ कड्डी ऐ॥
भुक्ख लग्गै नईं रुट्टी थोंदी, नां पीने गी पानी ऐ।
जंगलें दे बिच रोंदी फिरदी भारत दी पटरानी ऐ॥
भुल्ली भुलाई होश गई, नईं सुरत ठकानै औंदी ऐ।
बालमीक आश्रम बिच जाइयै उस दी शरणी पौंदी ऐ॥
ए जग-जीना दुखें भरोचा कुसगी रोई सुनाना ऐ।
आखै खिनक सोहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ॥
पाण्डब-पत्नी चीर उतरदे बेल्लै रोदन करदी ऐ।
पंज पति रे बिट-बिट दिखदे, रत्ति पेश नि चलदी ऐ॥
तेरें बरें दा देस नकाला देई घरा सब कड्डे न।
भेस बदलियै समां बताया सिरें मनासे बद्दे न॥
भारत वर्ष दे चक्रावत्ती सूरबीर महाराजे न।
जने खने दियां झिड़कां खन्दे होनी दे रंग डाडे न॥
बनबासै दी अवधि बीती सब बापस घर औन्दे न।
पिछले पैर अजे नईं सुक्के, होर कजिये पौन्दे न॥
कृष्ण जी आपूं दुरजोधन दी राज सभा बिच पुजदे न।
ओदें'शा बस पञ्ज ग्रां पाण्डु पुत्तरें लेई मंगदे न॥
पर दुरजोधन गी अहंकारे दा सन्न ओपरा चढ़ेया ऐ।
सूई जितना बी थार नि दिन्दा, नेआ घमंडी अड़ेया ऐ॥

इस्सै इडसा जुद्ध रचाया, ठारां क्षौणियां मोईयां न ।
अट्ठै मरद बची घर आये, लक्खां रण्डां होइयां न ।
१–सुखै दी कच्ची तन्द नि लबदी, सोगें भरेया ताना ऐ ।
आखै खिनक सोहागै उप्पर किस लेई सीस गुन्दाना ऐ ॥
राजे नलै गी बिपदा बनदी, फाइयें अन्दर फसदा ऐ ।
२–दमयन्ती गी कन्ने लेइयै अट्ठी रातीं नसदा ऐ ॥
भेस बदलियै नगरी छोड़ी, सौहरै घर जाई रौन्दा ऐ ।
कन्दा उप्पर मोर मित्ती दा उसदी नजरी पौन्दा ऐ ॥
सस्सू ने उस पर नौ लक्खा हार सा इक लटकाए दा ।
उस्सै कमरै नल राजे दा पलंग बी हा इक डाए दा ॥

१—न कर खुदी गुमान जवान, मर जायेंगा,
धन जोबन थिर नाहीं, अन्त पछतायेंगा ।
जैसी कच्च की चूड़ी तैसी देह हैं,
वजीदा थिर साहब का नाम होर सब खेह है ॥

२–खराबी ज़बंदाद बीनद जहां, चूं बुस्ताने खुर्रम ज़ बादेखिज़ां ॥
अगर खाही अज़नेक बख्ती निशां, दर ज़ुल्म बन्दी बरईं जहां ॥
मकुन तकिया बर मुल्के जाहो हशम ।
कि पेश अज़ तो बूद अस्त व बाद अजहम ॥ —शेख़ सादी

दिखदे-दिखदे मोर ओ उस हारैं गी निगली बैठा ऐ।
१–राजे रानी दे उस बेल्लै पल्लै नईं इक पैसा ऐ ॥
दमयन्ती गी आखन लग्गा कुसै जकीन नि करना ऐ।
दिन हुन्दे गै इस हारै ने साड़ै जिम्मै चढ़ना ऐ ॥
उत्थों दा बी अन-चढ़दे गै जङ्गलो जङ्गल नसदे न।
भेत कुसै दे कन्ने अपने अन्दरै दा नईं दसदे न ॥
भुक्खे-भाने ते तरेहाए दिन कईं बीती जन्दे न।
बूटें उपरा फल फलेयाई दौंवें त्रोड़ी खन्दे न ॥
इक दिन बसती नेड़ै आई, खेतर नजरी पौन्दा ऐ।
राजा हुट्टा थक्का दा रुक्खै दिया छावां बौन्दा ऐ ॥
कईं दिन बीते खादे दे बिन, भुख कलेजे भुनदी ऐ।
दमयन्ती उस खेतर जाई पेदे दाने चुनदी ऐ ॥
चुनदी सिलां गोआलें दिक्खी, सन-कपड़ें अग्ग लग्गी ऐ।
२–चुने दे दाने बी खोई लैते, धक्के मारी कड्डी ऐ ॥
राजे दी कोई पेश नि चलदी ओ बी गालीं खन्दा ऐ।
मत्थे दे जाई क्याड़ी लग्गे, होनी दा सिर नङ्गा ऐ ॥

१—अगर तंगदस्ती ज़सखती मनाल। कि पेशे खिरदमन्द हेचस्त माल ॥
ग़नी रा ज़रो सीम आरायश अस्त। वलैकन फकीर अन्दर आसायश अस्त ॥
२—वबक्ते तंगदस्ती आशना बेगाना मे गरदद।
सुराही चूं शवद खाली जुदा पैमाना मे गरदद ॥

ए किज दिक्खी ब्रह्मानन्दा मनैगी सबर कराना ऐ।
आखै खिनक सोहागै उप्पर फ़िस लेई सीस गुन्दाना ऐ॥

ब्रह्म भाव

१—सारे जग दा स्वामी आपूं सेवकी अन्दर पेई गया।
चोरें दी नगरी बिच आया माल लुटाइयै सेई रेह्या॥
घरै दी मुर्गी दाल बरोबर, सरफा कुसै नि कीता ऐ।
चिन्ता-चिता चुड़ेलें कच्छा ताँ नईं छुटदा पीछा ऐ॥
अनमुल्ले इसी अंग थोये दे, मोती सस्ते बिकदे न।
बान्दरें दे हत्थ मालां चड़ी गेई दन्दें-दन्दें चिथदे न॥
ए जग माया दा इक नाटक जिस दिखेया सो फसेया ऐ।
जिसी नकेबलै बेहियै पुच्छेया रोई-रोई दस्सेया ऐ॥
रंगें दे बिच मस्त होआ दा बेरंगे गी तुपदा नईं।
बेरंगी दा रंग चढ़ै तां सौ धोते बी चुकदा नईं॥

१—तुझ को बातन की नहीं अपने खबर। ग़ैर पर ग़फलत से रखता है नज़र॥
दरबदर करता है क्या उसकी तलाश। आपको पहचान तू ऐ बदकमाश॥
दिल ही दिल में जुस्तजू ओ सैर कर। कर कतह हुब्बे जाह तरके ग़ैर कर॥

१—थोथे पोथे रटी टकाये सद्ग्रन्थें गी पढ़दा नईं ।
टीसी उप्पर हाबां लांदा, अगड़ी पैड़ी चढ़दा नईं ॥
२–भरी प्याले डीकां लांदा भगती दा रस पीन्दा नईं ।
सवै बरे दे बाहनन् बन्नदा, दो दिन सुखै दे जीन्दा नईं ॥

साधें गी बी चोर समझदा, मौती कच्छा डरदा नईं ।
तुपदा काठै दी घोड़ी गी, चोरें कन्ने लड़दा नईं ॥

संसारै दे सुखें गी मंगदा, ईश्वर कच्छा नसदा ऐ ।
नित पापें दी बेड़ी चड़ने ताईं कमराँ कसदा ऐ ॥

रोगें भरे त्रै वै देह ए त्रै अवस्थां सुखना ई ।
३—त्रै वै गुण भी बखरे समझें तां गै लेखा मुकना ई ॥
अन्दर सुखै दे सत्त समुन्दर बाहरें तोपे तुपदा ऐ ।
आपूं घरै दा मालक होइयै बखलें गी राह पुछदा ऐ ॥
अपनी मिसल नि हत्थें छूती बाहरें फैसले पढ़दा ऐ ।
अन्दरै दे नईं बैरी मारे, जङ्गल जाई-जाई छड़दा ऐ ॥

१—अधीत्य चतुर्वेदान् धर्म शास्त्राण्यनेकशः ।
यस्तु ब्रह्म न जानाति दरवी पाकरसं यथा ॥

२—बादा अज़ मामस्त शुद नै मा अज़ो । कालब अज़ मा हस्त शुद नै मा अज़ो ॥

३—त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निरद्वन्द्वो नित्य सत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ गी० २।४५

जिस बेल्लै कोई घरै दा मरदा, तां जग मिथेया लबदा ऐ ।
तौले इसगी अन्दरा कड्डो सब कोई आखन लगदा ऐ ।।
दूयें दे मुरदे फी इसगी खेड तमाशे लबदे न ।
घर सलगै तां सारा टब्बर ढाईं मारन लगदे न ।।
चिखा चाड़ियै त्रोड़ी तिनके, जिस बेल्लै घर आये न ।
उयै खुण्ड गलाखे उयै हासें जी परचाये न ।।
मरियै कोई नईं दिखदा फी बी इक्कै बेल्लै खन्दे न ।
नाते साक बी लोकाचारी सारे कलपन जन्दे न ।।
सच्चे सुख गी चाहें जेकर जगत दी आशा छोड़ी दे ।
१- -नाते साक भण्डार दुखें दें इन्दे तिनके त्रोड़ी दे ।।
जगत भाव भरे दा जिच्चर अन्त दुखें दा होना नईं ।
२—आपूं गी देह मन्नी बैठा जनम मरण छुड़कोना नईं ।।

१—दामाने दिलको उल्फते फरज़न्दो ज़न से खैंच ।
यह किश्त खारज़ार है इस पर न भूलना ।।
भरते हैं दम जो तेरी महब्बत के जोश में ।
मतलब का सब प्यार है इस पर न भूलना ।
२—तुध साईं विच फरक न कोई जो टुक दूई गंवावें ।
बाहिर ढूंडन थीं छुट पैसें दिल विच दिलवर पावें ।।
छडें शक ते हक पछानें जे हक मुर्शिद दिल लावें ।
सन्त रैण सुख तां हत्थ आवे जे न देखें बावें-दावें ।।

ईश्वर भजन गी करियै जेकर जगत पदार्थ मंगदा ऐ।
तां हिरदे दी मैल नि जलदी नां भव सागर लंगदा ऐ॥
दुखें दी हरिणी ते भव तरणी सब सुखकरनी भक्ति ऐ।
परम पवित्र हरि भक्ति बिच प्रतिबन्धक आसक्ति ऐ॥
ज्ञान भक्ति दा साधन दस्सेया भक्ति साधक ज्ञानै दी।
इक दूये दी मदती कन्ने सड़क खुल्लै कल्याणै दी॥
जिस भक्तै दी जीव्हा उप्पर भक्ति दा रस आया ऐ।
१—तद्रूप होई कर मस्ती दे बिच उस संसार भुलाया ऐ॥
देवलोक दा सुख बी उसगी तिनके बांगूं लबदा ऐ।
रोम-रोम देहै दे अन्दर भक्ति दा रस जगदा ऐ॥
नशा भक्ति दा चढ़ेया जेल्लै रंग अक्खीं बदलाया ऐ।
जिस जिस पासै नजर दुड़ान्दा ईश्वर सन्मुख आया ऐ॥
नां उसगी खाने दा चेता, नाँ कोई चिन्ता लाने दी।
नां बाकी देहै दी ममता नां परवाह प्राणें दी॥
२—निजपन ईश्वर बिच रलाया, आपूं ईश्वर होई गेया।
कुण्डल तुच्छ पनेगी त्यागी कञ्चन बिच बदलोई गेया॥

१—न खुदा मसीत मकबरे न खाना काबे। न खुदा कुरान किताबीं न खुदा नमाज़े॥
न खुदा मैं तीर्थ डिट्ठा ऐवें पैण्डे झागे।
बुल्ले शाह नूं मुर्शिद मिलेया छुट्टे सब तकाज़े॥

२—जिधर देखता हूं जहां देखता हूँ। खुदा ही का जलवा मियां देखता हूं॥
न तन देखता हूँ न जां देखता हूं। तुझी को निहां और अयां देखता हूं॥

जीवन सुखी ते निर्मोही ऐ, हर्ष-शोक नईं न्यारेगी ।
अनहोए दी न्याईं दिखदा माया नाटक सारेगी ॥
१–मित्तर बैरी दवैं बराबर भेत-भाव नईं मिथदा ऐ ।
साध-चोर ते अपने बखले सबनें दा सुख इच्छदा ऐ ॥
२–बिधि-निषेध दौनें दा त्यागी लोक मान नहीं चान्दा ऐ ।
दुयेंगी इस रस्तै लाइयै नीति धर्म सखांदां ऐ ॥
अज्ज मरै, भाएं उमरी जीयै, चिन्ता दनां नि करदा ऐ ।
नां सुरगै दी इच्छा बाकी, ना नरकें थीं डरदा ऐ ॥
३–रस्सी दे बिच सप्पै बांगू जग गी मिथ्या दसदा ऐ ।
हर्ष शोक दा करी नबेड़ा मुड़ियै फी नईं फसदा ऐ ॥

१—सुहृन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥ गी० ६।६
दूई दूर करो कोई शोर नहीं, एह तुर्क हिन्दु कोई होर नहीं,
सब साध कहो कोई चोर नहीं, हर घर में आप समाया ऐ, —बुल्ला
२—यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यःस मे प्रियः ॥ गी० १२।१७
३—तूने दिल, अच्छा किया दुनियां से यारी छोड़ दी ।
हां मियां सच है जां देखी चीज़ भारी छोड़ दी ॥

१–नां बीते दा चेता करदा, मोयेंगी निं रमान्दा ऐ ।
नां जमदे दी खुशी मनान्दा, लाइयै तोड़ नबान्दा ऐ ॥
'मैं-मेरी' हिरदे दियां गंडीं छुएडी दूर टकांदा ऐ ।
शोक मोहे थीं रेई न्यारा, आतम अनुभव पान्दा ऐ ॥
मिथ्या भोग, रोग सम जानी, राजयोग गी करदा ऐ ।
२–निर्बासन मन निर्मल रखियै भव सागर थीं तरदा ऐ ॥
३–ब्रह्म भाव बिच लीन होग्रा तां फी इसी खतरा कँदा ऐ ।
इस्सै दा नां सुन्न समाधि, इयै अवस्था सहजा ऐ ॥
पूर्ण पुन्न जां होन सहाई, तां इस सड़का पौन्दा ऐ ।
सद्गुरुयें दी सेवा बाझू मार्ग हत्थ निं औन्दा ऐ ॥

१—यां जिन को जीना मरना है ऐ यार उन्हीं को डरना है ।
जब दोनों दुःख-सुख दूर हुये फिर जीना है न मरना है ॥
माटी की माटी आग अगन जल नीर पवन की पवन हुई ।
अब किस से पूछिये कौन मूआ और किस से कहिये कौन मूई ॥ —नज़ीर

२—कर्मजं बुद्धि युंक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ॥
जन्म बन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ गी० २।५१

३—अगर है कसरत व गर है वहदत, हर इक में उसका जमाल देखो ।
करो मुसफ्फा जो शीशा दिल फिर उसी में अपना कमाल देखो ॥

३—राग द्वेष वियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
निस्पृहः सर्व कामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ गी० २।६४

नष्ट बासनां होइयां जेल्लै, भरम-भेत सब मिटदा ऐ ।
आपूं श्रोता आपूं बक्ता, आपूं साखी दिखदा ऐ ॥
लोक दृष्टि'ने सब किज करदा, ब्रह्म दृष्टि'ने न्यारा ऐ ।
इयै कुञ्जी हत्थ नि औन्दी, भुल्ला दा जग सारा ऐ ॥
सारे विश्वगी चेतन आतम-भाव जां भलेयां बसदा ऐ ।
करता भोक्ता जीवपना बी तां गै अन्दरा नसदा ऐ ॥
ज्ञानी शक्ति मनै दी जियां चेतन आश्रै रौन्दी ऐ ।
क्रिया शक्ति बी उसदे अन्दर, चेतनै करियै औन्दी ऐ ॥
इस्सै कारण मनै दा चलना चित्त नामगी पान्दा ऐ ।
चित्त सप्प फुङ्कारां करियै ए संसार बनांदा ऐ ॥
चित्तै दे फुंकारे जां तक, ताँ तक जीव खुआन्दा ऐ ।
छोड़ी देयै फुङ्कारां जेल्लै ब्रह्म रूपता पान्दा ऐ ॥
चिन्तन रैहत मन ब्रह्म सनातन, चिन्तन सैहत संसारी ऐ ।
चिन्तन चित्त थीं न्यारा जेड़ा, शाश्वत शिव अविकारी ऐ ॥
ब्रह्म हृदय बिच चित्त रूप थीं रेई संकल्प करांन्दा ऐ ।
उच्चा करै परम पद पान्दा, नीन्दा थल्लै टांदा ऐ ॥
संकल्प छोड़ी देयै जे करना, तां भव सिन्धु तरदा ऐ ।
अटल अचल पद अक्षय पान्दा, नां जमदा नां मरदा ऐ ॥
चित्त अचल शिव शान्त ऐ सच्चा, शक्ति चलन विकारी ऐ ।
इस्सै मन बी बनी खोआया, सारी खेड बगाड़ी ऐ ॥

चञ्चल चित्त जां छोड़ै चलना, उयै अचल खोआन्दा ऐ ।
१—निश्चल मन गै ब्रह्म रूप सिद्धान्त ए अटल सुनान्दा ऐ ॥
मनै दे चलने गी सुख मन्नै तां काबू नईं चढ़दा ऐ ।
नईं चुरासी फेर कटोन्दा, नां भवसागर तरदा ऐ ॥
मनै दा भाण्डा भन्नै जेकर, अपना आप पछानी लै ।
चित्तगी चेतनता बिच बदली ब्रह्मरूप करी जानी लै ॥
चेतन गी नईं जिच्चर जानै, तां भोगें पर डुलदा ऐ ।
संकल्पें दे घोड़े पर चड़ियै आपूं गी बी भुलदा ऐ ॥
कामना बस होई करम कमान्दा, तां मुड़ि देह गी धरदा ऐ ।
जीन्दे बी दुखिया होई रौन्दा, मरदे हा-हा करदा ऐ ॥
साखी दी चेतनता दे बिन, वृत्ति निं जानी सकदी ऐ ।
जे किज जानने दे बिच औंदा, चेतन दी गै शक्ति ऐ ॥
सूरज दी किरणें दे करियै मृग तृष्णा जल लबदा ऐ ।
चेतन दी चमका बिच आइयै चित्त बी सच्चा लगदा ऐ ॥
अक्ख सारे जगै गी दिखदी आपूं गी नईं दिखदी ऐ ।
चेतन दी शक्ति चेतनता चित्त करि नईं मिटदी ऐ ॥

१—मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्तिकिंचन् ।
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इहनानेव पश्यति ॥ क० ४।११

चित्त भूत ते, शंका डैनीं, दौंन्नें गी परें त्रटदा ऐ ।
ऐसा बीर पुरुष जग अन्दर, काल फांस गी कटदा ऐ ॥
जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था, त्रौन्नें दा जो साखी ऐ ।
देह प्राणें दे क्षै होने पर मौत नि जिस ने भाखी ऐ ॥
गुणातीत निर्गुणिया न्यारा, घट घट दे बिच बसदा ऐ ।
ओत प्रोत सारें बिच रेहियै राग द्वेष नईं रखदा ऐ ॥
ऐसा भाव हिरदे बिच बस्सै जीन्दे मुक्त कराँदा ऐ ।
बिन सत्संगें हत्थ नि औन्दा, जिस कीता ओ पांदा ऐ ॥
१- नाम रूप बी दौवें मिथ्या, बिच भुलेखा पांदे न ।
नईं होने गी 'है' करि दसदे, सच्ची सिड़क खुंझादे न ॥
बिन गुरुयें दै गल्ल नि मुकदी, नां कुसै मारग पाया ऐ ।
परम्परा दी इयै रीति, 'ब्रह्मानन्द' सुनाया ऐ ॥

'सिर बारणा'

२-जीन्दे मौत बिहाजनी आ तां होई नकेबलै बौंहदा जा ।
घरै बारै दियां ताहगां त्रोड़ी, सुखै दी नीन्दर सौन्दा जा ॥

१—बहुत कुमरी के तईं सरू सताया तूने । रास्त तो यह है कि फिर फल भी न पाया तूने ॥
२—गर जीते जी हो मरना, तो मेरे साथ हो ले ।
दे साथ छोड़ सबों का, तुख्मे वफा तू बो ले ॥
दुनिया भी चाहता है उकबा भी चाहता है !
यह है ख्याले बातल, दोनों ही चाहता !!
दुनियां को तू भुलादे उकबा की हवस है गर ।
पहले खुदी मिटादे फिर फिकरे बे खुदी कर ॥

लोक चाह परलोक दी इच्छेया, लत्त दुपासी रखना एं।
ए गल्ल पक्की जानी लैयां दौन्नें पास्सें सखना एं॥

सारा जगत भुलाने पौना, कन्ने खुदी मटानो आ।
अपनी कुल्ली जल्दे दिक्खी, अक्ख नईं भ्रमकानी आ॥

इक्कै कम्म मनें ने करना, कुदरै पास्सै लाई लै।
भामें बैल बना टब्बरै दा, भामें भजन कराई लै॥

इस सिड़का दा लम्मा पैण्डा, चलें भुलेखा पौंदा ऐ।
थां थां रस्तै इड्डो खोड़े, जो दुरेया सो ढौंदा ऐ॥

१–इक्कै दौड़ कदीमी रखनी, इक्कै रस्ता लैना ई।
इक्कै दी सारा पर चलना, इक्कै दा बनी रैहनाई॥

इक इक कदम जमाइयै रखना, ठोकर कुदै नि खानी आ।
नां गै नजर तरेडी करनी, अक्ख नईं भ्रमकानी आ॥

ए प्रीतै दा धरम कदीमी, सदा'शा चलदा औंदा ऐ।
सिर-सिर बाजी लाने वाला इसगी जित्ती पौंदा ऐ॥

नां जीन्दे दी खुशी मनानी, नाँ मोयें गी पिट्टना ई।
शाही गदाई दवैं बराबर, इक जनेहे दिखना ई॥

१—दो रंगी छोड़ कर यक रंग हो जा। सरासर मोम हो या संग हो जा॥

१-सिरै दा दना नि सरफा करना, जान तली पर रखनी ऐ ।
सुखने बिच बी नईं परतोना, तोड़ नभाइयै दस्सनी ऐ ॥
बिक्रमजीतै दे दरबारै कोई सोआली आया ऐ ।
रातीं उस दे पलंगै पैहरै नौकरी देनां चाहेया ऐ ॥
सूर बीर जोआनी चढ़दी, डील डौल बी चंगी ऐ ।
रोज सेर सुन्ना राजे'शा तनखा उसने मंगी ऐ ॥
मनै'च ए गल्ल सोची राजा उसगी नौकर रखदा ऐ ।
सेर सुन्ने दा जेड़ा मंगदा के किज करियै दसदा ऐ ॥
रातीं पंज हथयारी बनियै पलंगै पैहरै रैन्दा ऐ ।
दिन चढ़दे गै जाई खजानै सेर सुन्ना लेई लैन्दा ऐ ॥
रातीं देयै खड़ोता पैहरा, दिनें जाई घर सौंदा ऐ ।
इस्सै चाली मुद्दत बीती बरखा दा दिन औंदा ऐ ॥
शैहरा बार, नदी दे पारें, जंगलें बिच कोई रोंदा ऐ ।
अद्धी रात बी बीती फिर बी राजे नईं सनोंदा ऐ ॥
उस्सै बादर मानुंगी फी राजा हुकुम सुनांदा ऐ ।
आखै मेरी नगरी दे बिच कुन दुखिया कुरलांदा ऐ ॥

१—सिर दा सरफा मूल न करदे जो सूरे सन्मुख जान्दे ।
पिछां पैर न हरगिज़ फेरन ओह चोटां मुंह २ खान्दे ॥
कायर सुनके घर बिच बड़दे बिन घायल कुरलांदे ।
सन्त रैण जो सिर थीं गुजरे हत्थ लगी फतह तिन्हां दे ॥

न्हेरी रात कन्ने बदलोखा, औंगुल खड़ी नि लबदी ऐ ।
पंज हथयारी उट्ठी दौड़ेया, पुजदे घड़ी नि लगदी ऐ ॥
ए गल्ल सोची उसदे पिच्छें राजा बी दुरी पौंदा ऐं ।
तोड़ बी पुजदा ऐ जां उरुआं दा गै परती औंदा ऐ ॥
अग्गें दिक्खी रुक्खै उप्पर लोथ पुट्ठी लटकोंदी ऐ ।
हेठ जनानी इक खड़ोती हांवां लेई लेई रोंदी ऐ ॥
उसगी वीर सपाही पुछदा, तूं की भैने रोन्नी एं ।
भूत बला कोई डैन योगिनी, जां तू कोई होनी एं ॥
ओ बोली इस पति मेरे गी चोरें पुट्ठा बद्धा ऐ ।
तुपदी गी हुन इस रुखै पर फ़ाई लग्गा लब्बा ऐ ॥
अन्तै बेल्लै इस कन्ने में गलें जे मिलना चाहनी आं ।
उप्परै तोड़ी हांव नि जन्दी, तां इत्थें करलानी आं ॥
बादर उसगी मूंडै चाड़ी, बूटे हेठ खड़ोंदा ऐ ।
थोड़े चिरैगी उसदे उप्पर तृप तृप लऊ चौंदा ऐ ॥
उप्पर दिखदा जे जनानी मुड़दा भखदी जन्दी ऐ ।
सोचै हुन जे इसगी पुच्छां ताँ ए मिगी बी खन्दी ऐ ॥
सारा रड़की खाई समाएया, पुन्जां उतरी दुरदी ऐ ।
ओ दोआली पिच्छो पिच्छी, कुत पासैगी मुड़दी ऐ ॥
राजा सब किज छुप्पी दिखदा, चुप चपीता रौंदा ऐ ।
उनें दौंहनें दे मगरो-मगरी, ओ बी हुन दुरी पौंदा ऐ ॥

थोड़ी दूर अगेत्तर जाई मन्दरै दे बिच बड़दी ऐ ।
ओस दोआली बन्दे कन्ने अन्दरा दा गल्ल करदी ऐ ॥
बड़ी खुशी तेरे पर होइयां, तां तुई ए गल्ल आखी ऐ ।
तेरे राजे दी अज्जै'शा अट्ठ दिन आयु बाकी ऐ ॥
राजे दा जां मरण सुनेया बट्ट कलेजै पौंदा ऐ ।
पंज हथयारी हत्थ जोड़ियै छम-छम करदा रोंदा ऐ ॥
आखै माता मेरे उप्पर, जे तुसें किरपा करनी ऐ ।
राजे दी हुन मौत आई दी कुस विधि कन्ने टलनी ऐ ॥
जेठे पुत्तरै दा सिर लग्गै, तां मेरै बली चड़दी ऐ ।
कोई सूरमा करै दलेरी तां गै आयु बददी ऐ ॥
ए गल्ल आखी छप्पन होई गई, सेवक बी हुन टुरदा ऐ ।
राजे दे मैहलें नईं जन्दा, अपने घरै गी मुड़दा ऐ ॥
जाई जनानी सुत्ती ठुआली, सारी गल्ल सुनांदा ऐ ।
राजा बी हुन छप्पें पैरें बारा दा कन्न लांदा ऐ ॥
पुत्तरै दी बलि देनी सुनियै जागत माऊ जगाया ऐ ।
उसगी मौरीने कच्छ बोआली सारा हाल सुनाया ऐ ॥
पुत्तरै बी गल्ल मन्नी लैती, ओ बी उट्ठी चलदा ऐ ।
राजे दे चिर जीने ताईं मौती'शा नि डरदा ऐ ॥
पुत्तर-नारी कन्ने लैते सेवक मन्दर आया ऐ ।
पिच्छो पिच्छी राजा टुरदा भेत कुसै नईं पाया ऐ ॥

मंदरै अग्गें जाई खड़ोते, खंडा म्यान्ना कडदा ऐ ।
लस लस करदा खिच्ची मारै पुत्रै दा सिर बडदा ऐ ॥

मा पुत्रै दा मरना दिक्खी 'किच्चर ए दुःख जरना ऐ' ।
ओड़क पति गी आखन लग्गी हुन जीयै के करना ऐ ।

अक्खीं ओहल्लै होन नि दित्ता सुक्खनें-स्त्रीनियें पालेया ऐ ।
उसगी अज्ज अपने गै हत्थें लम्मी नींदरा सोआलेया ऐ ॥

कुसदी रोहली घर जाई बौना, कुस'ने जी परचाना ऐ ।
कुसगी आले देई-देई सदनां कुस दा सगन मनाना ऐ ॥

इयै लहु भरोचा खण्डा, मेरे सिर बी मारी दे ।
राजे दे चिर जीने ताईं दुई बली बी चाड़ी दे ॥

खसमै खण्डा लेई चलाया, ओदा सिर बी बडदा ऐ ।
आपूं अग्गें जीने ताईं सोच मनै बिच करदा ऐ ॥

जिन्दे कारण सेर सुन्ने दा रोज कमाइयै औन्दा हा ।
दिनें रली मिली खाना पीना, रातीं पैहरें रौन्दा हा ॥

उनें दौनें गी अपनें हत्थें टोटे करी टकाया ऐ ।
रोज बरोज लेया दा सुन्ना सारा लेखै लाया ऐ ॥

कोदा हुन खटकाना कुण्डा, सुत्तें कुसी जगाना ऐ ।
सेर सुन्ने दा रोज कमाइयै कुसगी नेई खलाना ऐ ॥

ए गल्ल सोची खिच्ची खण्डा अपने सीस चलांदा ऐ ।
राजे दे चिर जीने ताईं ओबी बलि चढ़ांदा ऐ ॥

अकल राजे दी कम्म नि करदी चरज अनोखा दिखदा ऐ ।
मन्दरै अन्दर जाई खड़ोता, ओ बी खण्डा खिचदा ऐ ॥
जां उस अपने सीस चलाया, काली हत्थ पगड़दी ऐ ।
प्रगटी सन्मुख होई खड़ोती, क्रोधें भरी झगड़दी ऐ ॥
राजा तेरी उमर बदी गेई तूं हुन किस लेई मरना एं ।
अपने उप्पर तेग चलाइयै खून धंगानै करना एं ॥
अति प्रसन्न तेरे पर होइयां किस लेई बलि चढ़ान्ना एं ।
'वरं ब्रूहि' बर मङ्गी लै, मनै'च जे तूं चाहना एं ॥
राजा चकत होई गेया दिक्खी, अद्भुत दर्शन पान्दा ऐ ।
चरणों उप्पर सीस नोआया, मुहां बचन सुनांदा ऐ ॥
जे प्रसन्न तूं होइयें माता, तां में अरज सुनानां ए ।
इने त्रौन्नें गी जीन्दे करी दे, इक्कै बर में चाहन्नां ए ॥
जल छिड़की आला जे दिन्दी मुड़दे जीन्दे होई गये ।
'राम-राम' मुंहा दा करदे, त्रैवे उट्ठी खड़ोई गये ॥
तूं नेड़ै तां ईश्वर नेड़ै तेरै छिण्डे छिण्डा ऐ ।
सच्चा सेवक बनियै दस्सें, मालक बी सिर दिन्दा ऐ ॥
इस सिड़का बिच सेवक-स्वामी दवैं बराबर चलदे न ।
भुल्ली पे भुलेखें जेड़े, डुबकूं डुबकूं करदे न ॥

१–ए ऐ थोड़ी नेई मरोड़ी गण्ड कुपासी लग्गी ऐ।
बिनां गुरें दी पूर्ण किरपा, खोल्ली कुसै नि लबदी ऐ॥

उल्च पल्चेया गोरख धन्दा, बिना मदारी खुल्लना नईं।
गौड़ बङ्गालियें कीता टूना, जादूगिरै छुट, उल्लना नईं॥

जूआं-चाल बी चलदे टुरेया, ओड़क पुज्जी पौन्दा ऐ।
घर बैठा जे करें सलाहीं, अद्ध मभाटै रौंदा ऐ॥

जो टुरदे सो पुजदे आए रस्म कदीमी चलदी ऐ।
इस मार्ग बिच अन्तै वेल्लै गुरू सेवा गै फलदी ऐ॥

वेद वाणी दा ईश्वर साक्षी करी नखेड़ा लिखेया ऐ।
ब्रह्मनन्दै अपनी अक्खीं ए सारा किज दिखेया ऐ॥

॥ ध्येय प्रकरण समापत होआ ॥

१—दिलतों होर दलीलां सुट्टे अते दर कामल दे जावे।
बरदा होवे उन्हां दे दर दा बिन मुल्ल आप विकावे॥
जो आखन सो सिर ते मन्ने अते मूहों न बया अलावे।
सन्त रैण जो होवे उन्हां दा तां खैर फ़क़र दी पावे

सिद्धान्त प्रकरण

अवधूत वृत्ति

१—द्रष्टा-दर्शन-दृश्य ओहनें दा आतम जेड़ा साखी ऐ।
उयै ब्रह्म घट-घट बिच बसदा वेदें ए गल्ल आखी ऐ॥
नेति-नेति गाई चुप होई गे होर दुयै कुस दस्सना ऐ।
मन वाणी दा विषय नि बनदा अजब नराली घटना ऐ॥
२—"ऐ-नई" थीं बी दूर दुराडा सच्च झूठै थों न्यारा ऐ।
धर्माधर्म उसदे बिच नइयों पाप पुन्नें थों बाहरा ऐ॥
३—जिस बिच सारे, जो सबनें बिच, जिस थीं ए सब होई रेहा।
सब दा कारण सब किज आपूं रग-रग बिच पलचोई गेया॥

१—एक एवहि भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थितः।
एकधा वहुधाश्चैव दृश्यते जल चन्द्रवत्॥
२—यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कुतश्चनेति॥ तै० २।६
३—अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात्॥
अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्तत्पश्यसितद्वद॥ क० २।१४

सारे अक्खर बाचक जिस दे वाच्य सर्व दा जेड़ा ऐ ।
उसगी ए ओ शब्दें बिच उच्चारने वाला केड़ा ऐ ॥
त्रौं कालें बिच इक जनेहा त्रैलोकी दा साखी ऐ ।
अक्खीं दी पुतली'शा नेड़ै शाश्वत शिव सुखराशी ऐ ॥
अक्रि यअमर भरपूर एक रस अजर कैवल्य पद दाता ऐ ।
इष्ट अनिष्ट थीं सदा न्यारा निर्बन्धन बे आसा ऐ ॥
विधि-नषेध दौन्नें थीं न्यारा बुद्धि गुफा व्यापी ऐ ।
अचल अटल अखण्ड सनातन पूर्ण निकट नवासी ऐ ॥
उदासीन निर्गुण निर्वासन ज्ञानरूप निर्व्याधी ऐ ।
शान्त शील निश्चल दे जाने अट्ठै पैहर समाधी ऐ ॥
समदर्शी ओ अगम-अगोचर विश्णु पद अविनाशी ऐ ।
सर्व नियन्ता परम पवित्तर हिरदे-कमल विकासी ऐ ॥
उयै चेतन चित्त सारें दा अपना आप खोआन्दा ऐ ।
नां नेड़ै नां दूर कुसै थीं इक्कै नेआ समान्दा ऐ ॥
सुखमात्तर हर इक बिच व्यापक जगमग-जगमग करदा ऐ ।
आतम रूप इसी जो जानै नां जमदा नां मरदा ऐ ॥
चित जड़ मिलियै बन्ध खोआन्दा, बक्खरा दिक्खना मुक्ति ऐ ।
उयै अपना आप सारें दा इयै नोखी युक्ति ऐ ॥
तेरे बिच त्रैलोकी बसदी, अन्दर गै गुरु द्वारा ऐ ।
ऋद्धि-सिद्धि भण्डार भरोचे कल्प वृच्छ इक न्यारा ऐ ॥

ब्रह्मा विष्णु शिव जी अन्दर, अन्दर ठाकुर द्वारा ऐ ।
१—गण-गण अनहद बाजे बजदे, छर-छर अमरत धारा ऐ ॥
आंपूं मालक, आप खजाना, आपूं खरचने बाला ऐ ।
आपूं मदिरा, आप प्याला, आपूं गै मतवाला ऐ ॥
पूर्ण प्रेम होऐ जिस बेल्लै रीत दा बन्धन त्रुटदा ऐ ।
अन्दर गै सब तीर्थ नौन्दा बाहरा दा मन रुसदा ऐ ॥
पाई लेया जिसगी सा पाना, कम्म हुन बाकी कोई नईं ।
मोरचा खाली पेदा लब्बै, बैरी-आकी कोई नईं ॥
जानने वाला जानी लैता झगड़ा सारा तै होआ ।
मिटी गेया सब झगड़ा-झेड़ा शत्रुयें दा खै होआ ॥
२—पुज्जी गेया पुज्जना सा जित्थें, आई गेया औने दे थां ।
मुक्की गेया हुन औना जाना, हंस होआ उमरी दा कां ॥
लख-चुरासी बन्धन मुक्के लक्क खोलियै बेई गेया ।
अमर सुखें दी इच्छा जागी सुरग बी पिच्छें रेई गेया ॥

१—नन्नां आखे अनहद बाजा अन्दर तेरे बाज रेहा,
शाहरग तार तम्बूरे वाली देही दा हो साज रेहा ।
ओं सोहं शब्द हमेशा मूहों बोल अवाज़ रेहा,
जिसनूं बाहरों ढूंडें 'काली' तेरे बिच विराज रेहा ॥
२—आज़ाद जब हुआ तो खमोशी करे कबूल ।
ज़ेबा है शोर मुर्गे गिरफ्तार के लिये ॥

सुखनें न्याईं ए सारा किज अनहोआ गै होई रेह्या ।
भूठे सौदे करने वाला, बनजारा पगड़ोई गेया ॥
सुट्टी दे हथयार तूं मेरा निश्चा हुन पूरा होआ ।
जां लग्गा ए पक्क नशाना मोरचा बी चूरा होआ ॥
अज्ञानी निद्रा'शा बचला सद्गुरु जी दी होई देया ।
हुन नईं सौन ते जागन ओका लेश मात्र बाकी रेहा ॥
ए दुनिया दा जीना सुखना, इस धरती पर बरती रेहा ।
हुन सन नइयों फाई फसाना सबनें गी ऐ परखी लेया ॥
१–दिक्खी लैता इस दुनिया गी, मुसाफरें दा मेला ऐ ।
हुन इसदा बी साथ त्रुट्टा, खीरी हुन ए बेला ऐ ॥
आतम ज्ञान ए होने कारण जन्म कृतार्थ होआ ऐ ।
देह मानु दी नौका थोई पूर्ण पुरुषार्थ होआ ऐ ॥
२–बड़े पढ़ाकू ग्रन्थ-पोथियां परती-परती बेई गये ।
धैरे-खुरे दा थौह नईं लग्गा, मतलब करदे सेई गये ॥
३–खुल्लमखुल्ले होई गे जेड़े मोहर खमोशी लान्दे न ।
इयै पक्की परख कदीमी, बद्धे गै करलान्दे न ॥

१—खानाये खुद अज़ सराये मवीं, चूं बागो मकां ओ जाए मवीं ॥
२—इल्मों बस करीं ओ यार इल्मों बस करीं ओ यार,
पढ़ २ लावें ढेर कुरान किताबां चार चौफेर ।
३—इक अलिफ पढ़ो छुटकारा ऐ । इस अलिफ दा नुकता न्यारा ऐ ॥

डावाँ डोल निं होन भरोचे, श्रद्धें छल-छल करना ऐ।
स्वादु जीव्ह निं रवै नचिल्ली ठाकें पर कुस टलना ऐ॥
श्रद्धें श्रद्ध मझाटें डुबना, भरें - भरेरें तरना ऐ।
लख-चुरासी डोर कटोनी नां जमना नां मरना ऐ॥
पञ्जें इन्द्रियें दे बिच नईं तूं नां भोगें दा भोगी एं।
देहैं थवां सदा न्यारा, बालक बृद्ध न रोगी एं॥
नां कुल गोत्तर तेरे अन्दर, नां नाता ना सङ्गी एं।
लोक ते श्रो परलोक बी तुद बिच नईं तू सदा बे रङ्गी एं॥
जीवन-मुक्ति सुखै दे कारण देह ए धारण करदा ऐ।
जग लीला ए दिखने ताईं ब्रह्म जीवें बिच रलदा ऐ॥
१—उयै सबनें बिच समाया, उस्सै अन्दर सारे न।
इयै मरोड़ी हत्थ निं औन्दी परखां करी-करी हारे न॥
अकली थवां बी दूर दुराडा, इल्में कोला न्यारा ऐ।
सुनने कच्छा परे-परेरें बेदें दा निस्तारा ऐ॥
२—चारैं चक्क जीगर कुतै बी बेई गेया जां सेई गेया।
बोलने दी कोई गरज नईं हुन चुप करियै तां बेई रेहा॥

२—एक एवहि भूतात्मा भूते २ व्यवस्थितः।
एकधा बहुधाश्चैव दृश्यते जल चन्द्रवत्॥ ब्र० बिं० १२

३—दिन रात बहारें चुहलें हैं और इश्क ज़मीरी है बाबा।
जो आशक हो सो जाने है ये भेद फकीरी हैं बाबा॥

तानी त्रोड़ी तृष्णा नस्सी, भरम-सन्देह पापी गेया ।
हुन थोश्रा ऐ असल ठकाना कम्म नईं बाकी रेया ॥
इयै भावना पक्की होऐ तां सारा कम्म सरदा ऐ ।
फारगती बी तां गै मिलदी, भवसागर गी तरदा ऐ ॥
ए कपटी नाटक नईं हुन्दा, तां दुख कुसने दिखना सा ।
बिना दुखेंगी अनुभव कीते सुखै दा मुल्ल कुस मिथना सा ॥
दुखें गी भलेयां भोगने करियै मुल्ल सुखें दा पौन्दा ऐ ।
जगत आरोप बिना कीते दे ब्रह्म समझ नईं औंदा ऐ ॥
ज्ञानै बिन मुक्ति नईं हुन्दी मुक्त नि मोयें लखोंदा ऐ ।
१—जीन्दे जिसी ज्ञान होऐ तां उयै मुक्त गनोन्दा ऐ ॥
२—ईश्वर अर्पण कर्म कमान्दा, तद्-परायण रौन्दा ऐ ।
सुखने बिच बी इस माया दे धोखे बिच नईं औन्दा ऐ ॥
मुख खोलै तां वाणी राएं अमरत-बरखा करदा ऐ ।
बरसान्ती दे बदलें बाँगूं खेतर-खेतर भरदा ऐ ॥
सच्चै दा उपदेश देई भवसागर पार करान्दा ऐ ।
मुक्ति-पद दा दाता बनियै भोग-भाव छुड़कान्दा ऐ ॥

१—वेदान्त विज्ञान सुनिश्चतार्थाः । (मुं० ३।२।६)
२—गतसंगय मुक्तस्य ज्ञानावस्थित चेतसः ।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ गी० ४।२३

आधार विश्व दा सबनें दे बिच आपूं बरती रेह्या ऐ।
उस्सै गी ऐ रूप दखान्दा जिसने परखी लेया ऐ॥
१–पुन्न सहाई होन मते तां ने गुरें गी पान्दा ऐ।
जीवन-मुक्त बनै ताँ गै ए पित्तर बी पार लंगान्दा ऐ॥
इस लोकै-परलोकै बाला झगड़ा छुड़की जन्दा ऐ।
कच्चु दा देह भट्ठी सोधी मुड़ियै पारस बनदा ऐ॥
शुद्ध माया दा स्वामी बनियै ईश्वर-पदवी लैन्दा ऐ।
अविद्या दे नईं काबू चढ़दा, परम सुखै'इच रैन्दा ऐ॥
२–नाँ मनै बिच मानगै रखदा, नां गुणें पर डलकदा ऐ।
भरपूर पुलार होई तां भरोचा, मुड़ी कदें नि छलकदा ऐ॥
३–मोए' दा नईं सोग मनान्दा, बिपता'च घबरांदा नईं।
नां बैरी गी बुरा इच्छदा, सज्जनें गी मन लान्दा नईं॥

१—जद मैं सबक इश्क दा पढ़िया दरिया देख वहदत दा डरिया।
मन घुम्मन-घेरां दे विच अड़्या शाह अनायत कीता पार॥
२—जब उमड़ा दरिया उल्फ़त का हर चार तरफ़ आबादी है।
हर रात नई इक शादी है हर रोज़ मुबारिक बादी है॥
३—न कोई तालिब हुआ तुम्हारा न हमने दिल से कसू को चाहा,
न हम ने देखी खुशी की लहरें न दरदोग़म से कभी कराहा।
न हम ने बोया न हम ने काटा न हमने जोता न हम ने गाहा,
उठा जो दिल से भरम का परदा तो उसके उठते ही फिर अहा हा॥

होग्रा निरंजन, शान्त ते निर्मल, ज्ञानी, ग्रातम-साखी ऐं।
इस देहै बिच 'ब्रह्मानन्दा' बनेयां घट-घट बासी ऐं॥

"सहजावस्था"

जीने दी नईं चाहना रखदा, नां मौती थीं डरदा ऐ।
ग्रहंगता ममता रैहत होग्रा दा करदा बी नईं करदा ऐ॥
सदा सन्दोखी ग्रपने ग्रन्दर, मान ग्रपमान थों न्यारा ऐ।
निन्दा ग्रस्तुत दवैं बराबर, हर पासै छुटकारा ऐ॥
सुख-दुःख दमैं बराबर होए, करतापनै थीं खाली ऐ।
जग गी खेड-तमाशा दिखदा, ठण्डा शीतल शाली ऐ॥
१—नां दुष्टें दी निन्दा करदा, नां शिष्टें गी तुपदा ऐ।
ज्ञाता ज्ञान ते ज्ञेय बराबर त्रिपुटी गी परें सुटदा ऐ॥
२—बन्धन भोगें दे सब खोले, तृष्णा नईं तरसांदी ऐ।
हर-हर बिच हरगी ऐ दिखदा, नेई ग्रवस्था ग्रान्दी ऐ॥

१—सुहृन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बन्धुषु।
साधुश्वपि च पापेषु समबुद्धि र्विशिष्यते ॥ गी० ६।६

२—यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।
निस्पृहः सर्वन्कामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ गी० ६।१८

आतम-सुधा दा पान जो कीता, तृप्ति दे बिच होई गेया ।
ज्ञानै दा नेग्रा साबन लग्गा मैल समूची धोई गेया ॥
अम्बर तुल्ल होग्रा निरलेपी हर्ष-विषाद-नि दिखदा ऐ ।
निरमल मन सुखने दे बिच बी करता पन नईं मिथदा ऐ ॥
साधन बी सारे होई चुक्के, करना नईं किज रेई गेया ।
अपना आप पछानी लैता, दुनियां कोला सेई गेया ॥
बसती बुरी नि लगदी उसगी, नां जंगलें गी इच्छदा ऐ ।
मंगल पूरण तत्व गै शाश्वत मात्तर सारै दिखदा ऐ ॥
निज रूपै बिच लीन होग्रा मन विषयाकार नि बनदा ऐ ।
गले कलेश जगत दे सारे, सुखनै खेद नि मनदा ऐ ॥
१—अक्खीं अन्दरै गी परतोइयां, गगना अमरत बरदा ऐ ।
खान सुखें दी पेई गेई बिरसै, भव-सिन्धु गी तरदा ऐ ॥
हसने पर बी हसदा नइयों, रोन्दें पर नईं रोन्दा ऐ ।
जागदे बेल्लै नां ए जागै नां सुत्तें दै सौन्दा ऐ ॥
द्वन्द-रैहत हुन अटल सनातन, लीन होइयाँ मन वृत्तियां न ।
आशा तृष्णा डैन-चुड़ेलां लेई बदाई पिट्टियां न ॥

१—आये है जब नशा ऐ तौहीद की तरंग,
मरगो हयात दोनों हुई' अपनी एक रंग ।
फर्श ज़मीं है खाक नशीनों का बिस्तरा ।
बेखानमाने इश्क का तकिया है खिश्तो संग ॥

निश्चल चित्त निशंकी वृत्ति ब्रह्माकारी होई गई।
सुच्ची चिन्तन वृत्ति मैले दाग मनै दे धोई गई ॥
जगत ऐ झूठा सुखने मात्तर दृष्टिगोचर रेई गेया।
बैरी बी हुन मित्तर लबदे अक्खीं मीटी बेई गेया ॥
२-सार रैहत संसार ए जानी, आतम जानी लैता ऐ।
'मर' थी 'अमर' दी पदवी पाई, फारगती लेई बैठा ऐ ॥
श्रुति वाक्य ते गुरुयें उप्पर पूर्ण निश्चा धारी ऐ।
नेआ बबेकी त्यागी योगी आतम निर्णय कारी ऐ ॥
इच्छा रैहत होआ सब पासें एकागर मन कीता ऐ।
नित्त-नित्त आतम दर्शन पान्दा, अमर प्याला पीता ऐ ॥
अमरतै अन्दर लाई चलोबी, जगतगी परें त्रट्टेया ऐ।
इसदे हुन्दे परम धाम बिच खुशी-खुशी जाई बस्सेया ऐ ॥

२—न हमने अपना बनाओ देखा न हमने देखी कभी तबाहीं।
यह सब भरम का बना था नक़्शा भरम की टट्टी है या इलाही ॥
न बाप बेटे, न दोस्त दुश्मन, न आशक औ'न सनम किसी के।
अजब तरह की हुई फराग़त न कोई हमारा न हम किसी के ॥

१–विक्षेप मनै दा रेश्रा निं बाकी शम-दम साधन मुक्के न ।
आतम-धीन होई गेया जीना, जकड़े सङ्गल त्रुट्टे न ।।
राग नईं करमें बिच रत्ति, नां निश्करमें द्वेषी ऐ ।
अपने पराये दौन्नें दा गै इक समान हतैषी ऐ ।।
हाथी चढ़दे लाभ निं मिथदा, पैदल चलदे हानि नईं ।
संकल्पें दे पर्वत पुट्टे, रखदा कौडी काणी नईं ।।
२–त्रास नईं यम पुरी दा करदा, इन्द्र पदवी तुपदा नईं ।
आशा होई निराशा हुन, कोई वासना ओँङ्कुर फुटदा नईं ।।
द्वैत मनै'चा मेसी दित्ता ब्रह्म दा चिन्तन करदा ऐ ।
चिन्तन कच्छा बी होई खलासी दूर होई गेया परदा ऐ ।।
जगत नईं ए मिटेया तां आरोप बी ऐ अपवाद बी ऐ ।
लय होआ फुरना बी जेल्लै मनैच सुर बी साज बी ऐ ।।

१—अभी यह ढब था किसी से लड़िये किसी के पांव पै जा के पड़िये ।
किसी से हक पर फसाद कीजे किसी से नाहक पै जाके लड़िये ।।
अभी यह धुन थी नज़ीर दिल में कहीं बिगड़िये कहीं झगड़िये ।
दुई के उठते ही फिर यह देखा कि अब जो लड़िये तो किस से लड़िये ।।
२—न ओह करन बहिश्त दी खाहिश ते न दोज़ख थीं डरदे ।
सन्त रैण जिन्हां खुदी गवाई ते खास साईं दे घर दे ।।

१–संकल्प रैहत निश्चिन्त बनी शिवरूप होई करी बेई गेया।
इच्छा अनिच्छा रैहत होई मन सुख मुक्ति दे लेई गेया॥
बसती ते बन दवैं बराबर, ग्रहण त्याग नहीं इच्छदा ऐ।
त्रिपुटी कच्छा भी होया न्यारा सबगी आतम मिथदा ऐ॥
२–बोध रवि दे उदय होयें अज्ञानै दा न्हेरा नस्सी गेया।
कर्त्तब्बें'शा होई खलासी रग-रग चानन बसी गेया॥
जिसदे अन्दर बासना भरियां जगत बी उसगी लबदा ऐ।
निरबासन मन होआ बबेकी हर पास्से थीं रजदा ऐ॥
लैने दी जो इच्छा रखदा राग बी उसी सतांदा ऐ।
लेइयै छोड़ना जेल्लै पौन्दा द्वेष बी फेरे पान्दा ऐ॥

१—गुञ्जाईशे ख्याले तिलस्मे जहां कहां।
आंखों में जिसके जलवाये हक़ हो बसा हुआ॥
दिल खानाये खुदा है सनम इस को मत गिरा।
मुमकिन नहीं के फिर बने यह घर खिसा हुआ॥
ऐ मुर्गे दिल उखड़ गये जब बालो पर तेरे।
कह क्या करेगा दाम से छुट कर कसा हुआ॥
घर को तू अपनी हस्ती के वीरान कर नयाज़।
हस्ती से हक़ की फिर वो रहेगा बसा हुआ॥
२—कहते हैं इश्क जिसको हमारा ही नाम है। शोरो फुगां की अपने यां धूमधाम है॥
होशो खिरद से हमें सरोकार कुछ नहीं। इन दोनों साहिबों को हमारा सलाम है॥
मंज़िल हमारी पाते हैं कब शैख़ो ब्राह्मण। इस्लामोकुफर से परे अपना मुकाम है॥

नां लेया नां छोड़ना पेया, राग-द्वेष बी मुक्की गेया ।
द्वन्दें कच्छा होआ नबेड़ा, पिछला लेखा चुक्की गेया ॥
घड़े'च जो आकाश ऐ लबदा उयै बारें छाया ऐ ।
१—ब्रह्म बी सबनें थारें इयां ओत-प्रोत समाया ऐ ॥
आशा मिटी सम्पूर्ण जेल्लै, चित्त बी मुरदा होई गेया ।
तुच्छ लगी त्रैलोकी लब्बन, पद निर्वाण थोई गेया ॥
करना उसगी शेष नि रेआ माया गी सर पाई लेया ।
समता दे दुरगै बिच बैठा खूनी लश्कर ढाई लेया ॥
सुखनै बी नईं हिंसा करदा, दया दे फंदें फसदा नईं ।
नां सिर कदें लोआरें चाढ़ै, धीन होई कदें दसदा नईं ॥
मन-चित्त खुशी ज्ञानै कन्ने, आतम अन्दर तृप्ति ऐ ।
फिक्के पेई गे स्वाद बारले, खुल्ली अन्तर-दृष्टि ऐ ॥
राग-द्वेष बी कूच करी गे, भेद-भाव नईं डंगदा ऐ ।
चित्रगुप्त दी बेही फकोई, लेखा हुन कुन मंगदा ऐ ॥

१—उसका मुख इक जोत है घूंघट है संसार ।
घूंघट में वो छुप गया मुख पर आंचल डार ॥
आंख मुख दिखलायें है जिनसे उसकी पीत ।
उनको ही मिलता है वो उसके हैं जो मीत ॥
मुंह दिखलाये औ' छिपे छल-बल कर जगदीश ।
पास रहे और न मिले यह सच बिसवे बीस ॥ (बुल्ले शाह)

बबेक-भट्ठी दा खुम्ब चढ़ाया, मन-चित निरमल होई गेया।

छप्पड़ें कच्छा होई खलासी, मान-सरोवर थोई गेया॥

अपना आप पछानी लैंता ध्यान बी पिच्छें रेई गेया।

दुआ कोई नईं नजरी चढ़दा, सौनी बनियै बेई गेया॥

बन्ध-मोक्ष थों होआ न्यारा, नां करता नां भोगी ऐ।

आतम-भाव गै पूर्ण बनेया, नां गृहस्थी नां योगी ऐ॥

सृष्टि-करता ते संहारी इक आपूंगी दिखदा ऐ।

जो पैहलें सा उयै हुन बी, ओ गै अग्गें मिथदा ऐ॥

१—निर्गुण इक रस होई आतम अमरत झड़ियां लान्दा ऐ।

नां भ्रान्ति हुन टपले पान्दी, नां अध्यास डरान्दा ऐ॥

राजस तामस वृत्तियां गेइयां सत्त्वापत्ति रेई गेई।

त्रिपुटी कच्छा होआ न्यारा, ओ बी फिक्की पेई गेई॥

पूरण विश्व होई अपने अन्दर, सब दा इक आधार होआ।

सन्त गुरें नेई किरपा कीती भव सिन्धु थीं पार होआ॥

ए देह रवै जे कल्पें तोड़ी तां नईं खुशी मनान्दा ऐ।

भावें अज्ज रलै बिच मिट्टी, अत्थरू नईं टमकान्दा ऐ॥

१—कर दिया इक जां दो कालब इश्के नादरकार ने।

दर्दे सर हम को हुआ सन्दल लगाया यार ने॥

चमड़ी-रत्त ते हड्ड-मास ए देह बी अपने मिथदा नईं ।
अवै शरीर बी रेई गे पिच्छें 'मैं-मेरा' बिच दिखदा नईं ॥
१–त्रैवे गुण ते त्रै अवस्थां छण्डी परे अटदा ऐ ।
तुरिया दे बिच होई मस्ताना, खेडें पेइयै हसदा ऐ ॥
शोक रैहत होआ निर्मोही समता पदवी थोई गई ।
काल बी रेआ बिट बिट दिखदा सारी मिसल फकोई गई ॥
नां दङ्गल गै बुरा मनान्दा, नां जङ्गलें दा बासी ऐ ।
काम क्रोध नईं जिसी तपान्दे, ठण्डी शीतल छाती ऐ ॥
२–कूड़ा-करकट अन्दरा कड्डियै हिरदा सान चढ़ाया ऐ ।
पुरुष-नारी दा भेद निं रेआ ऐसा ध्यान जमाया ऐ ॥
तङ्गी तुरशी कुतै निं लबदी अटल खजाना पाई लेया ।
बेरंगी दा थोआ ललारी, गूड़ा डोबा लाई लेया ॥

१—हम तुझ से किस हवस की फलक जुस्तजू करें ।
दिल ही नहीं रहा जो कुछ आरज़ू करें ॥
२—शादी व ग़म ये दोनों अपनी ही हालतें हैं ।
दिल गीर हैं तो हम हैं और शाह हैं तो हम हैं ॥
कारीगरी की अपनी यह सब मुसव्वरी है ।
तसवीर हैं तो हम हैं बहज़ाद हैं तो हम हैं ॥
हस्ती के कागज़ों पर अपने ही दस्तख़त हैं ।
गर फरद हैं तो हम हैं और साद हैं तो हम हैं ॥
जो कुछ कि यह घड़त है सो है हथौटी अपनी ।
फौलाद हैं तो हम हैं हद्दाद हैं तो हम हैं ॥

अध्यासै दा मटका गलेया, करता-कुन्नी फुट्टी गई ।
मन बांदर नइं डुगडुगी चढ़दा, सारी छड़पनी चुकी गईं ।।
मिट्टी रली घरें दी ममता, नां देहैं'च अहंगता ऐ ।
मलियामेट होआ जग सारा, हर पासै दी समता ऐ ।।
आसक्ति गै जनम दोआन्दी, आसक्ति गै मरना ऐ ।
आसक्ति गै बन्धन पान्दी, तां औखा भव तरना ऐ ।।
इसगी देई तलांजली बैठा, शान्त ते शिव समदर्शी ऐ ।
निश्कर्म बिच हानि निं दिखदा नां कर्मं दा अर्थी ऐ ।।
देह गै सारे कारज करदा, आतम सदा न्यारा ऐ ।
पक्का ज्ञान होये ए जेल्लै तां जानो निस्तारा ऐ ।।
कर्म दा करना नइं करना, अज्ञानै बिच मिथ्या ऐ ।
मन बुद्धि थों परे परेरे आतम तत्त्व गी दिक्खेया ऐ ।।
मौरे तुल्ल विषें गी त्यागी बेड़ी पार लंगाई ऐ ।
तां तूं जानेयां ब्रह्मानन्दा धन्न धन्न तेरी जाई ऐ ।।

॥ मुक्त वृत्ति ॥

कीड़ी थों लेई ब्रह्मा तोड़ी, दुआ कोई नईं बाकी ऐ ।
नां मितरें दी ताङ्ग सतान्दी, नां कोई बैरी-आकी ऐ ।।
दिक्खी चरज जगत गी औन्दा, कौडी जितना सार नइं ।
दृष्टि मातर सृष्टि सुखना, कक्ख मेरे थों बाहर नइं ।।

१–सुख ते दुःख ते जीना-मरना सब कर्मै दा लेखा ऐ ।
इस्सै दा निश्चा नईं होना, पान्दा बिच भुलेखा ऐ ॥
२–सम्पद-बिपता प्रारब्धा बस आये बाज नईं रैन्दे न ।
ईश्वर दे भेजे नईं औन्दे कर्म गै बदले लैन्दे न ॥
संसारै दे सकल पदारथ बिगड़दे बनदे रौन्दे न ।
इन्दे अन्दर रचे-पचे दे बिच चुरासी पौन्दे न ॥
१–मन वाणी ते काया कन्ने कर्मै गी करी चुक्का ऐ ।
सुरगै दे कदें लैं लोआरे, कदें पतालैं सुत्ता ऐ ॥
धारण कीते देह हजारां, सौ सौ रिश्ते नाते न ।
जित्थें गेया होआ दुखयारा, दिक्खे पिट्ट-स्यापे न ॥
तृष्णा जिस जिस थाहरै रौन्दी, उस दा नां संसार होआ।
जित्थें इसदी मुश्क नि पुजदी, उयै परला पार होआ ॥

१—फरीदा दुख-सुख इक कर दिलतों ला विकार ।
अल्ला भावे सो भला तां लब्बी दरबार ॥
२—न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभु ।
न कर्म फलसयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ गी० ५।१४
१—ते तं भुक्त्वा स्वर्ग लोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयीं धर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते (गी० ६।२०,२१)

जड़ी अवस्था प्रापत करियै, मोहै दा परदा फटदा ऐ ।
कर्म भस्म होइं जन्दे सारे, जड़ ग्रन्थि गी कटदा ऐ ॥
जित्थें शंका दना निं उठदी नाँ गै चित्त विकारी ऐ ।
भण्डार भरोचे सर्व सुखें दे, नां कोई रोग-बमारी ऐ ॥
१–जोतियें दी बी जोति ऐ ओ, सारेंगी लो दिन्दा ऐ ।
कुसै कोला बी जिसदा पौन्दा सुई जितना निं छिण्डा ऐ ॥
गुणें कोला बी परें-परेरें चिन्ता थों बी खाली ऐ ।
कर्मैं कोला सदा न्यारा त्रै लोकी दा बाली ऐ ॥
आकाशै'शा सूखम व्यापी करतापन थों बाहरा ऐ ।
शाश्वत अव्यय अटल सनातन जिस थीं सब बिस्तारा ऐ ॥
त्याग ग्रहण नईं जिसदे अन्दर, नाँ जम्मनां नां मरना ऐ ।
जिसी जानियै इस जीवै ने भव सागर गी तरना ऐ ॥
विश्व ए लय जिस दे बिच हुन्दा, भरम-भेद सब नसदा ऐ ।
उस्सै दा तूं आद-कदीमी ओ तेरे बिच बसदा ऐ ॥
माया रचित ए देह-पदार्थ माया रचित घर बाड़ी ऐ ।
प्यार दी रस्सी फांसी पक्की, इस्सै खेड बगाड़ी ऐ ॥

१—ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञान गम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥

बिघ्नसन्दोखन मोहनी माया सुखी दिक्खी जली मरदी ऐ ।
　　सौ-सौ बन्धन पाइयै बन्नदी सारे मंगल हरदी ऐ ॥
१–इसगी मारी दूर नसायें तां भव-सागर छुटदा ऐ ।
　　'मैं-मेरा' ते अपना पराया सारा कजिया मुकदा ऐ ॥
रस्सी अन्दर सप्प जो लबदा उस्सै बिच रची जन्दा ऐ ।
　　अपने बिच करी लीन जगत गी, रेह्या नि बाकी धन्दा ऐ ॥
कच्चा घड़ा ए देह मिट्टी दा, गलदे-बनदे रैहना ऐ ।
　　तेरा नईं किज बिगड़ी बनना, फी किसगी दुःख सैहना ऐ ॥
सीमा रैहत तूं अटल समुन्दर, निश्चल पद निर्वाणा ऐ ।
　　जल तरंग बनेया जग तुद थीं, तेरे बिच समाना ऐ ॥
तूं ऐ सिप्पी सच्ची बस्तु, ए जग झूठी चांदी ऐ ।
　　बनी सराफ जे करें नखेड़ा, तां फी नईं टपलांदी ऐ ॥
इन्दर बी जिस परमपदै दे पाने गी नित्त इच्छदा ऐ ।
　　निर्वासन मन योगी दा होई उस्सै दे बिच टिकदा ऐ ॥
जिस भारै गा बैल बनी संसारी पिट्ठी चुकदा ऐ ।
　　योगी उसगी मिथी तमाशा, राग द्वेष-परें सुटदा ऐ ॥

१—न रख उम्मीद तू हम से दुनियां हम अपनीं हस्ती मिटा चुके हैं,
　　हम नाम अपना कज़ा के दफतर में खूने दिल से लिखा चुके हैं ।
२—आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मि तु पूरुषः ।
　　किमिच्छन्न कस्य कामाय शरीर मनुसंज्वरेत् ॥ बृ० ४-४-१२

१–शान्त ते निर्मल होई निरंजन, माया थों परे बसदा ऐ ।
काले दा बी काल होआ, यमराज बी उसथों नसदा ऐ ॥
मरुभूमि बिच मृगजल जिआं सिप्पी अन्दर चांदी ऐ ।
न्हेरै पेदी जिआं रस्सी बनियै सप्प डरान्दी ऐ ॥
अपना आप पछाने बाजू ए जग सच्चा लगदा ऐ ।
जां दृष्टि अन्दर परतोई, माया दा मुंह भजदा ऐ ॥
टल्ले दे बिच तन्दां बनियै सूत्तर जिआं छाया ऐ ।
गन्ने अन्दर शक्कर रूपी मिट्ठा जिआं समाया ऐ ॥
मित्ती दे बिच घड़ा छप्पेया, सुन्ने अन्दर मुरकी ऐ ।
बुलबुले बिच समुन्दर छप्पे, नगरी लबदी उलटी ऐ ॥
२–इक-इक दा जां असल स्वरूप नखेड़ा करियै जाता ऐ ।
कारज थों नई कारण बखरा इआं ब्रह्म पछाता ऐ ॥
सारे जगत दा नाश होई जा, बचै नि कौडी काणी ऐ ।
ब्रह्मा बी भायें कूच करी जा, मेरी दना नि हानि ऐ ॥

१—लग गये अनहद बान न्यारे, झूठी दुनियां कूड़ पसारे, साईं मुख देखन दे वंजारे
मैनूं भुल्ल गेइयां सब बातां, मुरली बाज उठी अनघातां ! —बुल्ला

२—ईख में मधुराई जैसे सेन्धे में है निमकापन,
तिलन में है तेल और शीतलता ओले में ।
काष्ठ में है अगन जैसे बीज में है वृक्ष छुपा,
तैसे है राम छुपा प्राणियों के चोले में ॥

ज्ञाता ज्ञान ते ज्ञेय ए त्रैवै, कल्पना मात्तर आखे न।
बन्ध मोक्ष बी अज्ञानै दे भूठे बेहीखाते न।।
त्रैवै देह बी हुन्दे-सुन्दे, इन्दे थवां न्यारा आं।
गुणें थवां बी दूर दुराडा, मोह ममता थीं बाहरा आं।।
चेतन मातर इक रस आं में कल्पना काया माया ऐ।
'नेति नेति' वेदें आखी जिसदा पार नि पाया ऐ।।
आश्रम-वर्ण नि मेरे अन्दर, पंज तत्त्वें'शा बाहरा आं।
बन्धन रैहत भण्डार सुखेंदा, करतापन थीं न्यारा आं।।
बे-मनेयाद ए हड्ड मासै दी तुच्छ नकम्मी काया ऐ।
जां आपूंगी बखरा जाता, परम पदै गी पाया ऐ।।
जिस जिस इस बिच ममता रक्खी उयै भुलेखें पेई गेया।
मोह रस्सी ने फांसी चढ़ेया, सूलें छेजा सेई गेया।।
ज्ञान-गोदड़ी पैहनी जेल्लै, सीना उन्दा मुक्की गेया।
बोधै बिच बछाइयै सुत्तो समता परदा सुट्टी लेया।।
बिना सुई धागे दै सीती, कारीगिरी दा लेखा नईं।
बाज कतरनी बेतर कीती, रत्ती रेह्या भुलेखा नईं।।
त्यागै दा लेई रेशम-धागा सुई बवेक परोई ऐ।
शमै-दमै दा ताना-बाना, सिद्ध-पुट्ठ नईं कोई ऐ।।
टुकड़े तितिक्षा दे लेई जोड़े समता तरोपा लाया ऐ।
निरभयता दा घुण्डी बीड़ा, धीरज काज बनाया ऐ।।

श्रवण मनन ते निदिध्यासन दी ध्यान-मशीन चलाई ऐ ।
अद्वैतै दे रंगै रंगी धूढ़ी करी टकाई ऐ ॥
नां फटदी नां मैली हुन्दी नां फी धोनै पौन्दी ऐ ।
सरदी-गरमीं सबने ऋतुयें इक जनेई रौन्दी ऐ ॥
नित्त सुखै दी बुक्कल मारी, देई घराड़े सौन्दा ऐ ।
इन्दर पदै गी पिच्छें सुटदा, मुड़ी निं मरनै पौन्दा ऐ ॥
बेड़ा भव-सागर थीं तरेया, पितृ-करज लोआया ऐ ।
कुक्ख माऊदी होई सवल्ली सूरबीर जिस जाया ऐ ॥
रोम-रोम दे रमापति गी, बे-जिह्वा जिस जपेया ऐ ।
समदर्शी पाई अचल पदैगी, मुड़ी निं खोब्बै फसेया ऐ ॥
सबनें हिरदें दे बिच्च बसदा, हर बेल्ले दा साथी ऐ ।
बिन होठें जो जपदा इसगी, माया उसदी दासी ऐ ॥
१–मिट्टी दे इस देहै अन्दर प्रेम निं तुगी सुहान्दा ऐ ।
इस कच्छा तूं सदा न्यारा, वेद लिखी समझांदा ऐ ॥
शिव-शिव अट्ठै पहर रटा कर, शिव जी गै बनी जागा तूं ।
सारे सङ्कट कट्टे जांगन, अक्षय पदवी पागा तूं ॥
नेड़ेशा बी नेड़ै शिव जी बिन नजरी बी लबदे न ।
आपूं गी जिनें काया जाता, उन्हें गी टपले लगदे न ॥

१––असंगो ह्य यं पुरुषः वृ० ४।३।१६

१–प्रेमै ने शिव-शिव जो रटदे, देह दा लागा छुटदा ऐ ।
अनन्त सुखें दा मुजरा दिखदा, दर्शन करी नईं हुटदा ऐ ॥
२–जिसी सुखैंगी तुपदा फिरनां, तेरे अन्दर बसदा ऐ ।
प्रेम देहै दा भरने कारण, ओ तेरे थवां छपदा ऐ ॥
नाते साक कटुम्ब कबीलै, कन्ने कुसै नि जाना ऐ ।
चिखा तोड़ी गै सारें रलियै, तेरा साथ नभाना ऐ ॥
अन्त समै बी नाम शिवें दा दुखें दी फांसी कटदा ऐ ।
यम दे दूत नि नेड़ै औन्दे, चितरगुप्त बी नसदा ऐ ॥
तौले-तौले शिव-शिव रटियै बुद्धि सूखम छानी लै ।
अपना आप तूं 'ब्रह्मानन्दा' भलेयां करी पछानी लै ॥

१—खोटे खरे तदाईं जापन जां नज़र सराफां चढ़दे ।
सन्त रैण जिन्हां साईं पछाता ओह हो साईं दे हरडदे ॥
२—दुःख दर्द में आफात में जंजाल में खुश हैं ।
पूरे हैं वुही मर्द जो हाल में खुश हैं ॥
जीने का न अन्दोह न मरने का जरा गम ।
यकसां है उन्हें जिन्दगी और मौत का आलम ॥

मुग्ध अवस्था

न्हेरै पेदी रस्सी दा बी बनियै सप्प डरान्दा ऐ।
दूए दे बिच दुआ दिक्खना ए अध्यास खोआन्दा ऐ ॥
माया ने इस काया अन्दर देह-अध्यास बनाया ऐ।
इस्सै त्रै लोकी दे अन्दर, जनम-मरण गल पाया ऐ ॥
ब्रह्माभ्यास जो चेतन मात्तर सारे त्रास मटान्दा ऐ।
आतमाभ्यास बी नां उस्सैदा मुक्ति दे बिच पान्दा ऐ ॥
१—ब्रह्म दा कुसै द्वन्दै कन्ने कदें सम्बन्ध निं बनदा ऐ।
भुल्ला करी भुलेखा लगदा, तां अज्ञानी मनदा ऐ ॥
कदें बी घर घरपति निं बनदा, नाँ घरै वाला कोठा ऐ।
इयां आतम, देह थीं न्यारा, होई निशंक खड़ोता ऐ ॥
२—इक-इक पिण्ड अध्यस्त तेरे बिच तूं सबनें दा साखी एं।
तेरा उदय अस्त नईं होना, नां पुन्नी नां पापी एं ॥
लख-करोड़ाँ पिण्ड अते ब्रह्माण्ड तेरे थों होई गये।
अग्गें बी इनें हुन्दे रौहना, हुन सुखने बिच होई रहे ॥

१—यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ गीं० १३।३२

२—एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेतः केवलो निर्गुणश्च ॥ श्वे० ६।११

नां करता नां भोगी बनेयां, देह अध्यास बी छुण्डना ई ।
अन्तर्मुख होई आपूं गी बेरंगी दे बिच रंगना ई ॥
काया-घरै गी अपना मन्नियै दीन दुःखी नईं-बनना ई ।
त्रैलोकी दा इक्कै द्रष्टा, आपूं गी नित्त मन्नना ई ॥
कोई क्रिया नईं तेरे अन्दर, नां कोई रोग बमारी ऐ ।
१–ए जग रचना तुद थीं होई तेरी गै सरदारी ऐ ॥
अन्तर्मुख होई जेल्लै दिखगा, मरम ए खुल्ली जाना ऐ ।
सर्व चराचर, दृश्य पदार्थ, तेरे बिच समाना ऐ ॥
आपूं कोला दूर होए दे बनी गेया सन्तापी एं ।
२–अपने बिच आपूंगी दिखगा, नां पुन्नी नां पापी एं ॥
बाहर ते सुख मिथ्या सारे तूं गै सुख भण्डारी एं ।
तेरे थीं सब सुखिये हुन्दे सुखियें दी सरदारी एं ॥
अथाह जलै बिच हुन्दे मच्छी, फी तरेहाई रौंदी ऐ ।
पुट्ठी होयै भलेयां तां गै फुंग मुंहै बिच पौन्दी ऐ ॥
जग आशा गी पिच्छें लाया सौ दुखियें दा दुखिया ऐ ।
जां इस थों मुंह मोड़ी बैठा, सुखियें दा बी सुखिया ऐ ॥

१—एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ गी० ७।६

२—ता शवी वाकिफ़ ज़ इसरारे खुदा । ता बदानी खेशतन अज़तन जुदा ॥

भुल्ला बिच पेई कर्म कमाइयै काया सेहड़ी लैन्दा ऐ ।
तां माया दे काबू चढ़दा, जमदा-मरदा रैन्दा ऐ ॥
भुल्ला करी भुलेखा लग्गा, त्रिपुटी बी टपलांदी ऐ ।
१–तुरिया पदै दा बासी हैसा गीता इयै गांदी ऐ ॥
सम्बन्ध देहै दे कन्ने कीता, पापी बनी खोग्राया ऐ ।
संसारै बिच मुश्कां कड़ियै इस्सै बन्धन पाया ऐ ॥
ए ग्रध्यास नि जन्दा जिच्चर, भुल्ला दे बिच रौन्दा ऐ ।
जां इस कोला होग्रा न्यारा, सुखै दी नीन्दर सौन्दा ऐ ॥
तेरे संकलपै दे ग्रन्दर त्रै लोकी दा बासा ऐ ।
जां तेरा संकलप नि रेग्रा, नां बैरी नां नाता ऐ ॥
२–इनें संकलपें दे बिच पेइयै करता बनेयां पापें दा ।
नरक बी ग्रापूं सेहड़ी बैठा, पुतला होई त्रौं तापें दा ॥
ग्रपने पासै ध्यान करें तां दुग्रा कोई नइं बाकी ऐ ।
३–तेरा ग्रपना ग्राप गै सारे पुन्न-पापें दा साखी ऐ ॥

१—पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥ गी० ८।२२

२—प्रकृतेःक्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकार विमूढ़ात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ गी० ३।२७

३—नान्यतोऽस्ति द्रष्टा नान्यतोऽस्ति विज्ञाता । बृ० ३।७।२३

१–ए अपना ते ए ऐ पराया, जे संकलप ओड़ें तूं ।
शिव अवतार समझ सारें गी भेद बुद्धि गी छोड़ें तूं ॥
२–श्रुति युक्ति ने अनुभव अन्दर इक अद्वैत गै बसेया ऐ ।
जिस-जिस दूआ दुई करी जाता उयै चुरासी फसेया ऐ ॥
३–अज निबड़दे कम्में गी जो कल्लै उप्पर पाना ऐ ।
जात बाकियै काल खड़ोता, कल्ल हुन्दे उस खाना ऐ ॥
गर्भै दे विच औने बेल्लै काल बी कन्ने रौन्दा ऐ ।
सकल मनोरथ होन नि पूरे, डेरा पुटनै पौन्दा ऐ ॥
४–इक पलै दा नईं भरोसा, दमें दे उप्पर बारी ऐ ।
कालै बिगल बजाया जेल्लै समझो कूच तय्यारी ऐ ॥

१—यह मुल्को माल और नाहो हशम यह खेशो अकारब जो हैं बहम ॥
सब जीते जी के हैं हमदम फिर चलना है तनहा बाबा ॥
जो नेक कमाई करते हैं जो सांसों पार गुज़रते हैं ।
जो जीते जी ही मरते हैं जीना है बस उनका बाबा ॥
२—एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्व भूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥ श्वे० ६।११
३—कि दानद कि फ़रदा चे खाहिद रसीद । ज़दीदा कि खाहिद शुदन नापदीद ॥
कि रा मुर्दा अज़खाना बर दर निहन्द । किरा ताजे इकबाल बर सर दिहन्द ॥
दरीं दम कि दारी बशादी पसेच । कि आयेन्दा रफ़ता हेचस्त हेच ॥
४—पीसे मुरीद शाहो गदा मीर औ'वज़ीर ।
सब आन कर अजल के हुये दाम में असीर ॥ —नज़ीर

किस्से-कहानियां पढ़ी नि हुटदा, गप्पें बिच मन लान्दा ऐ।
छाल छड़प्पे चंगे लगदे सुखिया बनना चाहन्दा ऐ ॥
शान्त सुखें दा सागर भरेया, चौहनें पास्सें छाया ऐ।
बासना इसगी घेरी बैठी, उप्पर परदा पाया ऐ ॥
१–निर्लोभी नईं हुन्दा जिच्चर, ममता नईं कटोन्दी ऐ।
तां गै पक्का त्याग नि बनदा सुखै दी फुंग नि थोन्दी ऐ ॥
सुख ते शान्ति तुप्पना जेकर, जगत थीं मुख तूं मोड़ी लै।
सबने पास्सें दा हत्थ धोइयै, मनैगी अन्दर जोड़ी लै ॥
झूठे सुखैगी तुप्पना कैसी, तूं गै सुख भण्डारी एं।
तृष्णा झूठी कन्ने लाई, तां बनेयां संसारी एं ॥
२—किस लेई धनै दे पिच्छें पौनां, तूं गै मालामाली एं।
सब सिक्के तेरे थीं निकले, तूं आपूं टकसाली एं ॥
रूपै दी की चाहना करना, आपूं मूरत मोहनी एं।
३–सूरज तेरी लो गै बरतै, तूं सबनें दी सोहनी एं ॥

१—है जब तक तुझ में लोभ भरा तू चोर उचक्का तकड़ा है।
हे नीच पुरानी पगड़ी से जो सिर पर तेरे पकड़ा है ॥

२—जो है सो हो रहा है सदा मुबतलाये ज़र।
हर एक यही पुकारे है दिन रात हाय ज़र ॥

३—येन सूर्यस्तपति तेजसेद्धः (तै० ब्रा० ३।१२।९।७)

सन्तानै गी तुपदे - तुपदे भूत-प्रेत पुजाना एं ।
सारे जगदा आप पिता तूं हर-हर बिच समाना एं ॥
ईश्वर ब्रह्म जगत गी भलेयां जो पनछानी लैन्दा ऐ ।
बन्ध-मोक्ष दा होआ ज्ञाता, जीवपना नईं रैन्दा ऐ ॥
धर्मा धर्म ते सत् असत् बस्तु भी जिन्न पछानी ऐ ।
संसारैं थों सदा न्यारा उयै आखो ज्ञानी ऐ ॥
१–कुत्थों आया ते के आन्दा आपूं के किज करना ऐ ।
कोकड़े साधन पालन करियै मुक्ति मार्ग चलना ऐ ॥
जग ईश्वर दी बाड़ी जानै, सैर चुगिर्दी करदा ऐ ।
उस्सै अर्पण कर्म कमान्दा, ध्यान बी उसदा धरदा ऐ ॥
२–आलस क्रोध-लोभ-मोह तजदा, तृष्णा परें अटदा ऐ ।
नेआ ज्ञानी सूरबीर गै भव-बन्धन गी कटदा ऐ ॥
पर-दोषें पर नजर नि करदा अन्दर दृष्टि रखदा ऐ ।
इन्द्रियां काबू बिच करियै निर्मलता बिच बसदा ऐ ॥
ए देह सारा रोगें भरेया, रातीं दिनें रोआन्दा ऐ ।
जेड़ा इसगी अपना समझै, लक्क जञ्जीर पोआन्दा ऐ ॥

१—मुसाफिर खानाये दुनिया से है सब को सफर आखिर ।
क़याम ईंजा नहीं बस्ती यह मेहमानो की बस्ती है ॥
२—शक्नोति इहैव सोढुं प्राक् शरीर विमोक्षणात् ।
काम क्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ गी० ५।२३

देहै'ने जो प्यार बदाना, अपनी हत्या करनी ऐ।
डुबकूं डुबकूं हुन्दे रौहना, बेड़ी कदें निं तरनी ऐ॥

काम क्रोध पापी हत्यारे, पैहलें आप तपान्दे न।
पिच्छों लेई मोआते टुरदे, दूयें दै सुलगांदे न॥

ए दो बैरी जिस बस्स कीते, उसदा बेड़ा तरेया ऐ।
चौरासी दा फेर कटोआ, धन्न ओ भागें भरेया ऐ॥

'मैं मैं' करने करियै इक दे, दो दो अग्गें बनदे न।
उनें दौं थीं अनगिन होइयै, चौरासी बिच टंगदे न॥

शीशें बाले घरै दे अन्दर कुत्ता जाइयै बड़ी गेया।
इक दे लगे हजारां लब्बन, भौंकी भौंकी मरी गेया॥

ढोल बजाइयै होली फूकी, पर जाली नईं जाती ऐ।
आशा तृश्णा डैण-चुड़ेलें दी बू अजें बी बाकी ऐ॥

तांहगें दे सिर अग्ग निं पाई, चिन्ता भस्म निं होई आ।
ममता गी नईं मुक्के बज्जे, होली भली फकोई आ॥

मोहै गी नईं त्यागन कीता, चिन्ता किड़ै निं चाहड़ी ऐ।
राग-द्वेष नईं चिखा चढ़ाये, चंगी होली जाली ऐ॥

बेरंगी दे रंगें भरियै लेई गुरें पचकारी ऐ।
जगत लगा सब फिक्का लब्बन जां कन्नै बिच मारी ऐ॥

अन्दरा रग-रग गई रंगोई नेई पोटली घोली ऐ।
अपना आप पछानी लैता, 'तत्त्वमसि' दी झोली ऐ॥

रंग ओ मैले धोई सुट्टे, द्वैत नि नजरी पौन्दा ऐ।
मल-विक्षेप बी गे धनोई, श्रुति जलै बिच न्हौन्दा ऐ॥
सोगें दी अग्ग शीतल होई, त्रैवै ताप नसाये न।
भेद-भरम सब कूड़ा जलेया, ने मोआते लाए न॥
'मैं-तूं" रेआ नि रत्ति अन्दर, मिथ्या जगत फकोई गेया।
गुरुयें सच्ची होली खेडी ब्रह्मानन्द रङ्गोई गेया॥

निर्वाण-वृत्ति

शुद्ध होआ मन मुक्ति दिन्दा, मैला बन्धन पांदा ऐ।
लक्ख चुरासी योनी अन्दर बार-बार भटकांदा ऐ॥
१–जां तक ए नईं शोधेया जन्दा, तां तक कर्म कमांदा जा।
कुटुम्ब कबीला घर नईं छोड़ै, ईश्वर अर्पण लान्दा जा॥
कर्म कमाइयै फल नईं मंगै तां दूना किज थोंदा ऐ।
दिन दिन धार त्रिक्खी बनदी, माया जाल कटोंदा ऐ॥

१—यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र, लोकोऽयं कर्म बन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर॥ गी० ३।९

भजनै दे बिच तत्पर रेहियै, मनैंगी सुन्न बनांदा ऐ।
राग-द्वेष तृश्णा बैरन बी अन्दरा कड्डी लांदा ऐ॥
१—मल विक्षेप दा होई त्यागी, नित्त न्यारा बसदा ऐ।
पिछले स्वाद निं चेतै करदा, नां ममता बिच फसदा ऐ॥
२—'ए ओ' जिस बिच लेश निं रत्ति, उयै जगत गी रचदा ऐ।
उस्सै दे बिच मगन होआ मन बाहरै गी नईं नसदा ऐ॥
निज धरमें बिच तत्पर रैहियै, बखले सब गै तजदा जा।
'तुरिया' दे बिच लीन करै मन, अमरत पी-पी रजदा जा॥
चूहेगी सप्प तुपदा खन्दा, नौल सप्पैगी खन्दा ऐ।
जे कर कुत्ता नजरी पेई जा, नौल भी नसदा जन्दा ऐ॥
बेडर कोई नईं लबदा इत्थें, जीव जीवै पर भारू ऐ।
सारे डुबकूं-डुबकूं करदे बिरला गै कोई तारू ऐ॥
बालपने गी खाइयै जोबन आकड़ी-आकड़ी दुरदा ऐ।
फिरी बुढ़ापै जोबन खादा, जीन्दा लबदा मुड़दा ऐ॥
अज्ञानै दे पिञ्जरे बिच पेइयै आपूं गी देह मन्नदा ऐ।
सारे जग दा चक्रावरती, जानी भिच्छु बनदा ऐ॥

१—योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः॥ गी० ६।१०

२—यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति।
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति॥ तै० ३।१।१

शान्त शिवें दी शरणी जाइयै, जग दा नाता त्रुटदा ऐ ।
जीवन्मुक्ति प्रापत हुन्दी, दूई दा भाण्डा फुटदा ऐ ॥
दूई दा इत्थें लेश निं रत्ति, इक्कै आतम छाया ऐ ।
तेरे गै संकलपें रलियै आपूं 'मन' ए बनाया ऐ ॥
सण्ड कदें नईं जाया दिन्दी, फुल्ल अकाश निं लान्दा ऐ ।
ए संकलप गै रस्सी दे बिच बनियै सप्प डरान्दा ऐ ॥
१–सूरज-चन्दर गये खटोई, राहू घेरा पाया ऐ ।
इस्सै चाली ए मन तेरा आतम अग्गें छाया ऐ ॥
उस तोड़ी इदा पुज्जन औखा, नां दर्शन करी सकदा ऐ ।
अपने रचे दे दृश्य मात्र गी, इक-इक करियै दसदा ऐ ॥
वायु चलन शक्ति गी लेइयै जां ए दौड़ां लान्दा ऐ ।
भोगें दे पंजे बिच फसियै दिन दिन टपले पान्दा ऐ ॥
२–जो-जो किज नजरी बिच औन्दा, सारा इक-इक मिथ्या ऐ ।
अज जेड़ा किज 'ऐ' करी लबदा कल मुड़ियै नईं दिखेया ऐ ॥

१—आवृत्तं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्य-वैरिणा ।
काम रूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥ गी० ३।३६

२—सब तरह से यह सराये फ़ानी देखी ।
सब चीज़ यां की आनी जानी देखी ।
जो आके न जावे वो बुढ़ापा देखा ।
जो जाके न आवे वो जवानी देखी ॥

सुखनें कईं हजारां दिखदे पिछले जनम गवाये न ।
१–अजें बी अक्ख निं उगड़ी तेरी, मौती दे दिन आये न ॥
१–इस जग-जेला थीं होई न्यारा, अपना रूप पछानी लै ।
इयै सब दा नेड़वां नाता, बाकी बख्ले जानी लै ॥
भोगें दे बिच प्रेम ऐ जिच्चर बोध कदें नईं होना ई ।
जम्मना-मरना सिरा निं चुक्कना, अत्थरुयें मुंह धोना ई ॥
२–इक्कै इक तूं सबनें थारें, दूई करी दुआ बनेयां ऐ ।
मकड़ी वाला जाला आपूं फसने ताईं तनेयां ऐ ॥
३–निर्दोषी, समचित्त, एक रस, सदा गै संशय-हीना ऐ ।
इस दूई दा संग जे होआ तां गै दुखिया-दीना ऐ ॥
मरु किरणें बिच जल नईं रत्ति, नां उस त्रेह थमानी ऐ ।
दौड़ी-दौड़ी फांवे पौना, उलटी बिपता पानी ऐ ॥
४–मन जिस दा ध्यान जमांदा, संग बी ओदा करदा ऐ ।
रूप बी उसदा धारै, इसगी रंग बी उसदा चढ़दा ऐ ॥

१—मरग चूं आयद ज़जां बेजां कुनद । ईं मरातब हा हमां यकसां कुनद ॥
जुमला खेशो अकरबो फरज़न्दो माल । आंज़मां बाशन्द चूं खाबो ख्याल ॥

२—एक एव हि भूतात्मा भूते २ व्यवस्थितः ।
एकधा बहुधाश्चैव दृश्यते जल चन्द्रवत् । (ब्र० बिं० १२)

३—स वा एष महानज आत्माऽजरोऽमरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म (बृ० ४-४-२५)

४—ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोभिजायते ॥ (गी०२।६२

भोगें बिचा हटें तां अपने आप अमन होई जन्दा ऐ ।
छल छिद्दर सब बिसरी जन्दे, फी धोफा नईं खन्दा ऐ ॥
अन्दर ध्यान जमाने करियै सारी मैल जलान्दा ऐ ।
जगमग जगमग जोत चमकदी खुल्ले दर्शन पान्दा ऐ ॥
जिच्चर टपले दे बिच रौन्दा, बाहरा दा सुख तुपदा ऐ ।
अपने बिच नईं झांकी दिखदा, बखलेंगी जाई पुछदा ऐ ॥
सत्संगत बिन कीते कोई शिष्टाचार नि औन्दा ऐ ।
झूठा जगत नि मिथ्या लबदा तत्त्व नि नजरी पौन्दा ऐ ॥
रगै-रगै बिच दूई पलचोई, थार नि खाली लबदा ऐ ।
बार सुखें गी तुपदा फिरदा, अन्दरा भूत नि कडदा ऐ ॥
१–ए परतन्तर जगत हमेशां खान दुःखें दी भारी ऐ ।
सुखने जितना सुख नईं घर-घर राग-द्वेष बीमारी ऐ ॥
भक्ति योग ज्ञान दे साधन करने थीं शरमान्दा ऐ ।
काया-माया दी सेवा बिच सारी उमर गोआन्दा ऐ ॥
पर-धरमै पर होई दयालु अपने खातै सुटदा ऐ ।
सुई जितना बी त्याग नि करदा, दोन्नें हत्थें लुटदा ऐ ॥
सूरज त्याग करी किरणें दा अम्बरै गी जल खिचदा ऐ ।
उयै बरखा बनियै बरदा, जीवें दा दुःख मिटदा ऐ ॥

१—*क्या मुसीबत ज़र्दों का जीना है । सैंकड़ों दाग एक सीना है ॥*

उस थीं अन्न ए पृ:वी दिन्दी, तां भव-चक्कर चलदा ऐ।
मात लोकै दा इक-इक जन्तु खान पान करी पलदा ऐ ॥
धनी त्याग करै द्रव्यें दा तां ओ धर्म खोआन्दा ऐ।
माड़ें गी बी रीसा-रीसा चंगै रस्तै पांदा ऐ ॥
बीज बो अपना आप त्यागी, जां धूड़ी बिच रलदा ऐ।
तां ओ वृक्ष खोआन्दा, पाई समां फिरी ओ फलदा ऐ ॥
मित्ती अपना रूप त्यागी, थोड़ें कन्ने कटोन्दी ऐ।
चक्करै उप्पर चक्कर खाइयै धुप्पा बिच सुकोंदी ऐ ॥
आवे अन्दर अग्गी पेइयै अपना आप तपांदी ऐ।
तां उस दा नां पवै सुराही ठण्डीठार खोआंदी ऐ ॥
करी त्याग भगीरथ गंगा ब्रह्म लोक थीं आंदी ऐ।
लाई चलोबी पाप कटोंदे, जम्मन-मरण छुड़ान्दी ऐ ॥
१–विश्णु ब्रह्म विद्या गी त्यागी सूरज अग्गें गाया ऐ।
तां प्रचार इस राज योगै दा संसारै बिच छाया ऐ ॥
२–अर्जन त्याग धनुष दा कीता, कृष्ण दिक्खी मुस्काए हे।
भव सागर दे तरने वाले उसी उपदेश सुनाये हे ॥

१—इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वानेव प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ गी० ४।१

२—एवमुक्त्वा अर्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोक-संविग्नमानसः ॥ गी० १-४७

१–मैंहदी त्याग आपूं गी करियै आपा सिला कुटान्दी ऐ ।
छैलें दे छिल्यापै उप्पर अपना रंग जमांदी ऐ ॥
२–दृष्टि दी सृष्टि ए त्यागी जीव पना नईं रेह्या ऐ ।
त्याग दी मैहमां 'ब्रह्मानन्दा' ब्रह्म रूप होई गेया ऐ ॥

सर्वेश पद

नां औन्दे किज कन्नें आन्दा, ना कन्नें किज जाना ऐ ।
कट्टी रात, होआ जां तड़का, कालै कूच बजाना ऐ ॥
मिट्ठी-लूनी चाट लगी दी, सैहज नि छोड़ी जन्दी ऐ ।
सुखने बिच बी चेतै आवै, जीह्व लोआरे खन्दी ऐ ॥
कईं दिन जतन करै तां चसका, थोड़ा-थोड़ा मिटदा ऐ ।
लोभ नि बिन होए पर रौहन्दा जां दूये गी दिखदा ऐ ॥

१—सुरख़रू होता है इनसां ठोकरें खाने के बाद ।
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जाने के बाद ॥
२—गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देह-समुद्भवान् ।
जन्म मृत्युजरा दुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ गीं० १४।२

बिन जतनें मन सैहज नि मरदा, मरे बिना दुःख मिटदा नईं ।
बार धलोफे किज नईं लबदा, जां अन्दरैगी दिखदा नईं ॥
कईं जनमें दी आदत पेदी तां लेखा नईं मुकदा ऐ ।
देह अध्यास नि जिच्चर जन्दा जनम-मरण नईं छुटदा ऐ ॥
खेडे बाज नि रौन जुआरी, मारां-कुट्टां खन्दे न ।
घर ते बार बी हारी सुटदे, जेल्लें बिच बी जन्दे न ॥
आदत छुड़के बाज़ फी इसदा जीव पना नईं जन्दा ऐ ।
उस्सै दे नईं जाने कारण, सौ सौ ठोकर खन्दा ऐ ॥
१—सार अंश जां इक्कै, तां फी दूआ कुत्थों आया ऐ ।
छाया बी तां कैदी होनी, झूठी जेकर माया ऐ ॥
छाया माया दौंवैं नईं तां काया कुत्थों आई ऐ ।
काया बिन कुन होऐ माता, जाया कुत्थों जाई ऐ ॥
माया छाया काया जाया ए सब खेड-तमाशा ऐ ।
टपले करी भुलेखा लग्गा, सार अंश नईं जाता ऐ ॥
भुल्लै दे बिच, माया-छाया-काया मन्नदा जन्दा ऐ ।
आपूं बी जाया फी बनियै फेर चुरासी खन्दा ऐ ॥

१—न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बलक्रिया च ॥ श्वे० ६।८

करता-कर्म ते करण बी भुल्लें कारण मन्नी लैन्दा ऐ ।
ज्ञाता ज्ञान ते ज्ञेय बी टपला, बे समझी करी, रैन्दा ऐ ॥
ए आरोप होआ सारा किज, उल्टै रस्तै पाने गी ।
अपवाद रूप ए नेतर त्रिया थोन्दा भुल्ल चुकाने गी ॥
ओ इक्कै इक सबनें अन्दर, इक जनेया रौन्दा ऐ ।
बाल, जुआन ते बुढे अन्दर दना निं बदली पौन्दा ऐ ॥
देहै'ने सरबन्ध बनाइयै आपूं गी ऐ भुल्ली गेया ।
तां गै पापी जीव खोआया, संसारै पर डुल्ली पेया ॥
१—नां जग ते नां अविद्या नां गै अस्मिता दा लेश ऐ ।
चंगा, माड़ा, कुदै निं किज बी नां ए राग नां द्वेष ऐ ॥
चारै कृपां जे होन सहाई खैर तां झोल्ली पौन्दी ऐ ।
माया छाया गइयां काया बी नईं बाकी रौन्दी ऐ ॥
इनें पञ्जें दे बिच जो आया बिन मौती गै मरदा ऐ ।
सौन्दा ढेरें उप्पर, सुखनै शीश महल जाई चढ़दा ऐ ॥
कुदै नईं दो, नां त्रै-तेरां, इक बी आखन मात्तर ई ।
जड़ियें दे बिन रस्सी चढ़दा, बाज गारड़ी जातर ई ॥
संकलपें तेरें जग झूठा एका रची टकाया ऐ ।
न्हेरे बिच बी रस्सी अन्दर इस्सै सप्प बनाया ऐ ॥

१—फरीदा खालक खलक में, खलक बसे रब्ब माहीं ।
मन्दा किस नूं आखिये जां तिस बिन कोई नाहीं ।

१—बन्ध मोक्ष बी इस्सै रचेया, ते सरबन्ध रलाया ऐ।
पानियें उप्पर लीकरें बांगूं दिखदे रूप छपाया ऐ ॥
तुच्छ बुद्धि बी हुन्दी जेकर बे समझी नईं करदा एं।
ताँ की बिच चुरासी चक्करें बनी बगारी चढ़दा एं ॥
२—अपनी भुल्ला आप निं जाता, सब थों इक न्यारा एं।
सन्मात्तर, चिन्मात्तर सुखिया, त्रैलोकी थों बाहरा एं ॥
तुद सत्‌रूप द्रष्टा अन्दर, दृश्य ए मिथ्या सारी ऐ।
द्रष्टा हुन्दे दृश्य, खोआना ए बेलाज ब-मारी ऐ ॥
अपनी याद करें तूं जेकर, ताँ इक्कै अविनाशी एं।
अपनी भुल्ला दूई पलचाई, तां दुखिया सन्तापी एं ॥
अपनी किरपा कर आपूं पर, की आपूं गी भुल्लना एं।
पिछले घा भलोन निं दिन्दा, होर नवें की खुल्लना एं ॥
मूहों मुंह सुख सागर भरेया, दुःखें दा लेश निं रत्ति ऐ।
इस चाहना ने आड़ बनाइयै ओ शिव मूरत खट्टी ऐ ॥
तुप्पें बाहर, नईं सुख लबना, अन्दर झांकी पांदा जा।
दुःखें भरोची खान जगत दी, ए संसार भुलान्दा जा ॥

१—दिल चेह बन्दी दर जहां हा होशदार।
जाए अशरत नेस्तईं मेहनत सरा ॥
ऐशे दुनिया इख्तिलाते ख़ाबे गफ़लत वेश नेस्त।
अज़ ख्याले ईंकदर आलूदगी ऐ दिल चिरा ॥

२—एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ः सर्व व्यापी भूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्व भूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥ श्वे ६।११

तूँ शिवरूप सदा इक्कै रस दुई भुलेखे पान्दी ऐं ।
चमकैं बिच नईं टपले खा, ए सिप्पी झूठी चान्दी ऐं ॥
इस काया गी 'मैं' करी मन्नना, पण्ड पापें दी चुक्कनी ऐं ।
काम-क्रोध नईं बैरी मरणे, नां ए बिपता मुक्कनी ऐं ॥
मैली बुद्ध होई जिस बेल्लै, मोह गारे बिच रुजदा ऐं ।
डुबकूँ-डुबकूँ विषय करान्दे जाई चुरासी डुबदा ऐं ॥
इस देहै गी 'मैं' मन्ने दे इक दे दो होई जाने न ।
दौं कच्छा फी अनगिन बनने, डोबू साथ पुराने न ॥
१–मिथ्या जग दुक्खै दा कारण, दिखने दे बिच आया ऐ ।
बोध-बवेक नि जिसने रखेया, हत्था सार गवाया ऐं ॥
२–इन्द्रियां काबू बिच रक्खो, तां मन समझी जन्दा ऐ ।
भोगें पर नईं दौड़ां लान्दा नां फी धोका खन्दा ऐं ॥
३–सम हानि सम लाभ चितेन्दा, विषमता परे त्रटदा ऐ ।
सब दा हितकारी होई बरतै, पन्ध सुखाला कटदा ऐं ॥

१—नानक दुखिया सब संसार, सो सुखिया जिस नाम अधार ।
२—यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ गीं० ३।७
३—योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्व भूतात्म भूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ गी० ५।७

कामी दुर्गत सदा करान्दा, क्रोधी चित्त जलान्दा ऐ ।
लोभ बी जेकर कन्ने रक्खै दिन-दिन बन्धन पान्दा ऐ ॥
जीना सुफल उस्सै दा जानो, जिस त्रौहनें गी तजेया ऐ ।
अहंकारै दे कन्न मरोड़े, मोह-न्हेरा बी कडेया ऐ ॥
१–खान सुखें दी थोंदी उसगी, बन्ध चुरासी त्रुटदा ऐ ।
चित्तरगुपतै दी बेही फटदी पिछला लेखा मुकदा ऐ ॥
तृष्णा नईं तरसांदी उसगी, ना चिन्ता बिच जलदा ऐ ।
शान्त शिवें दा रूप बनाया परम धाम जाई मल्लदा ऐ ॥
जिस काया गी मैं करी मन्नेयां, सूलें छेज बछान्दा ऐ ।
चेतन थीं जड़ आपूं बनेयां, हत्था बाज डोआन्दा ऐ ॥
निसंग'शा संगी बनी करी ओ, अचल थीं चंचल होआ ऐ ।
बिन अङ्ग हा, अङ्गी बनेया, अमर थीं बनेया मोआ ऐ ॥
मनै दे मन्ने बन्धन पौन्दा, नईं मन्नना गै मुक्ति ऐ ।
बेदें ए नखेड़ा कीता, सवै जनेई युक्ति ऐ ॥
मनै दी रचना संकल्पें'शा, मन संकल्प गै मंगदा ऐ ।
इक दूये दी रीसारीसी सप्प बनी मन डंगदा ऐ ॥

१—भिद्यते हृदय-ग्रन्थि श्छिद्यन्ते सर्व-संशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥ मुं० २।२।८
१—यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदि श्रिताः ।
अथ मर्त्योऽमृतो भवति, अत्र ब्रह्म समश्नुते ॥ बृ० ४.४.७

सप्पें खादा बची खड़ोंदा, इस डङ्गे या नईं उठदा ऐ ।
पींगै आले देई लोआरे जाई चुरासी सुटदा ऐ ॥
१–जो जो दृश ऐ नजरी चढ़दा, जो-जो मनैदी घटना ऐ ।
ए सारा जग जेल खोआया त्रौं गुणें दी रचना ऐ ॥
त्रौनें गी जे दूरा त्यागै तां जेल्ला थौं छुटदा ऐ ।
नित्त-नित्त जमना नित्त-नित्त मरना पन्ध सिरै दा मुकदा ऐ ॥
इन्द्रियां स्वाधीन ते सारा हानि-ला सम होई गेया ।
बिषमता-बिस दूर त्यागी समता-अमरत थोई गेया ॥
शत्रु बी हुन मित्तर बनी गे, जां सद्‌गुरें दया कीती ।
टली बला जम्मने मरणे दी, कम्म नईं रेह्या बाकी ॥
पितरें दे बी पाप धनोए बैंस पवित्तर होई गेया ।
पद मिलेया सर्वेश दा असली, मूल ठकाना थोई गेआ ॥
मौती'शा हुन होई खलासी, काल बी नसदा रोई पेया ।
मुक्तें दी फहरिस्ता अन्दर ब्रह्मानन्द लखोई गेया ॥

१— अगर वजूद अज़ अदम गर बिगुज़री । अज़ हयाते जाविदानी वर खुरी ॥
चीस्त ताज़ीमे खुदा अफराश्तन । खेश्तन रा ख़ाको खारी दाश्तन ॥
चीस्त तौहीदे खुदा आमोख्तन । खेश्तन रा पेशे वाहिद सोख्तन ॥
आंकि ओ बेनक्शो सादा सीनाशुद । नक्शहाए गैबरा आईनाशुद ॥

* आरती *

ॐ जय आतम साखी, जय आतम साखी ।
पूर्ण ब्रह्म प्रभु व्यापक घट-घट दे वासी ॥ ॐ जय आतम
मायातीत महेश्वर शासक निस्तापी ।
सर्वज्ञ निखिल नियन्ता पूर्ण विश्वासी ॥ ॐ जय आतम
उत्पत्ति दा करता, स्थिति अन्दर राखी ।
लय समय क्षय कारक सम्पूर्ण नाशी ॥ ॐ जय आतम
लक्ख चुरासी चक्कर जनम मरण फांसी ।
भव सागर थीं तारो स्वातम परकाशी ॥ ॐ जय आतम
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया पद व्यापी ।
श्रुति पुराण बी हारे नेति नेति आखी ॥ ॐ जय आतम
त्रैवे पद आपूं गै सुख रूपी काशी ।
चौथे जग चौदां वेद ऋचा वाची ॥ ॐ जय आतम
अखण्ड अपार अगोचर अक्षर अविनाशी ।
परम धाम दे दाता मुक्ति सुख राशी ॥ ॐ जय आतम
मंगल कारक पालक अन्तै दे साखी ।
स्वामी ब्रह्मानन्दा सिमरो दिन राती ॥ ॐ जय आतम

अठवां प्रकरण समापत होआ ।

"ॐ तत्सदिति"